

"HINDI CINE-PATRAKARITA KA UDBHAV AUR VIKAS"

A Thesis submitted to the University of Hyderabad in
partial fulfillment of the requirement for the award

of

Doctor of Philosophy

in

Hindi

Submitted

By

JANARDAN



**DEPARTMENT OF HINDI
SCHOOL OF HUMANITIES
UNIVERSITY OF HYDERABAD
HYDERABAD-500046
TELANGANA,
INDIA
SEPTEMBER,2016**

D E C L A R A T I O N

I, JANARDAN, hereby declare that this thesis entitled "**HINDI CINE-PTRAKARITA KA UDBHAV AUR VIKAS**" (हिंदी सिनेपत्रकारिता का उद्भव और विकास) submitted by me under the guidance and supervision of **PROF. ALOK PANDEY** is a bonafide research work. Which is also free from plagiarism. I also declare that it has not been submitted previously in part or full to this University or any other University or Institution for the award of any degree or diploma. I hereby agree that my thesis can be deposited in Shodhganga/INFLIBNET

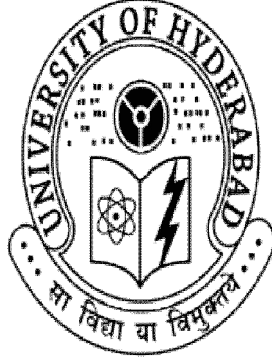
(JANARDAN)

: DATE

(Signature of the Student)

Regd. No. 09HHPH18

Signature of Supervisor



C E R T I F I C A T E

This is to certify that the thesis entitled **"HINDI CINE-PTRAKARITA KA UDBHAV AUR VIKAS"**(हिंदी सिने-पत्रकारिता का उद्भव और विकास) submitted by **JANARDAN** Bearing Reg. No. **09HHPH18** in partial fulfillment of the requirements for the award of Doctor of Philosophy in Hindi is a bonafide work carried out by him under my supervision and guidance.

As far as I know the thesis has not been submitted previously in part or full to this or any other University or Institution for the award of any degree or diploma.

Signature of the Supervisor

Head of the Department

Dean of the School of Humanities

अनुक्रमणिका

भूमिका	XIII-XVII
विषय प्रवेश	XVIII-XXXII
प्रथम अध्याय: विश्व सिने-पत्रकारिता का इतिहास	1-25
1.1 विभिन्न देशों में सिनेमा और सिने-पत्रकारिता	
1.1.1 अमेरिका में सिने-पत्रकारिता	
1.1.1.1 अमेरिकन सिनेमैटोग्राफर	
1.1.1.2 द फिल्म डेली	
1.1.1.3 फिल्मस ऑफ द गोल्डन एज	
1.1.1.4 मोशन पिक्चर हेराल्ड	
1.1.1.5 मूविंग पिक्चर वर्ल्ड	
1.1.1.6 मूवी मेकर	
1.1.1.7 टाइम पत्रिका	
1.1.1.8 बॉक्स ऑफिस	
1.1.1.9 फिल्म जर्नल इंटरनेशनल	
1.1.1.10 द हॉलीवुड रिपोर्टर	
1.1.1.11 ब्राइट लाइट	
1.1.1.12 सिनेस्ट	
1.1.1.13 फिल्म कमेंट	
1.1.1.14 हॉलीवुड वीकली	
1.1.2 रूस में सिने-पत्रकारिता	

1.1.2.1 रूस प्रशासन (साम्यवादी) की सिने-नीति

1.1.2.1.1 गोस्कोमिजइस

1.1.2.1.2 गोस्कनो

1.1.2.1.3 गोस्केलरेडियो

1.1.2.2 द्वितीय विश्वयुद्ध व रसियन सिने-नीति

1.1.3 यूरोप की सिने-पत्रकारिता (इटली के विशेष संदर्भ में)

1.1.3.1 इटली के कुछ प्रसिद्ध राष्ट्रीय दैनिक समाचार-पत्र

1.1.3.2 सिने पत्रिकाएं- इटली की कुछ प्रमुख सिने-पत्रिकाएं

1.1.3.2.1 बेंको ए नेरो

1.1.3.2.2 कैस्तोरो सिनेमा

1.1.3.2.3 सिने फोरम

1.1.3.2.4 सिनेमास्कोप

1.1.3.2.5 फिल्म

1.1.3.2.6 ग्रैफिथियाना

1.1.3.2.7 इकान

1.1.4 एशियाई देशों में सिने-पत्रकारिता

1.1.4.1 जापान की सिने-पत्रकारिता

1.1.4.1.1 द अकित साकिगाके शिंपो

1.1.4.1.2 बाचो शिंबुन

1.1.4.1.3 जापान टाइम्स

1.1.4.1.4 सिने-पत्रिकाएं

1.1.4.1.4.1 किनेमा रेकार्ड

1.1.4.1.4.2 किनेमा जुनपो

1.1.4.2 चीन की सिने-पत्रकारिता

1.1.4.2.1 समाचार-पत्र

1.1.4.2.2 चीन की न्यूज एजेंसियां

1.1.4.2.3 चीन की प्रमुख सिने-पत्रिकाएं

1.1.4.2.3.1 सिनेमा वर्ल्ड

1.1.4.2.3.2 मूवी व्यू

1.1.4.2.3.3 वर्ल्ड स्क्रीन

द्वितीय अध्याय : भारत में सिने-पत्रकारिता

26-42

2.1 स्वाधीनतापूर्व की सिने-पत्रकारिता

2.1.1 क्षेत्रीय सिने-पत्रकारिता

2.1.1.1 बांग्ला सिने-पत्रकारिता

2.1.1.2 मलयालम सिने-पत्रकारिता

2.1.1.3 तमिल सिने-पत्रकारिता

2.1.1.4 तेलुगु सिने-पत्रकारिता

2.1.1.5 पंजाबी सिने-पत्रकारिता

2.1.1.6 मराठी सिने-पत्रकारिता

2.1.1.7 गुजराती सिने-पत्रकारिता

2.1.2 संक्रमणकाल की सिने-पत्रकारिता

2.2 स्वाधीनता पश्चात की सिने-पत्रकारिता

2.2.1 क्षेत्रीय सिने-पत्रकारिता

2.2.1.1 बंगला सिने-पत्रकारिता

2.2.1.2 मलयालम सिने-पत्रकारिता

2.2.1.3 तमिल सिने-पत्रकारिता

2.2.1.4 पंजाबी सिने-पत्रकारिता

2.2.1.5 मराठी सिने-पत्रकारिता

2.2.1.6 उड़िया सिने-पत्रकारिता

2.2.1.7 तेलुगु सिनेपत्रकारिता

2.2.1.8 असमी सिने-पत्रकारिता

2.3 क्षेत्रीय बनाम राष्ट्रीय सिने-पत्रकारिता

तृतीय अध्याय : हिंदी सिने-पत्रकारिता मुद्रित माध्यम

43-114

3.1 स्वधीनतापूर्व की हिंदी सिनेपत्रकारिता

3.1.1 समाचार-पत्र

3.1.1.1 आज

3.1.1.2 दैनिक हिंदुस्तान

3.1.1.3 नवभारत टाइम्स

3.1.1.4 दैनिक जागरण

3.1.1.5 नई दुनिया

3.1.1.6 नवभारत

3.1.1.7 दैनिक नवज्योति

3.1.1.8 स्वतंत्र भारत

3.1.2 सिने-पत्रिकाएं

3.1.2.1 रंगभूमि

3.1.2.2 क्यों निकली रंगभूमि?

3.1.2.3 चित्रपट

3.1.2.4 रंगभूमि और चित्रपट साथसाथ

3.2 विभाजन और हिंदी सिने-पत्रकारिता

3.3 स्वाधीनता और बदलाव का सिनेमा

3.4 स्वाधीनता पश्चात की सिने-पत्रकारिता

3.4.1 प्रिंट माध्यम

3.4.1.1 समाचार-पत्र

3.4.1.2 हिंदी दैनिक समाचार-पत्र और सिने-पत्रकारिता

3.4.1.2.1 नवभारत टाइम्स

3.4.1.2.2 अमर उजाला

3.4.1.2.3 दैनिक जागरण

3.4.1.2.4 पंजाब केसरी

3.4.1.2.5 सन्मार्ग

3.4.1.2.6 राजस्थान पत्रिका

3.4.1.2.7 राष्ट्रदूत

3.4.1.2.8 जलते दीप

3.4.1.2.9 वीर अर्जुन

3.4.1.2.10 नवजीवन

3.4.1.2.11 देशबंधु

3.4.1.2.12 जनसत्ता

3.4.1.2.13 दैनिक भाष्कर

3.4.1.3 समाचार एजेंसिया

- 3.4.1.3.1 यूनिवार्ता**
- 3.4.1.3.2 हिंदु स्तान समाचार**
- 3.4.1.3.3 समाचार भारती**
- 3.4.1.3.4 भाषा**
- 3.4.1.4 मुख्यधारा की पत्रिकाएं**
 - 3.4.1.4.1 इंडिया टुडे**
 - 3.4.1.4.2 दिनमान**
 - 3.4.1.4.3 साप्ताहिक हिंदु स्तान**
 - 3.4.1.4.4 रविवार**
 - 3.4.1.4.5 इतवारी पत्रिका**
 - 3.4.1.4.6 ब्लिट्ज**
 - 3.4.1.4.7 नन्दन**
 - 3.4.1.4.8 गृहशोभा**
 - 3.4.1.4.9 आउटलुक**
 - 3.4.1.4.10 माया**
- 3.4.1.5 साहित्यिक-पत्रिकाएं**
 - 3.4.1.5.1 सरिता**
 - 3.4.1.5.2 धर्मयुग**
 - 3.4.1.5.3 सारिका**
 - 3.4.1.5.4 मुक्ता**
 - 3.4.1.5.5 नवनीत**
 - 3.4.1.5.6 पटकथा**

3.4.1.5.7 समयांतर

3.4.1.5.8 कादम्बिनी

3.4.1.5.9 वागर्थ

3.4.1.5.10 कथादेश

3.4.1.5.11 हंस

3.4.1.5.12 लमही

3.4.1.6 सिने-पत्रिकाएं व सिने समाचार-पत्र

3.4.1.6.1 माधुरी

3.4.1.6.2 सुषमा

3.4.1.6.3 फिल्मी दुनिया

3.4.1.6.4 फिल्मिस्तान

3.4.1.6.5 मायापुरी

3.4.1.6.6 फिल्म फेयर

3.4.1.6.7 सिने-पत्रकारिता का एक रूप फिल्म टैब्लायड भी

3.4.1.6.8 अंग्रेजी बाई प्रोडक्ट की हिंदी सिने-पत्रिका-स्टारडस्ट

3.4.1.6.9 सिने-पत्रिकाओं का पतन

3.4.1.6.10 हिंदी फिल्म पत्रकारिता की विमर्श हीनता

3.4.1.6.11 अस्सी के बाद की सिने-पत्रकारिता

3.4.1.6.12 अस्सी का दशक और समांतर सिनेमा

3.4.1.6.13 सिनेमा पर साहित्यकारों के विचार

चतुर्थ अध्याय : हिंदी सिने-पत्रकारिता: इलेक्ट्रानिक माध्यम

115-160

4.1 रेडियो एवं सिने-पत्रकारिता

4.1.1 भारत में रेडियो का विकास

4.1.2 पंचवर्षीय योजनाएं एवं रेडियो का विस्तार

4.1.3 रेडियो द्वारा सिने-पत्रकारिता

4.1.4 विविध भारती-देश की सुरीली धड़कन

4.1.5 एफ.एम. रेडियो एवं सिने-पत्रकारिता

4.1.5.1 एफ.एम. रेडियो

4.1.5.1.1 एफ.एम. सेवा

4.1.5.1.1.1 एफ.एम. रैनबो

4.1.5.1.1.2 एफ.एम. गोल्ड

4.2 दूरदर्शन एवं सिनेपत्रकारिता

4.2.1 टी.वी. का विकास

4.2.2 द्वितीय विश्वयुद्ध एवं टेलीविजन

4.2.3 भारत में टेलीविजन का विकास

4.2.4 दूरदर्शन के कार्यक्रम एवं सिनेपत्रकारिता

4.2.5 भारतीय राष्ट्रीय चैनल एवं सिने-पत्रकारिता

4.2.5.1 भारतीय सिनेमा की श्रेष्ठता

4.2.5.2 बाइस्कोप सिनेमा

4.2.5.3 शनिवार जुबली

4.2.5.4 संडे मेट्रो

4.2.5.5 फ्राइडे हाउसफुल

4.3 दूरदर्शन के अन्य माध्यम और सिने-पत्रकारिता

4.3.1 चित्रहार

4.3.2 रंगोली

4.4 वर्तमान समय में दूरदर्शन और सिनेपत्रकारिता

4.5 रियलटी शो और सिने-पत्रकारिता: आज के दौर में

4.5.1 विडियो सिने-पत्रकारिता

4.5.2 यू ट्यूब के माध्यम से सिने-पत्रकारिता

4.5.3 क्या है लघु फिल्म?

4.5.4 डॉक्युमेंट्री फिल्म

4.5.4.1 कहानी डॉक्युमेंट्री

4.5.4.2 यात्रा-वृत्तांत डॉक्युमेंट्री

4.5.4.3 सामाजिक डॉक्युमेंट्री

4.5.4.4 शोधपरक डॉक्युमेंट्री

4.5.4.5 ऐतिहासिक डॉक्युमेंट्री

4.5.4.6 साहित्य अकादमी द्वारा डॉक्युमेंट्री फिल्म निर्माण

4.6 इंटरनेट एवं सिने-पत्रकारिता

4.6.1 इंटरनेट क्या है?

4.6.2 भारत में इंटरनेट

4.7 सोशल मिडिया-व्यक्ति विशेष द्वारा सिने-पत्रकारिता

4.7.1 फेसबुक

4.8 सिने-पत्रकारिता और सामाजिक जनसंचार के अन्य माध्यम

4.8.1 ब्लॉग

4.8.1.1 ब्लॉग के प्रकार

4.8.1.2 सिने ब्लॉग की सूची

पंचम अध्याय: नई आर्थिक नीतियों का सिने-पत्रकारिता पर प्रभाव 161-174

5.1 क्या है नई आर्थिक नीति?

5.2 नई आर्थिक नीति और भारत

5.3 सिनेमा एक उद्योग के रूप में

5.4 अच्छी फिल्म के नाम पर पितृसत्ता एवं बाजार के शर्तों का तुष्टिकरण

5.5 बाजार और सिने-पत्रकारिता

5.6 सिने-पत्रकारिता में सिने-बाजार की जगह

5.6.1 बिग बॉस

5.6.2 सिने-पत्रकारिता का एक पक्ष यह भी

उपसंहार 175-182

परिशिष्ट 183-185

संदर्भ ग्रंथ सूची 186-201

भूमिका

सिनेमा वैज्ञानिक उपलब्धि के साथ-साथ सामाजिक और सांस्कृतिक उपलब्धि भी है। अपने जन्म से ही सिनेमा निरन्तर विकास करता रहा है। विकास की इस प्रक्रिया में इसे कई परिवर्तनों और पड़ावों से भी गुजरना पड़ा। ये परिवर्तन और पड़ाव वैज्ञानिक और राजनीतिक दोनों थे। शायद यही कारण है कि वैज्ञानिक चेतना के बावजूद सिनेमा की नकेल राजनीतिक सत्ता के हाथ रही इसलिए शुद्ध वैज्ञानिक चेतना सिनेमा का विषय बहुत कम बार बन पाया। उदाहरण के तौर पर हम देख सकते हैं कि सोशल मीडिया की वैज्ञानिक उपलब्धि और बढ़ते लोकतांत्रिक रुझानों ने राजनीतिक शक्तियों को गंम्भीरता से विचार करने पर मजबूर किया है। आज यह चर्चा आम हो चुकी है कि नेट-निरपेक्षता अथवा सोशल मीडिया पर सेंसरशिप कैसे लगाया जाए? अर्थात् आधुनिक जनमाध्यम के रूप में सिनेमा और सिनेमा की बातें सरकार और जनता, दोनों के सरोकार के केंद्र में है। क्रिकेट की तरह हर सिने दर्शक सिनेमा के लिए दर्शक और समीक्षक दोनों की भूमिका निभाता है। सिने-पत्रकारिता दर्शक को सिनेमा की गुणवत्ता से परिचित कराता है इसलिए सिने-पत्रकारिता सिनेमाकार और दर्शक के लिए मध्यस्थ की भूमिका निभाता है।

सिनेमा देखना जितना रोचक और मनोरंजकपूर्ण है, उतना ही रोचक इसका इतिहास भी है। हालांकि इतने जनप्रिय और विकासशील जनमाध्यम होने के बाद भी इस पर मुक्कमल राय नहीं बनाई जा सकती क्योंकि भारतीय जनमानस भाषाओं, संस्कृतियों और अस्मिताओं की विभिन्नता से निर्मित हुआ है जिसका प्रतिफलन अक्सर सिनेमा में दिखाई पड़ता है। देश, समाज और व्यक्ति की सिने संलिप्तता को देखते हुए इस पर चर्चा या विमर्श करने से किनारा भी नहीं किया जा सकता। आज सिनेमा अकादमिक दायरे में शामिल किया जा चुका है। विश्व एवं भारत के कई विश्वविद्यालयों में सिने अध्ययन के लिए विभाग खोले जा चुके हैं। साथ ही समाज विज्ञान एवं मानविकी संकाय के अलग-अलग विभागों में इस पर शोध कार्य होने लगे हैं।

सिनेमा और पत्रकारिता का आपसी सम्बन्ध अत्यंत प्रगाढ़ है। सर्वसाधारण से लेकर प्रबुद्ध वर्ग तक में सिनेमा के प्रति सहज जिज्ञासा होने के कारण राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय सिनेमा के साथ-साथ राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय सिने-पत्रकारिता का भी विकास हुआ है हालांकि बड़ी अर्थव्यवस्था होने के बाद भी राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय सिने-पत्रकारिता में सिनेमा को गंम्भीर जनमाध्यम के रूप में नहीं लिया जाता है। दरअसल सिने-पत्रकारिता आज भी फोटो पत्रकारिता से आगे नहीं बढ़ सका है अर्थात् सिनेमा के विषय से ज्यादा महत्वपूर्ण सिने कलाकारों की तस्वीरें मानी जाती हैं। चूंकि सिनेमा रचनात्मक कलाकृति के साथ-साथ एक उत्पाद भी है इसलिए इस पर आर्थिक दृष्टि से ही

सही पर शोध कार्य तो होते हैं किन्तु अकादमिक दायरे में सिनेमा को शामिल करने से अब इस पर सार्थक बहस होने लगी है।

प्रस्तुत शोध-प्रबंध में सिनेमा और सिने-पत्रकारिता के रिश्तों का जायजा लिया गया है। शोध-प्रबंध पाँच अध्यायों में विभाजित है। जिसमें सिने-पत्रकारिता के उत्स से लेकर वर्तमान तक की उपलब्धि और चुनौती को समेटने का प्रयास किया गया है। शोध-प्रबंध का प्रथम अध्याय 'विश्व सिने-पत्रकारिता का इतिहास' में सिने-पत्रकारिता के वैश्विक उद्भव एवं विकास की एक सामान्य रूपरेखा प्रस्तुत की गयी है।

प्रथम अध्याय के विस्तार को देखते हुए इसे कई उपखण्डों में विभाजित किया गया है। अमेरिका, रूस, इंग्लैंड, चीन, जापान एवं इटली की सिनेमा और सिने-पत्रकारिता अत्यंत व्यापक है। अमेरिकी सिने-जगत को हॉलीवुड कहा जाता है। सर्वविदित है कि हॉलीवुड की तूती पूरे विश्व में बोलती है। हॉलीवुड की फिल्मों को प्रचारित-प्रसारित करने में अमेरिकी सिने-पत्रकारिता का महत्वपूर्ण योगदान है। रूस भी सिनेमा को एक सामाजिक, सांस्कृतिक उपकरण के रूप में इस्तेमाल करता है। वहाँ भी सिनेमा को जन-जन तक पहुँचाने में सिने-पत्रकारिता महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। प्रस्तुत शोध-प्रबंध में इन दोनों देशों की सिने-पत्रकारिता व सिने-नीति को गंभीरता से समझने का प्रयास किया गया है।

चीन, जापान एवं इटली की सिनेमा ने विश्व सिने-जगत को समय-समय पर यथार्थवादी सिनेमा से संपन्न किया है। यथार्थवादी सिनेमा के विकास में इन देशों की भूमिका सराहनीय रही है। इन फिल्मों से सम्बंधित सूचना के प्रचार-प्रसार में सिने-पत्रकारिता ने वैश्विक जिम्मेदारी का निर्वाहन किया है। इसलिए इस अध्याय में इन देशों की सिनेमा के साथ-साथ सिने-पत्रकारिता को भी समझने की कोशिश की गयी है।

द्वितीय अध्याय 'भारत में सिने-पत्रकारिता' में भारतीय सिने-पत्रकारिता का संक्षिप्त जायजा लिया गया है। भारत में सिनेमा का आगमन सन् 1913 अर्थात् स्वाधीनतापूर्व हुआ, हालांकि हमारे यहाँ उसी वर्ष (सन् 1913) सिने-पत्रकारिता का जन्म सिने-विज्ञापन के रूप में हुआ जो आज तक किसी-न-किसी रूप में जारी है। इस अध्याय को स्वाधीनता पूर्व की सिने-पत्रकारिता और स्वाधीनता पश्चात की सिने-पत्रकारिता जैसे दो उप अध्यायों में विभाजित किया गया है। चूंकि सिनेमा एक ही समय में अखिल भारतीय और क्षेत्रीय, दोनों रहा है। इसलिए सिने-पत्रकारिता का विकास हिंदी के साथ-साथ प्रादेशिक भाषाओं में भी हुआ। प्रस्तुत अध्याय में प्रादेशिक भाषाओं की सिने-पत्रकारिता की एक साधारण रूपरेखा प्रस्तुत की गयी है।

स्वाधीनतापूर्व व पश्चात की सिने-पत्रकारिता के अंतर्गत प्रिंट मिडिया के राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय स्वरूप की चर्चा की गयी है। यह बड़ा विचित्र किन्तु सत्य है कि स्वाधीनतापूर्व देशप्रेम पर एक से बढ़कर एक फ़िल्में बनी और ब्रितानी हुकूमत के दमन नीति का शिकार हुई। इस प्रकार की फिल्मों पर नजर रखने के लिए सेंसर बोर्ड को स्थापित किया गया। अर्थात् अंग्रेजी सरकार इस प्रकार की फिल्मों को दुश्मन की तरह देखती रही। परंतु उस समय की मुख्यधारा की पत्रकारिता में इन फिल्मों और फिल्मकारों पर कोई खास चर्चा नहीं की गयी है। यह विचारणीय प्रश्न है कि आखिर हमारे देश की वह कौन सी मनःस्थिति थी जिसके कारण देश भक्ति पूर्ण फिल्मों को भी नजरअंदाज किया जाता रहा। कहीं इसका कारण सिनेमा को विदेशी माना जाना एवं इसे भारतीय परंपरा भंजक के रूप में देखा जाना तो नहीं था? चूंकि यह सवाल प्रस्तुत शोध-प्रबंध के दायरे में नहीं आता इसलिए इस अध्याय में ऐसे विमर्शों से बचते हुए केवल क्षेत्रीय अथवा भाषाई सिने-पत्रकारिता के विविध स्वरूपों को शामिल किया गया है।

जहाँ एक ओर द्वितीय अध्याय में भारतीय सिने-पत्रकारिता पर चर्चा की गयी है, वहीं तीसरे अध्याय में 'हिन्दी सिने-पत्रकारिता' के अंतर्गत हिंदी सिने-पत्रकारिता का विवरण दिया गया है। इस अध्याय में हिंदी सिने-पत्रकारिता के विभिन्न स्वरूपों को समेटा गया है। उप-अध्याय के रूप में 'स्वाधीनतापूर्व की हिंदी सिने-पत्रकारिता' में मुद्रण माध्यम की सिने-पत्रकारिता को संदर्भ के रूप में लिया गया है। स्वाधीनतापूर्व में मुद्रण माध्यमों द्वारा प्रमुख रूप से समाचार-पत्र, सामान्य पत्रिकाओं, साहित्यिक पत्रिकाओं एवं सिने-पत्रिकाओं को बढ़ावा मिला।

तीसरे अध्याय का अगला हिस्सा 'स्वाधीनता पश्चात की हिंदी सिने-पत्रकारिता' के रूप में विस्तार पाता है। इस उपखण्ड में प्रिंट माध्यमों द्वारा संपन्न होने वाली सिनेपत्रकारिता (समाचार-पत्र, समाचार एजेंसियों, मुख्यधारा की पत्रिकाओं, साहित्यिक पत्रिकाओं एवं सिने-पत्रिकाओं) का तथ्यात्मक विवरण प्रस्तुत किया गया है। स्वाधीनता पश्चात वैज्ञानिक प्रगति का काफी विस्तार हुआ। जिसका प्रभाव प्रिंट माध्यमों द्वारा संपन्न होने वाली सिने-पत्रकारिता पर भी पड़ा। बड़ी संख्या में पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन होने लगा। इसलिए प्रयास किया गया है कि वैज्ञानिक चेतना के साथ सिने-पत्रकारिता का मात्रात्मक और गुणात्मक जायजा भी लिया जा सके।

स्वाधीनता पश्चात इलेक्ट्रानिक जनसंचार माध्यमों का उल्लेखनीय विकास और विस्तार हुआ, जिससे सूचना की गति में न केवल तेजी आई बल्कि सूचना को सत्ता के रूप में भी देखा जाने लगा।

चतुर्थ अध्याय 'आधुनिक जनसंचार माध्यम और सिने-पत्रकारिता' के अंतर्गत इलेक्ट्रानिक संचार माध्यमों का विवरण दिया गया है। इसमें रेडियो एवं दूरदर्शन के इतिहास एवं उसके विकास को भी शामिल किया गया है। ध्यातव्य है कि इलेक्ट्रानिक जनसंचार माध्यम मुद्रण माध्यमों की तुलना में सिनेसामग्री को अधिक तीव्रता और प्रमुखता से प्रस्तुत करते हैं। ज्यादा से ज्यादा सिने-सामग्री, जैसे- फ़िल्मी गीतों एवं साधारण फ़िल्मी गपशप के लिए रेडियो के अगले संस्करण का विकास एफ.एम. के रूप में हुआ। एफ.एम. के विकास ने जिस संस्कृति को जन्म दिया उसे एफ.एम संस्कृति कहते हैं। इस संस्कृति के अंतर्गत सिनेमा के गीतों और सिनेमा की सामान्य से सामान्य जानकारी को बतौर सिने उत्पाद प्रस्तुत किया जाता है।

इस अध्याय में दूरदर्शन, दूरदर्शन नीति के साथ-साथ डाक्यूमेंट्री फिल्म व सोशल मीडिया के प्रमुख उपकरण, जैसे- इंटरनेट की भी चर्चा की गयी है। सूचना क्रांति में हुए विस्फोट को देखते हुए इस अध्याय में सिनेपत्रकारिता की साफ व तथ्यात्मक तस्वीर उकेरने का प्रयास किया गया है।

शोध-प्रबंध का पंचम अध्याय 'नई आर्थिक नीतियों का सिने-पत्रकारिता पर प्रभाव' है। इस अध्याय में वैश्विक अर्थव्यवस्था के साथ-साथ बाजार में होने वाले परिवर्तनों का आकलन किया गया है। सर्वविदित है कि वैश्विक अर्थव्यवस्था नीतिगत परिवर्तनों से नियंत्रित होती है। वैश्विक अर्थव्यवस्था में परिवर्तन होने से बाजार के स्वरूप में भी बदलाव होता है जिसके परिणाम स्वरूप समाज और संस्कृति में उत्तरजीविता का संकट उत्पन्न हो जाता है, क्योंकि बाजार की कुछ शर्तें होती हैं, जिनकी कसौटी पर संस्कृति तक को कसा जाता है। इसीलिए वैश्वीकरण के बाद संस्कृति (साहित्य और सिनेमा) में स्वरूपगत परिवर्तन दर्ज किये गए हैं।

आर्थिक संरचना में परिवर्तन होने से सिनेमा बनाने के साथ-साथ उसकी प्रस्तुति में ढांचागत बदलाव देखा गया है। अब सिनेमा बनाना और उसे बाजार के हवाले करना रचनात्मक कौशल कम, प्रबंधात्मक कौशल ज्यादा हो गया है। इन सभी कारकों का प्रभाव सिने-पत्रकारिता पर भी पड़ा है। सिने-पत्रकारिता की इन्हीं नवीन प्रवृत्तियों का समावेश इस अध्याय में किया गया है। ताकि विषय को समग्रता व गम्भीरता से समझा जा सके।

इस विषय पर शोध-सामग्री का आभाव है, खासतौर पर शुरूआती दौर की सिने-पत्रकारिता पर सामग्री मिलना अत्यंत दुष्कर है। मेरे शोध-निर्देशक प्रो. अलोक पाण्डेय सर का निरंतर प्रोत्साहन व दिशा-निर्देश प्राप्त होता रहा। विषय की जटिलता को समझने में सर से प्राप्त सहयोग अतुल्य है। सर के ही मार्गदर्शन से इस विषय का आकार-प्रकार स्पष्ट होता गया, जिससे शोध-प्रबंध लेखन की प्रक्रिया सहज हो सकी। सर जिस तरह मुझे जीवन के हर मोड़

पर सहयोग और परामर्श देते रहे हैं। उसी प्रकार उन्होंने प्रस्तुत शोध-प्रबंध की तमाम गुत्थियों को सुलझाने में सहयोग दिया। मैं सर का हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ।

महिलाओं के सवाल पर दो टूक बात करने वाली प्रसिद्ध कथाकार और आलोचक सुधा अरोड़ा जी मेरे लिए माँ सरीखी हैं। सुधा अरोड़ा जी सिनेमा और सिने-पत्रकारिता में गहरी रूचि रखती हैं। इस विषय पर समय-समय पर उनसे परामर्श और शोध सम्बंधित सामग्रियां प्राप्त होती रहीं। सुधा जी के इस सहयोग और स्नेह के लिए हृदय से आभारी हूँ।

प्रहलाद अग्रवाल जी से विषय के अलग-अलग आयामों पर होने वाली चर्चाओं से बहुत सहयोग प्राप्त हुआ। उन्होंने अपने अलमस्त अंदाज में शुरूआती सिनेपत्रकारिता की कई दुर्लभ जानकारी दी। प्रहलाद सर के इस सहयोग के लिए हृदय से आभार ज्ञापित करता हूँ।

शोध-प्रबंध लेखन में मेरे मित्रों ने हरसंभव सहयोग दिया। मैं ऐसी मित्र-मंडली को पाकर गौरवान्वित महसूस करता हूँ। मेरे मित्र राकेश कुमार सिंह, बिजय कुमार प्रसाद, अभिषेक प्रताप सिंह, विवेक कुमार दुबे, मनोज कुमार मौर्या, प्रमोद कुमार शर्मा, विजयलक्ष्मी सिंह 'चंदेल' और दुर्गाराव वाणावतु का विशेष आभारी हूँ। इन्होंने समय-समय पर मेरे मनोबल को बनाए रखने में सहयोग दिया।

विषय प्रवेश

प्रस्तुत शोध प्रबंध का विषय हिंदी सिने-पत्रकारिता का उद्भव एवं विकास है। इस शोध प्रबंध का उद्देश्य हिंदी सिने पत्रकारिता के उद्भव और विकास पर शोधपूर्ण सामग्री प्रस्तुत करने की है। हिंदी सिनेमा की हिंदी पत्रकारिता के उत्स और उसके विकास की खोज और विश्लेषण करना प्रस्तुत शोध प्रबंध का लक्ष्य है।

सिनेमा के विषय में माना जाता है कि फिल्मकार दर्शक से कुछ कहना चाहता है। यह बात अलग है कि अपनी बात को रखने, कहने या प्रस्तुत करने के लिए वह सिने-माध्यम का उपयोग किस तरह करता है या कर पाता है। साथ ही सिनेमा को ज्यादा ग्राह्य व संप्रेषणीय बनाने के लिए पत्रकारिता इसके विषय में क्या और कैसे कहती है, यह भी विचारणीय है। इस प्रक्रिया में पत्रकारिता (सिने-पत्रकारिता) द्वारा जनहित का कितना ख्याल रखा जाता है और व्यवसायिकता को कैसे साधा जाता है, इसलिए यह मुद्दे भी प्रमुख सवाल के रूप में प्रस्तुत होते हैं। जिस तरह आधुनिक युग और आधुनिकता को व्याख्यायित करने के लिए पत्रकारिता एक महत्वपूर्ण प्रत्यय है, उसी प्रकार सिनेमा को समग्रता (इतिहास, समीक्षा और सूचना) से जानने और विश्लेषित करने में सिने-पत्रकारिता एक महत्वपूर्ण पदावली है।

पत्रकारिता को अंग्रेजी में जर्नलिज्म कहा जाता है। यह 'जर्नल' शब्द से व्युत्पन्न हुआ शब्द माना जाता है, जिसका अर्थ है- 'दैनिक विवरण'। 'जर्नल' फ्रेंच भाषा का शब्द है। हिंदी में जर्नलिज्म का समानार्थी शब्द पत्रकारिता है, जिसकी उत्पत्ति 'पत्र' शब्द से हुई है। पत्र का अर्थ भी वही है- सूचना या संदेश वहन करने वाला उपकरण।

समाचार-पत्र आरंभिक काल में 'पत्र' के ही पर्याय थे। परंतु अंग्रेजों के आगमन के बाद, जब अंग्रेजी में दैनिक 'न्यूज पेपर' और साप्ताहिक, मासिक जर्नल छपने लगे, तो 'न्यूज पेपर' समाचार-पत्र एवं जर्नल के प्रकाशन को पत्रकारिता कहा जाने लगा। प्रोफेसर एडविन एमरी ने पत्रकारिता को इस प्रकार परिभाषित किया है- "पत्रकारिता अल्प निश्चित कालावधि में समाचारों तथा विचारों के अभिधारक एवं सर्जनात्मक विधाओं द्वारा व्यापक स्तर पर वृहत्तम संप्रेषण की कला है। इसके माध्यम से विश्व के समग्र वाङ्मय, सामयिक लोकजीवन के परिवर्तन चक्र, सभ्यता तथा संस्कृति के विविध आयामों तथा ज्ञान-विज्ञान युक्त विचार श्रृंखला को समझने और अनुभव करने की गहरी निर्लिप्त दृष्टि और वैज्ञानिक तर्क प्रज्ञा प्राप्त होती है।"¹

1- अंकित, के. राय अनिल, पत्रकारिता और पत्रकारिता जगत, दिल्ली : विश्वविद्यालय प्रकाशन, पृ. 1-2

प्रोफेसर एडविन एमरी ने भी पत्रकारिता की व्यापक परिभाषा प्रस्तुत की है। निश्चित रूप से पत्रकारिता द्वारा अभिव्यक्ति को संप्रेषणीय बनाकर जनमानस तक पहुँचाया जाता है, ताकि वह प्रबुद्ध और आत्मचेतस बन सके। पत्रकारिता की इसी जनसंप्रेषणीय व्यापकता की ओर डॉ. राम प्रकाश एवं डॉ. सुधीन्द्र कुमार ने संकेत किया है-“जनसूचना, जनसंचार, जन-रंजन अथवा जन-साधारण तक समाचार विचार-संप्रेषण हेतु संचालित माध्यमों (समाचार-पत्र/पत्रिका/आकाशवाणी/दूरदर्शन आदि) के संपादन, मुद्रण, प्रकाशन, संयोजन, प्रसारण आदि की विधा या कला पत्रकारिता है। पत्र-पत्रिकाओं से संबद्ध पत्रकारिता आदि का भी अपना विशेष महत्व है। संक्षेप में पत्रकारों के आदर्श, कार्य आदि की सामूहिक संज्ञा पत्रकारिता है।”² इन्हीं विद्वानों ने फिल्म पत्रकारिता को भी पूरी महत्ता से व्याख्यायित किया है। इनके अनुसार-केवल चलचित्रों और उससे संबद्ध विषयों, व्यक्तियों पर आधारित सामग्री का संकलन, संपादन, प्रकाशन, समीक्षा, समालोचना, विवेचन-विश्लेषण आदि सिने-पत्रकारिता में शामिल हैं। यह सही है कि सिनेमा के जन्म के समय स्वतंत्र सिने-पत्रकारिता का अस्तित्व नहीं के बराबर था। वस्तुतः मुख्यधारा की पत्रकारिता के अनुषंगी के रूप में इसका अस्तित्व बहुत दिनों तक बना रहा और यह क्रमशः अपने स्वतंत्र व्यक्तित्व की आधारशिला रखने की कोशिश करती रही।

फिल्म पत्रकारिता : परिभाषा और स्वरूप

फिल्म पत्रकारिता की प्रत्यक्ष परिभाषा किसी पुस्तक में नहीं दी गयी है। इसलिए फिल्म या चलचित्र के लिए दी गई परिभाषा से फिल्म पत्रकारिता को परिभाषित करने का प्रयास किया जाएगा। प्रसिद्ध फिल्म विद्वान डॉ. रोजर्स ने चलचित्र को इस प्रकार परिभाषित किया है-“चलचित्र किसी क्रिया को उत्प्रेरित करने के लिए एक उत्तरोत्तर अनुक्रम में प्रक्षेपित छायाचित्रों की एक लंबी श्रृंखला द्वारा विचारों का एक संप्रेषण माध्यम है।”³ फिल्म या सिने-पत्रकारिता की अतीत से लेकर भविष्य तक की यात्रा चलचित्र के उद्भव एवं विकास से संबंधित है। जिस तरह से, जब तक छपाई का आविष्कार नहीं हुआ था, तब तक पत्रकारिता का उद्भव भी संभव नहीं हो पाया था, उसी प्रकार चलचित्र का भी फोटोग्राफी से अन्योनाश्रित संबंध रहा है। चलचित्र और फोटोग्राफी के संयोग से ही सिने-पत्रकारिता का होना संभव हो सका, संभवतः यही कारण है कि आज भी फोटो (चित्र) को फिल्म पत्रकारिता में महत्व दिया जाता है। निश्चित रूप से सिने-पत्रकारिता की विकास-यात्रा फोटोग्राफी और सिनेमा के विकास से जुड़ा हुआ है। पत्रकारिता का यह प्रकार अपनी विराटता में सिनेमा एवं फोटोग्राफी दोनों को एक साथ लिये हुए है।

2-रामप्रकाश, सुधीन्द्र कुमार. (2004). पत्रकारिता संदर्भ कोश. दिल्ली : वाणी प्रकाशन. पृ. 67

3- डॉ. तिवारी अर्जुन. संपूर्ण पत्रकारिता, चतुर्थ संस्करण (2014), विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी पृ. 403

यही कारण है कि सिने-पत्रकार से एक साथ सिनेमा एवं फोटोग्राफी दोनों की समझ की अपेक्षा की जाती है, जैसे खालिद मुहम्मद, जो एक साथ सिनेमाकार, पत्रकार एवं फोटोग्राफर सब हैं।

वस्तुतः सिने-पत्रकारिता, सिनेमा से संबंधित पत्रकारिता है, जिसमें फिल्म की समस्त कलाओं की व्याख्या, विमर्श एवं बाजार की माँगों का समुच्चय पढ़ने, देखने और सुनने को मिलता है। सिनेमा अपनी मोहक छवि एवं प्रस्तुति से लोगों का भरपूर मनोरंजन करता है और सिने-पत्रकारिता का उसकी मनोरंजकपूर्ण प्रस्तुति एवं उसके कलात्मक रूपों व आयामों की व्याख्या करनी पड़ती है, जिसमें बाजार का दबाव और फिल्मी नायक-नायिकाओं के ग्लैमर का मोह बाधा उत्पन्न करने वाले कारक हैं। फलस्वरूप सिने-पत्रकारिता, मुख्य-पत्रकारिता की तरह अब तक कोई आदर्श प्रस्तुत करने में या गंभीर हैसियत अर्जित करने में सर्वथा असफल साबित रही है। जबकि सिनेमा भी साहित्य की तरह एक जिम्मेदार विधा है। इसे भी उन्हीं जन सरकारों से मुठभेड़ करना होती है, जिनसे साहित्य को करनी होती है। ऐसा करके ही यह सामाजिक सरोकारों का संप्रेषण करते हुए प्रतिबद्ध पत्रकारिता का रूप प्राप्त कर सकती है। लेकिन ऐसी जद्दोजहद कम ही देखने को मिलती है। शायद इसीलिए सिनेमा के प्रति किसी व्यापक कलात्मक एवं विचारात्मक दृष्टि का विकास हमारे यहाँ नहीं हो पाया। आज भी हम पीत पत्रकारिता, पेज श्री पत्रकारिता एवं सिने-पत्रकारिता में फर्क नहीं कर पाए हैं।

पत्रकारिता (मीडिया) को लोकतंत्र का चतुर्थ स्तंभ कहा जाता है। यह लोकतांत्रिक मूल्यों को संप्रेषित एवं स्थापित करने का माध्यम माना जाता है। सिने-पत्रकारिता से भी यही उम्मीद की जानी चाहिए, ताकि सिनेमा के प्रति जनमानस में एक प्रबुद्ध समझ विकसित हो सके। वैसे भी सिनेमा एक संश्लिष्ट कला माध्यम है। खुसरो के शब्दों में इसे 'एक थाल मोती से भरा' कह सकते हैं। इन मोतियों की पहचान जौहरी रूपी सिने-पत्रकार को ही सर्वप्रथम करनी होती है। इसी से पत्रकार की कलात्मक संवेदनशीलता की पहचान हो पाती है।

माइकल एंजेलो की विश्वप्रसिद्ध कृति 'पियेतो' (माँ मेरी की मूर्ति) के मूक क्रंदन एवं आँखों में बेपनाह करुणा को व्याख्यायित करने के लिए जिस तरह एक संवेदनशील कला विवेचक की जरूरत है, उसी तरह 'गान विथ विंड', 'एन अफेयर टू रिमेंबर' (1957), 'कासाव्लांका' (1942), 'नाटिंग हिल' (1996), 'प्यासा', 'कागज के फूल' और 'तीसरी कसम' जैसी फिल्मों को व्यापक पहचान देने के लिए एक सचेत फिल्म पत्रकार (समीक्षक) की जरूरत होती है।

रूपहले पर्दे पर अथवा टेलीविजन पर जो हंसते, गाते, रोते, रुलाते गतिशील चित्र दिखते हैं, वे कौतुहल जगाने वाले होते हैं। कुछ मामलों में ये रहस्यमय एवं कई बार प्रतीकात्मक भी होते हैं। सिने-पत्रकारिता का कार्य

इन प्रतीकों को खोलकर रखना होता है, ताकि सिने-दर्शक चाक्षुष बिंबों की गंभीरता को हृदयंगम कर सके और पूरा सिने आनंद उठा पाए। इसी प्रकार के प्रयासों से एक सिने-पत्रकार सिनेमाई भाषा को लोकतांत्रिक बनाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है जो देश, समाज एवं लोकतंत्र का तकाजा भी है।

आज फिल्म निर्माण का उद्देश्य इफरात धन की कमाई एवं अकूत पूंजी का संयोजन करना है। फिल्मों का निर्माण देश सेवा एवं समाज सुधार के लिए नहीं किया जाता। फिल्मकार की पूरी कोशिश होती है कि कैसे अधिक से अधिक लोगों को लुभाया जाए। इसीलिए वह प्रचार, वितरण, प्रदर्शन एवं पैकेजिंग के लिए सिने-पत्रकारों (सिने मीडियाकारों) को पटाने की कोशिश में लगा रहता है। इन्हीं कारणों से वाणिज्यिक सिने-पत्रकारिता अर्थात् ट्रेड मैगजीनों का प्रादुर्भाव हुआ, जिसमें सिनेमा का मार्केट एवं विज्ञापन पक्ष पर लेख एवं सूचनाएं होती हैं, किंतु अक्सर ऐसी पत्रिकाएं अंग्रेजी भाषा में निकलती हैं। शायद ही कोई ट्रेड पत्रिका हिंदी में हो। हिंदी फिल्म निर्माण एवं व्यापार की भाषा अंग्रेजी है न कि हिंदी। इसमें ऐसे-ऐसे लोग कार्य करते हैं जिन्हें हिंदी बोलना तक नहीं आता। वैसे यह भी सच है कि “बहुत से फिल्म पत्रकारों को ऐसा होने से बड़ी पीड़ा होती रही है। ऐसे ही एक फिल्म पत्रकार थे बद्री प्रसाद जोशी, जिन्होंने फिल्म जगत में अंग्रेजी के खिलाफ मोर्चा ही खोला हुआ था, पचास के दशक में उन्होंने फिल्म उद्योग की पहली हिंदी ट्रेड पत्रिका शुरू की थी ‘सिनेवाणी’* “सन 1999 में संपादक नरेंद्र सरोहा ने जोगेश्वरी से ‘ट्रेड गाइड’ के टक्कर की हिंदी फिल्मी व्यापारिक पत्रिका ‘ट्रेड सिनेमा’ निकाली।”⁴ किंतु ये प्रयास आगे चलकर परंपरा के रूप में विकसित नहीं हो सके, ताकि जिससे हिंदी सिने-पत्रकारिता की गौरवपूर्ण परंपरा विकसित हो पाती।

हिंदी सिनेमा का गढ़ आरंभ से ही बंबई (मुंबई) रहा है, किंतु हिंदी सिने-पत्रकारिता (फिल्म पत्रकारिता) का प्रमुख अड्डा शुरू से ही दिल्ली था, जिसका फिल्म निर्माण से न पहले कोई संबंध था न अब है। हिंदी में निकलने वाली अधिकांश फिल्म पत्रिकाओं का केंद्र आज भी दिल्ली ही है, जिसका कारण यह बताया जाता है कि दिल्ली फिल्म वितरण का प्रमुख केंद्र पहले भी था और आज भी है। फलस्वरूप सिने-सामग्रियाँ (सूचनाएं, तस्वीरें, विज्ञापन इत्यादि) बड़ी आसानी से वहाँ उपलब्ध हो जाती हैं। और इस प्रकार हिंदी सिने-पत्रकारिता का उद्भव दिल्ली में ही हुआ। दिल्ली से निकलने वाली सिने-पत्रिकाओं के स्वरूप को जाहिर करते हुए श्री विनोद तिवारी जी का मानना है-“सफलता और असफलता के बावजूद दिल्ली से प्रकाशित फिल्म पत्रिकाओं

4- डॉ. तिवारी अर्जुन. संपूर्ण पत्रकारिता, चतुर्थ संस्करण (2014), विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी, पृ. 110

* सिने वाणी हिन्दी की एक फिल्मी साप्ताहिक पत्रिका है। यह वर्ष 1956 से मुंबई से लगातार प्रकाशित हो रही है।

के संपादकीय में भी कोई गुणात्मक सुधार या परिवर्तन नहीं आ सका जो देश की फिल्म-पत्रकारिता को कोई स्तरीयता प्रदान करने में समर्थ होता।”⁵

सिनेमा मनोरंजन का माध्यम है और उससे जुड़ी हुई पत्रकारिता भी मनोरंजकपूर्ण ही होती है। मनोरंजन के प्रति इस आस्था एवं विश्वास ने सिनेमा को समाज के यथार्थ से दूर धकेल दिया। सिने-आलोचकों, संपादकों एवं पत्रकारों को सिनेमा सामाजिक सरोकार से नहीं जोड़ पाया। खुद सिने-पत्रकारिता भी किसी प्रतिबद्ध सामाजिक सरोकार से नहीं जुड़ पाई। जबकि सिने आलोचकों, संपादकों एवं पत्रकारों को सिनेमा को समाज के लिए उत्तरदायित्वपूर्ण बनाना चाहिए था, पर वे ऐसा नहीं कर पाए। इसी कारण आज भी कोई जिम्मेदारी सिने-पत्रकारिता में देखने को नहीं मिलती, जिससे सिनेमा द्वारा समाज को उद्देश्यपूर्ण व दूगामी लाभ हो पाता। मार्शल मैकलुहन ने कहा है-“*The medium is message*” अर्थात् “माध्यम ही संदेश है।” जन माध्यम के महत्व को नकारा नहीं जा सकता है। सिनेमा और सिने-पत्रकारिता की चर्चा करते हुए किसी भी तरह के नकार की संभावना एकदम से समाप्त हो जाती है। क्योंकि सिनेमा और पत्रकारिता दोनों स्वयं में जनमाध्यम भी हैं और सूचना के स्रोत भी। आज इन्हें ही जनसंचार का माध्यम समझे जाने का प्रचलन बढ़ रहा है। हर्बर्ट ब्लूमर ने सन 1930 में सर्वप्रथम जनसंचार शब्द का प्रयोग करते हुए समान शब्दावली समूह (Group), भीड़ (Crowd) और जनसमुदाय (Public) में चरित्रगत भेद को स्पष्ट किया और साथ-साथ यह भी कहा कि जनसंचार के माध्यम इन तीनों वर्गों को प्रभावित करने की क्षमता रखते हैं और सिनेमा ऐसा करता भी है।

सिनेमा और सिने-पत्रकारिता, जहाँ स्वयं में संप्रेषण के अलग-अलग माध्यम हैं, वहीं इनमें अन्योन्याश्रित संबंध भी है। जहाँ सिनेमा, पत्रकारिता के लिए मैटर और सूचना है, वहीं पत्रकारिता, सिनेमा के लिए जनता का फीडबैक देने वाला माध्यम है। उसका प्रचार माध्यम है। एक तरह से तिकड़म का पूरा जुगाड़ सिनेमा को पत्रकारिता (मीडिया) से ही प्राप्त होता है। इसीलिए सिनेमा, विज्ञापन और पत्रकारिता का संबंध सिनेमा के जन्म से ही प्रगाढ़ बना हुआ है। स्थिति तो यहाँ तक पहुँच गई है कि जितना धन फिल्म बनाने में लगता है उससे कुछ ही कम धन उसे प्रचारित करने में खर्च किया जाता है। वस्तुतः पत्रकारिता का उपयोग सिनेमाकारों द्वारा ओपिनियन मेकर के रूप में किया जाने लगा है। सिनेमा और पत्रकारिता के संबंध परस्पर इतने प्रगाढ़ हैं कि दोनों विचार, विज्ञापन, सांस्कृतिक, सामाजिक व आर्थिक रूख व लक्ष्य एक दूसरे से प्राप्त करते हैं। आज जनसंपर्क के ये दोनों माध्यम उद्योग के रूप में विकसित हो गए हैं। अमेरिकन फिल्म निर्माण एवं कारोबार के उद्योग के रूप में विकसित हो जाने पर प्रसिद्ध

5- डॉ. तिवारी अर्जुन. संपूर्णपत्रकारिता, चतुर्थ संस्करण (2014), विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी, पृ. 32

अमेरिकी फिल्म पत्रकार जिल नेलमेस ने कहा है-“*The American film industry has been in existence as long as there has been American film. this section looks at now the film industry organized itself into three main divisions in the early ears of this century. division that exists this day- exhibition, distribution and productio.*”⁶

अर्थात् अमेरिकी फिल्म उद्योग उस समय से अस्तित्व में है जब से वहाँ की फिल्में अस्तित्ववान हुई हैं। इसमें यह देखा जाता है कि कैसे यह उद्योग स्वयं को व्यवस्थित रखता है। आजकल इस उद्योग में फिल्मों का निर्माण, वितरण और प्रदर्शन जैसे विभाग शामिल हैं। वितरण एवं प्रदर्शन, दोनों के लिए पत्रकारिता का उपयोग प्रचार माध्यम के रूप में होता है। इलेक्ट्रॉनिक परिवेश में सांस लेने वाली आज की पीढ़ी के लिए पत्रकारिता अब मीडिया के रूप में पहचान बना चुका है। वस्तुतः मीडिया स्वयं में कई प्रारूपों एवं तकनीकियों का समुच्चय है। यह आज एक समूहवाचक भाव बोध के लिए प्रयुक्त होने लगा है।

इस प्रकार सिने-पत्रकारिता का क्षेत्र अत्यन्त व्यापक हो गया है। यह लोगों में सिने जागरूकता पैदा करने के अलावा भी सिनेमा के अनेक पक्षों पर कार्य करती है जो बाजार से अभिप्रेरित होते हैं। विज्ञापन के अलावा भी इसके द्वारा कुछ गंभीर कार्य संपन्न हो जाते हैं जिसे अखबार, रेडियो चैनल, टीवी व इंटरनेट के द्वारा जाना-परखा जा सकता है। इन कार्यक्रमों या पृष्ठों को देखकर (पढ़कर) ज्ञात होता है कि इनमें पर्याप्त गंभीरता है। जैसे विविध भारती का कार्यक्रम ‘पिटारा’। यूँ तो ‘पिटारा’ प्रतिदिन प्रसारित किया जाता है किंतु शुक्रवार का ‘पिटारा’ कार्यक्रम विशेष होता है। इस दिन फिल्म जगत के किसी कलाकार से साक्षात्कार का प्रसारण होता है। साक्षात्कार अत्यन्त ज्ञानवर्धक होता है। इसमें कलाकार अपने जीवन, कैरियर और संघर्ष सब पर चर्चा करता है। यहाँ विविध भारती द्वारा लिए गए ऐसे ही एक साक्षात्कार की चर्चा प्रस्तुत है। यह साक्षात्कार फिल्मकार बी.आर. इशारा का है। इशारा साहब ने बताया कि उन्होंने एक फिल्म ‘जय बाबा अमरनाथ’ का निर्देशन किया। इस फिल्म का निर्माण प्रसिद्ध सिने-पत्रकार बद्री प्रसाद जोशी ने किया। यह वही बद्री प्रसाद जोशी थे जिन्होंने प्रथम हिंदी ट्रेड पत्रिका ‘सिनेवाणी’ का कई साल तक सफल संपादन किया। इस पत्रिका के विषय में बताया गया है कि यह पत्रिका फिल्म उद्योग के बड़े काम की थी। इसे निकालकर और सफलतापूर्वक चलाकर जोशी जी ने जता दिया था कि फिल्म वाले जितनी हिंदी न जानने का रोना रोते हैं, उतने अनजान वे हैं नहीं। अगर ऐसा होता तो ‘सिनेवाणी’ एक दिन न चल पाती। इस प्रकार हम पाते हैं कि यह कार्यक्रम या इस तरह के कार्यक्रम या आयोजन हमेशा बुरे नहीं होते।

⁶- Nemles, Jill. An introduction to film studies. London: Routledge publication. pg. 8

एक पल के लिए हिंदी पत्रकारिता की जगह सिर्फ फिल्म पत्रकारिता की बात करें जिसमें गंभीर सिने चर्चा की जाती रही है। इसलिए प्रस्तुत है 26 जून 2011 के 'डेक्कन क्रानिकल' के अतिरिक्तांक शो बिज के लेख की चंद पंक्तियाँ-

“Bollywoods just don't want to expand their mental horizons or pump up this gray cell no point in curling up with a good (or bad) book. An overwhelming majority of stars even refuse to film scripts. to much trouble so the come old tradition persist. Directors and their assistant 'narrate' what the gist of scripts to the actors. Complete with sound effect, high drama and musical interlocks.”⁷

पूरे पाठ का अनुवाद सार कुछ इस प्रकार है-हिंदी सिनेमा के कलाकार अपना मानसिक धरातल नहीं बढ़ाना चाहते हैं। हिंदी फिल्मों के कलाकार पुस्तकों से दूरी बनाए रखते हैं। यहाँ तक कि जिस फिल्म में काम करते हैं, उसकी पटकथा पर भी ध्यान नहीं देते। यही कारण है कि वे कहानी व संवाद ठीक से आत्मसात नहीं कर पाते, जिससे उनका अभिन्नतम पक्ष कमजोर पड़ जाता है। फलस्वरूप तीव्र एवं अप्रिय ध्वनि माध्यम से अभिनय, कहानी एवं संवाद आदि की कमजोरी छुपाने की कोशिश की जाती है।

यह लेख प्रसिद्ध फिल्म समीक्षक, पत्रकार एवं फिल्मकार खालिद मुहम्मद द्वारा लिखा गया है। उन्होंने प्रस्तुत लेख में पठनीयता की कमी से उपजे कमजोर पक्ष की ओर इशारा किया है। इस प्रकार यह मानना या कहना है कि फिल्म पत्रकारिता में केवल सामान्य मनोरंजनपूर्ण एवं विज्ञापन का ही आयोजन होता है असत्य प्रमाणित हो जाता है, किंतु गंभीरता की मात्रा अत्यंत कम अवश्य दिखाई पड़ती है। फिल्म पत्रकारिता पर धन का दबाव और उसे अर्जित करने का दबाव तो रहता ही है फिर भी कभी-कभी गंभीर सिने चर्चा का हो पाना, सिने-पत्रकारिता के लिए संजीवनी का कार्य करता है, जिससे वह प्रासंगिक भी बनी रहती है। टीवी एवं वीडियो जर्नलिज्म तमाम ग्लैमर के बाद भी कभी-कभी महत्वपूर्ण फिल्मों पर सिने परिचर्चा या समीक्षा अवश्य प्रस्तुत करते हैं।

विचारों की धनी आबादी में सिनेमा अपने उद्भव के सौ वर्ष बाद भी कौतुहल का विषय बना हुआ है, बावजूद इसके यह एक अगंभीर जन संप्रेषण माध्यम माना जाता है। इससे संबंधित पत्रकारिता या मीडिया को निहायत सस्ता एवं स्तरहीन माना जाता है। परंतु ऊपर दिए गए कुछ साकारात्मक उदाहरणों की रोशनी में क्या सच में सिने-पत्रकारिता इतना गैर विचारणीय विषय है? जबकि प्रसिद्ध फिल्मकार एवं गीतकार गुलजार कहते हैं-

⁷-decemchronical. 26 june, 2011

“Don’t look down on Cinema”⁸ वे कहते हैं-‘पुअर लिटेरेचर से पुअर सिनेमा ज्यादा दूर तक जाता है।’(साक्षात्कार कर्ता-किशोर वासवानी)। अर्थात सिनेमा को गैरत से मत देखो... यह गलत है। फिल्म समीक्षक किशोर वासवानी के प्रश्न के जवाब में गुलजार कहते हैं-“आडियो-विजुअल लिटेरेसी होनी चाहिए... जिस तरह आप किताबों को पढ़ने के लिए जाते हैं, उसी तरह आजकल कई जगह सिनेमा का एप्रिसिएशन पाठ्यक्रम चला रहे कालेजों एवं विश्वविद्यालय में भी कई कोर्स चलते हैं, उसमें भाग लेना चाहिए”⁹ बात सही भी है। सिनेमा पर्दे पर लिखा गया गत्यात्मक दृश्य काव्य है। साथ ही एक समेकित कला विधान भी। इसे समझने के लिए अलग से वैचारिक उपक्रम करने होंगे और उपकरण अर्जित करने होंगे। साहित्य के परंपरागत आलोचकीय पैमानों से इसे ठीक से नहीं समझा जा सकता है। क्योंकि सिनेमा दृश्यों में अभिव्यक्त होने वाला जनमाध्यम है। इसलिए बिना दृश्य विधान के व्याकरण को जाने-समझे, यह समझ में आने वाला नहीं है। एक सिने-पत्रकार के लिए भी सिने समझ विकसित करने की आवश्यकता होती है, तभी वह ठीक से अपनी सिने-अभिव्यक्ति कुशलतापूर्वक अभिव्यक्त कर सकेगा।

यह कितना विचित्र परंतु कैसा सत्य है कि एक आयताकार सफेद पर्दे पर प्रकाश व्यवस्था को कुछ इस तरह प्रस्तुत किया जाता है कि एक आभासी दुनिया सामने जगमगाने लगती है और हमारी भावनाओं का साधारणीकरण होने लगता है, जबकि वह सिर्फ एक छल है और जिसे देख रहे होते हैं वह कुछ चरित्रों की आभासी परछाई मात्र है। किंतु इसी परछाई ने लोगों को बावला बना कर रख दिया है। जिन कलाकारों की परछाई पर्दे पर दिखाई पड़ती है दर्शक उनके विषय में, फिल्म की कहानी, गाने और साज आदि के विषय में जानने को उत्सुक होता है। सिने-पत्रकारिता द्वारा दर्शकों की इस सिने जिज्ञासा का शमन किया जाता है। इस तरह लोगों की निर्भरता सिने-पत्रकारिता पर भी हो जाती है। सिनेमा के जिस आयाम पर हमारी समझ कमजोर होती है, सिने-पत्रकारिता उस पर हमारी जानकारी बढ़ाता है। इसे एक उदाहरण द्वारा आसानी से समझा जा सकता है-एक दिन लगभग सभी समाचार-पत्रों के फिल्म पृष्ठ पर एक समाचार छपा-टीवी एवं रेडियो पर दिखाया व बताया गया कि कलर्स टेलीविजन पर नया रियलिटी शो प्रस्तुत किया जाएगा-‘इंडिया हैज टैलेन्ट्स’ जिसमें पूर्व सिने अभिनेता धर्मेन्द्र बतौर जज भाग लेंगे। लोगों का सोचना था कि इस प्रोग्राम में धर्मेन्द्र ही क्यों? बाद में इलेक्ट्रानिक मीडिया एवं समाचार पत्रों से ही पता चला कि धर्मेन्द्र ऐसे ही एक प्रोग्राम में विजेता होकर फिल्मी दुनिया में प्रवेश कर सके थे। बकौल धर्मेन्द्र “*I myself was a successful candidate in 1958... I have still not forgotten those*

⁸- पचौरी, सुधीश. (2009). वाक. दिल्ली: वाणी प्रकाशन. पृ. 16

⁹- पचौरी, सुधीश. (2009). वाक. दिल्ली: वाणी प्रकाशन. पृ. 12

day of my struggle and yearning to become a hero."¹⁰ (मैं स्वयं फिल्मफेयर के प्रतिभा खोज प्रोग्राम का 1958 में...सफल प्रतिभागी रहा हूँ। मैं अपने संघर्ष के वे दिन और हीरो बनने के दौर को अभी तक नहीं भूला।)

इसी तरह सिने-पत्रकारिता द्वारा सिनेमा के विषय में लोगों का मनोरंजन एवं ज्ञानवर्धन होता रहता है। इस सदी के सबसे उन्नत कला माध्यम के रूप में सिनेमा की अपनी मुकम्मल पहचान है। इसमें पेंटिंग, स्केचिंग, संगीत एवं अभिनय को एक साथ परोसा जाता है, इसलिए बिना सिने मैनेजिंग के इतने कला माध्यमों को संभालना आसान नहीं है। जब कभी इन कला माध्यमों में संतुलन की समवृत्ति खंडित हो जाती है तो फिल्म बिखर जाती है। इसीलिए सिने-पत्रकारिता (सिने मीडिया) की भूमिका यहाँ महत्वपूर्ण हो जाती है ताकि वह एक सचेत समीक्षक के रूप में सिनेमाकारों को सचेत कर सके।

विविध भारती पर प्रस्तुत किए जाने वाले प्रोग्रामों में आज के फनकार, आज के मेहमान, बाइस्कोप की बातें और सेल्युलाइड के सितारे में सिनेमा की कलात्मकता एवं वैचारिकता पर पर्याप्त परिचर्चा की जाती है। उदाहरणार्थ विविध भारती पर 30 जून 2011 को रात्रि के 09.30 पर 'आज के फनकार' प्रोग्राम के अंतर्गत प्रस्तुत कार्यक्रम प्रसिद्ध संगीतकार जोड़ी 'कल्याणजी आनंदजी' के साथी आनंदजी पर आधारित था। प्रोग्राम को युनुस खान ने प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में आनंदजी के बहाने हिंदी सिने संगीत के कई तथ्यों की जानकारी प्राप्त हुई। युनुसखान ने के.एल.सहगल, शंकर जयकिशन एवं कल्याणजी आनंदजी के संगीत में धुनों एवं लय-ताल में आए परिवर्तनों को संक्षेप में बताया कि अपने समय की सबसे कामयाब फिल्म नागिन (संगीतकार हेमंत दा) में बांसुरी वादन कल्याणजी ने किया था। बाद में फिल्म 'सम्राट चंद्रगुप्त' से ये दोनों भाई एक साथ काम करने लगे। फिल्म 'उपकार', 'हिमालय की गोद में', 'धर्मात्मा' व 'मुकद्दर का सिकंदर' जैसी फिल्मों में इस जोड़ी द्वारा संगीत दिया गया।

दरअसल रेडियो सिने-पत्रकारिता सिनेमा को बड़ी ही शिद्दत के साथ लेती है। इसीलिए आज भी वह अत्यन्त जनप्रिय माध्यम बना हुआ है। आज भी जब 'रात कटेगी, होंगे उजाले, फिर मत गिरना ओ गिरने वाले, समझौता गमों से कर लो' और 'मेरे देश की धरती' जैसे गीत खेतों में काम करता किसान या कोई अन्य व्यक्ति भग्न हृदय से सुनता है तो आनंद, सबलता और आत्मविश्वास से भर उठता है।

¹⁰- Dasgupta, Ranjan. (2011). The Man's got talent. Cinema plus – The Hindu (Sunday, 26 Jun 2011). pg 14

हिंदी सिने गीतों की समझ बढ़ाने में रेडियो की एक महत्वपूर्ण भूमिका रही है जिसमें किसी गीत के बजने के पहले गीतकार, संगीतकार, गायक एवं फिल्म का नाम अवश्य बताया जाता है। सुरों के अखिल भारतीय कार्यक्रमों में सुरों का भी पर्याप्त परिचय दिया जाता है। ऐसे कार्यक्रमों में क्लासिकल संगीत के दिग्गज भाग लेते हैं।

विविध भारती पर सुबह सात बजे 'संगीत सरिता' नाम का एक संगीत कार्यक्रम प्रस्तुत किया जाता है, जिसमें फिल्मी गीतों से संबद्ध धुनों, स्वरों एवं उसके गायन की बारीकियों की चर्चा की जाती है। इस प्रोग्राम में रागों पर बोलते हुए बताया जाता है कि अमुक राग को किस परिवेश में गाया जाता है और फिल्मों में इस राग का उपयोग किस गीत में किया गया है। जब रेडियो की बात चल रही है और सिने संगीत पर भी चर्चा हो रही है तो अमीन सयानी द्वारा प्रस्तुत सिने-संगीत प्रोग्राम 'बिनाका गीतमाला' की लोकप्रियता को कौन भुला सकता है। अमीन साहब के प्रस्तुतीकरण के नायाब अंदाज ने सिने संगीत श्रोताओं को अभिभूत कर दिया था। इस तर्ज पर आज भी कई सिने संगीत कार्यक्रम पेश किए जाते हैं।

सिनेमा से संबंधित मसालेदार खबरों को तो समाचार-पत्रों द्वारा परोसा जाता ही है किंतु कभी-कभी कुछ महत्वपूर्ण सिने खबरें भी इनके द्वारा प्राप्त हो जाती हैं। उदाहरण के लिए हिंदी दैनिक वार्ता द्वारा दी गयी यह खबर.. "महान फिल्मकार और अभिनेता गुरुदत्त की कालजयी फिल्म 'प्यासा' और बेमिसाल अभिनेता कमल हासन के बेहतरीन अभिनय से सजी फिल्म 'नायकन' को प्रतिष्ठित टाइम मैग्जीन ने सर्वकालीन 100 सर्वश्रेष्ठ फिल्मों में शुमार किया है। इसके अतिरिक्त सर्वश्रेष्ठ परफार्मेंस के लिए राजकपूर (आवारा) और सर्वश्रेष्ठ ध्वनि अंकन के लिए मणिरत्नम की 'रोजा' को भी चुना गया है।"¹¹ इसी खबर में आगे बताया गया है- "ब्रिटेन से आजादी मिलने के बाद भारतीय सिनेमा भी बदलाव के दौर से गुजर रहा था। सत्यजीत राय जहाँ भारतीय कला सिनेमा को नई ऊँचाई दे रहे थे, वहीं राजकपूर (आवारा), महबूब खान (मदर इंडिया) और विमल राय (दो बीघा जमीन) ने अपनी सिने कृतियों से भारतीय जनमानस को झकझोर दिया था। ऐसे समय में गुरुदत्त की एक अनाम कवि के ऊपर बनी फिल्म 'प्यासा' ने भारतीय सिनेमा को एक उच्च स्तर तक पहुँचा दिया था।"¹²

समाचार-पत्रों को तत्कालिकता के दबाव में काम करना पड़ता है, जिससे विचार की वह सघनता एवं सृजनशील भाषा का प्रयोग कम ही हो पाता है, फिर भी सीमित समय में कभी-कभी पर्याप्त संप्रेषणीयता के साथ सर्जनात्मकता के भी दर्शन हो जाते हैं। ऐसे बेहद दबाव व तनाव के समय में लघु पत्रिकाओं का प्रयास स्तुत्य है। ये पत्रिकाएं चाहे सिनेमा की हों या साहित्य की, सबमें सिनेमा की गहन मीमांसा की जाती है। बानगी के तौर पर

¹¹-वार्ता. हिंदी दैनिक. 22 अप्रैल 2012

¹²-वार्ता. हिंदी दैनिक. 22 अप्रैल 2012

‘स्लम डाग मिलेनियर’ को ऑस्कर मिलने पर सुधीश पचौरी की यह टिप्पणी प्रस्तुत है-“गुलजार को ‘स्लम डाग मिलेनियर’ फिल्म के गीत ‘जय हो’ के लिए आस्कर से सम्मानित किया गया। इस सम्मान में फिल्म के संगीतकार ए.आर.रहमान की भी सहभागिता रही।...गुलजार ने फिल्मी गीत की लिखित परंपरा में नए मुहावरे जोड़े हैं। उनके गीत अलग से पहचाने जाते हैं। वे विमल राय की बंदिनी के लोक शैली के गीत ‘अबके बरस भेज भैया को बाबुल’ से लेकर फिल्म ओमकारा के ‘बीड़ी जलायले’ जैसे रेंप गाने भी लिखते रहे हैं। स्लमडाग का ‘जय हो’ गीत तीसरी दुनिया के निम्नजीवी वर्गों की दुर्दमनीय उम्मीदों का जयघोष है। यह भाव तीसरी दुनिया के समूचे साहित्य की आवाज है। संघर्ष, उम्मीद और उम्मीद...साहित्य में इसे आशावाद कहा जाता है। गुलजार के गीत फिल्मों में नई कविता के मुहावरे रचते हैं।...गुलजार के पास उर्दू, पंजाबी, हिंदी सब का रस है। वे अपने गीतों में जिस तरह के उपमान लाते हैं वे नई कविता की कलगी बाजरे से कुछ ज्यादा की स्थापना करते हैं।”¹³

हिंदी साहित्य की पत्रिकाओं में फिल्मों की वैचारिकी पर लगातार चर्चा होती रहती है, जिसके अंतर्गत फिल्मों के गीत, संवाद एवं दृश्य विधान के साथ सिनेमा एवं साहित्य के संबंधों पर भी गहन छानबीन प्रस्तुत की जाती है-“कृष्ण चंदर उन मुट्ठी भर साहित्यिक दिग्गजों में से एक थे जिन्होंने भारतीय फिल्म उद्योग को अपनी प्रतिभा से सजाया व संवारा। उन्होंने तकरीबन दो दर्जन फिल्मों के लिए पटकथा और संवाद लिखे। इनमें से धरती के लाल, आंदोलन, एक दो तीन, ममता, मनचली, शराफत, दो चोर और हमराही जैसी फिल्मों को बाक्स ऑफिस पर कामयाबी भी मिली। फिल्म धरती के लाल और शराफत उनकी कहानियों पर बनी हैं।...कृष्ण चंदर का फिल्म लेखन उनके साहित्यिक लेखन के साथ-साथ चलता रहा। वे साल 1970 से 1976 यानी छह वर्ष की अवधि तक फिल्म राइटर्स एसोसिएशन के अध्यक्ष भी रहे। इस दौरान उन्होंने फिल्म लेखकों के कल्याण के लिए कई महत्वपूर्ण कार्य किए।...कृष्ण चंदर ताउम्र प्रगतिशील, मानवतावादी रहे। समाज के दलित, दमित, शोषित वर्गों के हक में उनकी कलम हमेशा संवेदनशील रही।”¹⁴

इसके साथ कुछ हिंदी पत्रिकाएं ऐसी भी हैं जिनका सिनेमा पर विशेषांक भी निकला। जैसे प्रगतिशील वसुधा, लमही, हंस एवं मीडिया विमर्श आदि। इन पत्रिकाओं में सिनेमा के सभी पक्षों पर विस्तार से चर्चा की गई है। इसमें सिनेमा की रूपरेखा भी प्रस्तुत की गई है। इसी क्रम में कभी-कभी सर्जनात्मक संसार के बड़े-बड़े लोगों की टिप्पणी भी दिख जाती है। ऐसी एक टिप्पणी उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचंद की है-“साहित्य ऊंचे भाव, पवित्र भाव अथवा सुन्दरम को अपने साथ लाता है। पारसी ड्रामे, होली और कजली, बारहमासी, चित्रपट आदि साहित्य नहीं

¹³-पचौरी, सुधीश. (2005) वाक. अंक-5. पृ.5

¹⁴-हंस, नवंबर, 2014. जाहिद खान. पृ. 68

है, क्योंकि इन्हें सुरुचि से कोई प्रयोजन नहीं है। सिनेमा में वही तमाशे चलते, खूब चलते हैं, जिनमें तुच्छ भावनाओं की विशेष वृत्ति कराई जाती है। साहित्य दूध होने का दावेदार है, सिनेमा ताड़ी या शराब की भूख शांत करता है।.... सिनेमा जनरुचि के पीछे चलता है। डायरेक्टर ऊँचे भावों से भरी फिल्म बनाकर हानि उठाता है लेकिन जब वह बजारू ढंग की फिल्म बनाता है तो उसे खूब मुनाफा होता है। साहित्य और सिनेमा का मेल कठिन है। हिंदी के कई साहित्यकार सिनेमा की उपासना में लगे हैं। देखना यह है कि सिनेमा इन्हें बदल देता है या ये सिनेमा की कायापलट कर देते हैं।”¹⁵

इतने बड़े उद्धरण की वजह यह है कि मुंशी प्रेमचन्द सिनेमा को किस तरह देख रहे थे और सिनेमा साहित्य को किस तरह प्रभावित कर रहा है। दो अलग-अलग माध्यम कथा को संप्रेषित करने के लिए जो बिंब तैयार करते हैं। उसके परस्पर स्वरूप में कैसी व कितनी समानता है? सिनेमा से संबंधित खबरें फिल्मी पत्रिकाओं के अतिरिक्त समसामयिक पत्रिकाओं में भी प्रकाशित किए जाते हैं, जिसमें गॉसिप का अंश कुछ ज्यादा ही होता है, इसी प्रकार के खबरों को विद्वतजन हल्की और सेंसलेस खबरें मानते हैं, किंतु तत्कालीन व सस्ते मनोरंजन में इनका होना स्वीकार करते हैं, जिसका विशेष महत्व होता है, जिसका अपना पाठक वर्ग होता है। प्रस्तुत है ऐसे ही कुछ उदाहरण-“कभी समय था, जब ‘जय संतोषी माँ’ सिनेमाघरों में रिलीज होती थी तो सिनेमाघर के बाहर संतोषी माँ की मूर्ति स्थापित कर दी जाती थी, जहाँ भक्तगण बाकायदा पूजा पाठ करते थे।... अब एकता कपूर ‘रागिनी एम.एम.एस.रिलीज करती हैं जो कुछ सिनेमाघरों में बाकायदा पलंग लगवाती है, जिसके गद्दे पर सफेद चादर बिछी होती है और लिखा होता है-यही थी रागिनी।’ इंतहा है विद्रूपता की। लेकिन शायद एकता कपूर को अहसास है कि जिस तरह की विकृत समझ की फिल्म उन्होंने बनवाई है, उसे स्वीकार करने के लिए दर्शकों के सौंदर्य बोध को विकृत करना जरूरी है।”¹⁶

इधर कुछ फिल्में- देहली बेली, इश्किया, ओमकारा और तनु वेड्स मनु रिलीज हुई हैं, जिनमें यौनिकतामूलक शब्दों एवं गालियों का प्रयोग हुआ है, जिसे कदापि उचित नहीं ठहराया जा सकता। परंतु फिल्मकार अनुराग कश्यप की कुछ दूसरी मान्यता है, “मैं लोगों द्वारा जिस भाषा को सुनता हूँ, उसी को फिल्मों में प्रयोग करता हूँ। मेरी फिल्में संभ्रांत वर्ग के लिए नहीं हैं। इसीलिए मेरी फिल्मों में हमेशा सर्वसाधारण की भाषा का प्रयोग होता रहेगा।”¹⁷ ऐसे भोले तर्क पर क्या कहा जाए? इस तरह के प्राकृतिक यथार्थ प्रेमी फिल्मकार एवं इसका

¹⁵-राय, ऋत्विक् (संपादक लमही). लमही (जुलाई-सितंबर, 2010). पृ. 2

¹⁶-शुक्रवार, 27 मई से 02 जून, 2011, संपादक विष्णु नागर

¹⁷-टाइम्स ऑफ इंडिया, 03 जुलाई, 2011, पृ. 12

समर्थन करने वाले पत्रकार सिनेमा एवं सिने-पत्रकारिता को जिस दिशा में ले जाना चाहते हैं उसका अहसास होने लगा है।

फिल्मों से संबंधित खबरें एवं विश्लेषण मुख्यधारा की पत्रिकाओं, साहित्यिक पत्रिकाओं, फिल्म पत्रिकाओं एवं आर्थिक पत्रिकाओं द्वारा प्रस्तुत किये जाते हैं। परंतु सामान्य पाठक-दर्शक (टी.वी.के संदर्भ में) को जिस तरह की सिने सामग्री परोसी जाती है वह अक्सर अधकचरा एवं सनसनीखेज होती है, जिससे कोशिश करके भी परिमार्जित सोच विकसित नहीं की जा सकती। मुख्यधारा की पत्रिकाओं में अक्सर पाया जाता है कि राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक और यहाँ तक कि खेल संबंधी खबरें भी सारगर्भित एवं विश्लेषणपरक होती हैं, परंतु फिल्म पृष्ठ पर आते-आते सारी गंभीरता हवा हो जाती है। उदाहरण के लिए इंडिया टुडे (16 जनवरी, 2008) के फिल्म पृष्ठ पर छपी इस खबर को लें, जिसमें 'कमसिन आकर्षण' शीर्षक के अंतर्गत समाचार की भाषा इस प्रकार है- "एक तरफ नायक उम्रदराज होते गए तो नायिकाएं कमसिन। कुल जमा 16 साल की हंसिका मोटवानी ने आपका सुरूर से सबका सुरूर बनने का रास्ता तय किया, तो 19 वर्षीया जिया खान ने निःशब्द में 64 साल के अमिताभ बच्चन को लुभाया यानी क्रेडल स्नेचिंग (अपने से छोटे साथी से परिणय) युवा बने रहने का सबसे कारगर तरीका बनता नजर आया।"¹⁸ वैसे यह खबर तो पूरी तरह गॉसिप है ही इससे किसी तरह सारगर्भिता की उम्मीद करना बालू से तेल निकालने जैसा है। 'सबका सुरूर बनना' और अमिताभ बच्चन को लुभाया यानी 'क्रेडल स्नेचिंग' जैसे शब्द इसे निरर्थक व चटपटा ही बना पाते हैं। कलाकारों के अभिनय, सिनेमैटोग्राफी, संवाद एवं कहानी को नकारने के पीछे कौन सी मंशा काम करती है? निःशब्द बोलड विषय पर बनी हुई फिल्म है, जिसमें जिया खान ने ठीक-ठाक काम किया है, किंतु उसके लिए लुभाया जैसा शब्द सारे किये कराये पर पानी फेर देता है।

हिंदी की पहली फिल्म 'राजा हरिश्चन्द्र' (1942) से ही प्रकारान्तर से सामाजिक समस्याओं को फिल्मकार द्वारा उठाए जाने का संकेत प्राप्त होता है। प्रारम्भिक फिल्मों में स्वतंत्रता संघर्ष का सवाल सीधे-सीधे नहीं आया है। क्योंकि गुलाम भारत में अभिव्यक्ति की आजादी नहीं थी। ब्रितानी हुकूमत की दमनकारी नीतियों से देश दबा हुआ था। इसीलिए देशभक्ति, सत्य, प्रेम व अहिंसा जैसे मानवीय मूल्यों का अभिव्यक्ति के उपकरण के रूप में उपयोग करते हुए धार्मिक फिल्में बनती रहीं। सन 1919 में श्री सम्पत, श्री माणिक लाल और श्री भोगीलाल पटेल के सामूहिक प्रयास से कोहनूर फिल्म कंपनी की स्थापना हुई। "इस कंपनी ने भारतीय सिनेमा, खास तौर पर

¹⁸-'कमसिन आकर्षण', इंडिया टुडे, 16 जनवरी, 2008, संपादक प्रभु चावला, पृ. 72

सामाजिक चित्र निर्माण में क्रांति ला दी। प्रस्तुत कंपनी द्वारा पहली फिल्म 'गुलबकावली' का निर्माण किया गया, जो सामान्य सिने परंपरा से भिन्न प्रकार की थी। यह एक प्रगतिशील फिल्म थी, जिसकी नायिका जुबैदा थी।¹⁹

हिंदी सिने-पत्रकारिता द्वारा इस फिल्म पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया गया, जबकि यह वह पहली फिल्म है, जिसमें स्त्री अस्मिता को यथार्थवादी ढंग से प्रस्तुत किया गया। उस समय के समाचार पत्रों में प्रस्तुत फिल्म पर सार्थक बहस का न मिलना निराशापूर्ण है।

सिने विकासयात्रा में ओरियंटल फिल्म मैनुफैक्चरिंग कंपनी का विशेष योगदान रहा है। इस कंपनी की स्थापना श्री सुचेत सिंह ने की थी। ध्यातव्य है कि ये वही सुचेत सिंह थे जिन्होंने चार्ली चैपलिन के साथ काम किया था। इनके द्वारा 'शकुंतला' जैसी फिल्म का निर्माण किया गया। अपने समय की यह एक कामयाब फिल्म थी। सुचेत सिंह के प्रतिरोधी चरित्र ने उनके सिने कर्म को भी प्रभावित किया। इन्होंने 9 अगस्त 1920 को लोकमान्य तिलक की जलती चिता का फिल्मांकन करके उसे फिल्म में शामिल किया। दरअसल यह उस समय का एक क्रांतिकारी कदम था। सिनेमा की इतनी क्रांतिधर्मिता के बाद भी सिनेमा एवं सिने-पत्रकारिता को कमतर मानना कभी-कभी दुभाग्यपूर्ण प्रतीत होता है।

प्रारंभ से अब तक सिनेमा मनोरंजन का प्रधान माध्यम बना हुआ है। पूरे देश में अलग-अलग भाषाओं में फिल्में बनती हैं। 'केंद्रीय फिल्म प्रमाणन बोर्ड' के अनुसार सन 2009 में कुल 1288 फिल्में देश में बनीं। अकेले हिंदी में प्रतिवर्ष 250-300 फिल्में बनती हैं। अरबों रुपयों का व्यापार फिल्मों के माध्यम से होता है। परंतु इतनी बड़ी अर्थव्यवस्था से व्युत्पन्न कलात्मक उत्पाद को समझने की तमीज भारतीय दर्शकों में अभी तक विकसित नहीं हो पाई है। आज भी मारधाड़, सेक्स और भोंडी कॉमेडी वाली फिल्में सफल होती हैं। क्योंकि दर्शक द्वारा ऐसी ही फिल्में पसंद की जाती हैं। यहाँ सिने-पत्रकारिता की भूमिका महत्वपूर्ण हो जाती है। जनरुचि परिमार्जन की दिशा में उसे जो प्रयास करने चाहिए थे, अपनी इस जिम्मेदारी को वह पूरी तरह नहीं निभा सकी। परंतु रेडियो ने सिने-पत्रकारिता को एक खूबसूरत मुकाम पर अवश्य पहुंचा दिया। विविध भारती का योगदान इस संदर्भ में सर्वथा अत्यंत महत्वपूर्ण है। कभी-कभी समाचार-पत्रों द्वारा भी गंभीर सिने चर्चा हो जाती है। जैसे आजकल देखने में आ रहा है कि बहुत सी हॉलीवुड फिल्म कंपनियों द्वारा भारतीय पृष्ठभूमि वाली फिल्में बनाई जा रही हैं जिन्हें भारत में शूट किया जाता है। परंतु ऐसा क्यों हो रहा है, इस प्रश्न का उत्तर फिल्म अभिनेत्री फरीदा पिंटो इस प्रकार देती हैं—*"I guess some of the credit should go to Slumdog Millionaire and of course primarily India's*

¹⁹-भारतीय सिने उद्योग, श्रीधर शास्त्री, पृ. 36

booming economy... growing economy has got them interested in our stories.. apart from that, Hollywood studies have realized that we are financially sound and able to invest not just our films but also in international project.”²⁰

(अनुवाद-मुझे लगता है कि इस संदर्भ में कुछ योगदान तो स्लमडॉग मिलेनियर को देना चाहिए और निःसंदेह भारत के आर्थिक विकास की इसमें सबसे महत्वपूर्ण भूमिका है।....हमारी आर्थिक समृद्धि हॉलीवुड वालों की हमारी कहानियों में रुचि जगाती है...उन्हें लगने लगा है कि हम न केवल अपनी फिल्मों में निवेश कर सकते हैं बल्कि अंतरराष्ट्रीय फिल्मों की परियोजनाओं में भी निवेश कर सकते हैं।

सिनेमा की पूरी मैकेनिक्स बहुत जटिल है किंतु राजनीतिक, आर्थिक एवं खेल समाचारों का विश्लेषण जिस तरह से होता है उस तरह सिनेमा की रचनाधर्मिता पर शायद ही चर्चा हो पाती है। अपवाद हो सकते हैं, किंतु अपवाद नियम नहीं हो सकते। खासतौर पर प्रिंट मीडिया एवं टीवी द्वारा शायद ही गंभीर सिने चर्चा की जाती हो।

सिनेमा एक जादू है, एक कला है, एक सशक्त जनसंप्रेषण माध्यम है, जिसे समझना दर्शक के लिए आवश्यक है और इसे समझाने की जिम्मेदारी सिने-पत्रकारिता की है। सिने पत्रकारों को पटकथा, गीत, संगीत एवं दृश्य बोध की चर्चा करनी चाहिए ताकि सिने समझ का दायरा व्यापक हो सके। इस तरह के प्रयास विविध भारती द्वारा ‘सेल्युलाइड के सितारे’, ‘आज के फ़नकार’ और ‘बाइस्कोप की बातें’ जैसे कार्यक्रमों के माध्यम से किए जा रहे हैं। यह विविध भारती ही है जो बताती है कि पुरानी फिल्म ‘नागिन’ में बीन की आवाज ओरिजिनल नहीं है बल्कि कल्याणजी द्वारा वायलिन जैसे वाद्य यंत्र द्वारा इसे व्युत्पन्न किया गया था। प्रस्तुत शोध प्रबंध के विभिन्न अध्यायों में सिनेमा और सिनेमाई पत्रकारिता के उभरते-पनपते संबंधों की तलाश की जाएगी। साथ ही इन संबंधों के उत्स से लेकर आज तक की स्थिति पर भी दृष्टिपात किया जाएगा।

²⁰-इंडिया टाइम्स, अंक 22/08/2011

प्रथम अध्याय

विश्व सिने-पत्रकारिता का इतिहास

भारत में सिनेमा का आगमन विदेशियों के माध्यम से हुआ। हम आज भी तकनीकी एवं सिने-विषय के लिए विदेशी सिनेमाकारों और सिनेमा का अनुकरण करते पाए जाते हैं। भारतीय सिनेमा का इतिहास पाश्चात्य सिनेमा से गहराई से जुड़ा हुआ है। इसलिए इस अध्याय में विश्व सिनेमा और उसकी पत्रकारिता का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया जाएगा।

वैज्ञानिक चेतना व संसाधन के विकास से सिनेमा का गहरा संबंध है। इस विधा के साकार होने में 'सिल्वर नाइट्रेट' और 'सेल्युलोजनाइट्रेड' के साथ जोट्रोपा की महत्वपूर्ण भूमिका है। 'जोट्रोपा' एक ऐसा यंत्र है जो दो शब्दों Zoe (जीवन) और Tropos (गतिशील) से मिलकर बना है। दोनों शब्दों को मिलाकर इसका अर्थ होता है- 'गतिशील जीवन' अर्थात् जिसके माध्यम से स्थिर चित्र गतिशील हो जाए। इस यंत्र का आविष्कार 'विलियम जार्ज हार्नर' ने 1768 ई. में किया।

विलियम जार्ज हार्नर (William George Horner, 1786- 1837) एक ब्रिटिश गणितज्ञ थे। उन्होंने कार्यात्मक समीकरण (Functional Equations), संख्या सिद्धांत (Number Theory), प्रकाशिकी (Optics) एवं सन्निकटन विधि (Approximation Method) पर महत्वपूर्ण कार्य किया। सन्निकटन विधि (Approximation Method) को विकसित करने में दिए गए उनके योगदान को सम्मान देने के लिए इसे हार्नर विधि का नाम दिया गया। इस विधि से संबंधित उनका शोधलेख लंदन के वैज्ञानिक जर्नल (Philosophical Transactions of the Royal Society of London) में 1819 में प्रकाशित हुआ। इसी विधि से जोट्रोप (Zoetrope) को विकसित किया गया।

आगे चलकर जोट्रोप का परिमार्जन किया गया, जिसमें कई वैज्ञानिकों का सहयोग शामिल है जैसे मिल्टन ब्रेडली और बिल्ली ब्रैंड आदि। यदि इस आविष्कार को सिनेमा का आद्यरूप मान लिया जाए तो गलत नहीं होगा। किंतु प्रबंध का लक्ष्य सिनेमा का नहीं सिने-पत्रकारिता के इतिहास का लेखन है। इसलिए चर्चा सिने-पत्रकारिता की ही होगी। सिने-पत्रकारिता का आगमन वैज्ञानिक जर्नलों से हुआ माना जाना चाहिए। यह देखने में आता है कि प्रारंभ में सिनेमा से सम्बन्धित तकनीकी जानकारी का प्रकाशन ऐसे ही जर्नलों में हुआ। इसलिए आद्य सिने-पत्रकारिता के रूप में एलाल्स ऑफ फिलासफी के अंक 6 को माना जा सकता है। क्योंकि इसी में पहली बार

गतिशील चित्र के रूप में सिनेमा का उल्लेख किया गया था। प्रारंभ में सिनेमा से संबंधित उपकरण की रिपोर्टिंग इसी प्रकार के वैज्ञानिक जर्नलों में होती रही।

14 अप्रैल 1896 को सिने-पत्रकारिता का पहला नमूना न्यूयार्क हेराल्ड से प्राप्त हुआ, जिसमें एडिसन के विटास्कोप के विषय में बताया गया था- “Wonderful is the Vitascope. Picture life size and full of colour makes a thrilling show.”¹

इस प्रकार सेल्युलाइड के प्रोजेक्टर द्वारा प्रथम व्यावसायिक चलचित्र का प्रदर्शन कोस्टर बायल संगीत सभागार, न्यूयार्क सिटी में किया गया।

फिल्म निर्माण में कोडक कंपनी की भी अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका रही है। इस कंपनी की स्थापना 1888 ई. में जार्ज ईस्टमैन द्वारा न्यूजर्सी (स.रा.अ.) में की गयी। जार्ज ईस्टमैन ने कैमरे के साथ कई जरूरी प्रयोग किए जिससे उच्च गुणवत्ता के चित्र बन पाए। फलस्वरूप फिल्म निर्माण की राहें आसान हुईं। इन सभी सम्मिलित प्रयासों से क्रमबद्ध कथानक वाली फिल्मों के निर्माण का मार्ग प्रशस्त हुआ। इस क्षेत्र में प्रथम सफल प्रयास एडिसन के कैमरामैन श्री एडविन एस पोर्टर ने सन् 1903 में एक चित्र “लाइफ ऑफ एन अमेरिकन फायर मैन” को बनाकर किया। इस फिल्म के विषय में कुछ बातें बताना आवश्यक प्रतीत होता है। यह फिल्म जनवरी 1903 में प्रदर्शित की गई थी। निर्देशक के रूप में श्री एडविन एस पोर्टर के साथ जार्ज एस फ्लेमिंग का भी नाम लिया जाता है। फिल्म की लंबाई 6 मिनट थी। फिल्म निर्माण के अन्य कार्य श्री एडविन एस पोर्टर ने ही किए थे। इस चित्र में अमेरिकन दमकल के कर्मचारियों को आग में जलते हुए मकान से एक औरत और उसके बच्चे को बचाते हुए दिखाया गया है। अमेरिकन प्रेस में इस फिल्म के बनने से लेकर इसके प्रदर्शित होने तक की चर्चा रही। 15 नवंबर 1902 को न्यूयार्क इवनिंग न्यूज ने इसके निर्माण के दौरान इस शीर्षक से खबर छपी थी- “To save women and put out fire”² अर्थात्- स्त्री की प्राण रक्षा और उसे आग से बचाना।

इसी वर्ष पोर्टर की दूसरी फिल्म बनी और यह दिसंबर 1903 में प्रदर्शित हुई। यह क्रमबद्ध कथानक और सलीके से संपादित की गई फिल्म थी, जिसे प्रथम संपादित मनोरंजनपूर्ण फिल्म कहा गया। फिल्म थी- “दी ग्रेट ट्रेन राबरी” जिसमें ट्रेन में डकैती के दृश्य थे। फिल्म के प्रमुख कलाकार- अल्फर्ड सी. एबाडे, ब्राचोबिली एंडर्सन, जस्प्स डी. बेम्स एवं वाल्टर कैमरान थे। “फिल्म इतिहासकार मानते हैं कि द ग्रेट ट्रेन राबरी अमेरिका की प्रथम

¹- न्यूयार्क हेराल्ड, 14 अप्रैल, 1896

²- ए क्लोज लुक ऑफ न्यूयार्क इवनिंग न्यूज, 15 नवंबर, 1902, कैलिफोर्निया डिजिटल लाइब्रेरी

एक्शन फिल्म है।”³

सन 1990 में इस फिल्म को संयुक्तराज्य अमेरिका के राष्ट्रीय फिल्म पंजीयन में सांस्कृतिक, ऐतिहासिक या सौंदर्यशास्त्रीय दृष्टि से उल्लेखनीय फिल्म के रूप में दर्ज किया गया। दरअसल मूक दौर की फिल्मों के इतिहास में इसे प्रथम सुपरहिट (Blockbuster) फिल्म का दर्जा प्राप्त है।

सिनेमाई पत्रकारिता के लिए 28 दिसंबर 1895 का दिन भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसी दिन पेरिस में सिनेमा का जन्म हुआ था। पेरिस के एक रेखां ग्रेंड कैफे⁴ में एक गाड़ी के पहुंचने की गतिशील तस्वीरें दिखाई गईं 49 सेकेंड लंबे इस चलचित्र का निर्माण, निर्देशन एवं छायांकन लुईस लुमियर ने किया था। फिल्म के प्रमुख कलाकार फ्रंकाइस क्लर्क ओर वेनियट दुवल थे। सोवियत फिल्म संग्रहालय में यह चित्र आज भी सुरक्षित है।

फ्रांस के ही जार्ज मेलिस⁵ (08 दिसंबर 1861 – 21 जनवरी 1938, पेरिस) ने अपने शहर पेरिस में एक स्टूडियो मैनुफैचर डे फिल्म पुअर सिनेमैटोग्राफिक्स (Manufacture de films pour cinematographics-अप्रैल, 1896) स्थापित किया जो बाद में स्टार फिल्म कंपनी (Star Film Company) के रूप में भी प्रसिद्ध हुआ। जार्ज मेलिस ने सैकड़ों चमत्कारिक चित्रों का निर्माण किया। उनकी फिल्मों के पात्र अचानक प्रकट होते और अचानक गायब हो जाया करते थे। जादूगरी के दृश्य सर्वप्रथम उनके द्वारा ही फिल्माए और प्रदर्शित किए गए। कैमरे से डबल एक्सपोजर, सुपरइंपोजिशन, फेड्स डिजाल्वस और वाइप्स आदि का सर्वप्रथम प्रयोग इनके द्वारा ही किया गया। इसीलिए श्री मेलिस ‘ट्रिक फोटोग्राफी’ के जनक कहे जाते हैं। उनकी फिल्में बड़े पैमाने पर पसंद की गईं, जिसमें सिंड्रेला (1889)⁶ और जोन डी आर्क (1900) प्रमुख हैं। पेरिस में उस समय के प्रसिद्ध समाचार पत्रों-ले फिगारो (Le-Figaro स्थापित सन 1826) एवं डेस डिबेट्स (Des Debates Cluster of news papers which sprang into being with the beginning of popular government in 1789) में सिनेमा को चमत्कारिक विधा के रूप में पेश किया जाता रहा।

फिल्म निर्माण एवं प्रदर्शन की हलचल को उस समय के समाचार पत्रों एवं पत्रिकाओं में प्रमुखता से स्थान

³-Norman, Keim. Our Movie Houses: A History of Films Cinematic innovation in Central New York. Syracuse University Press. pg. 17

⁴ग्रेंड कैफे, पेरिस के एक कक्ष ले सालोन इंडेन डू ग्रेंड कैफे (Le salon Indien du Grad cafe) में गाड़ी पहुंचती दिखाई गई है। वर्तमान में यह इमारत 4 बोलेवर्ड डेस कैपुसिनेस (Boulevard Capucines) पर हाटेल स्क्राइब के रूप में खड़ी है। इसी कक्ष को कैफे लुमियर का नाम दिया गया है।

⁵जार्ज मेलिस एक फिल्मकार हैं जिन्हें कथा फिल्म का पितामह कहा जाता है। A History of Narrative film, New York, W W Hortons company by Cook and David A, Pg. 13 ISBN 0393013707

⁶-सिंड्रेला- सिंड्रेला मेलिस की प्रथम प्रमुख सफल फिल्म थी। Malthane, Jaques, Mannone (2008), L'oeuvre de Georges Melies, Paris: Editions de La Martiniere, पृ. 101, ISBN 9782732 437323

दिया जाता रहा। किंतु यह सत्य है कि शुरू से ही समाचार पत्रों में राजनीतिक खबरों की प्रमुखता रही। प्रारंभ से ही सिनेमा को लोकप्रिय मनोरंजन माध्यम माना गया। उसके कौतुहल को ही समाचार के हिस्से के रूप में शामिल किया जाता रहा।

सिने-पत्रकारिता के इतिहास में सन 1911 का साल महत्वपूर्ण माना जाता है। इस वर्ष फरवरी माह में उपभोक्ताओं को ध्यान में रखते हुए विटाग्राफ⁷ स्टूडियो के मालिक जे. स्टुअर्ट ब्लैकटन⁸ (J. Stuart Blackton) द्वारा प्रथम उपभोक्ता पत्रिका (Fan Magazine) “मोशन पिक्चर स्टोरी मैगजीन” निकाली गई। यह पत्रिका सन 1911 से 1977 तक प्रकाशित की गई। इस पत्रिका में सिने कलाकारों के व्यक्तिगत जीवन की खबरें प्रकाशित होती थीं। इसी पत्रिका से व्यवसायिक सिने-पत्रकारिता का भी जन्म हुआ। अपने समय में यह पत्रिका अत्यंत सफल एवं लोकप्रिय रही। इसकी शुरुआत ही 50,000 प्रतियों से हुई जो सन 1914 तक आते-आते 2,00,000 तक पहुँच गई। नियमित सिने-कॉलम की विधिवत शुरुआत भी इसी पत्रिका से मानी जाती है। जे. स्टुअर्ट का स्पष्ट मानना था कि लेखकों को तत्काल मानदेय दिया जाए। इसका परिणाम यह हुआ कि कॉलम लेखक प्रकाशक के साथ नियमित हो गए, जिनमें रैक्स बीच (Rex Beach), बिल कार्लटन (Will Carleton) एवं हार्नियो सी किंग (Hornio C King) जैसे नाम शामिल हैं।

रैक्स बीच, जिनका पूरा नाम रैक्स इलिंगवुड बीच (सितंबर, 1877-1949) था, एक अमेरिकन साहित्यकार एवं पत्रकार थे। उनके साहित्य पर जैक वडन (एक अमेरिकी समाजवादी, जिन्होंने द आयरन हील, द पीपल ऑफ अबायस और वार ऑफ द क्लासेस जैसी पुस्तक लिखी) का प्रभाव देखा जाता है। सिनेमा और सिने-पत्रकारिता के क्षेत्र में इनका योगदान महत्वपूर्ण है। इनकी अनेक रचनाओं पर फिल्में बनीं जैसे- द स्पाइलर्स (1914, निर्देशक- कालिन कंपबेल), फेयर लेडी (1922, मूक फिल्म, निर्देशक केनेथ वेब) एवं द वर्ल्ड इन हिज आर्म्स (1952, निर्देशक राउल वाल्श) आदि।

विल कार्लटन (1845-1912) अमेरिकी कवि एवं सिने पत्रकार थे। सन 1869 में उन्होंने आजीविका की शुरुआत पत्रकार के रूप में की। मात्र 25 वर्ष में वे ‘डेट्रायड वीकली ट्रब्यून’ के संपादक बन गए। इसी तरह हार्नियो सी किंग (1837-1918) भी साहित्यकार, पत्रकार एवं राजनीतिज्ञ थे। सन 1914 में ‘मोशन पिक्चर स्टोरी मैगजीन’ का नाम बदलकर न केवल ‘मोशन पिक्चर मैगजीन’ कर दिया गया, अपितु रणनीति में भी परिवर्तन किया गया।

⁷-विटाग्राफ – अमेरिका में 1897 ई. में स्थापित एक फिल्म स्टूडियो, जिसने कई मूक फिल्मों का निर्माण किया। The Transformation of Cinema 1907-1915, University of California Press, 1990, pg. 23, by Eilseen Broser

⁸-जे स्टुअर्ट ब्लैकटन – एनीमेशन फिल्म के पितामह, न्यूयार्क टाइम्स, 19 अगस्त, 1941

अब इसमें सेलेब्रेटी के विषय में प्रमुखता से लिखा जाने लगा। फलस्वरूप 1919 में इसका वितरण 2,48,845 से बढ़कर 400,000 तक जा पहुँचा। 1925 में इसी प्रकाशन से मोशन पिक्चर क्लासिक का भी प्रकाशन होने लगा। बाद में सन 1941 में मोशन पिक्चर मैगजीन का विलय हॉलीवुड मैगजीन के साथ कर दिया गया। मोशन पिक्चर स्टोरी के एक वर्ष बाद (सन 1912) मैकफैडेन प्रकाशन द्वारा फोटोप्ले नाम की दूसरी व्यावसायिक फिल्म पत्रिका निकाली गई।

फोटोप्ले शुरू-शुरू में ज्यादा सफल नहीं रही किंतु सन 1914 में इसका संपादकत्व जांस क्वार्क के हाथ में आ गया तो इसका कलेवर ही बदल गया। धीरे-धीरे यह सफलता के सोपान चढ़ती चली गई। सन 1922 में इसका वितरण दो लाख से भी ज्यादा बढ़ गया। सन 1930 में इसकी प्रस्तुतियों को पुनः परिवर्तित किया गया। अब यह गॉसिप पत्रिका बन गई। इस परिवर्तन में इन सिने पत्रकारों की विशेष भूमिका रही- हेड हॉपर, वाल्टर विंचेल, संत जोस, शेलाह ग्राहम एवं सायलिवा ऑफ हॉलीवुड आदि। सन 1920 से फोटोप्ले ने वर्ष की महत्वपूर्ण फिल्म को फोटो प्ले पदक सम्मान देना प्रारंभ किया। पत्रिका ने स्टार सिस्टम को भी मजबूत किया। इसने प्रसिद्धि के आधार पर स्त्री एवं पुरुष कलाकारों को सम्मानित करने की परंपरा शुरू की, जिसका आधार उसके अभिनय की गुणवत्ता नहीं, बल्कि प्रसिद्धि थी। प्रसिद्धि जानने के लिए पोलिंग पद्धति का उपयोग किया जाता था जिससे पाठकीयता भी जांच ली जाती थी। अपने समय में यह पुरस्कार बिंग क्रॉस्बी (Bing Crosby), ग्रेयर गारसन (Greer Garsan), हडसन (Hudson), जेम्स स्टीवर्ट (James Stewart) एवं मर्लिन मनरो (Marilgn Monore) आदि को प्रदान किया गया। 1948 में फोटोप्ले पुरस्कार टीवी के कार्यक्रम 'द स्टेव अलेन प्लेमाउथ शो' (The Steve Allen Plymouth Show) में प्रस्तुत किया गया।

फोटोप्ले ने सिने-पत्रकारिता को फोटो पत्रकारिता में परिवर्तित करने का काम किया। पत्रिका के आवरण पृष्ठ पर किसी नायिका या नायक की तस्वीर होती थी। फिल्मी खबरें गल्प (गॉसिप) के रूप में प्रस्तुत की जाती थीं। इससे विश्वसनीयता कमजोर हो गई। किसी भी मीडिया या मीडिया संस्थान में ऐसी प्रवृत्ति जवाबदेही से बचने के लिए अपनाई जाती है, जिसके कारण जन एवं बौद्धिक सरोकार कमजोर हो जाते हैं। इसलिए आवश्यक हो जाता है कि सिनेमा और सिने-प्रवृत्ति की परख के लिए वैश्विक स्तर पर उसकी उपस्थिति की परख की जाए।

1.1 विभिन्न देशों में सिनेमा और सिने-पत्रकारिता

इस खंड में विभिन्न देशों में सिनेमा और सिने-पत्रकारिता का विवरण प्रस्तुत किया जाएगा, जो इस प्रकार हैं-

1.1.1 अमेरिका में सिने-पत्रकारिता

अमेरिका में सिने-पत्रकारिता को स्वाभाविक गति हॉलीवुड के विकास के साथ मिली। इसीलिए यह उचित होगा कि हॉलीवुड के संबंध में संक्षिप्त चर्चा कर लें। सन 1907 की बात है कि 'दी माउंट ऑफ सेंटक्रिस्टो' नाम की एक फिल्म के लिए बाहरी दृश्यों के चित्रण की समस्या सामने उपस्थित हुई। निर्माता अपने सहयोगियों के साथ दक्षिण कैलिफोर्निया राज्य के उपनगर 'हालीवुड' पहुँचे। यह स्थान शूटिंग के लिए अत्यंत सुंदर और अनुकूल साबित हुआ। आज यही लाल जेम्स का उपनगर हॉलीवुड, संसार की फिल्मी राजधानी बना हुआ है। हॉलीवुड फिल्म निर्माण की समस्त सुविधाओं से समृद्ध है। फिल्म निर्माण के लिए यहाँ वन, पर्वत, उद्यान, घाटियाँ, सरिता, सरोवर, झरने, हरी-हरीतिका से युक्त प्राकृतिक दृश्य उपलब्ध हैं, वहीं युग धर्म के अनुकूल वातावरण, युग दौर के समस्त फिल्ड, युग प्रभाव की सारी ओजस्वीयता और आवश्यकता के सारे उपादान अपेक्षित होते हैं।... सागर तरंगों से खेलता हुआ, सरिता सरोवरों-झरनों में स्नान और पर्वत मालाओं से दुलराया हुआ प्रकृति के वैभव का केंद्र 'हॉलीवुड' आधुनिक गतिशील मानव की समस्त भौतिक संभावनाओं और आवश्यकताओं की पूर्ति के सहज-साधन से संपन्न होने के कारण ही विश्व के फिल्म एवं कला क्षेत्र की राजधानी होने का गौरव प्राप्त किए हुए है।

अमेरिका में समाचार-पत्रों का इतिहास बहुत पुराना है। यहाँ का पहला समाचार-पत्र 'बोस्टन न्यूज लेटर' है जिसे जान कैपवेल ने 24 अप्रैल 1704 को निकाला। जान कैपवेल बतौर पोस्ट मास्टर बोस्टन में तैनात थे। उनकी एक किताबों की भी दुकान थी। बोस्टन न्यूज पेपर सन 1732 तक प्रकाशित होता रहा। इसमें इसके समय का इतिहास दर्ज है।

सिने-समाचार की दृष्टि से देखने पर ज्ञात होता है कि प्रारंभ में सिने-विकास को समाचार-पत्रों द्वारा आश्चर्यजनक उपलब्धि के रूप में प्रस्तुत किया जाता रहा, जिसके कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं-

1. ऑल द गैट्स ऑफ हार्सेस⁹(All the Gaits of Horses) - द सन, न्यूयार्क, शनिवार, 18 नवंबर, 1882
2. फोटोग्राफिंग फ्लाइट (Photographing Flights) - न्यूयार्क डेली ट्रिब्यून, रविवार, 16, 1882,

⁹-द सन (नवंबर, 1882), स्रोत : न्यूयार्क पब्लिक लाइब्रेरी, एस्टर लेनाक्स एवं रिल्डेन फाउंडेशन।

3. कोडक कैमरा - न्यूयार्क ट्रिब्यून, 22 अप्रैल, 1889, पृ. 28, खबर-28, कॉलम-6
4. द निटोग्राफ¹⁰ - द साल्ट लेक हेराल्ड, साल्ट लेक सिटी, उटाह, शुक्रवार, मई 29, 1891, पृ. 1, खबर-1, कॉलम-5
5. दिस सिटी हैज ओवर 500 मूविंगपिक्चर शोजः डू यू नो हवाई, चार्ल्स ड्रांटन - द इवनिंग वर्ल्ड डेली¹¹, मैगजीन, शनिवार, जनवरी 16, 1909.

प्रारंभ में ही अमेरिकी समाचार-पत्रों में फिल्म कलाकारों के चित्र प्रमुखता से छपने लगे थे। एक तरह से ये सेलेब्रिटी पत्रकारिता (पेज-3) के प्रारंभिक नमूने हैं-

इसके साथ गंभीर सिने आलेख भी प्रकाशित होते रहे। उदाहरणार्थ इंग्रिड बर्गमैन¹² (Ingrid Bergman) की फिल्म कासाब्लांका (Casablanca, 1942) की यह समीक्षा-

Casablanca, 1942

casablanca with Humphrey Bogart and Ingrid bergman, at Hollywood- white cargo and 'Ravaged Earth' open.

*By Bosly Crowther, November, 1942, the New York Times.*¹³

Against the electric background of a sleek café in a North African part, through which swires a backwash of conniverse, crooks and feeling European refugees, the warner brothers are telling a rich suave exciting and moving tale in their new film casablanca which came to the Hollywood yesterday, They are telling it in the high tradition of their hard-boiled romantic adventure style and to make it all the more tempting they have given it a top-notch thriller cast of Humphrey Bogart, Sydney Greenstreet, Peter Lorre, Conard Veldt and even claudette rains and have capped it magnificently with ingrid bergman, Paul

¹⁰-द साल्ट लेक हेराल्ड, मई 29, 1891 - स्रोत : मेरियट लाइब्रेरी, उटाह वि.वि.

¹¹-द इवनिंग वर्ल्ड , जनवरी 16, 1909 - स्रोत : द न्यूयार्क पब्लिक लाइब्रेरी, एस्टर, लेनक्स एवं टिल्डेन फाउंडेशन।

¹²-इंग्रिड बर्गमैन (Ingrid Bergman, 29 August 1915 – 29 August 1982) एक महान स्वेडिश अभिनेत्री, जिन्होंने विभिन्न प्रकार की यूरोपीय एवं अमेरिकी फिल्मों में अभिनय किया। इन्होंने तीन बार अकादमी पुरस्कार, दो बार एमी पुरस्कार, चार बार गोल्डेन ग्लोब पुरस्कार और सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री का टोनी पुरस्कार जैसे अनेक पुरस्कार प्राप्त हुए। स्रोत : इंग्रिड बर्गमैन इनसाइक्लोपीडिया।

¹³-द न्यूयार्क टाइम्स (The New York Times)- न्यूयार्क एक महत्वपूर्ण दैनिक समाचार-पत्र है जो द न्यूयार्क टाइम्स कंपनी से प्रकाशित होता है। संस्थापक हेनरी जर्जिस रैमंड द्वारा 18 सितंबर, 1891 में स्थापित।

Henreid and a Negro 'find' named Dooley Wilson.

Yes, indeed, the wagers here have a picture which makes the spine tingle and heart take a leap for once more, as in recent Bogart pictures, they have turned the incisive trick of draping a tender love story within the folds of a topical theme they have used Mr. Bogart's personality so well established in other, brilliant films to inject a cold point of view, resistance to evil forces a foot in Europe today, and they have so combined sentiment, humor and pathos with taut melodrama and bristling intrigue that the result is a highly entertaining and even inspiring film.

..... In short, we can say that 'Casablanca' is one of the year's most exciting and trenchant film it certainly won't make us happy-but that is just another point for it"

संयुक्तराज्य अमेरिका से कई सिने समाचार पत्र व पत्रिकाएँ निकलती हैं जो इस प्रकार हैं-

1.1.1.1 अमेरिकन सिनेमैटोग्राफर

एक मासिक फिल्म पत्रिका, जो अमेरिकन सिनेमैटोग्राफर सोसायटी द्वारा 01 नवंबर 1920 से निकाली जा रही है। प्रारंभ से ही इसमें देशी-विदेशी फिल्मों की खबरें व समीक्षाएं, आलेख, सिने उपकरणों की जानकारी के साथ फिल्मी कलाकारों के साक्षात्कार आदि छपते रहे हैं।

1.1.1.2 द फिल्म डेली

दैनिक फिल्म समाचार पत्र जो सन 1913 से सन 1970 तक प्रकाशित होता रहा। सिने अध्येताओं के लिए इसके अंक काफी महत्वपूर्ण माने जाते हैं, क्योंकि फिल्म एवं टेलीविजन उद्योग की हलचलों को इसके पुराने अंकों द्वारा समझा जा सकता है। इसमें प्रतिदिन फिल्म बाजार, समीक्षाएं, अद्यतन जानकारियाँ, फिल्म कलाकार संगठनों के आंदोलनों एवं सिने उपकरणों की जानकारियाँ प्रकाशित होती रहीं।

1.1.1.3 फिल्म्स ऑफ द गोल्डेन एज

हॉलीवुड द्वारा फिल्मी सितारों को समर्पित एक त्रैमासिक फिल्म पत्रिका जिसमें सन 1910 से 1990 के दौर के फिल्म कलाकारों के विषय में सामग्री प्रकाशित होती रही। इसका पहला अंक सन 1995 में आया। सिने-इतिहास के अध्ययन में इस पत्रिका को महत्वपूर्ण माना गया है। इसमें इन कलाकारों का विवरण दिया गया है-

ट्रेयोन पावर (Tyrone Power), बटरफ्लाई मैक्वीन (Butterfly Maqueen), ओलिविया डे हैवीलैंड (Olivia de Havilland), बेटी हट्टन (Betty Hutton), राबर्ट मिचम (Robert Mitcham), नोएल कावर्ड (Noel Coward), अनीता पेज (Anita Page), कनवे टियलॉ (Convey Tearly), जेम्स डीन (James Dean), डोरोथी डैंड्रीज (Dorothy Dandridge), जेन केली (Gene Kelly), ईस्टर विलियम (Ester Williams), उना मार्केल (Unna Markell), माइकल क्रुज (Micheal Curtiz) एवं डब्ल्यू एस वान डाइक (W.S. Van Dyke) आदि।

1.1.1.4 मोशन पिक्चर हेराल्ड

अमेरिकी फिल्म उद्योग का समाचार-पत्र जिसे संपादक मार्टिन क्विगली द्वारा 1915 में स्थापित किया गया। तमाम उतार चढ़ाव के बाद सन 1931 से नए कलेवर के साथ 1970 तक नियमित प्रकाशित होता रहा।

1.1.1.5 मूविंग पिक्चर वर्ल्ड

अमेरिकी सिने उद्योग की ट्रेंड पत्रिका कुछ समय तक इसका संबंध मोशन पिक्चर हेराल्ड से भी रहा। पत्रिका की शुरुआत जेम्स पेटी चामलर्स द्वारा मार्च 1907 में की गई।

1.1.1.6 मूवी मेकर

कला एवं व्यवसाय के पहलुओं की गंभीरता से मीमांसा करने वाली एक पत्रिका। विशेषतः यह पत्रिका स्वतंत्र फिल्म निर्माण के परिवेश को प्रोत्साहित करने का काम करती है। आज यह पत्रिका अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त कर चुकी है। सन 1933 में तिमोती रहाइज (Timothy Rhys) द्वारा इसकी शुरुआत शहर सिएटल में की गई। इसकी ख्याति का अनुमान इन आंकड़ों से लगाया जाता है कि मात्र लांस एंजेलिस एवं पोर्टलैंड में इसके संचालन के 1400 केंद्र हैं। 01 लाख से ज्यादा सिने अध्येता इसकी वेबसाइट का अध्ययन करते हैं। विकिपीडिया पर बताया गया है- *“The Magazine ran a long running companion newsletter titled Hands on pages and creates a weekly newsletter emailed to more than 365000 subscribers every month.”*¹⁴

अर्थात् यह पत्रिका न्यूजलेटर के साथ गतिशील है यह साप्ताहिक न्यूजलेटर सृजित करती है और इसे 365000 से ज्यादा ग्राहकों को ईमेल करती है।

¹⁴-Movie Make Encyclopedia

1.1.1.7 टाइम पत्रिका (Time Magazine)

टाइम पत्रिका अमेरिका की एक महत्वपूर्ण पत्रिका है, जो दुनिया की गतिविधियों एवं अपने फन की माहिर हस्तियों पर सूचनाएं और आलेख प्रस्तुत करती है। अपने क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान देने वाली हस्तियों को अपने कवर पृष्ठ पर स्थान देकर उनका सम्मान करती है। इसके कवर पृष्ठ पर आइस्टाइन, महात्मा गांधी, हिटलर, क्लिंटन, स्तालिन आदि जैसी महान हस्तियाँ स्थान पा चुकी हैं।

समय-समय पर इसके कवर पृष्ठ पर फिल्म से जुड़े लोग स्थान पाते रहे हैं- इलेनोरा डूज (Eleanora Dose, July 30, 1923), रीटा हायवार्थ (Rita Hayworth, November 1941), चार्ली चैपलिन (Charlie Chaplin, 09 February 1931), लेनी रेफेनस्थल (Leni Riefenstahl, 17 February 1936 worked for Hitler, make films for propaganda), सोंजा हेनी (Sonja Henie, 17 July, 1939), नार्वे की फिल्म अभिनेत्री अपने समय की सबसे महंगी फिल्मकार, गैरी कूपर (03 मार्च, 1941), मर्लिन मुनरो (Marilyn Monroe, May 14, 1956), परवीन बॉबी (Parveen Bobby, July 1976), ऐश्वर्या राय (Aishwarya Rai, 2003), शाहरुख खान (Shahrukh Khan, 2004) एवं आमिर खान (Amir Khan, 18 April 2013)। इस पत्रिका का प्रथम अंक 03 मार्च 1923 को न्यूयार्क से निकला। इसकी स्थापना ब्रिटेन हड्डन (Britten Hadden) एवं हेनरी लूस (Henry Luce) द्वारा की गई। प्रथम अंक में वक्ता जोसेफ जी केनन को प्रमुखता दी गई थी। उनकी तस्वीर इसके प्रथम पृष्ठ पर छपी थी।

1.1.1.8 बॉक्स ऑफिस (Box Office)

“सिनेमा और रंगमंच को समर्पित एक पत्रिका, जो कला माध्यमों के व्यवसायिक पक्षों के विश्लेषण के लिए बॉक्स ऑफिस मीडिया प्रा. लि. द्वारा सन 1920 में प्रारंभ की गई थी। सन 1920 से 1931 तक यह द रील जर्नल के नाम से प्रकाशित होती रही।”¹⁵ अब यह बॉक्स ऑफिस के नाम से प्रकाशित होती है। वर्तमान में इसका मालिकाना हक राष्ट्रीय रंगमंचसंगठन (National Association of Theatre Owners) के पास है।

1.1.1.9 फिल्म जर्नल इंटरनेशनल (Film Journal International)

यह मोशन पिक्चर इंडस्ट्री की ट्रेड मैगजीन है जिसका प्रकाशन अमेरिकन कंपनी प्रोमोथयस ग्लोबल मीडिया द्वारा किया जाता है। इस मीडिया समूह की अन्य पत्रिकाएं हैं- ऐडविक (Adweek), बिलबोर्ड (Billboard), द

¹⁵ स्क्रीन ट्रेफिक : मूविंग प्लेक्सेस एंड ग्लोबल कल्चर, द्वारा एक्लेड चार्ल्स आर, ड्यूक वि.वि. प्रेस, संस्करण 2003, पृ. 8 ISBN:0-8223-3163-2

हालीवुड रिपोर्टर (The Hollywood Reporter)

पत्रिका का प्रथम अंक सन 1934 में निकला। फिल्म महोत्सवों, फिल्म निर्माण, वितरण एवं अमेरिकी व विदेशी फिल्मों की खबरों, फिल्मी प्रवृत्तियों, रंगमंच की हलचलों, सिने उपकरणों एवं विज्ञापनों की खबरों को प्रकाशित करने के उद्देश्य से इसे निकालने का निर्णय लिया गया।

1.1.1.10 द हॉलीवुड रिपोर्टर (The Hollywood Reporter)

ऊपर बताया जा चुका है कि यह मोशन पिक्चर इंडस्ट्री की ट्रेड मैगजीन है। यह पत्रिका 03 सितंबर 1930 (संस्थापक विलियम विलकर्सन) से निरंतर निकल रही है। इसे हॉलीवुड का प्रथम व्यावसायिक पत्र माना जाता है। आज यह सिने संसार का महत्वपूर्ण पत्र बन गया है क्योंकि इसमें विश्व के सभी कोने से सिने जगत की महत्वपूर्ण हस्तियों पर शोधपूर्ण सामग्री दी जाती है। साथ ही साथ साक्षात्कार, फिल्म समीक्षाएं एवं फिल्म महोत्सवों को प्रमुखता से स्थान दिया जाता है।

इसके मुद्रित अंक 74000 लोगों तक पहुँचते हैं। सिनेमा के महत्वपूर्ण लोगों द्वारा इसे निरंतर सहयोग प्राप्त होता रहता है, जिसमें प्रमुख हैं- लियोनार्डो डी कैप्रियो, क्लिंट ईस्टवुड, बैड पिट, ऐंजोलिना जॉली, टिना के, जुलियन मूरे, निकोल किडमैन, स्टेवेन स्पेलबर्ग, बेनेडिक्ट कंबरबाथ, टाम हाक्स, जेनेफर लॉरेंस एवं मार्टिन स्कूसेस आदि।

वर्तमान में इसके संपादक जैनिस मिन (Janice Min) है। यह विश्व का वह प्रथम मनोरंजन व्यावसायिक पत्र है, जिसने अपना वेब संस्करण (1995) भी उपलब्ध कराया है।

1.1.1.11 ब्राइट लाइट (Bright Light)

फिल्म की यह पत्रिका सन 1974 से निकल रही है। इस समय इसके संपादक और प्रकाशक गैरी मोरिस और ग्रेगरी बैटल हैं। कुछ विशेष कारणों से सन 1980 से 1992 तक यह प्रकाशित नहीं हो सकी। किंतु सन 1993 से यह पुनः प्रकाशित हो रही है और आनलाइन भी उपलब्ध है। त्रैमासिक रूप से प्रकाशित होने वाली इस पत्रिका के संपादक (गैरी मोरिस) एक बौद्धिक सिने विशेषज्ञ माने जाते हैं। अगस्त 2011 का अंक सामाजिक मीडिया एवं सिनेमा के अंतरसंबंधों पर केंद्रित रहा जिसमें संपादक की सिने टिप्पणी बहुत ही धारदार थी, जिसे विशेष दर्जे की सिने टिप्पणी माना गया था।

1.1.1.12 सिनेस्ट (Cinest)

संयुक्त राज्य अमेरिका की बहुचर्चित एवं बहुपठित पत्रिका जो सन 1967 से लगातार निकल रही है। प्रगतिशील सिने विमर्श वाली इस पत्रिका द्वारा किसी मीडिया घराने, फिल्म संस्थान या स्टूडियो से किसी भी प्रकार का आर्थिक सहयोग नहीं लिया जाता है। पत्रिका त्रैमासिक है जिसमें फिल्म समीक्षाएं, सिने आलेख एवं साक्षात्कार छपते हैं। पत्रिका के संस्थापक और प्रधान संपादक गैरी क्राउड्स (Gary Crowds) हैं।

1.1.1.13 फिल्म कमेंट (Film Comment)

लिनकोलन फिल्म सोसायटी केंद्र (Film Society of Lincoln Centre) द्वारा प्रकाशित होने वाली यह पत्रिका सन 1962 से निकल रही है। शुरू में यह त्रैमासिक थी, किंतु सन 1972 से दो-मासिक हो गई है। इस समय इसके संपादकत्व का भार गाविन स्मिथ (Govin Smith) के कंधों पर है।

1.1.1.14 हॉलीवुड वीकली (Hollywood Weekly)

आज के समय की अमेरिकी पॉपुलर कल्चर की सबसे लोकप्रिय पत्रिका, जो ऑनलाइन (डिजिटल मीडिया), मुद्रित रूप एवं सोशल मीडिया (फेसबुक, ट्वीटर एवं गूगल ग्रुप) पर उपलब्ध है। इसकी टेग लाइन है- No gossip, strictly entertainment. इसे वैश्विक रूप में पढ़ा जाता है। इन पत्रिकाओं के अलावा अमेरिका से सैकड़ों फिल्म पत्रिकाएं एवं दैनिक समाचार पत्र प्रकाशित होते हैं जिनमें कुछ इस प्रकार हैं- इंटरटेनमेंट वीकली, द मोनस्टर टाइम्स, ग्रीक मंथली, साइकोट्रॉनिक वीडियो, स्टारलाग, इंटरटेनमेंट टुडे एवं मार्टन स्क्रीन आदि। कुछ पत्रिकाओं की सूची संलग्न है। रूसी सिनेमा और सिने-पत्रकारिता के माध्यम से सिने-पत्रकारिता के कई आयाम सामने आते हैं जिस पर विस्तृत अध्ययन एवं चिंतन की आवश्यकता है। अमेरिका के अतिरिक्त सोवियत रूस के अपने समय का एक विचारशील एवं पक्षधरता की दृष्टि से एक महत्वपूर्ण देश व सत्ता की धूरी रहा है। अमेरिका के अतिरिक्त यह दूसरा महत्वपूर्ण देश रहा है। उसने सिनेमा, सिने-पत्रकारिता एवं जनसंचार के अन्य माध्यमों को अलग तरह से विकसित किया। सिने-पत्रकारिता की वैचारिक एवं व्यावसायिक विकास यात्रा के लिए अमेरिकी सिने-पत्रकारिता के अलावा रूस की सिने-पत्रकारिता पर संक्षिप्त चर्चा आवश्यक प्रतीत होती है। मनोरंजन का प्रमुख माध्यम होने के कारण सभी महाद्वीपों में सिनेमा पर पर्याप्त लेखन कार्य हो रहा है। अफ्रीकी देशों, ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड, चीन, क्यूबा एवं भारत से सिनेमा की पत्रिकाएं व समाचार-पत्र प्रचुरता से प्रकाशित होते हैं। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में भी सिनेमा को प्रमुखता प्राप्त है।

1.1.2-रूस में सिने-पत्रकारिता

सिनेमा निर्माण में फ्रांस के बाद अमेरिका का योगदान बहुत महत्वपूर्ण है, किंतु अन्य देश भी इस प्रतिस्पर्धा में बहुत पीछे नहीं थे। इंग्लैंड एवं जर्मनी ने भी इस दिशा में सार्थक पहल की। “सन 1903 में ब्रिटेन में ‘लाइफ एंड डेथ ऑफ चार्ल्स पियर्स’(Life and Death of Charles Pierce)का निर्माण हुआ था। इसके कुछ समय पश्चात ‘रेस्क्यूड बाय रिवर’ (Rescued by River) नाम की फिल्म वहाँ बनी। इसे ब्रिटेन का प्रथम कथाचित्र कहा जाता है।”¹⁶

प्रारम्भिक सिने-पत्रकारिता का स्वरूप सिनेमा के प्रारम्भिक स्थिति की तरह मात्र सूचना तक सीमित था। सन 1896 में जब लुमिएर बंधु नोषोगार्द के एक मेले में अपनी फिल्मों का प्रदर्शन कर रहे थे, तब वहाँ प्रसिद्ध रसियन कथाकार मैक्सिम गोर्की भी उपस्थित थे। उस समय वे एक साधारण स्थानीय पत्रकार की हैसियत से एक साधारण से समाचार-पत्र में काम करते थे। उन्होंने इन फिल्मों को देखा और उनकी समीक्षा अखबार में प्रकाशित करायी। दरअसल वे इस चमत्कार से अवाक थे। इन फिल्मों पर उनकी राय इस प्रकार थी- “... कल रात मैं छायाओं के साम्राज्य में था और मैंने लुमिएर के सिनेमैटोग्राफ द्वारा प्रदर्शित चलचित्र देखे। इन बिंबों का असाधारण प्रभाव विलक्षण, जटिल और बहुआयामी है। मुझे नहीं लगता कि मैं इस प्रभाव के सभी पहलुओं की स्पष्ट व्याख्या करने में समर्थ हो पाऊँगा।”¹⁷ अर्थात् स्पष्ट है कि गोर्की की पैनी दृष्टि सिनेमा पर उसके प्रारंभ में ही पड़ चुकी थी। गोर्की के माध्यम से अपने समय की इन फिल्मों का गहन विश्लेषण एवं मूल्यांकन किया गया। इसकी संभावनाओं के आयामों की चर्चा की गई। इसीलिए फिल्म-पत्रकार एवं फिल्म पत्रकारिता के इतिहासकार श्याम माथुर कहते हैं कि मैक्सिम गोर्की की यह समीक्षात्मक टिप्पणी सिनेमा के इतिहास का सबसे महत्वपूर्ण दस्तावेज है।

लुमिएर बंधु के समय में यूरोपीय देशों से कुछ पत्रिकाएँ निकलती रहीं जिनमें उस समय की सिने गतिविधियों को दर्ज किया गया। ऐसी पत्रिकाओं में पोइसिया, डाईफार्म व ब्लास्ट का नाम शामिल है। फ्रांसिसी सिनेमा के इतिहास से पता चलता है कि यहाँ से भी कई सिने पत्रिकाएँ प्रकाशित हुईं, जैसे सिने मैगजीन (Cine magazine 1921-1930) केहिर्स डु सिनेमा (Cahiers du cinema, 1951-संस्थापक संपादक स्टेफन डलोमें), पॉसिटिफ (Positif, 1952-प्रथम संपादक माइकल सिमेन) एवं मिदि मिन्युट फंटासिटक (1962) आदि।

¹⁶-सिनेमा के चार अध्याय, डॉ.टी.शशिधरन, वाणी प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2014, पृ.-14

¹⁷-सिने-पत्रकारिता, श्याममाथुर, प्रथम संस्करण, 2008 राजस्थानी हिंदी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, पृ.5

सिने विकास के प्रारंभिक चरणों में ही कुछ प्रबुद्ध व्यक्तियों ने इस माध्यम के महत्व और सामाजिक उपयोगिता को ठीक से समझ लिया था। इसीलिए सामाजिक परिवर्तन एवं विचारधारा के संप्रेषण माध्यम के रूप में इसका उपयोग किया जाने लगा। सामाजिक रुझान वाले मुख्य पत्रों में इसे स्थान दिया जाने लगा। खासतौर रसियन साम्यवादी विचारधारा की पत्रिकाओं एवं समाचार पत्रों में इसकी सामाजिक भूमिका को रेखांकित किया गया। कई पत्रकारों एवं सिनेमाकारों ने इस दिशा में सार्थक पहल की। “सर्गेई मेखाइलोविन आइजेस्टिन (Sergei Mikhailovien Eisenstein) 1898 में रूस में पैदा हुए थे। उन्होंने सन 1917 की रूसी क्रांति को नजदीक से देखा था और उनकी धारणा इस क्रांति के पक्ष में थी। जब वे 26 वर्ष के थे, तब सन 1925 में उन्होंने द बैटलशिप पोटेमकीन (The Battleship Potemkin) फिल्म का निर्माण किया। इस फिल्म ने उन्हें विश्वभर में मशहूर बना दिया और वे हॉलीवुड में आमंत्रित किए गए और मात्र 30 साल की अवस्था में अमेरिका जा पहुँचे, किंतु वे मैक्सिको में रहे। वहीं उन्होंने एक फिल्म का निर्माण किया। इस फिल्म की बनावट मैक्सिको क्रांति से प्रभावित थी। हॉलीवुड में उन्होंने किसी फिल्म का निर्माण नहीं किया और अंत में रूस लौट आए, जहाँ बेज़िन मेडोव (Bezgin Meadow), अलेक्जेंडर नेव्स्की (Alexander Nevsky) और इवान द टेरिबल (Ivan the Terrible) जैसी फिल्मों का निर्माण किया।”¹⁸

सन 1917 की रूसी क्रांति के समय ही इजवेस्तिया (Izvestia) में 28 फरवरी 1917 को किनोआई का प्रकाशन प्रारंभ हुआ। यह रसियन क्रांति का समर्थन करने वाला दैनिक समाचार पत्र था जिसका मालिक नेशनल मीडिया ग्रुप था और प्रकाशन न्यूज मीडिया द्वारा किया गया। रसियन भाषा का यह समाचार पत्र 1992 तक प्रकाशित होता रहा। इसलिए इसमें सोवियत क्रांति के नेताओं के अतिरिक्त सोवियत सांस्कृतिक कर्मियों को भी जगह मिलती रही, जैसे सर्गेई आइस्टाइन की फिल्म स्ट्राइक (1925) जो सोवियत क्रांति पर आधारित थी। फिल्म की शुरुआत ही ब्लादमिर लेनिन के एक संबोधन से होती है- “मजदूरों की शक्ति संगठन में निहित है। बिना संगठन के ये कुछ भी नहीं हैं। इसलिए सभी को संगठित होना आवश्यक है। संगठन का अर्थ ही होता है, एकता को परिणाम में बदलना।”¹⁹ इस फिल्म को इजवेस्तिया में पर्याप्त महत्व मिला, परंतु दुर्भाग्य से वह साक्ष्य अब उपलब्ध नहीं है। परंतु इसका उल्लेख बोर्डवेल, डेविड की पुस्तक ‘द सिनेमा ऑफ आइनास्टाइन’ में उपलब्ध है।

सोवियत पत्रकारिता एवं सिनेमा का स्वर बहुत प्रतिरोधी रहा है। सिने पत्रकार एंड्रयू जेम्स हार्टन

¹⁸-मोन्ताज: द कॉमेटिव प्रिंसिपल, पुनर्संस्करण 2005, एनोदर सिनेमा फार एनोदर सोसायटी, गेस्टोन राबर्ज, सिंगल बुक्स, कोलकाता, पृ. 15

¹⁹-द सिनेमा ऑफ आइस्टाइन, 1997, बोर्डवेल, डेविड, कैम्ब्रिज काडवर्ड विश्वविद्यालय प्रेस

(Andrew James Horton), एडीटर इन चीफ किनोआई का मानना है-

*“Soviet films of the 1920 did much to define the cinematic vocabulary of modern Hollywood, producing a range of effects designed to emotionally manipulate the audience it is debts that not forgotten and even today's crop of American directors have at various times paid direct or indirect homage to their Russian Cinematic forebears”*²⁰ अर्थात् सन 1920 की सोवियत फिल्मों बेहतर ढंग से आधुनिक हॉलीवुड के सिनेमाई शब्दकोश को परिभाषित करती हैं। दर्शक के भावनात्मक शोषण के लिए विभिन्न प्रभावों को उत्पन्न किया जा रहा है। दरअसल यह रूसियन सिनेमा का ऐसा कर्ज है जिसे हॉलीवुड वालों को नहीं भूलना चाहिए। इसलिए आज भी अमेरिकी निर्देशकों का एक वर्ग प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से रूसियन सिनेमाई विरासत को सम्मान की दृष्टि से देखता है।

एंड्रयू जेम्स हार्टन ने सिनेमा सत्ता एवं सिनेमाई रचनात्मकता के परस्पर संबंधों की व्याख्या की और बताया कि जब राजनीति कला माध्यमों का इस्तेमाल अपने पक्ष में करने लगती है या करने की कोशिश करती है तो सर्जनात्मकता का सहज भाव व प्रवाह बाधित और कुंठित होने लगता है। इसीलिए वे फिल्मकार जो 1920 के दौर में काफी ख्याति प्राप्त कर चुके थे, सन 1930 के आसपास बहुत कुंठित महसूस कर रहे थे या फिल्म बनाना छोड़ चुके थे या सिने-शैली में बदलाव ला चुके थे, ताकि सत्ता की टकराहट से बचा जा सके। सिने-पत्रकारिता चूँकि सिनेमा से प्रभावित होती है। इसलिए इसे भी अपने दृष्टिकोण व प्रस्तुति में परिवर्तन करना पड़ा। स्तालिन का स्पष्ट मानना था कि सिनेमा में चरित्र द्वारा जो अभिनय किया जाता है इस पर कड़ी निगरानी रखी जाए। उसने पटकथा लेखक, फिल्म निर्माता और फिल्म निर्देशक, सोवियत मोंताज सिद्धांत (Soviet Montage Theory) के प्रणेता एवं रेड स्टार सोवियत सेना के मुखपत्र से जुड़े पत्रकार एलेक्जेंडर देवजेंको को एक पत्र लिखकर बताया कि देशहित में सिनेमा की पुनर्संरचना करना आवश्यक है। इसलिए पार्टी द्वारा सिनेमा निर्माण एवं उसके पक्ष-विपक्ष में लिखे गए आलेखों की समीक्षा की जाने लगी।

1.1.2.1 रूस प्रशासन (साम्यवादी) की सिने-नीति

द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद सोवियत सिनेमा को बढ़ावा अवश्य मिला किंतु सीमित अर्थ में फिर भी अंतरराष्ट्रीय मंच पर इसकी सम्मानजनक उपस्थिति दर्ज की गई और नाजीवाद विरोधी फिल्मों के निर्माण को

²⁰ -रूसियन एंड सोवियत सिनेमा, 1896-1955, द बिगनिंग्स टू द डेथ आफ स्तालिन, एंड्रयू जेम्स हार्टन, किनोआई

प्रोत्साहन मिला, क्योंकि नाजीवादी सरकार द्वारा सिनेमा को एक राजनीतिक उपकरण (Nazism and Cinema) की तरह इस्तेमाल किया गया था। सोवियत सरकार के प्रोत्साहन से मार्क दानस्कोई (Mark Donskoi) ने द रेनबो (Raduga, 1944)²¹ का निर्माण किया, जिसे काफी सराहा गया। सं. राष्ट्रमोशन पिक्चर्स, रेडिया एसोसिएशन एवं प्रेसीडेंट रूजवेल्ट जैसे सम्मान इस फिल्म को प्राप्त हुए।

द रेनबो अर्थात् (Raduga, 1944) के विषय में बहुत कुछ लिखा गया-*“Brilliantly actual by virtual everyone in the cast, rainbow is a remarkable achievement, one that disserve to better know outside of Russia.”*²² अर्थात् सभी चरित्रों ने बेहतरीन अभिनय किया है। रेनबो एक उल्लेखनीय सफलता है जिसे रूसिया के बाहर पहुँचाना आवश्यक है।

रूसी सिनेमा का जन्म साम्यवादी सरकार के पहले हो चुका (1886) था। सोवियत सरकार के बनते-बनते सिनेमा की स्थिति मजबूत हो चुकी थी। प्रथम विश्व युद्ध के समय रूसी सिनेमा विकसित हो चुका था। इवगनी बायुर (yevgeni bauer 22 जनवरी 1865- 22, जून 1917) प्रथम रूसी निर्देशक था, जिसने सिनेमा के सभी रचनात्मक विभागों (सेट डिजाइन, प्रकाश व्यवस्था, वस्त्राभूषण, पटकथा एवं संपादन) को विकसित व व्यवस्थित कर लिया था। इसके साथ यह भी विचारणीय है कि दुनिया की स्त्री संवेदना व विमर्श वाली फिल्म भी रूस में ही बनी। वह फिल्म थी ट्वीलाइट ऑफ ए वुमैन सोल (Twilight of a Women's Soul Scemerki Zhenskoi Durri, 1913)। इस फिल्म में दिखाया गया था कि औरत अपने साथ बलात्कार करने वालों को मार डालती है। बाद में उसका विवाह होता है किंतु जब पति को पता चलता है कि उसकी अस्मत् विवाह के पहले ही लूटी जा चुकी है तो वह उसे छोड़ देता है। कुछ सालों पश्चात पति को अपनी गलती का अहसास होता है और वह परित्यक्त पत्नी को वापस लाने की कोशिश करता है किंतु तब तक बहुत देर हो चुकी होती है।

सिनेमा को प्रचारित और व्याख्यायित करने के माध्यम समाचार-पत्र और पत्रिकाएं रहीं हैं। सोवियत सरकार ने समाचार माध्यमों, अर्थात् प्रेस की शक्ति को गहराई से समझा। इसलिए सोवियत सरकार ने सेंसर की नीति पर प्रमुखता से विचार करते हुए कुछ संगठनों का निर्माण किया-

²¹- द रेनबो (THE Rainbow 1944) – मार्क डॉस्की द्वारा निर्देशित (Mark Donskoy) और वांडा वासिलिस्का (Wanda Wasilewska) द्वारा उन्ही के उपन्यास टेक्ज़ा (Tecza) पर लिखी पटकथा पर आधारित एक सोवियत फिल्म, जिसमें दूसरे विश्व युद्ध के दौरान जर्मनी द्वारा यूक्रेन के एक गाँव को कब्जे में किए जाने के बाद का जीवन दिखाया गया है।

²²-Stites, Richard (1992). Russian popular culture: entertainment and society since 1990. Cambridge university press. online education

1.1.2.1.1 गोस्कोमिजडत (Goskomizdat)

मुद्रित संचार माध्यमों- समाचार-पत्र, पत्रिकाएं, कथा साहित्य एवं कविता आदि पर नजर रखने वाला संगठन। इसके अध्यक्ष रहे-

- **1978 - 1982** बोरिस स्टुकेलिन (**Boris Stukalin**)
- **1982 - 1986** बोरिस पास्तुकोव (**Boris Pastukhov**)
- **1986 -1989** मेखाइल नेनाशेव (**Mikhail Nenashew**),

1.1.2.1.2 गोस्किनो (Goskino)

सोवियत सरकार ने फिल्म निर्माण और उसकी प्रस्तुति पर निगरानी के लिए गोस्किनो²³ अर्थात् सिनेमैटोग्राफी राज्य समिति (USSR state committee for cinematogssraphy) जैसी केन्द्रीय निकाय की स्थापना की।

1.1.2.1.3 गोस्केलरेडियो (goskelrediyo)

गोस्केलरेडियो अर्थात् सोवियत संघ रेडियो (Radio in the Soviet Union) को लेनिन की पहल पर पोस्ट एवं टेलीग्राफ (Ministry of Posts and Telegraphs) मंत्रालय के अंतर्गत 23 नवंबर, 1924 को मास्को में शुरू किया गया। लेनिन ने इसे कागजहीन समाचार कहा। बाद में संस्कृति, शिक्षा, शास्त्रीय संगीत एवं सिनेमा के प्रचार के लिए रेडियो ऑफिस (Radio Orpheus) को स्थापित किया गया। इस प्रकार पाया जाता है कि “द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान प्रचार का अध्ययन करने वाले मनोवैज्ञानिक हेराल्ड डी लासवेल ने संचार संबंधी अपने पांच वाक्यों के मॉडल में अंतिम पंक्ति लिखी थी- with what effect अर्थात् इसमें जनसंचार की किसी भी प्रक्रिया के साथ उसका प्रभाव उत्पन्न होना एक अनिवार्य अंग मान लिया गया है। ऐसा मानने के पीछे जनसंचार को काफी

²³-The first main film production and distribution organization in the Russian Soviet federal socialist republic until 1924 was Goskino, this was succeeded by 'Sovkino' from 1924 to 1930, and then replaced with 'Soyuzkino' in 1930, which has Jurisdiction over the entire USSR.

Subsequently, Goskino USSR was created by the decree of the presidium of the Supreme Soviet of USSR on March 23, 1963 as the State Committee of the Council of Ministry of the USSR on Cinematography from 1962 to 1972, its name was simplified to the committee on Cinematography of the Council of Ministers from 1972 to 1972, the Committee regained its original name from 1972, until its dissolution in 1991, it was called the State Committee of the USSR and Cinematography in 1991 Goskino USSR was abolished by statement of the State Council USSR of the November 14, 1991.

In 1992, there was created the Roskino/Roskomkino that was renamed into the State Committee of Russian federation for Cinematography in the Modern Russia as the Supreme Government organ in charge of the Cinematography both performed general management and censorship functions Roskino was disbanded in May 2008 after V Putin's decree.

source- <http://www.panorama.ru/rav/>

प्रभावशाली समझने की धारणा ही प्रमुख है।... एलिजाबेथ नोएल न्यूमैन ने 'रिटर्न ऑफ द कॉन्सेप्ट ऑफ पावरफुल मास मीडिया (1973) शीर्षक लेख के माध्यम से जनमाध्यमों की प्रभावशाली भूमिका को एक बार फिर स्थापित करने की कोशिश की।"²⁴

1.1.2.2 द्वितीय विश्वयुद्ध व रुसी सिने-नीति

द्वितीय विश्वयुद्ध एवं नाजीवाद के उठान को व्याख्यायित करने के संदर्भ में मीडिया एवं जनसंचार माध्यमों की शक्ति का अहसास फैंकफर्ट स्कूल के मार्क्सवादी चिंतकों को हुआ। इन चिंतकों द्वारा हाइपोडरमिक नीडल थ्योरी के माध्यम से बताया कि जब कोई संदेश प्रापक तक रणनीति रूप से सही पहुँचता है तभी मन चाहा परिणाम प्राप्त किया जा सकता है। इसीलिए सोवियत संघ ने संचार के सभी माध्यमों का उपयोग प्रोपेगेंड²⁵ की तरह किया।

रुसी सिने-पत्रिकाओं के कई संग्रह सामने आ चुके हैं जिसके विषय में कहा गया है- *"Russian Cinematographic Press (1907-1918) unique collection of Russian film periodical published during the last decade of the start regime film studies containing interviews with movie stars and now irretrievably lost screen play, these Journals will prove an invaluable source about the silent movie era and Russia's entertainment industry at the eve of the Revaluation."*²⁶ (अनुवाद-रुसी सिनेमैटोग्राफिक प्रेस (1907-1918) के पास रुसी फिल्मों, और गत दशक में प्रकाशित पत्रिकाओं जिसमें फिल्म कलाकारों के साक्षात्कार और दुर्लभ पटकथाओं का बेहतरीन संग्रह है, ये पत्रिकाएं मूक दौर की सिनेमा के बारे में जानकारी का दुर्लभ स्रोत है इसके साथ रुसी क्रांति की पूर्व संध्या पर भी जानकारी का स्रोत है।) उस दौर की प्रमुख सिने पत्रिकाएँ इस प्रकार हैं-

1. आर्ट-एकरान (Art ekron, 1923)
2. इकरान किनो गजेटी (Ekron Kino Gazety, 1925)
3. इसकुस्टोकिनो (Iskusstvo Kino, 1936)
4. किनो फोट (Kino Fot, 1922)
5. किनो फ्रॉन्ट (Kino Front, 1926)

²⁴-जनसंचार सिद्धांत और अनुप्रयोग, विष्णु राजगडिया, राधा प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2008, पृ. 48

²⁵-प्रोपेगेंड- किसी तथ्य अथवा विचार को व्यवस्थित ढंग से श्रोता के विभाग में उतारने की प्रक्रिया। सर्वप्रथम 1922 ई. पाप जार्ज 15वें कलेजियर द फाइट नामक संस्थान की स्थापना की। द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान हिटलर ने जहाँ इसका इस्तेमाल आक्रामक रूप में किया, वहीं मित्र राष्ट्रों ने इसका उपयोग सुरक्षा के लिए किया।- रेडियो लेखन, श्री मधुकर गंगाधर, आकाशवाणी, पटना, हिंदी बिहारी अकादमी, प्रथम संस्करण, मार्च 1974, पृ. 55

²⁶-Early Russian Cinema Online, Advisor, R. Yangirov, Number of titles: 57 ISBN: 9789004193109

6. किनो जर्नल ए.आर.के. (Kino Zhurnal A.R.K., 1925)

रूसी सिने-पत्रिकाओं एवं समाचार-पत्रों की सूची लंबी है। राष्ट्रीय पुस्तकालय, रूस, सेंट पीटर्सबर्ग के पुस्तकालयाध्यक्ष के माध्यम से तमाम सिने सामग्री प्राप्त हुई, जिनसे ज्ञात होता है कि पूर्णतः सिनेमा पत्रिकाओं/समाचार-पत्रों के अतिरिक्त कई राजनीतिक पत्रिकाओं में भी सिने-समाचार प्रकाशित होते रहे हैं, जिसमें सोवियत संघ के अतिरिक्त दूसरे देशों की पत्रिकाएँ भी शामिल हैं। ऐसी दो पत्रिकाओं के नाम यहां दिए जा रहे हैं-

1. जापान क्रानिकल (1902-1940)

अंग्रेजी भाषा की साप्ताहिक पत्रिका, जिसमें सिनेमा सामग्री भी प्रकाशित होती रही।

2. सिनेमा रिपोर्टर (1932)

मैक्सिको शहर से प्रकाशित होने वाली पत्रिका थी। इसमें मैक्सिकन सिनेमा²⁷ के विषय में विस्तार से आलेख व सूचनाएँ प्रकाशित होती रहीं।

²⁷-मैक्सिकन सिनेमा का प्रारंभ सन 1890 के अंत में हुआ। 1930-1960 तक इसका स्वर्ण काल रहा। यहाँ से सिनेमा की पत्रिकाएँ प्रकाशित होती रहीं, जैसे-सिनेमा रिपोर्टर (1930-1965), सिने मुंडियल (1951-1955), इल सिनेग्राफिको (1935), इल मुंडो इलस्ट्रेडो (1902-1910) एवं सिनेलेंडिया (1931-1947)– स्रोत राष्ट्रीय पुस्तकालय, रूसिया, सेंट पीटर्सबर्ग

1.1.3 यूरोप की सिने-पत्रकारिता (इटली के विशेष संदर्भ में)

यूरोपीय लोग चलचित्र उद्योग (motion picture industry) के अगुआ माने जाते हैं। 19 सदी के अंत में कई ऊर्वर मस्तिष्क के अभियंता और कलाकारों ने यूरोपीय सिनेमा को गति दिया। ल्यूस ले प्रिंस (Louis Le Prince) ने 1888 में स्वनिर्मित फिल्म रौंथेय गॉर्डन सीन (Roundhay Garden Scene-he first known celluloid film recorded) से विशेष ख्याति अर्जित किया। बायस्कोप और थिएटर की अवधारणा भी सबसे पहले यूरोपीय देशों (बर्लिन) में विकसित हुई। जब हमारे यहां सिनेमा आया भी नहीं था, तब सन 1912 में बर्लिन में एक बड़ा स्टूडियो (Babelsberg Studio) स्थापित किया गया। 19 वीं शदी में यूरोपीय सिनेमा में कई सिने-आंदोलन परिघटित हुए। जैसे फ्रेंच की प्रभाववादी सिनेमा (1920) और पोयटिक सिनेमा (1930) व इटलीकी नव यथार्थवादी सिनेमा (1940) आदि। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद यूरोप में कई सिने आंदोलन हुए जैसे मुक्त सिनेमा (1950), फ्रेंच न्यू वेव सिनेमा (1950-60), पोलिश फिल्म स्कूल (1950-60) और ब्रिटिश न्यू वेव सिनेमा (1950-60) आदि।

इटली विश्व सिनेमा की जननी है। यहां मार्च 1896 को ल्युमियर बंधुओं ने (Lumiere brothers) रोम के मिलान शहर में सिनेमा का प्रदर्शन किया। सिनेमा के साथ साथ इटली में सिनेमा के तकनीकी पक्षों पर भी काफी प्रगति देखी गई। किंतु वह यहां इस शोध प्रबंध के सीमा में नहीं आता। इसलिए उन तकनीकी उपलब्धियों का उल्लेख नहीं किया जा रहा है। चूंकि यूरोप में इटली अपने विशेष प्रकार के सिनेमा के लिए जाना जाता है। इटली के इस सिने आंदोलन का प्रभाव हिंदी सिनेमा पर भी पड़ा। इसलिए प्रस्तुत शोध प्रबंध में उसका संक्षिप्त परिचय दिया जा रहा है। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद बेनिटो मुसोलिनो के शासन के अंत होने के बाद इटली में ईटालियन नव यथार्थवादी सिनेमा का प्रादुर्भाव हुआ। इससे इटली में सिनेमा के नए केंद्र का जन्म हुआ। नव यथार्थवादी सिनेमा वहां सांस्कृतिक और सामाजिक परिवर्तनों का परिणाम था। इस तरह की फिल्मों में इटली का सामाजिक जीवन लघु कथाओं और विचारों के रूप में दिखाया जाता था, जिसकी शूटिंग सिनेसेटा फिल्म स्टूडियो में होता था। इस स्टूडियो को विश्व युद्ध के दौरान ध्वस्त कर दिया गया।

1943 से 1950 तक का इटली में नव यथार्थवादी सिनेमा का प्रभाव रहा। बाद में यह प्रभाव दूसरे देशों की सिनेमा पर भी पड़ा। भारत में सत्यजित रॉय का अप्पू ट्रायोजॉली बिमल रॉय की दो बीघा जमीन इसी प्रभाव की फिल्में मानी जा सकती हैं। कहा जाता है कि ये दोनों फिल्में *विटोरियो डी सिका की बायस्किल थीफ* से प्रभावित रही हैं। इटली में सिनेमा पर सामग्री समाचार पत्रों और पत्रिकाओं, दोनों में प्रस्तुत की जाती है। प्रस्तुत हैं वहां के

महत्वपूर्ण समाचार पत्र और पत्रिकाएं -

1.1.3.1 इटली के कुछ प्रसिद्ध राष्ट्रीय दैनिक समाचार-पत्र (इसमें सिने-सामग्री सूचना के रूप में प्रकाशित होती है)

समाचार पत्र	वितरण	मुख्यालय	स्थापना	राजनीतिज्ञ रुझान
कोरीयर डेला सेरा(Corriere della Sera)s	319 484	मिलान	1876	केंद्रीय
ला रिपब्लिका(Ia Repubblica)	275 415	रोम	1976	सांस्कृतिक उदारवाद
ला गजेटा डेलो स्पोर्ट(LaGazzetta dello Sport)	215 361	मिलान	1896	स्पष्ट नहीं
ला स्टाम्पा(La Stampa)	188 582	तुरिन	1867	सामाजिक उदारवाद
ल्ल सोले 24 ओरे (Il Sole 24 Ore)	175 485	मिलान	1865	आर्थिक उदारवाद
ल्ल मैसेंजरो(Il Messaggero)	124 879	रोम	1878	सामाजिक उदारवाद
इल रेस्टो डेल कार्लिनो(il Resto del Carlino)	118 461	बोलोग्ना	1885	अनुदारपंथी
अवेनिरे (Avvenire)	115 332	मिलान	1968	क्रिश्चियन वामपंथी
कोरियरे डेलो स्पोर्ट(Corriere dello Sport)	112 215	रोम	1924	स्पष्ट नहीं
ला नाजिनो(La Nazione)	93 607	फ्लोरेंस	1859	अनुदारपंथी
इल गारनाले (il Giornale)	85 562	मिलान	1974	अनुदारपंथी

टुटोस्पोर्ट (Tuttosport)	62 680	तुरिन	1945	अनुदारपंथी
लिबरो (Libero)	50 406	मिलान	2000	अनुदारपंथी
इल मैनेफेस्टो (il manifesto)	11 283	रोम	1969	साम्यवादी

स्रोत- (List of newspapers in Italy-free incyclopedia)

1.1.3.2 इटली की कुछ प्रमुख सिने-पत्रिकाएं

1.1.3.2.1 बैंको ए नेरो (Bianco e Nero)

यह पत्रिका त्रैमासिक है। सन 1937 से अब तक लगातार निकल रही है।

1.1.3.2.2 कैस्तोरो सिनेमा, II (Castoro Cinema, II)

इस पत्रिका के प्रकाशक कैस्तोरो II हैं। यह द्विमासिक है और 1974 से निरंतर निकल रही है।

1.1.3.2.3 सिने फोरम (Cineforum)

इस पत्रिका का प्रकाशन फिडेरजियोने इटालियाना सिनेफोरम (Federazione Italiana Cineforum) से किया जाता है। यह मासिक है और यह 1961 से निकल रही है।

1.1.3.2.4 सिनेमास्कोप (sinemascope)

यह एक स्वतंत्र सिने पत्रिका है, जिसका प्रकाशन सिनेमास्कोप नाम के मंच द्वारा किया जाता है। यह पत्रिका अर्धवार्षिक है जो सन 2004 से निकल रही है। (Cinemascope.it, Independent Film Journal)

1.1.3.2.5 फिल्म (film)

इस पत्रिका का प्रकाशन सेंट्रो स्टडी सिनेमैटोग्राफिकी (Centro Studi Cinematografici) द्वारा किया जाता है। यह अर्ध वार्षिक पत्रिका है और सन 1984 से निकल रही है।

1.1.3.2.6 ग्रैफिथियाना (Griffithiana)

यह पत्रिका अर्ध वार्षिक है और सन 1978 से निरंतर निकल रही है।

1.1.3.2.7 इकॉन (Ikon)

त्रैमासिक सिने-पत्रिका जो सन 1962 से निकल रही है।

स्रोत- (List of film periodicals wiki.)

1.1.4 एशियाई के देशों में सिने-पत्रकारिता

एशिया विश्व का एक बड़ा और सर्वाधिक जनसंख्या वाला महाद्वीप है। प्रस्तुत शोध प्रबंध में इसके कुछ प्रमुख देशों (जापान, कोरिया और चीन) की सिने पत्रकारिता का विवरण प्रस्तुत किया गया है।

1.1.4.1 जापान की सिने-पत्रकारिता

जापान में कई भाषाओं में समाचार-पत्र प्रकाशित होते हैं, जिसमें उर्दू, बंगला और अंग्रेजी भाषा के पत्र भी शामिल हैं। दैनिक समाचार पत्रों में सिने समाचार सूचना के तौर पर प्रकाशित किए जाते हैं। कुछ प्रमुख दैनिक समाचार पत्र इस प्रकार हैं -

1.1.4.1.1-द अकिता साकिगाके शिंपो (The Akit Sakigake Shimpō- Tohoku)

स्थापित सन 1989

1.1.4.1.2-बाचो शिंबुन (Boucho Shimbun- Chugoku)

स्थापित 20 जून, सन 1933

1.1.4.1.3-जापान टाइम्स (JapanTimes Tokyo - English), स्थापित सन 1897।

इनके अतिरिक्त कुछ अन्य समाचार पत्र हैं, जिनमें सिने समाग्री प्रकाशित होती है जैसे - चिबा निप्पो (Chiba Nippo -Kanto), चोकोकु शिंबुन (Chugoku Shimbun-Chugoku), चिनिचु शिंबुन (Chunich Shimbun), कम्युनिटी (Community - In Bangla), द डेली तोहोकु शिंबुन (The Daily Tohoku Shimbun - Tohoku), द डेली योम्युरी (The Daily Yomiuri -Tokyo) , द डेली न्यूज ऑफ फिशरीज (The Dailynews of Fisheries Tokyo), दोशिन स्पोर्ट (Doshin Sports -Hokkaido) ,इवनिंग फुजी (Evening Fuji), फुकु शिंबुन (Fukui Shimbun-Hokuriku), फुकुशिमा मिंपो (Fukushima Mimpo-Tohoku), फुकुशिमा मिन्यो (Fukushima Minyu Tohoku), गिफु शिंबुन (Gifu Shimbun -Chubu), जापान मॉर्निंग पोस्ट (Japan Morning Post In English), जर्नल इंटरनेशनल जापान (Journal International Press Japan Spanish & Portuguese available), द आशी शिंबुन (The Asahi Shimbun Kyushu & Okinawa), अवाम न्यूज (Awam News-Tokyo-In Urdu), आवाज ए हाक (Awaz e Haq (Oyama City, Tochigi Prefecture) [In Urdu], द ब्लैक शिप : जापान न्यूज एवं (The Black Ship: Japan News -In English) आदि।

स्रोत-(onlinenewspaper.com)

1.1.4.1.4 सिने-पत्रिकाएं

दो उल्लेखनीय सिने पत्रिकाएं जापान से निकलती हैं, जो इस प्रकार हैं -

1.1.4.1.4.1 किनेमा रेकार्ड (Kinema Record)

यह जापान द्वारा निकाली जाने सबसे पुरानी पत्रिका मानी जाती है। यह सन 1913 से प्रकाशित होने लगी। जापान में 1910 तक कोई भी ऐसी सिने पत्रिका नहीं थी, जो विशुद्ध सिने आंदोलन (Pure Film Movement) पर चर्चा करे। इसलिए इस कमी को पूरा करने के लिए नॉरिमासा कैरियामा (Norimasa Kaeriyama) और योशयुकी शिगेनो ने 1913 इस पत्रिका का प्रकाशन शुरू किया। यह एक मासिक पत्रिका है। सन 1999 में इसके सभी अंकों का एक समग्र अंक प्रकाशित हुआ। 1913 से लेकर 1917 तक इसके कुल 51 अंक प्रकाशित किए गए। भले ही यह पत्रिका बहुत समय तक नहीं चल सकी परंतु आने वाले सिने पत्रिकाओं के लिए इसने एक गाइड लाइन छोड़ दिया था, जिस पर आने वाले समय में अमल किया गया।

1.1.4.1.4.2 किनेमा जुनपो (Kinema Junpo)

यह जापान की सबसे पुरानी फिल्म पत्रिकाओं में से एक है, जिसका प्रकाशन जुलाई 1919 में शुरू किया गया। पहले यह एक महीने में तीन बार निकलती थी। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद यह एक माह में दो बार निकलने लगी। इस सिने - पत्रिका का इतिहास बहुत रोचक है। इसकी स्थापना जापान के हाई स्कूल के तत्कालिन चार छात्रों (जिसमें सबुरो तनाका - Saburo Tanaka भी शामिल थे) द्वारा किया गया। आज वह हाई स्कूल टोक्यो प्रौद्योगिकी संस्थान के रूप जाना जाता है। इसमें जापानी सिनेमा के साथ उस समय के वैश्विक सिने आंदोलनों पर भी आलेख प्रकाशित किए जाते थे।

स्रोत-(किनेमा जुनपो की ऑफिशियल वेबसाइट)

1.1.4.2 चीन की सिने-पत्रकारिता

1.1.4.2.1 समाचार-पत्र

चीन विश्व का सबसे बड़ा दैनिक समाचार पत्र बाजार है। यहां दैनिक समाचार पत्रों की प्रतिदिन 96.6 लाख प्रतियां बिक जाती हैं। इसलिए इसका विज्ञापन राजस्व में (advertisement revenues) सन 2001 से 2006 तक 128% की वृद्धि हुई।

1.1.4.2.2 चीन की न्यूज एजेंसियां

चिन्हुआ न्यूज एजेंसी और चीन न्यूज सर्विस, वहां बड़े पैमाने पर राष्ट्रीय और आंचलिक समाचार पत्रों को समाचार सेवा देती हैं, जिसमें दूसरे अन्य समाचार पत्रों के साथ सिने समाचार भी होते हैं। सिनेमा की खबरें वहां के सबसे अधिक वितरण संख्या वाले अखबार पीपुल्स डेली में प्रमुखता से छपती हैं। इसके साथ अन्य दूसरे बड़े अखबारों जैसे- इनलाइटमेंट डेली व चीन युथ डेली में भी प्रकाशित होती हैं। चीन के कई समाचार पत्रों ऐतिहासिक रूप से विशेष उल्लेखनीय हैं, जैसे चाइना डेली (अंग्रेजी में छपने वाला समाचार पत्र-एक जून, 1981 से स्थापित) और गाउंगमिंग डेली (*Guangming Daily* -16 जून, 1949 से स्थापित-चीनी भाषा में छपने एक उदारवादी पत्र) में बड़े पैमाने पर सिने-समाचार प्रकाशित होते हैं।

1.1.4.2.3. चीन की प्रमुख सिने-पत्रिकाएं

1.1.4.2.3.1 सिनेमा वर्ल्ड (*Cinema World*)

यह पत्रिका साधारण चीनी भाषा में छपती है। सन 1958 से मासिक रूप से लगातार छप रही है। इसका प्रकाशन चेंगचन फिल्म समूह (Changchun Film Group Periodical Publishing) द्वारा होता है।

1.1.4.2.3.2 मूवी व्यू (*Movie View*)

यह पत्रिका सामान्य चीनी भाषा में छपती है। यह द्वि-साप्ताहिक है और सन 1999 से मूवी व्यू मैगजिन प्रेस (Movie View Magazine Press) द्वारा लगातार प्रकाशित हो रही है।

1.1.4.2.3.3 वर्ल्ड स्क्रीन (*World Screen*)

सन 1985 से वर्ल्ड स्क्रीन प्रेस द्वारा साधारण चीनी भाषा में मासिक रूप से छप रही है।

इन सबके अतिरिक्त *एशियन सिनेमा (Asian Cinema)* जैसी पत्रिका भी सन 1995 से निकल रही है। यह पत्रिका प्राध्यापक जॉन लेंट (John Lent) के संपादकत्व में निकलती है, जो अर्धवार्षिक है। इसमें शोधपूर्ण तरीके से एशिया के देशों की सिनेमा पर शोध आलेख छपते हैं। आज के समय में एशिया के अन्य देशों में सिने पत्रकारिता का दायरा बढ़ रहा है और इलेक्ट्रॉनिक माध्यम के आने के बाद इसमें विशेष वृद्धि दर्ज की गई है।

द्वितीय अध्याय

भारत में सिने-पत्रकारिता

2.1 स्वाधीनतापूर्व की सिने-पत्रकारिता

शेष विश्व के साथ भारत में भी भले ही सिनेमा के साथ सिने-पत्रकारिता का जन्म तो अवश्य हुआ, परंतु स्वतंत्र सिने-पत्रकारिता का जन्म अभी तक संभवतः नहीं हो सका है। हिंदी सिने-पत्रकारिता के लिए यह किसी विडंबना से कम नहीं कि आज भी हिंदी फिल्मों पर गर्म और सार्थक चर्चा या खबरें अंग्रेजी के अखबारों, पत्रिकाओं और चैनलों में ही संपन्न होती हैं। भारत में पहली भारतीय फिल्म बनने के सत्रह साल पहले ही सिने खबर द *टाइम्स ऑफ इंडिया* में छपी, जिसके विषय में हिंदी सिने इतिहासकार मिहिर बोस का कहना है- *“On that June morning in 1896, the times of India, then a british owned paper in Bombay, had carried an advertisement asking Bombay residents to witness the marvel of the century, the wonder of the World at Watsons Hotel. There would, said the paper, before showings of ‘cinematographe’ living photographic picture in life style reproductions at 6,7, 9 and 10 PM.”*¹ अर्थात् उस जून 1896 को ब्रिटिशों के स्वामित्व वाले समाचार पत्र टाइम्स ऑफ इंडिया के बाम्बे संस्करण में एक विज्ञापन छपा जिसमें बंबईवासियों को उस सदी के चमत्कार अर्थात् जिंदा तस्वीरों को देखने के लिए कहा गया था। इन जिंदा तस्वीरों को सिनेमैटोग्राफी (cinematography) कहा गया था, जिन्हें वाटसन होटल में शाम को 6,7,9 एवं 10 बजे दिखाया जाना था।

इस आयोजन को मार्क ट्वैन (Mark Twain) ने देखा था और दर्ज भी किया। उसने कहा *Something Like a huge birdcage... risen like an exhalation from the Earth.*²

9 जुलाई, 1896 की इस सिने हलचल को बाम्बे गजट में इस तरह दर्ज किया गया है- *“The view included the arrival of a crowded train at a railway station with all the animation and bustle that such an event, resents and the demolition of a well- a work so realistic that the dust is seen to ascend in volumes when the wall finally totters. The sea bath is another*

¹-Bollywood A History, Mihir Bose, Roli Books, Pg 38, Paper Back edition 2008.

²-Bollywood A History, Mihir Bose, Roli Books, Pg 40, Paper Back edition 2008.

very good scene: the dashing of waves upon the beach, and the antics of the bathers both being very realistic, But this is beaten by 'Leaving the factory, which brings a whole crowd of moving humanity into the canvas and is, without, doubt, the most realistic scene of all 'Ladies on wheels' is a very vivid representation of the cycling craze as can be seen any day in Hyde Park. No one who takes an interest in the march of science should allow the opportunity to pass the now that now presents itself to see the cinematograph an invention which is attracting great deal of attention at home. ”³

अर्थात वह दृश्य जिसमें एक भरी ट्रेन रेलवे स्टेशन पहुंचती है और एक जीवंत हलचल देखने को मिलती है। साथ ही स्नान करने वालों की हरकत भी दृश्य में शामिल था। ध्वंस हुए कुएं का दृश्य, उड़ते धूल का दृश्य और लड़खड़ाते हुए दीवार का अंत में गिर जाना, सब मिलाकर उसे देखना बहुत ही प्रभावशाली अनुभव रहा। समुद्र स्नान एक दूसरा रोचक दृश्य था- समुद्र के किनारे लहरों का आना, स्नानार्थियों की गतिविधियाँ आदि सबको देखना यथार्थ को घटित होते देखने जैसा था। किंतु यह दृश्य कारखाने से आने वाले दृश्य से कमतर रहा। इस दृश्य में सारे कामगार मजदूर कैनवस पर छा गए हैं। पहियों पर सवार महिलाओं को देखना निश्चित रूप से अनुभवजन्य रहा। इसे देखकर हायदे पार्क में सायकिल सवारी का क्रेज याद आ जाता है। सिनेमैटोग्राफी साइंस का एक अनुपम व अनुभवजन्य व मनोरंजनपूर्ण उपहार है जिससे कोई बच नहीं सकता। इसी तरह प्रथम भारतीय फिल्म राजा हरिश्चंद्र की खबर भी एक विज्ञापन के रूप में सर्वप्रथम बांबे क्रॉनिकल (Bambay Chronicle) में छपी।

3-Bollywood A History, Mihir Bose, Roli Books, Pg 51, Paper Back edition 2008.

2.1.1 क्षेत्रीय सिने-पत्रकारिता

क्षेत्रीय सिने-पत्रकारिता से अभिप्राय उस पत्रकारिता से लिया गया है, जो पत्रकारिता किसी क्षेत्र या राज्य विशेष में पनपी। इसमें अधिकतम पुरानी भाषाई सिने-पत्रकारिता की छानबीन की गई है। किंतु कहीं-कहीं अंग्रेजी भी क्षेत्र विशेष में पनपी। यह बात अलग है कि शीघ्र ही उसने राष्ट्रीय छवि अर्जित कर लिया। भारत में सिनेमा का विस्तार इसके सभी प्रदेशों में हुआ। फलस्वरूप बहुत स्पष्ट तो नहीं परंतु कुछ हद तक प्रादेशिक समाचार-पत्रों और पत्रिकाओं में सिनेमा की सूचना और टिप्पणियां प्रकाशित होने लगीं। इसी से क्षेत्रीय सिने-पत्रकारिता का उदय माना जा सकता है। गौरतलब है कि यह रूझान लगभग सभी भारतीय भाषाओं में देखने का मिला। चूंकि हिंदी सिने-पत्रकारिता भी उन्हीं में एक थी और थोड़ा बहुत प्रभावित भी रही इसलिए संक्षेप में क्षेत्रीय पत्रकारिता का विवरण यहां प्रस्तुत किया जा रहा है।

2.1.1.1 बांग्ला सिने-पत्रकारिता

भारत के सिने-पत्रकारिता के इतिहास में यह पूरी प्रामाणिकता से नहीं कहा जा सकता कि यहाँ की पहली सिने-पत्रिका कौन थी और कब और कहाँ से प्रकाशित हुई। किंतु क्षेत्रीय भाषाओं में सिने पत्रकारिता की पहली कोशिश बंगलाभाषा की पत्रिका बिजोली (Bijoli) के द्वारा किया गया। दुर्भाग्य से आज इस पत्रिका की कोई प्रति उपलब्ध नहीं है।

सन 1930 का साल भारतीय सिनेमा के लिए महत्वपूर्ण साल रहा। क्योंकि यह साल सवाक सिनेमा के निर्माण का आधार साल है। इस वर्ष कोलकाता में 'ईस्ट इंडिया फिल्म कंपनी'⁴ की स्थापना की गई। इसी साल शैलजानंद मुखर्जी द्वारा बंगला भाषा में बाईस्कोप नाम की एक साप्ताहिक फिल्म पत्रिका का भी प्रकाशन होने लगा और इस प्रकार वर्ष 1931 का आगमन हो गया और इस वर्ष दो अन्य बंगला भाषा की फिल्म पत्रिकाएं 'वातायन' (Vatayan, संपादक अविनाश चंद्र घोषाल) और 'चित्रलेखा' (Chित्रalekha- संपादक विभूति भूषण) का प्रकाशन हुआ। इसके थोड़ा पहले-फोटोप्ले (Photoplay, 1926 कोलकाता) जैसी पत्रिका भी निकलने लगी थी। बंगला सिनेमाकारों ने हमेशा वैचारिक विस्तार के महत्व को समझा इसलिए सिनेमा पर गंभीर चर्चा और लेखन को पूरा करने के लिए सन 1957 में चिदानंददास गुप्ता (Chidanand Das Gupta) ने सत्यजीत राय, मृणाल सेन और

⁴-East India Film Company – The East India Film Company was the first Indian Film Company to screen a movie at an International Film Festival. Started in 1932 in Calcutta by R.L. Khemka, it went on to be a pioneer in producing films across four regional film industries, namely Bengali, Hindi and Telugu in the decade after its founding, till then production companies were restricted regionally- East India Film Company Wikipedia.

अन्य के साथ मिलकर इंडियन फिल्म क्वार्टर्ली (India Film Quarterly) निकाला। इस पत्रिका की भाषा अंग्रेजी थी, परंतु प्रस्तुति एवं वैचारिकता में यह एक उल्लेखनीय पत्रिका थी। इसके बाद सन 1962 में कोलकाता से ही भारतीय फिल्म सोसायटी (Federation of Film Society of India) द्वारा फिल्म कल्चर (Film Culture) पत्रिका निकलने लगी।

2.1.1.2 मलयालम सिने-पत्रकारिता

मलयालम सिनेमा अर्थपूर्ण सिनेमा माना जाता है। मलयालम सिनेमा के एक बड़े दौर को मलयालम सिनेमा डायरेक्टरी में संग्रहित किया गया है। इसके अतिरिक्त पत्रिका नाना (Nana 1982) में 1980 तक की फिल्मों और फिल्मकारों के विषय में जानकारी दी गई है। साथ ही प्रारंभिक मलयालम सिनेमा को मद्रास चेंबर ऑफ कामर्स और जर्नल ऑफ केरल फिल्म चैंबर्स ऑफ कॉमर्स के माध्यम से विस्तार से जाना जा सकता है। आज के समय में मलयालम के तमाम पत्रों और पत्रिकाओं में सिने सामग्री प्रस्तुत की जाती है।

2.1.1.3 तमिल सिने-पत्रकारिता

निश्चित रूप से तमिल सिनेमा आज एक मुकाम पर है। आज यहां से सिनेमा एक्सप्रेस जैसी पत्रिका निकलने लगी है। परंतु प्रारंभ में स्थिति बहुत ही खराब थी। यह सच है कि आज स्थिति बहुत ही बदली हुई है परंतु प्रारंभ में क्षेत्रीय सिनेमा बनने के कारण क्षेत्रीय सिने-पत्रकारिता अब आम बात हो गई थी। सन् 1935 में प्रथम तमिल सिने पत्रिका 'सिनेमा उलागम' (Cinema Ulagam) शुरू की गई। इसके संपादक पी.एस. चेट्टियार (P.S. Chettiar) थे।

तमिल सिनेमा मनोरंजन एवं प्रतिरोध की दृष्टि से भारतीय सिनेमा के इतिहास में एक अलग मुकाम रखता है। यहाँ से द हिंदू और द मद्रास मेल जैसे मशहूर समचार पत्र प्रकाशित होने के बावजूद तमिल सिनेमा के विषय में शुरू में कुछ नहीं लिखा गया। अपने आलेख 'इनकाउंटिंग ए नीव आर्ट : राइटर्स रेस्पॉन्स टू सिनेमा इन तमिलनाडु' में एस थियोडोर भास्करन ने कहा है कि "मद्रास में सिनेमा का आगमन हुआ किंतु तमिल लेखकों और विद्वानों द्वारा इस पर ध्यान नहीं दिया गया। सन 1920 में ही मद्रास के माउंट रोड पर स्थाई सिनेमाघर बन गया था। इसके कुछ समय बाद कोयंबटूर एवं त्रिचि में भी सिनेमा हाल बन गए। किंतु जब आप मूक सिने दौर (1916-1931) की पत्रिकाएँ और अखबार देखेंगे तो निराश होंगे और खोजने पर भी शायद ही कोई प्रकाशित सिने-सामग्री प्राप्त कर सकें। कवि और लेखक सुब्रह्मण्यम भारती ने तमाम समकालीन मुद्दों पर लेखन किया है। किंतु सिनेमा पर उनके द्वारा कुछ नहीं लिखा गया। उनका जीवनकाल पर्याप्त रहा। वे सवाक सिने दौर में भी लेखन करते रहे परंतु फिर भी

सिनेमा उनकी नजरों से ओझल रहा। उन्हीं के समकालीन दूसरे तमिल लेखक और प्रकाशक ए मदावैया (A. Madhaviah) जिन्होंने 1925 तक लेखन किया। परंतु इन्होंने भी मनोरंजन के इस उभरते लोकप्रिय माध्यम पर ध्यान नहीं दिया। साम्यवादी चिंतकों ने भी इस माध्यम की गंभीरता को नहीं समझा। उस समय के अखबारों द हिंदू और द मद्रास मेल द्वारा भी तमिल सिनेमा पर सामग्री प्रस्तुत नहीं की जाती रही। हालांकि इनमें अंग्रेजी सिनेमा पर सामग्री प्रस्तुत की जाती रही।⁵ किंतु जैसा कि ऊपर दिखाया गया है कि सिनेमा के आगमन से परिवेश आर्थिक होता गया जिसे नजरंदाज करना मुश्किल हो गया। बकौल भास्करन “एक बार सिनेमा जब स्थापित हो गया तो समाचार माध्यमों द्वारा इस समेकित कला माध्यम को समझने और संप्रेषित करने की प्रक्रिया शुरू हो गई। एस.के. वासगम (S.K. Vasagam) ने 1928 में दक्षिण भारत की प्रथम अंग्रेजी सिने-त्रिका मुवी मिरर (Movie Mirror) प्रारंभ की। यह अंग्रेजी मासिक फिल्म पत्रिका थी। इस पत्रिका के तीन साल बाद श्री वासगम ने अम्यूजमेंट (Amusement) नाम की साप्ताहिकी शुरू की। इसका एक हिस्सा अंग्रेजी में और दूसरा हिस्सा तमिल में निकलता था। यह पत्रिका सवाक सिनेमा के आगमन तक निकलती रही। सन 1935 में तमिल भाषा की प्रथम पत्रिका सिनेमा उलागम प्रकाशित हुई।⁶ ध्यातव्य है कि सिनेमा उलागम का उल्लेख पहले भी किया गया है। स्वाधीनता पूर्व तमिल में एक सिने-पत्रिका आनन्द विकातन (Ananda Vikatan- 1928) निकली जो आज भी निकल रही है। स्वीधनता पश्चात वाले खंड में भी इसका उल्लेख किया जाएगा।

2.1.1.4 तेलुगु सिने-पत्रकारिता

तेलुगु सिनेमा की शुरुआत विधिवत रूप से सन 1921 में उस समय हुई, जब रघुपति वेंकैया नायडु (Raghupati Venkaiya Naidu) ने मूक फिल्म ‘भीष्म प्रतिज्ञा’ का निर्माण किया। भारतीय सिनेमा में रघुपति वेंकैया नायडु का नाम विशेष आदर से लिया जाता है। तेलुगु सिनेमा की शुरुआत करने के कारण इन्हें तेलुगु सिनेमा का जनक कहा जाता है। तेलुगु सिनेमा ने अपने शुरुआती दौर से ही राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त की। सन 1933 में ही ईस्ट इंडिया फिल्म कंपनी (East India Company) ने अपनी पहली फिल्म सावित्री का निर्माण तेलुगु में किया। इस फिल्म की शूटिंग कोलकाता शहर में की गई। उस समय इसके निर्माण में 75 हजार रुपए लगे थे। फिल्म का निर्देशन तेलुगु थियेटर आंदोलन के जनक चित्राजालु पुलैया (Chittajalu Pullaiah), ने किया था। यह अपने समय की ब्लॉकबस्टर फिल्म थी। यह वह फिल्म थी ‘जिसे वेनिस फिल्म

⁵-Tamil Cinema: The Cultural Politics of India's other Film Industry, ed.by. Selvaraj Velayutham, pg. 113

⁶ Bollywood A History, Mihir Bose, Roli Books, Pg 39, Paper Back edition 2008.

फेस्टिवल में जूरी डिप्लोमा पुरस्कार प्राप्त हुआ।¹⁷ इसीके साथ यहाँ सिने-पत्रकारिता को भी पाँच जमाने का अच्छा अवसर प्राप्त हुआ। वसीराजु प्रकाशन (तेलुगु वार्ता के फीचर संपादक) और के.एन.टी.शास्त्री जैसे सिने आलोचकों एवं पत्रकारों को राष्ट्रीय स्तर पर स्वीकृति मिली।

2.1.1.5- पंजाबी सिने-पत्रकारिता

भारतीय सिनेमा के विकास में पंजाब का बहुत योगदान रहा है। पंजाब ने हिंदी सिनेमा के विकास में सहयोग के साथ खुद अपनी भाषा में भी सिने निर्माण की कूबत पैदा की। पंजाबी सिनेमा को पॉलीवुड (Pollywood) कहा जाता है, जो उचित नहीं है। विभाजन के पूर्व अर्थात् 20वीं सदी में पंजाबी सिनेमा का दायरा बहुत बड़ा था। आज जिन इलाकों से पाकिस्तान बना है, एक समय में वहाँ उर्दू मिश्रित पंजाबी फिल्मों का बोलबाला था। बाद में अर्थात् 21 वीं सदी में पंजाबी सिनेमा के स्वरूप में बदलाव देखा गया।

पहली पंजाबी फिल्म कलकत्ता (अब कोलकाता) में बनी और प्रदर्शित की गई लाहौर में। फिल्म का नाम था शीला (Sheila) जो एक बोलती फिल्म थी। यह सन 1936 में प्रदर्शित की गई। यह वही फिल्म थी जिसमें बतौर अभिनेत्री नूजहां का फिल्मी दुनिया में प्रवेश हुआ। नूजहां इसी फिल्म से स्थापित हो गईं साथ ही पंजाबी फिल्म निर्माण को प्रोत्साहन भी प्राप्त हुआ। चूंकि शीला सफल हो चुकी थी। इसलिए इस फिल्म के निर्माता श्री के.डी. मेहता ने दूसरी फिल्म हीर सियाल (Heer Sial, 1938) का निर्माण किया, जिसमें नूजहां को पुनः शामिल किया गया। यह फिल्म भी सफल रही।

चूंकि लाहौर में पंजाबी समुदाय के लोगों की अच्छी आबादी थी। इसलिए यह क्षेत्र शीघ्र ही पंजाबी भाषा की फिल्मों का बाजार बन गया। फलस्वरूप बहुत से स्टूडियो यहाँ स्थापित किए गए। कलकत्ता और बाम्बे से कलाकार लाहौर में आ गए, जिसमें शांता आप्टे, मोतीलाल, चंद्र मोहन, नूजहां, वली शंकर हुसैन एवं बलदेव राज चोपड़ा (बी.आर. चोपड़ा) जैसी फिल्म हस्तियाँ शामिल रहीं। इसलिए लाहौर ही वह शहर है जहाँ पंजाबी सिने-पत्रकारिता का जन्म हुआ और जिसने बड़े पैमाने पर हिंदी सिनेमा को आगे बढ़ाया। खुद बी.आर. चोपड़ा ने लाहौर से 'सिने-हेराल्ड' का प्रकाशन प्रारंभ किया। रामानंद सागर 'इवनिंग न्यूज' में सिने कालम लिखते थे। सैयद अताउल्लाह हाशमी 'अदाकार' जैसे सिने-समाचार पत्र में काम करते थे। विभाजन के बाद पंजाबी सिनेमा दो फाँक में बंट गया। भारत में पंजाबी सिनेमा मोहाली के अजीतगढ़ में बनने लगा। आज यही शहर पंजाबी सिनेमा

¹⁷-Bhagwan Das Garg (1996), So Many Cinemas: The Motion Picture in India, Eminence Design, pg. 86, digital education.

का केंद्र बना हुआ है। अभिनेत्री और गायिका नूरजहां को प्रथम बार सिनेमा में प्रवेश दिया गया। यह फिल्म एक बड़ी हिट साबित हुई। फलस्वरूप नूरजहां इसी फिल्म से स्थापित हो गईं। साथ ही पंजाबी फिल्म निर्माण को प्रोत्साहन भी प्राप्त हुआ।

2.1.1.6 मराठी सिने-पत्रकारिता

भारत की पहली मराठी फिल्म 1912 में बनी। मराठी भाषा का सिनेमा भारत में सबसे पुराना फिल्म उद्योग है। पहली मराठी फिल्म श्री पुंडलिक 18 मई 1912 को मुंबई के क्रोनेशन सिनेमैटोग्राफ में प्रदर्शित हुई, जिसका निर्माण दादा साहेब तोर्ने ने किया था। प्रथम सवाक मराठी फिल्म अयोध्याचा राजा (Ayodhyacha Raja) थी, जो प्रथम सवाक हिंदी फिल्म आलम आरा के एक साल बाद अर्थात् सन 1932 में प्रदर्शित हुई।

दादा साहेब फाल्के भारतीय सिनेमा के जनक माने जाते हैं। उन्होंने गतिशील प्रतिबिंबों की खोज कर मनोरंजन का एक नया संसार खोल दिया। दूसरे शब्दों में कहें तो एक क्रांति ला दी। उनके द्वारा बनाई गई फिल्म राजा हरिश्चंद्र को फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान, पुणे एवं राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय द्वारा मराठी फिल्म माना गया है। क्योंकि इन संस्थानों का मानना है जब इस फिल्म का निर्माण हो रहा था, तब कलाकारों के पूरे संवाद मराठी में हुए और सारे कलाकार भी मराठी भाषी ही थे। एक समय में कोल्हापुर मराठी सिने निर्माण का गढ़ था। सन 1919 में कोल्हापुर नरेश के सहयोग से बाबू भाई मिस्त्री (बाबू भाई पेंटर) ने महाराष्ट्र फिल्म कंपनी का निर्माण किया और सन 1920 में अपने समय की महत्वपूर्ण फिल्म सैरन्ध्री (Sairandhri) का निर्माण किया। इस फिल्म में बालासाहेब पवार व कमला देवी ने अभिनय किया था। अपने समय में इस फिल्म की सेट, साज-सज्जा एवं पेंटिंग विशेष चर्चा में रहे। बाबू भाई मिस्त्री ऐतिहासिक विषयों पर फिल्म बनाते थे। उन्होंने 1930 तक मूक फिल्मों का निर्माण किया। वे मूक सिनेमा के कट्टर समर्थक थे। यह कट्टरता आगे नहीं चल सकी। अंततः महाराष्ट्र फिल्म कंपनी पर ताला लग गया। फिर भी बाबू भाई मिस्त्री मानते रहे कि आवाज दृश्य बोध संस्कृति को नष्ट कर देती है।

मराठी सिनेमा की तरह वहाँ पत्रकारिता की भी एक समृद्ध परंपरा रही है। राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक पत्रकारिता के क्षेत्र में मराठी पत्रकारिता के योगदान से भारत का प्रबुद्ध जनमानस अच्छी तरह परिचित है। मराठी सिनेमा की ऐतिहासिक सूचनाएं अंग्रेजी समाचार पत्रों के अभिलेखागार से प्रचुर मात्रा में प्राप्त हो सकती हैं।

2.1.1.7 गुजराती सिने-पत्रकारिता

सन 1924 में भारत की प्रथम नियमित सिने-पत्रिका 'मौज मजा' (Mauj Majah) गुजराती में प्रकाशित हुई। इसका प्रकाशन बम्बई से होता था जिसके संपादक थे जे.के. द्विवेदी। सन् 1929 में नगीनलाल शाह द्वारा गुजराती सिने-पत्रिका चित्रपट का प्रकाशन मुंबई से किया गया। अर्थात् सिने-पत्रकारिता का प्रयास जारी हो गया था।

2.1.2 संक्रमणकाल की सिने-पत्रकारिता

(मूक सिनेमा की समाप्ति और सवाक सिनेमा का आगमन)

स्पष्ट है कि सन 1931 का साल भारतीय सिनेमा के इतिहास में एक मुहाने की तरह है। अर्थात् सन 1931 के पहले का समय मूक सिनेमा का है और उसके बाद का समय सवाक सिनेमा का है। किंतु इसका अर्थ यह कतई नहीं है कि 1931 के बाद मूक फिल्मों का निर्माण एकदम से बंद हो गया। सन 1932 में ही कम से कम 20-25 मूक फिल्में बनीं, जिसमें कुछ के नाम इस प्रकार हैं- अनकही जाल (Ankahi Jal), एशियाई सितारा (Asiai Sitara), बगदाद का सितारा (Bagdad ka Sitara), बहुरूपी बाजार (Bahurupi Bazar), बेगर गर्ल ऑफ आगरा (Beggar Girl of Agra), बेवफा कातिल (Bewafa Kaitil), भाग्य लक्ष्मी (Bhagya Laxmi), भारत वीर (Bharat Veer), भवानी तलवार (Bhawani Talwar), भेदी खंजर (Bhedi Khanjer) और दर्दी (Dardi) आदि। उसी प्रकार सन 1933 में भी कई मूक फिल्में बनीं, जिसमें कुछ के नाम इस प्रकार हैं- आबाद चोर (Abad Chor), आजाद अबला (Azad Abla), बदमाश का बेटा (Badmash Ka Beta), भाग्य चक्र (Bhagya Chakra), भक्त कालिदास (Bhakta Kalidas), चांडाल चौकड़ी (Chandal Chokdi), डेयर डेविल (Dare Davil), दिलदार (Dildar), दिलरूबा डाकू (Dilruba Daku), जगत मोहिनी (Jagat Mohini), और रंगभरी (Rangbhari) आदि। किंतु सन 1934 तक आते-आते मूक फिल्मों का निर्माण कम हो गया। इस साल केवल सात मूक फिल्में बन पाईं- अजित योद्धा (Ajit Yoddha), ब्ल्यू क्रॉस (Blue Cross), जादुई जंग (Jadui Jung), खजाना (Khajana), नियोति (Niyoti), राजदंड (Rajdanda), शरीफ बदमाश (Sarif Badmash), सिंह की प्यास (Singh Ki Pyas) और तीसमारखां (Teesmarkhan)।

भारतीय सिनेमा के इतिहास के अनुसार माना जाता है कि सन 1934 के बाद मूक फिल्म का निर्माण नहीं हुआ। अंतिम मूक फिल्म तीसमारखां को माना गया है। इसके बाद सवाक फिल्मों का दौर अबाध गति से चल पड़ा। इस दौर की सिने-पत्रकारिता द्वारा इस दौर को दर्ज किया गया, जिसे बाम्बे समाचार (स्थापित सन 1822), बाम्बे क्रानिकल (स्थापित सन 1910), टाइम्स ऑफ इंडिया (स्थापित 03 नवंबर 1838) और बीसवीं सदी (संस्थापक रविशंकर रावत) आदि में दर्ज किया गया। बाम्बे क्रानिकल (Bombay Cronical) के 90-95 साल पुराने अंकों से सिनेमा के उस दौर को जाना जा सकता है। साथ ही एक बेहद जरूरी किंतु अत्यंत उपेक्षित दौर के सिने इतिहास को तैयार किया जा सकता है। इसके लिए केंब्रिज विश्वविद्यालय के पुस्तकालय का अभिलेख संग्रह

विभाग उपयोगी हो सकता है। मूक सिनेमा पर उपलब्ध सामग्री सहेजना अत्यन्त आवश्यक है क्योंकि यह हमारे सिनेमा की नींव है। सन 1912-1934 में 1300 से ज्यादा फिल्मों का निर्माण किया गया। राष्ट्रीय फिल्म अभिलेखागार की तमाम कोशिशों के बावजूद लगभग तेरह फिल्मों का संकलन अब तक हो पाया है। इसलिए यह आवश्यक हो जाता है कि उस दौर की सिने-सूचना सामग्री को संकलित किया जाए। सन 1934 में जहाँ सिंह की प्यास और तीसमार खां जैसी फिल्में बनी, वहीं वी. शांताराम ने अमृत मंथन जैसी सवाक फिल्म बनायी। हालांकि इससे पहले अयोध्या का राजा (1932) जैसी फिल्म वे बना चुके थे। आगे चलकर उन्होंने ब्राह्मणवादी व्यवस्था एवं जातिगत छुआछूत को आधार बनाकर धर्मात्मा (Dharmatma, 1935) जैसी फिल्म बनाई जिसके प्रदर्शन पर प्रतिबंध लगा दिया गया। यह प्रतिरोधी क्रम अमर ज्योति (1936), दुनिया न माने (1937) और आदमी (1939) आदि तक चलता रहा। मूक और सवाक फिल्मों के इस मुहाने पर हिंदी की फिल्म पत्रिका चित्रपट (संपादक हरीश चरण जैन) दिल्ली से 1934 में प्रकाशित हुई। इसी वर्ष चित्रलेखा का भी प्रकाशन प्रारंभ हुआ। इसके एक साल बाद अर्थात् 1935 में सिनेमा की बहुत ही प्रसिद्ध पत्रिका फिल्म इंडिया (Film India) शुरू की गई। इसे हिंदी सिनेमा की प्रथम ट्रेड मैगजीन होने का गौरव प्राप्त है। अब सिनेमा की तरह फिल्मी पत्रिकाओं का भी प्रचलन शुरू हो गया था।

2.2 स्वाधीनता पश्चात की सिने-पत्रकारिता

स्वाधीनता पश्चात संविधान लागू होने के बाद अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के साथ प्रेस को भी कानूनी आधार प्राप्त हुआ। फिल्मों में एक आदर्शवादी रूझान बढ़ा। सिने-पत्रकारिता को इस सार्थक रूझान के साथ अपने को बदलना चाहिए था। परंतु व्यापक रूप से ऐसा नहीं हो सका। इसके कई सारे कारणों में से सबसे बड़ा कारण यह था कि सिने-पत्रकारिता को कुछ अवसरों को छोड़कर कभी गंभीरता से नहीं लिया गया। फिर उस दौर के भारतीय सिने-पत्रकारिता का संक्षिप्त विवरण नीचे क्षेत्रीय सिने-पत्रकारिता खंड के अंतर्गत दिया जा रहा है –

2.2.1 क्षेत्रीय सिने-पत्रकारिता

जिस तरह स्वाधीनता के पूर्व भारतीय सिने-पत्रकारिता का एक क्षेत्रीय रूप उभरा था। उसी तरह स्वाधीनता के पश्चात उस उभार में प्रगति हुई, जिसे प्रादेशिक आधार पर देखने का प्रयास किया गया है। संक्षेप में उसका विवरण इस प्रकार है -

2.2.1.1 बांग्ला सिने-पत्रकारिता

स्वाधीनता के बाद बंगाल का एक बड़ा हिस्सा पाकिस्तान में चला गया, जो आगे चलकर बंगला देश नाम के स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में उदित हुआ। इस अध्याय में विभाजन के पश्चात बंगलादेश का वह हिस्सा जो भारत को प्राप्त हुआ और जिसे पश्चिम बंगाल का नाम दिया गया के सिने-पत्रकारिता का उल्लेख किया गया है। आजादी के बाद सन 1981 में यहां से बंगाली भाषा का समाचार-पत्र कलम (Kalom) निकलता है, जिसमें सिनेमा की खबरें भी शामिल रहती हैं। दूसरा समाचार-पत्र दैनिक जुगसांघा (Dainik Jugasankha) जैसा पत्र सन 1950 से गुवाहाटी, सिल्चर और डिब्रुगढ़ से एक साथ निकलता है। इसमें भी सिने खबरों का पर्याप्त स्थान दिया जाता है। इसी तरह यहां से झार (Jhar) जैसा बंगला भाषा का पत्र 1967 से निकल रहा है। इसमें सिने-सामग्री को प्रस्तुत किया जाता है। यह समाजवादी रूझान वाला पत्र है। इस समय इस पत्र के संपादक अचिंत्य सिन्हा हैं। आनंद बाजार पत्रिका अभी भी निकल रही है। यह पत्र यद्यपि बांग्ला भाषा में प्रकाशित होता है फिर भी यह कोलकाता, नई दिल्ली और मुंबई से एक साथ प्रकाशित होती है। इसकी प्रतिदिन 12,77,000 प्रतियाँ छपती हैं जो इसे भारत की क्षेत्रीय भाषाओं के समाचार पत्रों में सबसे बड़ा बनाती हैं। इसमें अन्य सूचनाओं के साथ सिने-सूचना और सिनेमा पर आलेख यथा आवश्यक प्रकाशित होते रहते हैं। बांग्ला भाषा के वे पत्र जो बड़े पैमाने पर छपते हैं और जिसमें सिने-सामग्री प्रकाशित होती है, वे आजकल, गणशक्ति, दैनिक स्टेटमेंट, वर्तमान और संगबाद प्रतिदिन जैसे

पत्र हैं। ये सभी पत्र बांग्ला भाषा में प्रकाशित होते हैं। बांग्ला की पत्रिका आनन्दलोक जिसका संपादन रितुपर्णो घोष द्वारा किया गया। यह पत्रिका 1972 से निकल रही है। यह पूरी तरह से फिल्म की पत्रिका है।

2.2.1.2 मलयालम सिने-पत्रकारिता

मलयालम सिनेमा के विषय में मलयालम मनोरमा में सामग्री प्रकाशित की जाती रही है। यह समाचार पत्र सबसे पहले 1888 में प्रकाशित किया गया। बाद में 1938 में बंद कर दिया गया , जो सन 1947 से पुनः प्रकाशित किया जाने लगा है। इसीलिए इसे स्वाधीनता पश्चात वाले खंड में इसलिए शामिल किया गया है। स्वाधीनता के बाद और सार्थक सिनेमा के दौर में इसने मलयालम सिनेमा पर कई आलेख व अग्रलेख प्रकाशित किया। आज इसके वेब संस्करण पर मुवी स्तंभ के अंतर्गत सिने-समाचार व आलेख प्रकाशित किए जाते हैं। मलयालम के वे पत्र जिसमें सिने-समाचार प्रकाशित होते हैं, उसमें मंगलम (1969), जन्मभूमि (1977), मध्यमान डेली (1987) और दीपिका (1988) जैसे समाचार पत्र प्रमुख हैं। मलयालम की कई पत्रिकाओं में सिने-समाचार और आलेख प्रकाशित होते हैं, जैसे-बालारामा (Balarama-1972) और सिनेमा मंगलम (Cinema Mangalam) सिनेमा मंगलम एक साप्ताहिक सिने-पत्रिका है। मलयालम भाषा की कुछ सिने पत्रिकाएं, उनमें चलचित्रम (Chalachithram-1986), फिल्म मैगजिन (Film Magazine-1989) और वेल्लिनक्षत्रम (Vellinakshatram - 1989) विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

2.2.1.3 तमिल सिने-पत्रकारिता

स्वाधीनता के पश्चात तमिल सिने-पत्रकारिता में सकारात्मक बदलाव देखने को मिला। द हिंदू जैसा समाचार पत्र चेन्नई से छपता है। आजकल द हिंदू सिनेमा पर निरंतर सिने-सूचना व आलेख प्रकाशित करता है। पीछे बताया गया है कि आनन्द विकतम (Ananda Vikatan -1928) आज भी निकल रही है। इस पत्रिका में आज प्रचुरता और प्रमुखता से सिने-सामग्री प्रकाशित की जाती है। कुमुदम तमिल की साप्ताहिक पत्रिका है जो स्वाधीनता के कुछ महीने पश्चात (अक्तूबर 1947) निकलनी शुरू हुई। इसमें भी प्रमुखता से फिल्मी खबरों को जगह दिया जाता है। आज तमिल में दैनिक समाचार पत्रों के साथ स्वतंत्र रूप से सिने-पत्रिकाएं निकलने लगी हैं, जिनमें इंडियन एक्सप्रेस समूह की सिनेमा एक्सप्रेस (पाक्षिक) जैसी पत्रिका निकलने लगी है। आज स्थिति यह है कि तमिल में प्रचुर संख्या में सिने-पत्रिकाएं निकलने लगी हैं। इंटरनेट के आगमन से इस दिशा में विशेष गति आई है।

2.2.1.4 पंजाबी सिने-पत्रकारिता

स्वाधीनता के बाद पंजाबी सिने-पत्रकारिता का दायरा समाचार पत्रों में बढ़ा है। आज कई सारे पंजाबी भाषा

के समाचार पत्र हैं ,जिनमें सिने-समाचार और समीक्षाएं प्रकाशित होती हैं। ऐसा ही एक पंजाबी दैनिक समाचार-पत्र 'जगबानी' है। इसकी शुरुआत पंजाब केसरी समूह द्वारा सन 1978 में हुआ। यह पत्र जालंधर और लुधियाना से प्रकाशित होता है। यहां से निकलने वाले दूसरे समाचार पत्रों में अजित (1941-अब तक निकल रहा है) और पंजाबी ट्रिब्यून (1978) आदि शामिल हैं। पंजाब से कुछ पत्रिकाएं भी निकलती हैं, जिनमें सिने-सूचना, गॉसिप और आलेख प्रकाशित होते रहते हैं, इसमें मेहराम (Mehram), साड्डा पंजाब (Saddapunjab), घर सिंगार (Ghar shingar), रजनी और संगीत दर्पण (Sangeetdarpan) आदिशा मिल की जाती है। ये सारी पत्रिकाएं ऑनलाइन हैं।

(स्रोत-www.Punjabonline magazine.com)

2.2.1.5 मराठी सिने-पत्रकारिता

मराठी सिनेमा की तरह वहाँ पत्रकारिता की भी एक समृद्ध परंपरा रही है। राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक पत्रकारिता के क्षेत्र में मराठी पत्रकारिता के योगदान से भारत का प्रबुद्ध जनमानस अच्छी तरह परिचित है। मराठी सिनेमा की ऐतिहासिक सूचनाएं अंग्रेजी समाचार पत्रों के अभिलेखागार से प्रचुर मात्रा में प्राप्त हो सकती हैं। मराठी दैनिक समाचार पत्रों में मराठी सिनेमा की नई-पुरानी सामग्री प्राप्त होती है। इन समाचार पत्रों में सकाण (01 जनवरी 1932- यह पत्र आज भी निकल रहा है), लोकसत्ता (14 जनवरी, 1948), महाराष्ट्र टाइम्स (18 जून, 1962), डेली ऐक्या (Daily Aikya, 1924), दैनिक शिवनेर (1955), महानगर (1982) और पुढारी (13 मई 1937) आदि का नाम शामिल है।

इस समय मराठी सिनेमा पर समाचार-पत्रों और पत्रिकाओं के अतिरिक्त मराठी टी.वी. चैनलों द्वारा भी प्रमुखता से मनोरंजन एवं विश्लेषण सामग्री प्रस्तुत की जा रही है। मराठी टी.वी. चैनलों में स्टार उत्सव, जी मराठी, डी.डी. सह्याद्री, स्टार प्रवाह, कलर्स मराठी, आई.बी.एन. लोकमत एवं जै महाराष्ट्र आदि का नाम शामिल है।

2.2.1.6 उड़िया सिने-पत्रकारिता

उड़िया भाषा में प्रदर्शित पहली फिल्म थी- सीता विवाह। यह फिल्म 28 अप्रैल 1936 को लक्ष्मी टॉकीज, पुरी में प्रदर्शित की गई। यहाँ की दूसरी व तीसरी फिल्में क्रमशः थीं- ललिता (1949) और श्री जगन्नाथ (1949)। वैसे जब प्रथम ओड़िया फिल्म सीता विवाह प्रदर्शित हुई तभी से यहाँ स्थानीय पत्र पत्रिकाओं में इस नवीन कला माध्यम पर पर्याप्त लेखन हुआ। किंतु विधिवत रूप से ओड़िया फिल्म पत्रकारिता की शुरुआत प्रथम फिल्म के

प्रदर्शित होने के सोलह साल बाद अर्थात् सन 1951 में हुई उस पत्रिका का नाम सिने ओड़िशा था जो बहरामपुर से निकली। इसके बाद यहाँ ओड़िया भाषा की सिने-पत्रकारिता की राह सुगम हो गयी। सिने ओड़िशा के अगले क्रम में 'सिनेमा' नामक पत्रिका कोलकाता से छपने लगी। इसके प्रकाशक दुखश्याम मोहंती व मोहन महापात्र थे। अब ओड़िशा में सिने-पत्रकारिता का अच्छा परिवेश बन चुका है। यहाँ तक कि साठ के दशक में मुंबई से उड़िया सिने-पत्रिका 'चित्रपुरी' बसंत महापाल द्वारा प्रकाशित की जाने लगी। सन 1965 में यह कटक स्थानांतरित होकर वहीं से छपने लगी। 1966 से रणधीर दास ने कटक से ही 'रंगा' नाम की सिने पत्रिका शुरू की। किंतु आज यह परिवर्तित होकर ओड़िया की प्रमुख साहित्यिक पत्रिका बन चुकी है।

2.2.1.7 तेलुगु सिने-पत्रकारिता

तेलुगु भाषा के अग्रणी दैनिक समाचार-पत्र क्षेत्रीय भाषा के समाचार पत्रों की पाठकीयता में छठा (2012 के अनुसार) स्थान रखते हैं। इनाडु का अर्थ होता है 'आज'। इसके द्वारा प्रतिदिन तेलुगु सिनेमा व हिंदी सिनेमा पर सामग्री प्रस्तुत की जाती है। इस पत्र की स्थापना 1974 में मीडिया मुगल रामोजी राव द्वारा की गई। 'आंध्र पत्रिका' की स्थापना स्वतंत्रता संग्राम सेनानी कसिनादुनी नागेश्वरराव (Kasinadhuni Nageswara Rao) ने सन 1909 में मुंबई में की। इससे तेलुगु सिनेमा के प्रारंभिक दौर को समझा जा सकता है। इसकी प्रतियाँ गौतमी पुस्तकालय, राजमुंदरी से प्राप्त की जा सकती हैं। फिलहाल आज यह एक तेलुगु दैनिक समाचार पत्र है जो विजयवाड़ा से निकलता है। 'आंध्रप्रभा' एक समय में तेलुगु का अग्रणी दैनिक समाचार था। यह इंडियन एक्सप्रेस समूह का समाचार पत्र है, जिसकी स्थापना सन 1938 में हुई। इसके संस्थापक रामनाथ गोयनका थे।

वर्तमान में तेलुगु में 17 अग्रणी समाचार पत्र हैं जिनका उपयोग तेलुगु सिने-पत्रकारिता के ऐतिहासिक अध्ययन के लिए किया जा सकता है। इनमें से कुछ समाचार पत्रों के नाम इस प्रकार हैं- आंध्रभूमि, गोलकुंडा पत्रिका, प्रजाशक्ति, आंध्र ज्योति, साक्षी, तेलंगाना कलम और वार्ता आदि। तेलुगु सिनेमा के वैश्विक होने से तेलुगु सिने-पत्रकारिता भी वैश्विक हो गई है। संयुक्त राष्ट्र अमेरिका में तेलुगु भाषा-भाषी लोगों की अच्छी आबादी है। इसलिए वहाँ पर तेलुगु सिनेमा का अच्छा बाजार बन गया है। उन फिल्मों की चर्चा को भाषाई आनंद प्रदान करने के लिए वहाँ से तेलुगु पत्रिका 'तेलुगु नदी' प्रकाशित होती है। इसमें तेलुगु प्रदेश (आंध्र प्रदेश, तेलंगाना) की राजनीति, संस्कृति, सिनेमा और साहित्य पर सामग्री प्रकाशित की जाती है। इस पत्रिका की स्थापना डॉ. चौधरी जंपला (Dr Choudhary Jampala) ने 03 मार्च 2003 को की। फिलहाल इसकी पहुँच अमेरिका के पचास

राज्यों तक है जिनमें न्यूयार्क, न्यू जर्सी, कैलिफोर्निया, टेक्सास और अटलांटा प्रमुख हैं। पत्रिका का कार्यालय सेडर पार्क, टेक्सास में है। 01 अगस्त 2010 को इसमें एन.टी. रामाराव के फिल्मी योगदान की चर्चा की गई थी।

तेलुगु सिनेमा की दूसरी पत्रिका है साउथ स्कोप, जो एक मासिक पत्रिका है और अंग्रेजी में प्रकाशित होती है। इस पत्रिका को गीता आर्ट (Geeta Arts) से प्रोत्साहन मिलता है। इसके मालिक अल्लु शिरीस (Allu Sirish) हैं जो अल्लु अरविंद (Allu Aravind) के बेटे और अल्लु अर्जुन (Allu Arjun) के छोटे भाई हैं। अल्लु सिंह ने इस पत्रिका की नींव रखी और वे ही इसके प्रबंध संपादक हैं। पत्रिका का संपादन अरुण आर. कृष्णन (Arun R. Krishnan) द्वारा होता है। अरुणजी 'रिट्ज' और लाइफ स्टाइल पत्रिका के प्रकाशक भी हैं। फिलहाल साउथ स्कोप का वितरण संयुक्तराष्ट्र अमेरिका, मलेशिया, उत्तर-पूर्वी एशिया और यूरोप के देशों में डिजिटल रूप में होता है। मुद्रित रूप में यह 6 लाख पाठकों तक पहुँचती है। जैसा कि इसका नाम ही साउथ स्कोप है। इसलिए इसमें तेलुगु, तमिल, मलयालम और कन्नड़ फिल्मों से संबंधित खबरें, समीक्षाएं व विश्लेषण प्रकाशित होते हैं।

2.2.1.8 असमी सिने-पत्रकारिता

असमी सिनेमा का जन्म सन 1935 में हुआ। जब ज्योति प्रसाद अग्रवाल ने जोयमोती (Joymoti) फिल्म का निर्माण किया। दादा साहेब फाल्के की ही तरह ज्योति प्रसाद भी अपनी फिल्म जोयमोती के निर्माता, निर्देशक, पटकथा लेखक, नृत्य निर्देशक, गीतकार एवं संपादक आदि सब अकेले ही थे। फिल्म को पूरा होने में 60,000 रुपए की लागत आई और यह पूर्ण रूप से बनकर 10 मार्च 1935 को प्रदर्शित हुई। फिल्म बुरी तरह से पिट गई। जैसा कि प्रारम्भिक चरण की फिल्मों के साथ होता आया कि उसके प्रिंट संभाल कर नहीं रखे गए। उसी तरह इस फिल्म के प्रिंट भी संभाल कर नहीं रखे गए। चूँकि ज्योति प्रसाद अग्रवाल स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे, इसलिए उनमें जुनून था। पहली फिल्म में हुए आर्थिक नुकसान के बावजूद उन्होंने इन्द्रमालती (Indramalti) का निर्माण किया, जो सन 1939 में प्रदर्शित की गई। इन्द्रमालती वह फिल्म है, जिसमें भूपेन हजारिका ने भी अभिनय किया था। इसी फिल्म के निर्माण के बाद कुछ साल बाद ज्योति प्रसाद अग्रवाल की मृत्यु (17 जनवरी 1951) हो गई। ज्योति प्रसाद अग्रवाल असमी फिल्मों के जनक हैं। असम सरकार ने उनके सम्मान में 2004 में उनके नाम पर डाक टिकट जारी किया, साथ ही उनके नाम पर असम सरकार ने ज्योति चित्रबन फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान (Jyoti Chitranban Film and Television Institute) की स्थापना सन 1961 में की। यहां यह बताना आवश्यक है कि चित्रबन उस स्टूडियो का नाम है, जिसे इन्द्रमालती के निर्माण के लिए ज्योति प्रसाद अग्रवाल ने स्थापित किया था। हालांकि

इस समय असमी सिने-पत्रकारिता की स्थिति बहुत अच्छी नहीं है। अलग से सिने-पत्रिकाएं बहुत कम ही निकलती हैं। चित्र चिंता (Chitra Chinta) असमी भाषा में निकलने वाली सिने पत्रिका है, जो गुवाहाटी सिने क्लब द्वारा निकाली जाती है। यह पत्रिका वार्षिक है। पत्रिका की शुरुआत भवेंद्र नाथ सैकिया (Bhabendra Nath Saikai) ने की, जो एक प्रतिष्ठित असमी फिल्मकार हैं। दशक पूर्व स्थापित इस पत्रिका में असमी साहित्य और सिनेमा पर आलोचनात्मक सामग्री दी जाती है। इसके महत्वपूर्ण योगदान के कारण इसे सन 2010 में प्रतिष्ठित प्राग सिने पुरस्कार (Prag Cine Award) प्रदान किया गया¹। इसके अतिरिक्त वहाँ से निकलनी वाली अन्य मनोरंजन पत्रिकाओं (बिस्मोई, त्रिशुल, माया, रोमांस, तिस्नातुर और हिया) में असमी सिनेमा पर सामग्री प्रकाशित होती रहती है।

क्षेत्रीय सिने-पत्रकारिता की एक समृद्ध परंपरा रही है जो सूचना के इस युग में और भी ज्यादा त्वरित व मुखरित हुई है। हर प्रदेश की भाषा में सिने-पत्रकारिता के प्रमाण प्राप्त होते हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में केवल प्रमुख भाषाई सिने-पत्रकारिता की चर्चा की गई है।

2.3 क्षेत्रीय बनाम राष्ट्रीय सिने-पत्रकारिता

गतिशील छायाचित्रों के आगमन ने एक सामाजिक हलचल का परिवेश सृजित कर दिया था। इसलिए सिनेमा और सिने-पत्रकारिता का विकास राष्ट्रीय और क्षेत्रीय दोनों स्तर पर होने लगा था। सन 1951 में फिल्म पत्रिका स्क्रीन का प्रकाशन होने लगा। यह पत्रिका 'इंडियन एक्सप्रेस' समूह से निकाली गई, जिसकी भाषा अंग्रेजी है। पत्रिका की स्थापना 26 सितंबर 1951 को बंबई में मनोरमा काटजू द्वारा की गयी। यह पत्रिका साप्ताहिक है। इसमें हिंदी सिने-उद्योग की खबरें, साक्षात्कार एवं सिने विश्लेषण प्रस्तुत किए जाते हैं। मात्र इसके एक वर्ष बाद अर्थात् सन 1952 में फिल्मफेयर⁸ पत्रिका को प्रारंभ किया गया। आज भी यह पत्रिका प्रकाशित होती है। सिने-जगत में इसे विशेष दर्जा हासिल है। सिने संगीत पर पत्रकारिता द्वारा सबसे कम ध्यान जाता था। इसलिए 1956 में फिल्म पत्रिका 'संगीत' निकाली जाने लगी, जिसमें सिनेमा और संगीत के पारस्परिक संबंधों पर आलेख छपते थे। सिनेमा पर गंभीर चर्चा और लेखन को पूरा करने के लिए सन 1957 में चिदानंददास गुप्ता (Chidanand Das Gupta) ने सत्यजीत राय, मृणाल सेन और अन्य के साथ मिलकर इंडियन फिल्म क्वार्टर्ली (India Film Quarterly) निकाला। इस पत्रिका की भाषा अंग्रेजी थी, परंतु प्रस्तुति एवं वैचारिकता में यह एक उल्लेखनीय पत्रिका थी। इसके बाद सन 1962 में कोलकाता से ही भारतीय फिल्म सोसायटी (Federation of Film Society of India) द्वारा फिल्म कल्चर (Film Culture) पत्रिका निकाली जाने लगी। इसके साथ सन 1959 का साल भारतीय सिने-पत्रकारिता के लिए एक उल्लेखनीय साल माना गया। इसी साल सुषमा (उर्दू), सुषमा (हिंदी) और रासरंग (मराठी) जैसी पत्रिकाएं निकलीं। सन 1967 में कोलकाता से बंगला भाषा में चित्र-भिक्षण (Chitra Bhikshan) नाम की मासिक पत्रिका प्रकाशित होने लगी। सन 1971 में अंग्रेजी मासिक स्टारडस्ट निकलने लगी। स्टारडस्ट ने सिने-पत्रकारिता को उस दिशा में एक नया आयाम दिया, जो अभी तक अछूता या अधूरा था। इसी ने सिनेमा में संघर्ष करने वाले जूनियर कलाकारों के विषय में सामग्री देने की रवायत शुरू की। इस प्रकार पाया जाता है कि भले ही सिनेमा विदेशी भूमि की पैदाइश रही हो परंतु इसने भारत में पूर्णतः देशी रूप में अपना विस्तार किया, जहाँ कहीं विदेशी फिल्मों का अनुकरण किया भी गया, तो पूर्णतः भारतीयकरण करने के पश्चात ही। सिनेमा के इस पूरे प्रकरण में सिने-पत्रकारिता ने पूरा साथ दिया।

⁸Filmfare is an English language, Tabloid size magazine about Hindi language cinema, popularly known as Bollywood. Established in 1952, The Magazine is published by worldwide media a subsidiary of the Times of India, since 1954 it gives film awards the annual filmfare awards and filmfare awards south.

तृतीय अध्याय

हिंदी सिने-पत्रकारिता मुद्रित माध्यम

माना जाता है कि इतिहास के लिए पत्रकारिता ब्लूप्रिंट का काम करता है। “पत्रकारिता आधुनिकता की एक विशिष्ट उपलब्धि है। आधुनिकता उस सांस्कृतिक संचेतना का नाम है जिसमें वैज्ञानिक आलोक से मानवीय धरातल के विभिन्न स्तरों को उजागर किया जाता है।”¹ सिने-पत्रकारिता ने तमाम व्यवसायिकता के बाद भी सिनेमा के सांस्कृतिक पहलू को उजागर किया है। परंतु यह वाक्य कई अंतर्विरोधों को समेटे हुए है। क्योंकि सिनेमा की ही तरह सिने-पत्रकारिता का भी यह दुर्भाग्य रहा है कि इसे प्रारंभ में जिम्मेदार पत्रकारिता नहीं माना गया। इसलिए इसके लिए या तो संपादकों की जरूरत समझी ही नहीं गई और जहाँ कहीं सिने संपादक थे भी, तो उन्हें महत्त्व नहीं दिया गया। चूँकि लोगों की रुचि सिने सामग्री पढ़ने में थी, इसलिए जैसे-तैसे करके किसी तरह सिने समाचार प्रकाशित किए जाते रहे। तमाम मनोरंजक पूर्ण उपलब्धि के बावजूद लोगों की आम राय यही रही कि सिनेमा में ओछे लोग काम करते हैं। यह सब उस समय की सोच थी जब पृथ्वीराज कपूर राज्यसभा के सदस्य थे और नेहरू जी का सिनेमा के प्रति कोई दुःशाग्रह नहीं था। उस समय का समाज मानता था कि औरतों का नाचना, गाना संस्कृति को नष्ट कर देता है। लोगों की ऐसी राय बहुत समय तक बनी रही। किंतु स्व. राजकपूर का युग आते-आते स्थितियाँ काफी बदल चुकी थीं, लेकिन उनकी छाया राजकपूर को व्यथित करती रहती थी और व्यंग्य में ही सही, अक्सर स्वयं को वे ‘हम ढोल ताशे बजाने, नाचने, गाने वाले लोग’ कहा करते थे।

ऐसी स्थिति में सिने-पत्रकारिता को सही दिशा नहीं मिल पाई। इसीलिए प्रारंभ में इसका विकास गॉसिप जनर्लिज्म की तरह हुआ। फलस्वरूप आज भी इसका फैलाव पीत पत्रकारिता और पेज थ्री पत्रकारिता के रूप में ही है। आज भी इसे बौद्धिक पत्रकारिता के रूप में स्वीकृति नहीं मिल पाई है। इसी कारण आम हिंदी-पत्रकारिता को जितनी इज्जत से स्वीकार्य किया जाता है, उतना सिने-पत्रकारिता को नहीं। लोग आज भी हिंदी सिने-पत्रकारिता को अभिनेता, अभिनेत्रियों की ग्लैमरपूर्ण तस्वीरों के लिए याद किया करते हैं। यह विडंबना हिंदी सिने-पत्रकारिता के साथ हमारे समाज की भी है कि बात तो की जाती है नैतिकता की, परंतु व्यवहार में कामसूत्र को कथाओं के रूप में पढ़ा जाता है। इसका दुष्परिणाम यह हुआ कि छुपने-छुपाने की प्रवृत्ति स्थाई होती गई और स्वस्थ और जवाबदेह मानसिकता के विकास का मार्ग अवरुद्ध हो गया।

¹-हिंदी पत्रकारिता, कृष्ण बिहारी मिश्र, भारतीय ज्ञानपीठ, पेपर बैक सं. 2000, पृ. 27

सिने-पत्रकारिता ने तमाम व्यावसायिक दबाव के बावजूद कभी-कभी सार्थक सिने समीक्षा, लेख या अग्रलेख भी प्रकाशित किए हैं। सिने-पत्रकार श्याम माथुर ने लिखा है- “फ्रांसुआ त्रुफो, ज्या लुक गोदार, जाक रिबेका जैसे विचारकों ने उस दौर की फिल्मों पर गंभीर लेख लिखे और सिनेमा के बारे में प्रचलित धारणाओं को बदलने का सार्थक प्रयास किया। इनमें भी फ्रांसुआ त्रुफो की समीक्षात्मक टिप्पणियाँ काफी प्रभावी और विचारोत्तेजक हुआ करती थीं। त्रुफो ने ही उन दिनों यह बहस छेड़ी कि निर्माता, निर्देशक, अभिनेता, गीतकार, संगीतकार और तकनीशियनों की टीम में सर्वाधिक महत्वपूर्ण कौन है। त्रुफो की बहस में वे लोग भी शामिल हुए, जो फिल्म से सीधे संबद्ध नहीं थे। इन्हीं दिनों यह स्थापित हुआ कि निर्देशक ही फिल्म के लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण व्यक्ति है”² यह त्रुफो की सिने बौद्धिकता ही थी कि “अमेरिका ने रहस्यमयी फिल्मों के फिल्मकार अल्फ्रेड हिचकाक को दुनिया का श्रेष्ठ फिल्म निर्देशक सिद्ध करने के अपने प्रयासों के तहत त्रुफो को अपने यहाँ बुलाया और हिचकाक के साथ उनका एक लंबा इंटरव्यू करवाया था”³

यह तथ्य केवल अंग्रेजी या हॉलीवुड के सिनेमा के लिए सत्य नहीं है। हिंदी सिनेमा की पत्रकारिता में भी कभी-कभी इस प्रकार के गौरवमय क्षण आए। तीस के दशक में जब ‘फिल्मलैंड’ पत्रिका कोलकता से निकलती थी, जिसका कार्यालय भवानीपुर में था। इसमें उस दौर के प्रबुद्ध सिने समीक्षक सुरेंद्रनाथ सन्याल के आलेख छपते थे। वे अपनी सिने समीक्षाओं में सामाजिक सरोकारों की चर्चा करते थे। ‘फिल्मलैंड’ के 14 फरवरी 1931 के अंक में उनकी समीक्षा का कुछ अंश ध्यातव्य है- “पिछले सप्ताह हमने भारतीय फिल्मों में कलाकारों द्वारा पहनी जाने वाले परिधानों की चर्चा की थी। इस सवाल पर गंभीर मंत्रणा के बाद हम इस नतीजे पर पहुँचे हैं कि परिधानों के मामले में हमने अभी बदलाव स्वीकार नहीं किया है। दुर्भाग्य से देश में फिल्मों निर्माताओं का कोई संगठन स्थापित नहीं हो पाया है, हालांकि बांबे में इस दिशा में कुछ प्रयास अवश्य हुए हैं। अब समय आ गया है कि ऐसा एक संगठन गठित किया जाए और फिल्मी कलाकारों के परिधानों से जुड़े सभी प्रश्नों का हल तलाशा जाए, ताकि ऐसा न हो कि किसी एक फिल्म में श्रीराम का चरित्र निभाने वाला कलाकार पतलून-कमीज पहने और दूसरी फिल्म में उसे शेर-चीते की खाल से बने परिधान पहनाए जाएं।”⁴

²-सिने पत्रकारिता, श्याम माथुर, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, प्रथम संस्करण 2008, पृ. 5-6

³-सिने पत्रकारिता, श्याम माथुर, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, प्रथम संस्करण 2008, पृ. 5-6

⁴-सिने पत्रकारिता, श्याम माथुर, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, प्रथम संस्करण 2008, पृ. 7

पूँजी के प्रत्यक्ष निवेश के कारण सिनेमा को एक कला माध्यम के साथ-साथ एक उपभोक्ता सामग्री के रूप में भी देखा जाता है। इसलिए आजकल सिने-पत्रकारिता में सिने बाजार (Cine Market) की चर्चा व्यापक रूप से होने लगी है। इसलिए हिंदी की सिने-पत्रकारिता में भी सिने अर्थ विश्लेषण की प्रवृत्ति देखी जाने लगी है। यदि ध्यान से देखा जाए तो पता चलता है सिने-पत्रकारिता में गॉसिप के बाद दूसरे स्थान पर सिने विश्लेषण पाया जाने लगा है। अब सिने समीक्षा में भी आर्थिकता को शामिल किया जाता है। करोड़ी क्लब दौर में सिने समीक्षा बाजार बनाने में बड़ी भूमिका निभाने लगी है। यही कारण है कि सिने-विज्ञापन को सिने-समीक्षा के रूप में परोसा जाने लगा है। “भारतीय अर्थव्यवस्था में भारतीय सिनेमा एवं टेलीविजन उद्योग द्वारा 50 अरब रुपए का योगदान दिया जाता है, जो सन् 2013 में भारत के सकल घरेलू उत्पाद का 0.5 प्रतिशत रहा है, जो कुल भारतीय बाजार का 08 प्रतिशत हिस्सा है।”⁵ पूँजी के प्रत्यक्ष निवेश के कारण सिनेमा को एक कला माध्यम के साथ-साथ एक उपभोक्ता सामग्री के रूप में भी देखा जाता है। इसलिए आजकल सिने-पत्रकारिता यह तथ्य केवल अंग्रेजी या हॉलीवुड के सिनेमा के लिए सत्य नहीं है। हिंदी सिनेमा की पत्रकारिता में भी कभी-कभी इस प्रकार के गौरवमय क्षण आए। तीस के दशक में जब ‘फिल्मलैंड’ पत्रिका कोलकता से निकलती थी, जिसका कार्यालय भवानीपुर में था। इसमें उस दौर के प्रबुद्ध सिने समीक्षक सुरींद्रनाथ सान्याल के आलेख छपते थे। वे अपनी सिने समीक्षाओं में सामाजिक सरोकारों की चर्चा करते थे। ‘फिल्मलैंड’ के 14 फरवरी 1931 के अंक में उनकी समीक्षा का कुछ अंश ध्यातव्य है- “पिछले सप्ताह हमने भारतीय फिल्मों में कलाकारों द्वारा पहने जाने वाले परिधानों की चर्चा की थी। इस सवाल पर गंभीर मंत्रणा के बाद हम इस नतीजे पर पहुँचे हैं कि परिधानों के मामले में हमने अभी बदलाव सर्वाधिकार नहीं किया है। दुर्भाग्य से देश में फिल्म निर्माताओं का कोई संगठन स्थापित नहीं हो पाया है, हालांकि बाम्बे में इस दिशा में कुछ प्रयास अवश्य हुए हैं। अब समय आ गया है कि ऐसा एक संगठन गठित किया जाए और फिल्मी कलाकारों के परिधानों से जुड़े सभी प्रश्नों का हल तलाशा जाए, ताकि ऐसा न हो कि किसी एक फिल्म में श्रीराम का चरित्र निभाने वाला कलाकार पतलून-कमीज पहने और दूसरी फिल्म में उसे शेर-चीते की खाल से बने परिधान पहनाए जाएं।”⁶

⁵The Indian Film and Television industries contributed \$8.1 billion rupees to the country's economy, representing 0.5 percent of the country. S.G.D.P in 2013 according to a report from the Financial Services Firm Deloitte and the Indian office of the Motion Picture Association (MPA) by Nyag Bhushan. -The Hollywood Reporter, 03/13/2013

⁶- सिने पत्रकारिता, श्याम माथुर, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, प्रथम संस्करण 2008, पृ. 7

देखा जाए तो सन् 1913 से लेकर आज तक सिने-पत्रकारिता ने एक लंबा रास्ता तय किया है, जिसमें भले ही कृष्ण पक्ष ज्यादा है परंतु उज्ज्वल पक्ष भी कम नहीं हैं। समय-समय पर सिने पत्रकारों के साथ मुख्यधारा एवं सिने-विशेषज्ञों ने भी सिनेमा पर सारगर्भित टिप्पणी की है। जैसे सिनेमा और राजनीति के संबंध पर श्याम मधुर की यह टिप्पणी-“1921 में गांधी जी ने जब असहयोग आंदोलन छेड़ा, तब देवकी कुमार बोस कोलकाता के विद्यासागर कॉलेज में पढ़ाई कर रहे थे। गांधीजी ने कॉलेज के छात्रों से भी इस आंदोलन में सहयोग देने की अपील की और देवकी कुमार बोस ने इस पर अमल करते हुए कॉलेज की पढ़ाई छोड़ दी और एक छोटे-से अखबार ‘शक्ति’ के प्रकाशन से जुड़ गए। बाद में फिल्मी दुनिया में सक्रिय होने के बाद 1945 में इन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन से प्रभावित होकर फिल्म ‘स्वर्ग से सुंदर देश हमारा’ का निर्माण किया, जिसे ब्रिटिश सरकार ने प्रदर्शन की अनुमति नहीं दी। सरकार सिर्फ प्रतिबंध तक ही सीमित न रही, बल्कि उसने इस फिल्म के निगेटिव को भी जला कर नष्ट कर दिया। देवकी की अन्य फिल्मों में भी उनकी सामाजिक और राजनीतिक प्रतिबद्धता नजर आती है। चंडीदास, पूनभगत, सीता और विद्यापति जैसी उनकी फिल्मों में देश की गौरवशाली सभ्यता, संस्कृति और परंपराओं का बखान किया गया था।”⁷

हिंदी सिने-पत्रकारिता का ध्येय सिने समाचार के साथ सिने-विश्लेषण करना भी हो गया है ताकि सिनेमा को दर्शकों, कलाकारों एवं सिने लागत के संदर्भ में समझा जा सके। तमाम अर्थशास्त्री एवं प्रबंधक सिनेमा के ट्रेंड और ट्रेंड को बदलने में लगे हैं जिसे सिने-पत्रकारिता के माध्यम से परखा जा सकता है।

⁷-सिनेमा का जन्म सिने पत्रकारिता, द्वारा श्याम माधुर, राजस्थान ग्रंथ अकादमी, जयपुर, प्रथम सं, 2008, पृ, 87

3.1 स्वाधीनता पूर्व की सिने-पत्रकारिता

स्वाधीनतापूर्व की हिंदी पत्रकारिता का समय बहुत ही प्रतिरोधी समय रहा है। आजादी के पूर्व का सिनेमा प्रतिरोध का सिनेमा रहा। परंतु हिंदी सिनेपत्रकारिता ने स्वयं को सूचना एवं सनसनी तक ही सीमित रखा। मुख्य धारा के समाचार पत्रों में इन प्रतिरोधी चित्रों के विषय में अवश्य लिखा गया होगा पर इसके साक्ष्य उपलब्ध नहीं हैं। उन्हे संभाला और सहेजा नहीं गया। काश उस समय इंटरनेट की सुविधा रही होती तो प्रचुर मात्रा में साक्ष्य मिल पाते। आजादी के पूर्व की हिंदी पत्रकारिता की स्थिति पर बहुत अधिक सामग्री उपलब्ध नहीं है। अब तक पत्रकारिता के इतिहास पर जो काम या अनुसंधान हुआ है उसमें सिने-पत्रकारिता को अछूता छोड़ दिया गया है। प्रिंट-माध्यम की हिंदी सिने-पत्रकारिता अन्य पत्रकारिता की तरह स्वाधीनतापूर्व की सिने-पत्रकारिता भी प्रिंट-माध्यम की पत्रकारिता है। भारत में प्रिंट-माध्यम और पत्रकारिता के उद्भव के विषय में कहा गया है कि “भारत में पत्रकारिता का प्रारम्भ विलियम बोल्ड्स ने किया, 1768 के सितम्बर महीने में बोल्ड्स ने प्रकाशन और मुद्रण के कार्य में रुचि रखने और जानकारी रखने वाले वालों को समाचार-पत्र प्रकाशित करने के लिए आमन्त्रित किया था। भारत में आधुनिक पत्रकारिता का प्रारम्भ अंग्रेजों के द्वारा शुरू हुई, सर्वप्रथम 29 जनवरी 1780 को जेम्स अगस्त हिक्की ने “बंगाल गजेट एंड कल्कत्ता गनरल एडवर्टाईजर” नामक साप्ताहिक पत्र का संपादन किया, इस दिन से भारत में पत्रकारिता की विधिपूर्वक शुरुआत हुई उस पत्र को हिक्कीज गजेट भी कहते हैं। इसके सम्बन्ध में हिक्की ने कहा भी है-‘यह राजनीतिक और व्यवसायिक पत्र खुला तो सबके लिए है परन्तु प्रभावित किसी से नहीं है।’ ब्रिटिश सरकार में इस पत्र की काफी आलोचना हुई जिसके उपरान्त तत्कालीन गवर्नर वारेन हेस्टिंग्स ने मार्च 1782 में इस पत्र को बन्द करवा दिया। अपने अल्प जीवन काल में ही इस समाचार-पत्र ने सरकारी दमन के विरुद्ध जो साहस दिखलाया उससे वर्तमान समय में भारतीय पत्रकारिता का आदर्श बन गया।”⁸ प्रिंट माध्यम की सिने-पत्रकारिता को अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से निम्नलिखित शीर्षकों में विभाजित किया गया है-

3.1.1 समाचार-पत्र

हिंदी में सिनेमा के लिए अलग से सिने-समाचार पत्र नहीं निकाले जाते हैं। परंतु लगभग सभी मुख्यधारा के समाचार पत्रों में सिने-सामग्रियाँ सूचना, आलेख या समीक्षा के रूप में प्रकाशित की जाती हैं। स्वाधीनता के पूर्व के कुछ पत्र आज भी प्रकाशित होते हैं। प्रस्तुत शोध प्रबंध में उन समाचार पत्रों का संक्षिप्त इतिहास दिया जा रहा है।

⁸-देश की आजादी में भारतीय पत्रकारिता - अजित कुशवाहा - सोमवार, 17 नवंबर 2014 - http://yuwaonkiduniya.blogspot.in/2014/11/blog-post_17.html

साथ ही यथा उपलब्ध स्वाधीनता पूर्व में छपे सिने खबर को भी प्रस्तुत किए जाने का प्रयास किया गया है। कहीं कहीं उस समय का सिने समाचार उपलब्ध न होने की स्थिति में उस पत्र के नए सिने-समाचार को बतौर उदाहरण प्रस्तुत किया जा रहा है। स्वाधीनता पूर्व के प्रमुख समाचार पत्रों का विवरण नीचे दिया जा रहा है-

3.1.1.1 आज

इस पत्र की स्थापना पांच सितंबर 1920 को स्वतंत्रता संग्राम सेनानी शिव प्रसाद गुप्त द्वारा की गई। सन् 1943-1947 तक इस पत्र का संपादकत्व भार पंडित बाबूराव विष्णु पराड़कर द्वारा वहन किया गया। इनके समय में यह पत्र राष्ट्रीयता के मुख्यपत्र की तरह हो गया था। इस पत्र की प्रेरणा लंदन टाइम्स जैसे अंग्रेजी के दैनिक समाचार पत्र से प्राप्त हुआ था।

“आज” के अग्रलेखों और टिप्पणियों ने ‘आज’ के महत्त्व को बढ़ाया। ‘आज’ के अग्रलेख लेखकों में सर्वश्री सम्पूर्णानन्द, आचार्य नरेन्द्र देव और श्रीप्रकाश भी थे। सन् 1930 के बाद पं. कमलापति त्रिपाठी भी सम्पादकीय लेखकों में शामिल हो गए। पराड़करजी तथा कमलापति जी के प्रभावी अग्रलेखों ने इस पत्र को हिन्दी का श्रेष्ठ दैनिक बना दिया। भाषा तथा शैली की दृष्टि से भी ‘आज’ ने असंख्य पाठकों को अच्छी हिन्दी सिखाई। ‘आज’ में ‘खुदा की राह पर’ शीर्षक से नियमित व्यंग्य का स्तम्भ रहता था जिसके लेखकों में बेदब बनारसी प्रमुख थे। ‘आज’ से बेचन शर्मा ‘उग्र’ का साहित्यिक जीवन प्रारम्भ हुआ। ‘उग्र’ इसमें व्यंग्य लिखते थे। प्रेमचन्द, जयशंकर प्रसाद, डॉ. भगवानदास जैसे मनीषी भी इसमें लिखते थे। राष्ट्रीय आन्दोलन और समाज सुधार का यह प्रबल समर्थक रहा है। ‘आज’ में वर्मा, थाइलैण्ड, मारीशस स्थित संवाददाताओं के समाचार नियमित रूप से छपते रहते हैं। गाँव की चिट्ठी, चतुरी चाचा की चिट्ठी इसके विशेष कॉलम रहे हैं। जिलों और नगरों के विशेष संस्करण निकालना ‘आज’ की अपनी विशेषता है। ‘आज’ के सम्पादकों के नाम हैं- सर्वश्री प्रकाश, बाबूराव विष्णु पराड़कर, कमलापति त्रिपाठी, विद्या भास्कर, श्रीकांत ठाकुर, रामकृष्ण रघुनाथ बिडिलकर। वर्तमान में शार्दूल विक्रम गुप्त इस पत्र के सम्पादक हैं। इस समय ‘आज’ वाराणसी, कानपुर, गोरखपुर, पटना, इलाहाबाद, तथा रांची से प्रकाशित हो रहा है।⁹ सप्ताह में एक दिन इसमें सिनेमा पर सामग्री दी जाती है।

⁹-स्रोत - <https://hi.wikipedia.org/wiki/आज>

3.1.1.2 दैनिक हिंदुस्तान

इस पत्र की शुरुआत ही राजनीतिक परिघटना के दौरान हुई। सन् 1936 में कांग्रेस का अधिवेशन लखनऊ में हुआ और इसी अवसर पर यहीं से सत्यदेव विद्यालंकार के संपादकत्व में इस पत्र की शुरुआत की गई। पत्र का उद्घाटन महात्मा गांधी के द्वारा किया गया। बाद में इस पत्र का संपादन कई यशस्वी संपादकों द्वारा किया गया, जिसमें श्री रतन लाल जोशी और चंद्रलाल चंद्राकर जैसे नाम शामिल हैं। चंद्रलाल चंद्राकर के बाद विनोद मिश्र भी इसके संपादक रहे। यह हिंदुस्तान टाइम्स लिमिटेड की ओर से डॉ. गौरीशंकर राजहंस द्वारा हिंदुस्तान टाइम्स प्रेस, नई दिल्ली में मुद्रित व प्रकाशित होता है। इसका पटना से भी 1986 से संस्करण निकलने लगा है। इस पत्र के शीर्षक के दोनों ओर विज्ञापन भी दिया जाता है जो सप्ताह में एक बार रंगीन होता है।

यह हिंदी का एक संपन्न समाचारपत्र है जिसके अलग-अलग शहरों में विशेष संवाददाता भी हैं। “यह दैनिक पत्र ए.आई. एन.ई.सी./आई.ई.एन.एस/ए.बी.सी. का सदस्य है। हर रविवार को इसके रविवारीय परिशिष्ट में विशेष आवरण कथा, सृजन, परिवार, कहानी, वातायन, कसौटी, आदि प्रमुख भाग बटें हुए हैं, जिनके अंतर्गत कहानी कला, कविता, संस्कृति, विज्ञान, काव्यधारा, बच्चों से संबंधित सामग्री, महिलापयोगी लेख वार्ता आदि प्रकाशित होते हैं। हिंदुस्तान सप्ताह में हर बार कोई न कोई स्तंभ निकालता है, जैसे रविवार को रविवारीय परिशिष्ट के अतिरिक्त खुला मंच, मनोरंजन (सिनेमा से संबंधित)....गुरुवार को कला-संस्कृति, शुक्रवार को उपभोक्ता, शनिवार को नई पीढ़ी आदि। इस प्रकार के स्तंभ के जरिए यह सभी वर्गों के लोगों की जिज्ञासा को सहज शांत करता है। इसके रविवारीय परिशिष्ट का प्रथम व अंतिम पृष्ठ रंगीन होता है।”¹⁰

हिंदुस्तान समाचार-पत्र में राजनीतिक परिघटनाओं को महत्व दिया जाता है, जिसके कारण सन् 1942 में भारत छोड़ो का समर्थन करने के कारण इसे प्रतिबंधित कर दिया गया। फलस्वरूप यह पत्र 6 माह के लिए बंद रहा। इस पत्र में गांधीजी के विचार तथा भाषण के अलावा नेहरू व पटेल के वक्तव्य प्रकाशित होते थे। स्वाधीनता की पूर्ति में इस पत्र का विशेष योगदान रहा है। इसे गांधीजी का मुख पत्र जैसा माना गया। गांधी व सुभाष के पत्र इसमें तत्काल रूप से प्रकाशित होते रहे। मार्क्सवादी साहित्यकार यशपाल की कहानियाँ इसमें धारावाहिक रूप से प्रकाशित होती रहीं। हिंदुस्तान दैनिक समाचार-पत्र अपनी विशेष साज-सज्जा और प्रस्तुतिकरण के कारण प्रारंभ से आज तक प्रासंगिक और उत्कृष्ट बना हुआ है।

¹⁰-www.dainikjagranwiki

3.1.1.3 नवभारत टाइम्स

इस पत्र की शुरुआत 04 अप्रैल 1947 को दिल्ली में नवभारत टाइम्स बेनेट कोलमैन एंड कंपनी के द्वारा की गई। सन् 1950 से भारत के ही प्रमुख महानगरों, कलकत्ता और मुंबई से भी इसका संस्करण प्रकाशित किया गया। कुछ विशेष कारणों से कलकत्ता वाला संस्करण 1953 में बंद कर दिया गया। परंतु बंबई (अब मुंबई) का संस्करण अभी भी निकल रहा है। भारत के अन्य शहरों से भी इसके संस्करण निकलते हैं, जिसमें लखनऊ (1923), जयपुर (1983) और पटना (1986) शामिल हैं। इस पत्र के संपादकों में हिंदी के शीर्ष विद्वानों व साहित्यकारों के नाम शामिल हैं जैसे हरिशंकर द्विवेदी, सत्यदेव विद्यालंकार, मातादीन भगेरिया, अक्षय कुमार जैन, सच्चिदानन्द हीरानंद वात्सायन 'अज्ञेय' व राजेंद्र माथुर आदि। इस पत्र के प्रथम संपादक हरिशंकर द्विवेदी थे। परंतु मातादीन भगेरिया के संपादकत्व में यह पत्र शीर्ष पर पहुँच गया था। मातादीन भगेरिया के संपादकीय बहुत ही तीखे होते थे। प्रस्तुत पत्र में सिने-सामग्री, सिने सूचना के रूप में प्रकाशित होती थी।

3.1.1.4 दैनिक जागरण

यह समाचार-पत्र हिंदी प्रदेशों में अग्रणी है। इस पत्र की शुरुआत झांसी से 1942 में पूर्णचंद्र गुप्तद्वारा की गई। हालांकि यह पत्र कानपुर के अतिरिक्त आगरा, नई दिल्ली, बरेली, मेरठ, झांसी, वाराणसी, गोरखपुर और लखनऊ से भी प्रकाशित होता है। अमर उजाला की तरह यह भी ए.आई.सी.एल.एन.ए. और ए.बी.सी का सदस्य है। यह पत्र जागरण प्रकाशन लिमिटेड, सर्वोदय नगर, कानपुर दैनिक जागरण प्रेस से प्रकाशित होता है। “दैनिक जागरण के स्थाई स्तंभ में मुख्य हैं भाई साहब...कला, संस्कृति, लोग, अर्थ कौटिल्य, विज्ञान..... महिला, व्यापार जगत, सिनेमा, खेलकूद.... मौसम, दूरदर्शन आदि। दैनिक जागरण के बारहवें पृष्ठ का अपना अलग ही महत्व है। यह पृष्ठ सभी के लिए उपयोगी बनाया गया है जो हर रोज एक अलग ही शीर्षक देकर लेख आदि प्रकाशित करता है जैसे, सोमवार ‘कला-संस्कृति’, मंगलवार ‘खेलकूद’, बुधवार ‘महिला’, गुरुवार ‘फिल्म’, शुक्रवार ‘टेलीदर्शन’, शनिवार ‘बाल क्लब’, रविवार ‘सप्तरंग’।”¹¹

“व्यवसायिक दृष्टि से यह समाचार-पत्र बाम्बे स्टॉक एक्सचेंज एवं नेशनल स्टॉक एक्सचेंज ऑफ इंडिया में शामिल किया गया है।”¹²

¹¹ -हिंदी पत्रकारिता : विकास और विविध आयाम, पृ, 174- 175

¹² - www.dainikjagran.com

“राष्ट्रीयता को प्रचारित-प्रसारित करने के क्रम में इस समाचार-पत्र का विस्तार होता गया। फलस्वरूप सन 1947 में इसका द्वितीय संस्करण कानपुर से भी शुरू कर दिया”¹³

3.1.1.5 नई दुनिया

इस समाचार-पत्र की शुरुआत आजादी के कुछ महीने पहले हुई थी अर्थात् 05 जनवरी 1947 को। इसकी स्थापना में श्री कृष्णचंद्र मुदगल तथा श्री कृष्णकांत व्यास के प्रयत्नों की महत्वपूर्ण भूमिका रही। इस समाचार-पत्र की शुरुआत एक सांध्यकालीन समाचार-पत्र के रूप में हुई। मध्य प्रदेश का गठन हो जाने के बाद इसका प्रकाशन रायपुर एवं जबलपुर से होने लगा। किंतु आगे चलकर ये दोनों संस्करण बंद कर दिए गए। “1967 से नई दुनिया ने अपना मुद्रण ऑफसेट रोटरी मशीन पर प्रारंभ कर दिया। इस प्रकार की मशीन भारत में पहली बार नई दुनिया के पास ही आई। यही नहीं, नई दुनिया को इस बात का भी श्रेय प्राप्त है कि इसने सर्वप्रथम संपूर्ण मध्य प्रदेश में पहला टेलीप्रिंटर स्थापित करके वैज्ञानिक व तकनीकी पत्रकारिता की शुरुआत की। यह पत्र केवल मध्य प्रदेश का ही नहीं है वरन् देश भर के साहित्यकारों, बुद्धिजीवियों और समाजसेवियों का संगम है। देश के प्रसिद्ध युवा साहित्यकार तथा विद्वान जिनमें शरद जोशी, डॉ. श्याम परमार, डॉ. वेद प्रताप वैदिक, श्याम व्यास, मदनमोहन मदारिया, रणवीर सक्सेना, विष्णु खरे, बाल कवि वैरागी आदि प्रमुख हैं, जो नई दुनिया से किसी न किसी रूप में जुड़े रहे हैं।”¹⁴

वैसे तो नई दुनिया राजनीतिक और सामाजिक खबरों को ज्यादा स्थान देने वाला समाचार-पत्र है, फिर भी इसमें सिनेमा की खबरें अंतिम पृष्ठ पर स्थान पाती रहती हैं जैसे यह खबर “फिल्म मेकर शेखर कपूर इन दिनों निर्देशक नीरज घेवान की फिल्म ‘मसान’ से खासे प्रभावित नजर आ रहे हैं। कपूर ने फिल्म देखने के बाद इसकी बहुत तारीफ की है। वाराणसी पर केंद्रित इस फिल्म में श्वेता त्रिपाठी, विक्की कौशल और नीरज घेवान ने बॉलीवुड डेब्यू किया है। शेखर ने ट्विटर पर लिखा: ‘भारतीय सिनेमा को नई दिशा मिल रही है। मसान जैसी फिल्म इसी का उदाहरण है। यह फिल्म दिल को छूती है। परफार्मेंस भी बढ़िया है। घेवान ने कहा शेखर कपूर उन तमाम फिल्म मेकर्स के लिए एक प्रेरणा हैं, जो अपने काम के साथ प्रयोग करते रहते हैं। हमारे लिए एक प्रेरणा बनने के लिए आपका धन्यवाद। फिल्म वाराणसी में रह रहे ऐसे लोगों की कहानी है जो एक निर्दयी सजा के शिकार हो जाते हैं। यह एक इंडो-फ्रेंच को-प्रोडक्शन फिल्म है। मनीष मुद्रा, मैरसर प्रोडक्शन फिल्मस, सिखाया इंटरटेनमेंट आर्टी फ्रांस

¹³ - www.dainikjagran.com

सिनेमा और पाठ प्रोडक्शन के द्वारा इसका निर्माण किया गया है।”¹⁴ प्रस्तुत सिने-टिप्पणियां प्रकाशित होती रहती हैं।

3.1.1.6 नवभारत

यह मध्य प्रदेश का लोकप्रिय हिंदी समाचार-पत्र है जो सर्वप्रथम नागपुर से 1938 में प्रकाशित हुआ। इस पत्र के प्रथम संपादक मायाराम सुरजन थे। शनै-शनै: इस समाचार-पत्र के संस्करण मध्य प्रदेश के कई शहरों से निकलने लगे। जैसे 1950 में जबलपुर से, 1956 में भोपाल से, 1959 में रायपुर से और 1960 में इंदौर व विलासपुर से। यह पत्र आठ कालमों में विभाजित है। समय-समय पर नवभारत अलग-अलग विषयों पर विशेषांक निकालता रहता है, जिसमें बाल जगत, महिला जगत, कृषि संसार व सिनेमा शामिल हैं। नवभारत का रविवारीय परिशिष्ट हर रविवार को प्रकाशित है जिसमें तमाम विशेष सामग्रियों के साथ सिने सामग्री भी प्रस्तुत की जाती है। उदाहरण के रूप में 08 सितंबर 2015 के इस सिने समाचार को देखते हैं- “अनुपम खेर की अदाकारी के कद्रदान भारत में ही नहीं अमेरिका में भी बहुत हैं। हाल ही में अमेरिका के 14 बड़े शहरों और कनाडा के टोरंटो, बैकूवर में ‘मेरा वो मतलब नहीं था’ नाटक में अपनी दमदार अदाकारी के बल पर अभिनेता अनुपम खेर और नीना गुप्ता ने खूब वाहवाही लूटी। यहाँ पर इसका मंचन 07 अगस्त से शुरू हुआ था। कुछ शहरों में तो लोगों की मांग पर दूसरी बार इस नाटक का मंचन किया जा रहा है। मेयर एन्निस पार्कर ने अभिनेता की प्रतिबद्धता की सराहना करते हुए 07 अगस्त को अनुपम खेर दिवस घोषित कर दिया।”¹⁵ (17)

3.1.1.7 दैनिक नवज्योति

यह राजस्थान का सबसे पुराना समाचार-पत्र है। इसकी शुरुआत सन् 1936 में अजमेर से हुई। पत्र के प्रथम संपादक श्री दुर्गाप्रसाद चौधरी थे। आज इस पत्र के संवाददाता भारत के सभी बड़े शहरों में हैं। इसके स्थाई स्तंभ भी बहुत रोचक हैं। सिनेमा के स्तंभ नियमित छपते रहते हैं, जिसमें आमने-सामने, परदे के पीछे व फिल्म समीक्षाएँ शामिल हैं।

3.1.1.8 स्वतंत्र भारत

इस पत्र की शुरुआत 15 अगस्त 1947 को श्री अशोक जी के संपादकत्व में लखनऊ से हुई। अशोक जी 1947

¹⁴- नई दुनिया, इंदौर, शुक्रवार 11 सितंबर 2015, पृ. 20

¹⁵- नवभारत, अनुपम खेर के नाटक की धूम, 08 सितंबर 2015, पृ. 2 कालम दो

से 1953 तक इस पत्र को दिशा देते रहे। “अशोक जी के बाद योगेंद्र पति त्रिपाठी इसके संपादक बने और उन्होंने इसका संपादन अगस्त 1971 तक किया। भारत सरकार से सेवा निवृत्त होने पर अशोक जी पुनः 1972 में इसके संपादक बन गए और 1979 तक इस पत्र को विभिन्न प्रकार की सामग्री देकर इसके स्तर को बढ़ाते रहे। जनवरी, 1979 में इसके प्रधान संपादक डॉ. के. पी. अग्रवाल व संपादक शिवसिंह सरोज बने। उत्तर प्रदेश में स्वतंत्र भारत का अच्छा प्रभाव है। यह पायनियर प्रेस, लखनऊ से मुद्रित एवं प्रकाशित होता है।”¹⁶ इस समाचार पत्र में राजनीति, अर्थनीति, समाज, खेल एवं फिल्म से संबंधित सामग्री दी जाती है। इसके रविवारीय परिशिष्ट में सिनेमा पर अधिक सामग्री होती है। स्वाधीनतापूर्व की मुख्यधारा की पत्रिकाओं में सिने समाचार को स्थान नहीं दिया जाता था।

स्वाधीनता के पूर्व की पत्रकारिता के प्रमुख उद्देश्य अंग्रेजों से भारत को मुक्त कराना था। इस प्रकार से उस दौर की पत्रकारिता मुक्ति के प्रश्न को लेकर किया गया पत्रकारिता रहा है। उस दौर के राजनेताओं के साथ साहित्यकारों ने भी पत्रकारिता का उपयोग राष्ट्रदूत के रूप में किया। इसलिए जिस तरह महात्मा गांधी, पंडित जवाहरलाल नेहरू, मौलाना अबुल कलाम आजाद, सरोजनी नायडू और मदन मोहन मालवीय आदि नेता जनजागरण की अलख पूरे देश में फैला रहे थे उसी तरह साहित्यकार पत्रकारिता और सिनेमा के द्वारा राष्ट्रीय आंदोलन को हवा दे रहे थे। रवींद्रनाथ टैगोर ने सन् 1932 में नदीर पूजा नाम की एक फिल्म का निर्देशन किया था। उस दौर के फिल्मकारों ने भी राष्ट्रीय चेतना वाले कई सामाजिक-राजनीतिक चित्रों का निर्माण किया, जिसमें भक्त विदु (1921), धर्मविजय (1922 भक्त विदु का ही दूसरा नाम), बं देमातरम (1923 के आसपास), स्वराज तोरण (वी. शांताराम की फिल्म), धर्मात्मा (1935, संत एकनाथ के जीवन पर आधारित), बाजीराव मस्तानी (1925, भालजी पेंढारकर), मजदूर (प्रेमचंद की कहानी पर), सेवा सदन (1939, प्रेमचंद के उपन्यास पर), सिकंदर (1941) आदि फिल्मों को शामिल किया गया है। इसीलिए उस दौर के मुख्यधारा की पत्रकारिता के पास इतना अवकाश ही नहीं था कि वह सिने पत्रकारिता पर ध्यान दे पाता।

3.1.2 सिने-पत्रिकाएं

3.1.2.1 रंगभूमि

¹⁶-हिंदी पत्रकारिता : विकास और विविध आयाम, डॉ. (श्रीमती) सुशीला जोशी, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, तृतीय संस्करण, 1994 पृ. 183

स्वाधीनता के पूर्व सिने-पत्रिकाओं की स्थिति विंडबनात्मक रही है। फिल्में मुंबई (तब का बांबे) में बनती थीं और हिंदी सिने पत्रिकाएं दिल्ली से छपती थीं। चूंकि दिल्ली में सिने सामग्रियाँ आसानी से उपलब्ध हो जाती थीं। इसीलिए पहली हिंदी सिने-पत्रिका भी यहीं से सन् 1932 में निकली। इसके विषय में सिने-पत्रकार विनोद तिवारी का कहते हैं “ सिने सामग्री की उपलब्धता की वजह से दिल्ली फिल्म पत्रकारिता की जननी बनी। जिस पत्रिका को हिंदी की पहली सिने-पत्रिका का श्रेय दिया जाता है वह थी। सन् 1932 में शुरू की गई ‘रंगभूमि’। इस तरह हिंदी पत्रकारिता के प्रारंभिक प्रकाशनों उदंत मार्टंड (1826) अथवा 1854 में निकले समाचार सुधावर्षण के मुकाबले फिल्म फिल्म पत्रकारिता 106 वर्ष बाद शुरू हुई और इस हिसाब से इसका इतिहास लगभग 75/80 वर्ष पुराना है।”¹⁷ जिस तरह ‘रंगभूमि’ पहली हिंदी फिल्मी पत्रिका है, उसी तरह इसके संपादक श्री लेखाराम को पहला हिंदी सिने संपादक माना जाना चाहिए। किंतु हिंदी सिने-पत्रकारिता के दुर्भाग्य की तरह लेखाराम भी वह सम्मान नहीं पा सके जिसके वे हकदार थे। कम से कम हिंदी सिने-पत्रकारिता के इतिहास में उन्हें हिंदी सिने संपादक के रूप में मान्यता तो मिलनी ही चाहिए थी, जो नहीं मिल पाई। इसलिए रंगभूमि ही वह पत्र है जिससे उस समय की सिने पत्रकारिता को दशा और दिशा का आकलन किया जा सकता है। परंतु दुर्भाग्य यह कि सिनेमा की पत्रिका होने के नाते इसे संभाल कर नहीं रखा गया। आज इसकी एक भी प्रति प्राप्त करना लगभग असंभव सा है।

3.1.2.1.2 क्यों निकली रंगभूमि?

सन् 1931 में बंबई (अब मुंबई) की इंधीरियल कंपनी ने आलमआरा का निर्माण किया, जिससे मनोरंजन की दुनिया में क्रांति आ गई, जिसका जादू सिने प्रेमियों के सर चढ़कर बोलने लगा। लोगों की उत्सुकता सिनेमा और सिनेकारों के प्रति बढ़ने लगी। दिल्ली के लोगों ने इसे व्यावसायिकता की दृष्टि से देखा। इसीलिए सन् 1932 में यहीं से ‘रंगभूमि’ निकलने लगी। यह पत्रिका साप्ताहिक थी, जिसका मूल्य 02 पैसे था। किंतु रामचंद्र तिवारी के अनुसार फिल्म की पहली पत्रिका ‘नव चित्रपट’ है जो 1932 में दिल्ली से निकली। जबकि राजकुमार जैन का मानना है कि इंदौर से 1931 में निकली ‘मंच’ प्रथम फिल्म पत्रिका है। ‘रंगभूमि’ एक सामान्य सिने सूचना वाली पत्रिका थी। इसके आवरण पर किसी अभिनेत्री की तस्वीर हुआ करती थी। पत्रिका के अंदर के पृष्ठों में फिल्म समाचार, निर्माणाधीन फिल्मों का विवरण, समीक्षाएं, फिल्म कारों का सामान्य परिचय, फिल्मी गीत, कहानियाँ और शायरी आदि होती थी। इस प्रकार यह पत्रिका 1936 तक निकलती रही।

¹⁷ - फिल्म पत्रकारिता द्वारा तिवारी अर्जुन, वाणी प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 207, पृ. 33

3.1.2.3 चित्रपट

सन् 1936 में हिंदी के जाने माने साहित्यकार ऋषभचरण जैन ने फिल्म पत्रिका 'चित्रपट' की शुरुआत की। यह पत्रिका भी दिल्ली से निकली और निकलती रही। इसकी अंतर्वस्तु तो रंगभूमि जैसी रही किंतु प्रस्तुति में उससे बेहतर थी। चूँकि ऋषभचरण स्वयं एक साहित्यकार थे, इसलिए उन्हें समकालीन लेखकों का सहयोग भी मिलता रहा, जिसमें जैनेंद्र कुमार, मुंशी प्रेमचंदपांडेय बेचन शर्मा उग्र, नरोत्तम व्यास, विश्वंभर नाथ शर्मा कौशिक का नाम शामिल है। इस पत्रिका में धारावाहिक रूप में उपन्यास प्रकाशित होने लगे। स्वयं ऋषभचरण के कई उपन्यास पहले पहल चित्रपट में ही प्रकाशित हुए।

3.1.2.4 रंगभूमि और चित्रपट साथ-साथ

रंगभूमि तमाम प्रयासों के बावजूद चित्रपट का मुकाबला न कर सकी। किंतु सन् 1941 में श्री धर्मपाल गुप्ता ने पुनः 'रंगभूमि' का प्रकाशन शुरू किया। धर्मपाल के संपादकत्व में 'रंगभूमि' मासिक रूप में निकलने लगी। 'रंगभूमि' जब साप्ताहिक थी तो वह सफेद कागज पर छपती थी, जिसका आकार 18/2 का चौथाई था किंतु मासिक रंगभूमि इतालवी आर्ट पेपर पर छपने लगी और आकार पहले से आधा था। मुखपृष्ठ पर तिरंगे का चित्र होता था। भीतर भी दो रंगीन चित्र होते थे। इस पत्रिका की कीमत तब तक चार आने हो गई थी। चूँकि फिल्मों का प्रभाव लगातार बढ़ता जा रहा था। रंगभूमि और चित्रपट के अतिरिक्त कई अन्य हिंदी फिल्म पत्रिकाएं निकलीं। सन् 1940-42 के आसपास रसभरी, चित्र-प्रकाश, कौमुदी, ये सभी पत्रिकाएं दिल्ली से निकल रही थीं। इसके अतिरिक्त कलकत्ता से 'अभिनय' और लाहौर से 'रूपम' जैसी हिंदी पत्रिकाएं प्रकाशित होती थीं।

3.2 विभाजन और हिंदी सिने-पत्रकारिता

जिस प्रकार विभाजन ने भारतीय जनमानस को झकझोर दिया था। देश बिखर सा गया था। उसी प्रकार हिंदी सिनेमा को भी इस विभाजन ने बहुत क्षति पहुँचाई। साथ ही हिंदी सिने-पत्रकारिता भी बिखर सी गई। ए.के.हंगल और प्राण की आत्मकथा और जीवनी से इस पीड़ा और विखराव को आसानी से समझा जा सकता है। सिनेमा की तरह सिने-पत्रकारिता को भी फिर से खड़ा करना पड़ा। सन् 1947 में दिल्ली से ही 'संपतलाल पुरोहित'^{18*} ने फिल्म पत्रिका 'युगछाया' का प्रकाशन शुरू किया। इसी वर्ष बृजमोहन ने 'फिल्म चित्र' पत्रिका निकाली। इस पत्रिका के विषय में माना जाता है कि यह फिल्म और राजनीति दोनों की खबरें प्रमुखता से प्रकाशित करती थी। फिल्म पत्रकार और सिने-पत्रकारिता के इतिहासकार विनोद तिवारी ने पत्रिका 'फिल्म चित्र' के लिए लिखा है- "फिल्म चित्र-दिल्ली प्रकाशक बृजमोहन फिल्म पत्रिका अकेले फिल्मी सामग्री के बल पर चल सकेगी या फिल्म संबंधी सामग्री पूरी पत्रिका में दी जा सकेगी, यह द्विविधा फिल्म पत्रिका निकालने वालों में शुरू के समय में थी। इसीलिए पहले कहानियों का सहारा लिया गया था। 1947 में बृजमोहन जी ने राजनीतिक सामग्री का सहारा लेकर 'फिल्म चित्र' निकाली जिसके बारे में पाठक निर्णय नहीं कर पाते थे कि यह पत्रिका राजनीतिक है या फिल्मी।"¹⁹

इस प्रकार हम पाते हैं कि विभाजन के दौरान जहाँ एक ओर देश में राजनीतिक उठा-पटक मची ओर देश दो भागों में बंटा, वहीं हिंदी सिने-पत्रकारिता की गति भी कमजोर अवश्य हुई परंतु ठहरी नहीं। इस तरह सामान्य उतार-चढ़ाव के बाद भी सिनेमा और सिने-पत्रकारिता किसी तरह अपने आप को कायम रख सकने में कामयाब रहे।

¹⁸.* -संपतलाल पुरोहित – लगभग चालीस सालों तक उन्होंने एक फिल्म पत्रिका 'युगछाया' का सफल संपादन किया।.... 1947 में उन्होंने युगछाया शुरू की और 1978 तक सफलतापूर्वक निकालते रहे। पुरोहित जी मध्य प्रदेश के धार शहर के रहने वाले थे। -विधुत मौर्य के, लालकिला ब्लॉग से, बुधवार, 16 फरवरी, 2011

¹⁹- फिल्म पत्रकारिता, द्वारा विनोद तिवारी, वाणी प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2007, पृ. 38

3.3 स्वाधीनता और बदलाव का सिनेमा

माना कि स्वतंत्रता के बाद एक के बाद एक तमाम समस्याएं आती गईं जैसा कि ऊपर बताया जा चुका है। परंतु 1950 का दशक आते-आते स्थितियाँ सामान्य होने लगीं। संविधान लागू होने के बाद स्थिरता आने लगी। सिनेमा के क्षेत्र में कल्पनाशील और चिंतनशील फिल्मकारों की नई पीढ़ी का आगमन हुआ जिसने हिंदी सिनेमा में व्यापक और सार्थक बदलाव किया। इस पीढ़ी के सिनेमाकारों ने बड़े सूझ-बूझ से विभाजन की पीड़ा से उत्पन्न निराशा के वातावरण में आशा, अनुराग एवं संघर्ष के भाव का संचार किया। इसलिए इस दौर की फिल्मों की प्रस्तुति निराशाजन्य नहीं है। इन फिल्मों में कुछ तत्व आम थे, जिसे फिल्मी टोटका भी कहा जाता है जिसमें नायक-नायिका का प्रेम और इसका विरोध करने वाला खलनायक, कामेडी, नाच-गाने और मार-पीट आदि शामिल थे।

यही वह दौर था जब हिंदी सिनेमा में स्टारों का अभ्युदय हुआ। स्टूडियो प्रणाली नेपथ्य में जाने लगी थी। मोतीलाल संभवतः पहले स्टार रहे, जिनका स्थान बाद में राजकपूर, दिलीप कुमार और देवानंद की तिकड़ी ने ले लिया। इस त्रिमूर्ति ने हिंदी सिनेमा को रंगीन ख्वाबों से भर दिया। इस तिकड़ी का असर आज भी है। राजकपूर समाजवादी चिंतन वाले कलाकार प्रतीत होते हैं। उनकी फिल्मों में भी समाजवाद एवं त्रासदी का समावेश रहा। देवानंद की फिल्में रूमनियत से भरी होती थीं। किंतु इन्हीं कलाकारों के समकालीन कुछ और कलाकार थे जिन्होंने ज्यादा सारवान व प्रबुद्ध फिल्में बनाईं इनमें बलराज साहनी, गुरुदत्त, सुनील दत्त, राजकुमार, किशोर शाहू, कमाल अमरोही, के.आसिफ और केदार शर्मा आदि का नाम लिया जाता है। पुरुष कलाकारों के अतिरिक्त सिनेमा के कई विभागों में महिला सिनेकारों की उपस्थिति भी दर्ज की गई जिसमें देविका रानी, दुर्गा खोटे, फियरलेस नाडिया, लीला चिटनिश, लीला नायडू, नरगिस एवं मीना कुमारी के नाम प्रमुख हैं। मधुबाला, सुरैया, नूजहां, गीताबाली, निम्मी और नूतन आदि भी इसी श्रृंखला में आती हैं।

स्वतंत्रता के बाद सिनेमा की कथावस्तु एवं प्रस्तुति में भी बदलाव दर्ज किया गया। पहले जो बात धर्म की आड़ में कही अथवा दिखाई जाती थी वे अब प्रत्यक्ष रूप से दिखाई जाने लगीं। ब्रिटिश सत्ता में जिन विषयों को सत्ता द्वारा वर्जित माना गया, उन विषयों को अब सिनेमा का विषय बनाया जाने लगा। राजकपूर द्वारा प्रथम निर्देशित फिल्म आग (06 अगस्त 1948) और दिलीप कुमार की फिल्म शहीद के माध्यम से सिने कथानक में आए परिवर्तन को देखा जा सकता है।

जैसा कि ऊपर बताया गया है कि राजकपूर, दिलीप कुमार और देव आनंद ने सिनेमा में क्रमशः समाजवाद, त्रासदी और रोमानियत को प्रस्तुत किया। यह सब आजादी पाने के कारण ही हो पाया, क्योंकि ब्रितानी सत्ता के रहते सब कुछ दिखाया जा सकता था किंतु समाजवाद को नहीं दिखाया जा सकता था। समाजवादी चिंतन को राजनीतिक कारणों से अंग्रेजी सरकार कभी भी पसंद नहीं कर सकती थी। दिलीप कुमार, कामिनी कौशल, चंद्र मोहन और लीला चिटनिस अभिनीत फिल्म शहीद सन् 1948 में प्रदर्शित हुई। यदि अंग्रेजी हुकूमत होती तो सबसे पहले इस फिल्म के नाम पर आपत्ति जताई जाती। फिल्म के विषय को पास नहीं किया जाता और ये गीत-वतन की राह में वतन के नौजवान शहीद हों, या बदनाम ना हो जाए मोहब्बत का फसाना, को मंजूरी ही न मिलती।

स्वतंत्रता के पश्चात जिस तरह सिनेमा के स्वरूप में बदलाव आया है वह स्वयं में शोध का विषय है। परंतु यह प्रश्न विचारणीय है कि क्या हिंदी सिने-पत्रकारिता में भी कोई बदलाव आ पाया? जिसे शोधप्रबंध के पूर्वार्ध में देने का प्रयास किया गया है किंतु वहाँ संदर्भ स्वतंत्रता संग्राम से जुड़ता है और यहाँ वही प्रश्न स्वतंत्रता बाद आए बदलाव को लेकर है। कुछ पत्रों एवं पत्रिकाओं के द्वारा इस प्रश्न के उत्तर की तलाश इस खंड में की गयी है।

3.4 स्वधीनता पश्चात की सिने-पत्रकारिता

स्वतंत्रता के बाद सिनेमा के साथ हिंदी सिने-पत्रकारिता के स्वरूप में भी ठहराव आया। धीरे-धीरे ही सही किंतु पत्रकारिता ने पुनः स्वयं को व्यवस्थित किया जिसमें बदलते सिनेमा का चरित्र भी कहीं न कहीं सार्थक रूप से दिखाई पड़ने लगा। हालांकि मुश्किलें कम नहीं थीं। आजादी के इस दौर को याद करते हुए अमृतलाल नागर कहते हैं-“पंद्रह अगस्त के बाद से देश का नक्शा और परिस्थितियाँ कानूनी तौर पर बदल गई हैं। सदियों की पुरानी कमजोरियों के साथ-साथ बहुत से नए सवाल भी पेचीदा होकर सामने आए। बिगड़े आर्थिक, राजनीतिक संघर्ष ने हिंद और पाकिस्तान को सहज स्वाभाविक रूप से आजादी की ताजी सांस लेने की मोहलत न दी। देश के इन दोनों हिस्सों में जन-जीवन की अशांति ने विभिन्न दलों के नेताओं की निजी और सार्वजनिक समस्याओं के साथ नाइतफाक करके जबरदस्त कशमकश पैदा कर दी।”²⁰

इसी बिगड़े हालात में राज केसरी ने ‘चित्रलेखा’* (1948) का संपादन शुरू किया और लगभग इसी पत्रिका के साथ दिल्ली से ‘चित्रकार’ का प्रकाशन होने लगा। यह बड़े आकार की पत्रिका थी, जिसने सिने-पाठकों को आकर्षित किया, किंतु नयेपन के अभाव के कारण यह पत्रिका बहुत अधिक दूर तक नहीं जा सकी। अंततः कुछ महीनों बाद ही बंद हो गई। सन् 1948 में ही प्रसिद्ध सिने-विशेषज्ञ एवं लेखक ख्वाजा अहमद अब्बास ने मुंबई से हिंदी मासिक फिल्म पत्रिका ‘सरगम’ की शुरुआत की। इस पत्रिका का पहला हिस्सा साहित्यिक होता था और दूसरा हिस्सा फिल्म सामग्री वाला होता था। यह एक विचार-प्रधान पत्रिका थी। उर्दू के बड़े-बड़े साहित्यकार इस पत्रिका में लिखते थे। इसे बहुत आदर प्राप्त हुआ। परंतु इतनी बेहतरीन पत्रिका भी डेढ़-दो साल में बंद हो गई।

इस पत्रिका की प्रशंसा में फिल्म पत्रकार विनोद तिवारी का मानना है- “इस पत्रिका के कर्ता-धर्ता थे ख्वाजा अहमद अब्बास, जो राजनीति, फिल्म-पत्रकारिता, साहित्य और समीक्षा के सभी क्षेत्रों में प्रोग्रेसिव ग्रुप का प्रतिनिधित्व करते थे। इन सभी क्षेत्रों के नामी लोगों से उनकी अच्छी दोस्ती थी इसलिए उन्हें ‘सरगम’ के लिए स्तरीय सामग्री जुटाने में कोई परेशानी नहीं होती थी।... वे इतनी विविध गतिविधियों में व्यस्त रहते थे कि पत्रिका

²⁰-फिल्म क्षेत्र- रंगक्षेत्र, द्वारा अमृतलाल नागर, संकलन एवं संपादन डॉ. शरद नागर, वाणी प्रकाशन, पृ. 51, सं. 2003

* चित्रलेखा- मासिक, दिल्ली, संपादक प्रकाशक राज केसरी, फिल्म पत्रिकाओं के बंधे-बधाए ठरे वाली यह पत्रिका राज केसरी के व्यक्तिगत प्रयत्नों की वजह से लंबे समय तक प्रकाशित होती रही। वे निरंतर मुंबई आकर फिल्म पत्रकारों से संपर्क करते और पत्रिका में नए-नए स्तंभ जोड़ने की कोशिश करते थे। उनकी मृत्यु के बाद उनके पुत्र ने इस पत्रिका का कार्यभार संभाला।

संचालन, संपादक के पूर्णकालिक कार्य के साथ न्याय कर पाना उनके लिए संभव नहीं हुआ। पाठकों व लेखकों की सराहना के बावजूद 'सरगम' डेढ़-दो साल से ज्यादा समय तक प्रकाशित नहीं हो सकी।²¹

सन् 1950 में हिंदी सिनेमा की कुछ उल्लेखनीय पत्रिकाएं सामने आईं जिसमें कल्पना (संपादक बच्चन श्रीवास्तव), 'शबनम' (संपादक देवेंद्र कुमार) और अनुपम (संपादक राज चोपड़ा) का नाम प्रमुखता से लिया जाता है। 'कल्पना' पत्रिका कम समय तक ही प्रकाशित हुई परंतु अपनी प्रस्तुति एवं अंतर्वस्तु में यह एक बेजोड़ सिने-पत्रिका रही। इसका वैचारिक पक्ष मजबूत व स्पष्ट था। इस पत्रिका के संपादक बच्चन श्रीवास्तव, एक सचेत फिल्म पत्रकार रहे हैं। प्रस्तुत है उनके विषय में उन्हीं के ब्लॉग से ली गई यह सूचना "राजकपूर की आवारा पहली फिल्म थी जिसकी समीक्षा उन्होंने फिल्म पत्रिका चित्रलेखा के लिए की थी। अपनी 60 वर्ष की सक्रिय पत्रकारिता में वह तीन दशक से अधिक समय तक दैनिक जागरण, नई दिल्ली के संवाददाता रहे। चित्रलेखा, राधिका, फिल्मांजलि, फिल्मी-दुनिया के कार्यकारी संपादक रहने के अतिरिक्त वह साप्ताहिक हिंदुस्तान, दैनिक हिंदुस्तान, नवभारत टाइम्स, सांध्य टाइम्स के कालमनिस्ट रहे। साथ ही उन्होंने दैनिक ट्रिब्यून, आवाज, अमर उजाला, मनोरमा, माधुरी, बिल्टज आदि के लिए भी लिखा।.....जिन कलाकारों के इंटरव्यू समय-समय पर उन्होंने प्रकाशित किए उनमें पृथ्वीराज कपूर, अशोक कुमार, दिलीप कुमार, राजेंद्र कुमार, देव आनंद, संजीव कुमार, भारत भूषण, शम्मी कपूर, शशि कपूर, सुनील दत्त जैसे नाम शामिल हैं। जिन अभिनेत्रियों से की गई उनकी बातचीत अपने वक्त में चर्चा का विषय रही उनमें मीना कुमारी, नरगिस, नूतन, सुरैया, वैजयंती माला, रेहाना सुल्तान....जेनेफर केंडेल, स्मिता पाटिल जैसी प्रमुख अभिनेत्रियाँ भी थीं।"²² चूँकि स्वतंत्रता के बाद प्रेस को आजादी मिलने का मार्ग प्रशस्त हुआ। इसलिए सिने-पत्रकारिता को संपूर्णता से समझने के लिए उसे निम्न श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है।

3.4.1 प्रिंट माध्यम

इसके अंतर्गत छपाई वाले संचार माध्यमों को शामिल किया गया है। स्वाधीनता के बाद बदली हुई राजनीतिक हालात में मुद्रित माध्यमों के स्वरूप में परिवर्तन देखा गया। साथ ही अब तक नितांत उपेक्षित क्षेत्रों पर भी ध्यान दिया जाने लगा। इससे सिने पत्रकारिता की स्थिति में थोड़ा सुधार हुआ। इस खंड में इन्हीं परंपरागत संचार माध्यमों के बदौलत सिने-पत्रकारिता का जायजा लिया जाएगा, जो निम्नवत हैं -

²¹ - फिल्म पत्रकारिता, द्वारा विनोद तिवारी, वाणी प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2007, पृ. 38

²² - बच्चन श्रीवास्तव के ब्लॉग से साभार।

3.4.1.1 समाचार पत्र

इस खंड में उन समाचार पत्रों का ही उल्लेख किया जाएगा, जिनका उल्लेख स्वाधीनता पूर्व वाले खंड में नहीं किया गया है।

3.4.1.2 हिंदी दैनिक समाचार-पत्र और सिने-पत्रकारिता

हिंदी दैनिक समाचार-पत्रों में सिनेमा पर थोड़ी-बहुत सामग्री दी जाती थी, जो सामान्य सूचना या गॉसिप जैसा कुछ होता था। परंतु अब प्रस्तुति में थोड़ा बदलाव आने लगा क्योंकि दैनिक समाचार-पत्रों की संख्या में आशातीत वृद्धि होने लगी थी। स्वाधीनता पश्चात भारत सरकार की प्रेस रिपोर्ट (1951-52) का अवलोकन करने से ज्ञात होता है- *“The Indian Press Year Book, 1951-52, listed about 220 daily newspapers and a number of weekly fortnightly and monthly publications, We find that out of about 220 daily newspapers in the early 1950’s 175 are Indian language papers as follows Hindi 44, Urdu 44, Gujrati 17, Marathi 17, Malayalam 15, Tamil 11, Kannada 09, Bengali 5, Punjabi 4, Telugu 3, Oriya 3, Sindhi 2, Assameses 1,”*²³(अनुवाद-भारतीय प्रेस वार्षिक पंजिका, 1951-52 में लगभग 220 दैनिक समाचार-पत्र, साप्ताहिक एवं मासिक प्रकाशनों को सूचिबद्ध किया गया है, जिसमें हमने पाया कि सन 1950 के पूर्व में लगभग 120 दैनिक समाचार-पत्रों में 175 समाचार-पत्र भारतीय भाषाओं के थे। इसमें हिंदी के 44, उर्दू के 44, गुजराती के 17, मराठी के 17, मलयालम के 15, तमिल के 11, कन्नड़ के 9, बंगाली के 5, पंजाबी के 4, तेलुगु के 3, ओड़िया के 3, सिंधी के 2 और असमी के 1 दैनिक समाचार-पत्र शामिल थे।)

पत्रकारिता की दृष्टि से 1950 का दशक बहुत महत्वपूर्ण माना गया। क्योंकि भारत निर्माण को गति देने के लिए इसी दशक में पंचवर्षीय योजना की शुरुआत हुई। इसलिए संक्षेप में हिंदी के समाचार पत्रों का परिचय और उनके द्वारा प्रस्तुति सिने सामग्री के बारे में जानकारी दी जा रही है ताकि उस समय के दैनिक समाचार पत्रों में प्रकाशित होने वाली सिने सामग्री की प्रस्तुति ज्ञात हो सके।

3.4.1.2.1 नवभारत टाइम्स

²³-दक्षिण भारत की हिंदी पत्रकारिता, द्वारा रवींद्र कात्यायन, पृ. 21-22, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण, 2002

सन् 1955 में अक्षय कुमार जैन इस पत्र के संपादक बने। उस समय यह पत्र हिंदी दैनिक हिंदुस्तान से काफी पीछे था। उन्होंने अपनी सूझबूझ से इसे एक समावेशी स्वरूप प्रदान किया। उन्होंने इसमें साहित्य, संस्कृति और सांस्कृतिक परिघटनाओं का समावेश किया। पत्र ने अंग्रेजी दैनिक पत्रों से स्पर्धा की और काफी हद तक सफल भी रहा। इसमें रविवार को चार पृष्ठों का रवीवारीय का प्रारंभ किया गया, जिसका अंतिम पृष्ठ रंगीन कर दिया गया, इसमें सिनेमा की खबरें प्रकाशित होती रही जो आज भी होती हैं। आजादी के बाद से लेकर आज तक इसने प्रांतीयता, राष्ट्रीयता और अंतरराष्ट्रीयता को नीतिगतरूप से साधा। प्रारंभ से ही इसने सिनेमा की खबरों को प्रबुद्ध ढंग से प्रस्तुत करने की नीति को स्वीकार किया, जो आज अधिक प्रौढ़ हो चुकी है।

स्वतंत्रता संग्राम सेनानी गौर हरिदास ने आजादी की लड़ाई में बढ़-चढ़कर भाग लिया था। उन पर फिल्मकार अनंत महादेवन ने एक बहुत ही सार्थक फिल्म 'गौर हरि की दास्तान' बनाई, जिसमें बकौल गौर हरि (87 वर्षीय) के विचार इस प्रकार हैं-“....आजादी के दीवानों के लिए खत ले जाने, टोपी फैलाकर चंदा इकट्ठा करने के दिनों की मुझे फिर से याद आने लगी है। 14 साल की उम्र ही तो थी, जब अपने पिता व बड़े भाई के साथ उड़ीसा में, अंग्रेज सरकार के खिलाफ 26 जनवरी 1945 को अवज्ञा आंदोलन में झंडाबंदन करके गिरफ्तार हुआ था। आठ महीने जेल में रहा। तब मुझे क्या मालूम था कि आजाद देश की ब्यूरोक्रेसी मेरे स्वतंत्रता सेनानी होने के सच पर ही सवाल खड़े कर देगी और स्वतंत्रता सेनानी के रूप में मान्यता प्राप्त करने के लिए अपनी ही सरकार से 32 वर्षों तक मुझे संघर्ष और कानूनी लड़ाई लड़नी पड़ेगी। लोगों ने मेरे स्वतंत्रता सेनानी होने पर ही संदेह नहीं किया, अपमानित किया, यहाँ तक कि मेरी उम्र तक पर उंगली उठाने से नहीं चूके। लड़ाई जीत पाया तो राजीव सिंहल जैसे दोस्तों की मदद से।.... देश की हालत जानकर आज दुख होता है। आम लोगों की सत्ता हो, ऐसी आजादी कहाँ है। हमने जिस भारत की आजादी के लिए लड़ाई लड़ी थी, वह अब सपना महसूस होता है। कभी-कभी यह भी लगने लगता है कि शायद हम लोग इससे पहले इतने दुखी नहीं थे, जितना कि आज की गुटबाजी, भ्रष्टाचार, मंहगाई, मिलावट, अन्याय, अत्याचार, व्यभिचार, प्रतिवाद और आतंकवाद के मारे हो गए हैं। मुझ पर बनी फिल्म के बहाने ही सही, भूले बिसरे स्वतंत्रता सेनानियों के संघर्ष पर देश के लोगों का ध्यान जा पाए तो मुझसे खुश और कौन होगा।”²⁴ इस समाचार पत्र में 5 मई 2012 को सेंसर बोर्ड के तेवर पर यह संपादकीय (बगावत से निपटने के लिए था सेंसर) आया था-“पराधीन भारत में जब फिल्में बननी शुरू हुईं तो अंग्रेजों के विरुद्ध स्वाधीनता संग्राम छोटे-छोटे विरोध प्रदर्शनों और आंदोलनों के रूप में मुखरित हो रहा था। ऐसे वातावरण में

²⁴ हू-ब-हू, यह मैं ही हूँ, विमल मिश्र से गौर हरि के बातचीत पर आधारित, अगस्त क्रांति दिवस, नवभारत टाइम्स, मुंबई, 9 अगस्त, 2015

जब फिल्मों में नियमित रूप से बननी शुरू हुई तो अंग्रेज सरकार चौकन्नी हो गई। वह जानती थी कि अगर फिल्मों को बिना रोकटोक बनने दिया गया, तो बेहद प्रभावशाली ढंग से स्वतंत्रता का पाठ पढ़ाने लगेंगी। इसलिए इस व्यवसाय को नियंत्रित करने के लिए सन् 1918 में सिनेमैटोग्राफी एक्ट लागू किया गया जिसके तहत फिल्म प्रदर्शन के लिए लाइसेंस लेना जरूरी हो गया।”²⁵

3.4.1.2.2. अमर उजाला

वर्तमान में हिंदी समाचार पत्रों की कतार लंबी हो चुकी है। इस कतार में अमर उजाला को प्रमुखता प्राप्त है। इस पत्र की शुरुआत सन् 1948 में डोरीलाल अग्रवाल और मुरारीलाल माहेश्वरी के संपादकत्व में आगरा से किया गया। आज यह पश्चिमी उत्तर प्रदेश अर्थात् आगरा, मेरठ, मुरादाबाद, कानपुर जैसे जिलों का प्रमुख समाचार-पत्र बन गया है। सन् 1969 से इसका बरेली से संस्करण भी प्रारंभ हो चुका है। “यह पत्र नेशनल जर्नल प्रेस, आगरा से मुद्रित होता है और अमर-उजाला कार्यालय, आगरा-3 से प्रकाशित होता है। यह आठ पृष्ठों का समाचार और सामयिक विषय का दैनिक अखबार है और रविवार को इसकी पृष्ठ संख्या 12-14 की होती है। यह ए.बी.सी./आई.ई.एन.एस./आई.एल.एन.ए./ए.आई.एन.ई.सी.आदि संस्थाओं का सदस्य है और इनकी पूरी सहायता लेता है। मेरठ से 1986 से और मुरादाबाद से 1989 से इसके संस्करण निकलने लगे हैं।”²⁶

इस पत्र के ब्यूरो भारत के लगभग सभी बड़े शहरों, मुंबई, कोलकाता, दिल्ली व मद्रास में कार्यरत रहते हैं। इसमें समाचारों के साथ कई तरह के कॉलम नियमित रूप से स्थान पाते हैं, जो विभिन्नता एवं वैचारिक आकर्षण प्रदान करते हैं। “जैसे रविवार को ‘कारोबार’ से संबंधित सामग्री, सोमवार को ‘छोटा पर्दा’ (सिनेमा से संबंधित), मंगलवार को ‘बच्चों का कोना’, बुधवार को ‘झरोखा’ आदि।”²⁷

इस अखबार की रोचकता का कारण नियमित रूप से कालमों का परिवर्तित होता जाता है। “रविवार को अमर उजाला किंचित परिवर्तित रूप लेकर सामने आता है। इसमें नित्य प्रकाशित होने वाले स्तंभ तो होते ही हैं अलग से पृष्ठ विशेष साज-सज्जा लिए प्रस्तुत होते हैं। ये इसके रविवासीय परिशिष्ट के नाम से निकलते हैं।...इसका पहला पृष्ठ साहित्यिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, ऐतिहासिक सामग्री से भरा होता है।... चतुर्थ पृष्ठ

²⁵-बगावत से निपटने के लिए था सेंसर-द्वारा-रमेश डाबर, 5 मई, 2012, नवभारत टाइम्स पृ.6

²⁶-हिंदी पत्रकारिता : विकास और विविध आयाम द्वारा डॉ. (श्रीमती) सुशीला जोशी, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, पृ. 174, तृतीय संस्करण 1994, ISBN 81-7137-148-5

²⁷-हिंदी पत्रकारिता : विकास और विविध आयाम द्वारा डॉ. (श्रीमती) सुशीला जोशी, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, पृ. 174, तृतीय संस्करण 1994, ISBN 81-7137-148-5

फिल्मी मसालों से भरा रहता है। इसमें कुछ सफल अभिनेताओं, अभिनेत्रियों, सफल व सर्वोत्तम फिल्मी गानों आदि की रोचक चर्चा होती है।”²⁸

प्रस्तुत है इस समाचार से एक नयी सिने खबर-“शोले मसाला फिल्म थी, पश्चिम की ‘स्पैगेटी वेस्टर्न’ जैसी। वैश्विक सिनेमा में कल्ट का दर्जा पा चुकी यह फिल्म कथानक के स्तर पर पश्चिमी सिनेमा से जितना प्रभावित थी, उतनी ही भारतीय महागाथाओं, किवंदंतियों और कथा रूढ़ियों से भी प्रभावित थी। वाल्मिकी रामायण में ऋषि विश्वामित्र ने राक्षसों के दमन के लिए राम और लक्ष्मण का सहयोग लिया था, सलीम-जावेद और रमेश सिप्पी की शोले में ठाकुर बलदेव सिंह ने डाकू गब्बर सिंह को मारने के लिए जय और वीरू का।....शोले ने इंडियन न्यू वेव के बरअक्स मुख्यधारा धारा के हिंदी सिनेमा में एक नए युग की शुरुआत की। शेखर कपूर ने एक साक्षत्कार में कहा था कि भारतीय सिनेमा के इतिहास को बिफोर शोले और आफ्टर शोले, दो युगों में बांटा जा सकता है।....अमेरिका और यूरोपीय सिनेमा के मशहूर जॉनर ‘स्पैगेटी वेस्टर्न’ की तर्ज पर शोले ने भारत में ‘करी वेस्टर्न’ फिल्मों का चलन शुरू किया। मल्टी स्टारर फिल्मों का नया दौर शुरू हुआ। शोले ने हिंदी सिनेमा को नया व्याकरण दिया।”²⁹

शोले के पहले डकैत पृष्ठभूमि पर कई फिल्मों आ चुकी थीं। कई डकैत किरदार शोहरत हासिल कर चुके थे, जैसे बिरजू (मदर इंडिया, 1957), राका (जिस देश में गंगा बहती है, 1960), जब्बर सिंह (मेरा गांव मेरा देश, 1971) और ठाकुर लक्ष्मण सिंह (कच्चे धागे, 1973) आदि। “1975 में आई शोले का डाकू गब्बर सिंह इन डकैतों से बिल्कुल अलग था। सलीम-जावेद ने एक ऐसा चरित्र गढ़ा था, जिसने किसी मकसद के लिए डकैती को नहीं चुना, बल्कि उसका मकसद ही डकैती थी।...पथरीले इलाके में गंदी कमीज, बढ़ी हुई दाढ़ी, खैनी चबाकर पिचच से थूकते गब्बर को सौंदर्यशास्त्र के उस खांचे में नहीं ढाला गया था, जिस खांचे में हिंदी सिनेमा के उस समय तक के विलेन गढ़े गए थे। वह फूहड़ और सैडिस्टिक था। गब्बर ने हिंदी सिनेमा के खल-चरित्र को नया आयाम दिया।...लगभग 204 मिनट की फिल्म में 66 मिनट बाद गब्बर सिंह की एंट्री को हिंदी सिनेमा में विलेन का अतिप्रभावशाली इंट्रोडक्शन सीन माना जाता है। कल्पनाशीलता, कैमरा वर्क, संगीत प्रभाव और अभिनय के पैमाने पर यह दृश्य कालातीत है। कैमरे को पैन कर गब्बर की मांद का भूगोल दिखाना और उसके बाद कालिया

²⁸- हिंदी पत्रकारिता : विकास और विविध आयाम द्वारा डॉ. (श्रीमती) सुशीला जोशी, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, पृ. 174, तृतीय संस्करण 1994, ISBN 81-7137-148-5

²⁹- www.amarujala.com शोले की बारीकियां, जिसने इसे बनाया, कल्ट व क्लासिक, द्वारा अवनीश, शनिवार 5 अगस्त 2015

और रामगढ़ गए उसके आदमियों के चेहरे का खौफ, रमेश सिप्पी ने पहले ही शॉट में स्थापित कर दिया था कि हिंदी सिनेमा का सबसे क्रूर चरित्र जन्म ले चुका था।... सिनेमाहाल के अंधेरे में बैठा दर्शक गब्बर का खौफ महसूस कर सके, इसके लिए आर.डी.बर्मन ने लेमोटिक का इस्तेमाल किया है। हिंदी सिनेमा में लेमोटिक का प्रयोग नया था। एक ऐसा लेमोटिक जो विलेन की एंट्री का संकेत था।... अनिरुद्ध भट्टाचार्य जी और बालाजी ने अपनी किताब 'आर.डी. बर्मन : द मैन, द म्युजिक' में लिखा है कि गब्बर के लेमोटिक के लिए आर.डी.बर्मन ने सेलो और हाइड्रोफोन म्युजिक का प्रयोग किया।”³⁰

3.4.1.2.3 दैनिक जागरण

यह समाचार-पत्र हिंदी प्रदेशों में अग्रणी है। इस पत्र की शुरुआत कानपुर से 1947 में पूर्णचंद्र गुप्त द्वारा की गई। हालांकि यह पत्र कानपुर के अतिरिक्त आगरा, नई दिल्ली, बरेली, मेरठ, झांसी, वाराणसी, गोरखपुर और लखनऊ से भी प्रकाशित होता है। अमर उजाला की तरह यह भी ए.आई.सी.एल.एन.ए. और ए.बी.सी. का सदस्य है। यह पत्र जागरण प्रकाशन लिमिटेड, सर्वोदय नगर, कानपुर दैनिक जागरण प्रेस से प्रकाशित होता है।

“दैनिक जागरण के स्थाई स्तंभ में मुख्य हैं-भाई साहब.....कला, संस्कृति, लोग, अर्थ कौटिल्य, विज्ञान....महिला, व्यापार जगत, सिनेमा, खेलकूद....मौसम, दूरदर्शन आदि। दैनिक जागरण के बारहवें पृष्ठ का अपना अलग ही महत्व है। यह पृष्ठ सभी के लिए उपयोगी बनाया गया है जो हर रोज एक अलग ही शीर्षक देकर लेख आदि प्रकाशित करता है जैसे, सोमवार ‘कला-संस्कृति’, मंगलवार ‘खेलकूद’, बुधवार ‘महिला’, गुरुवार ‘फिल्म’, शुक्रवार ‘टेलीदर्शन’, शनिवार ‘बाल क्लब’, रविवार ‘सप्तरंग’।”³¹

प्रस्तुत है दैनिक जागरण से यह सिने खबर-“अमिताभ बच्चन ने ऋषिकेश मुखर्जी की पुण्यतिथि पर उन्हें याद करते हुए अपने ब्लाग पर एक पोस्ट लिखा-‘आज दो महत्वपूर्ण लोगों की पुण्यतिथि है- दिग्गज गायक मुकेश और मेरे कम से कम नौ फिल्मों के निर्देशक रहे ऋषिकेश मुखर्जी की। ऋषि दा हमारे लिए गॉड फादर थे। हम उनके समय के सिनेमा को याद करते हैं। मुझे अभी भी याद है कि ऋषि दा के साथ मैंने सबसे ज्यादा फिल्में की थीं। इसके साथ बिग बी ने यह भी बताया कि ऋषि दा गठिया की बीमारी और पैरों में लगातार दर्द की समस्या से

³⁰-Amarujala.com शोले की वो बारीकियाँ जिसने इसे बनाया, कल्ट व क्लासिक, द्वारा अवनीश , शनिवार, 15 अगस्त, 2015

³¹-हिंदी पत्रकारिता : विकास और विविध आयाम, पृ. 174- 175

पेशान थे लेकिन इसके बावजूद वह सेट पर आते थे और कभी भी देरी के लिए बहाने नहीं बनाते। अमिताभ ने कहा कि ऋषि दा शतरंज के शौकीन थे।”³²

आजकल जिस तरह फिल्मों रिलीज होने के पहले ही इंटरनेट पर लीक हो जाती हैं, उसे दैनिक जागरण ने यह खबर देकर पेश किया है- “फिल्म ‘मोहल्ला अस्सी’ का ट्रेलर देखकर काफी हल्ला मचा था। इसमें सन्नी देओल, साक्षी तंवर समेत सभी कलाकार गाली-गलौज करते नजर आए थे। सबसे विवादित मुद्दा भगवान शिव को भी गाली देते दिखाना था। मगर ट्रेलर लीक होने के बाद तो पूरी फिल्म ही डिजिटल फॉर्मेट में लीक होकर बाजार में पहुँच गई। बनारस की पृष्ठभूमि पर बनी यह फिल्म सबसे ज्यादा वहीं कापी की गई। दो दिनों के भीतर हजारों लोगों तक यह पहुँच गई। खैर, अब तो दूसरे शहरों के लोगों को भी यह मिल गई है। सूत्रों की मानें तो सेंसर बोर्ड से ही लीक होकर इसकी कॉपी बाजार में पहुँची।”³³

3.4.1.2.4 पंजाब केसरी

सन् 1965 में दैनिक पत्र ‘पंजाब केसरी’ की स्थापना लाला जगतनारायण ने की। इस पत्र के साथ इसका उर्दू दैनिक भी प्रकाशित होता था। पंजाब केसरी स्वतंत्र मनोवृत्ति वाला पत्र है। इसके निर्भीक संपादकों में स्व. श्री रमेशचंद्र का नाम बड़े सम्मान के साथ लिया जाता है। वे किसी भी प्रलोभन में लिप्त नहीं हुए। यह पत्र हिंदी समाचार लिमिटेड, प्रकाशक तथा संपादक लाला जगतनारायण, हिंदी प्रेस, पक्का बाग, जालंधर से मुद्रित होता है। दिल्ली से भी यह पत्र 1983 से निकलने लगा। यह समाचार पत्र आई.ई.एन.एस/आई.एल.एन.ए/ए.बी.सी. का सदस्य है।

“पंजाब केसरी आठ कॉलमों में विभक्त है। इसके नियमित स्तंभों में मुख्य हैं- चलते-चलते, संपादकीय, कल क्या होगा, आज का दिन, खेल-कूद, मंडी, आदि। पर इन सब स्तंभों के अतिरिक्त पंजाब केसरी अपने साप्ताहिक संस्करण भी निकालता रहता है। जैसे व्यंग्य-विनोद संस्करण शनिवार को, कला-संस्कृति संस्करण मंगलवार को, गुरुवार को काहनी संस्करण, सोमवार को महिला संस्करण, बुधवार को खेल-खिलाड़ी संस्करण निकलते हैं। इन संस्करणों का प्रथम पृष्ठ रंगीन चित्रों से सुसज्जित रहता है।”³⁴

³²-पता है कौन थे सदी के महानायक अमिताभ बच्चन के गौदफादर। दैनिक जागरण, 29 अगस्त, शनिवार 2015

³³-दैनिक जागरण, 19 अगस्त बुधवार, 2015

³⁴-हिंदी पत्रकारिता : विकास और विविध आयाम , पृ. 175

पंजाब केसरी का रविवासीय संस्करण का मुख्य पृष्ठ ज्यादा विचारोत्तक होता है। इसमें देश-विदेश की राजनीतिक घटनाओं को स्थान दिया जाता है। दूसरे पृष्ठ पर लेख और अन्य प्रकार की सूचनाएं होती हैं। इसका रविवासीय संस्करण ज्यादा आकर्षक होता है, जिसमें सिनेमा से संबंधित सूचनाओं को स्थान दिया जाता है। रंगीन होने के कारण रविवासीय अंक का मूल्य अन्य दिनों से अधिक रखा जाता है। पंजाब ने केसरी ने समय-समय पर अपने प्रतिरोधी स्वर का परिचय दिया *“1974 : during the Emergency (India), during undeclared censorship on press, when the power supply was discontinued, the newspaper was printed by the alternative arrangements with tractors on diesel,”*³⁵ अर्थात् सन् 1974 में आपातकाल के, समय जब प्रेस पर अघोषित प्रतिबंध लगा दिया गया था, जब बिजली की आपूर्ति रोक दी गई थी, जब वैकल्पिक माध्यमों से समाचार पत्र छपते थे, तब पंजाब केसरी को शुरू किया गया। प्रस्तुत है पंजाब केसरी से यह सिने समाचार -“लास एंजिलिस हॉलीवुड के अभिनेता विल स्मिथ के बेटे ट्रे ‘एस’ स्मिथ जल्दी ही अपना संगीत कैरियर शुरू करने जा रहे हैं और उन्होंने अपना पहला गीत पॉप गायिका ब्यौंस नोल्स को समर्पित किया है। खबर के मुताबिक ‘ब्लैम इट ऑन ब्यौंस’ नामक एल्बम और इसमें दिखने वाले गायक डीकार्लो पॉप संस्कृति को लेकर ब्यौंस के प्रभाव से प्रभावित रहे हैं। गीत की परिकल्पना लगभग एक साल पहले को आचोला में तैयार की गई थी। यह समारोह ब्यौंस के फैशन और महिलाओं के आत्मविश्वास पर आधारित था।”³⁶

3.4.1.2.5 सन्मार्ग

प्रस्तुत समाचार-पत्र की स्थापना श्री स्वामी करपात्री द्वारा 18 अप्रैल 1948 को वाराणसी में हुई। इसके संपादकों में अनंत मिश्रा और चंद्रशेखर शास्त्री का नाम शामिल है। यह पत्र सन्मार्ग प्राइवेट लिमिटेड के लिए रामअवतार गुप्त द्वारा, सन्मार्ग प्रेस, 160 सी, चितरंजन एवेन्यू, कलकता-7 से मुद्रित तथा प्रकाशित होता है। यह पत्र भी आई.ई.एन.एस./आई.एल.एन.ए./ए.आई.एन.ई.सी./ए.बी.सी.का सदस्य है। वैसे यह पत्र हिंदू धर्म को प्रोत्साहित करने के लिए स्थापित किया गया था, किंतु हर शुक्रवार को यह पत्र छायाचित्र और रंगमंच नाट्य जगत, सितारों की बातें, यादों के आइने में, फिल्मी फुलझड़ियाँ, लाल बुझक्कड़ आदि शीर्षक देकर लेख लाता है। इन सभी शीर्षकों के अंतर्गत चित्रपट संबंधी जानकारी छपी रहती है, सिवाय लाल बुझक्कड़ और नाट्य जगत को छोड़कर।

³⁵-Punjab Kesari Wikipedia

³⁶-विल स्मिथ के बेटे ने ब्यौंस को समर्पित किया अपना गीत, पंजाब केसरी, वेब संस्करण, 07 सितंबर 2015.

नाट्य जगत के अंतर्गत नाटकों के प्रदर्शन की समीक्षा आदि की जाती है और लाल बुझक्कड़ शीर्षक के अंतर्गत प्रश्न व उत्तर निहित रहते हैं।”³⁷

3.4.1.2.6 राजस्थान पत्रिका

इस समाचार-पत्र की गिनती देश के बड़े व प्रतिष्ठित समाचार-पत्रों के रूप में की जाती है। पत्र की शुरुआत 07 मार्च, 1956 को एक सायंकालीन दैनिक समाचार-पत्र के रूप में श्री कुलीश जी द्वारा की गई। आज यह पत्र एक वैविध्य स्तंभ वाला समाचार-पत्र बन चुका है। इसके स्तंभों की विविधता से इसकी पाठकीयता व्यापक हुई है। “01 अक्टूबर 1983 से विशेष फीचर सेवा शुरू की जिसमें सोमवार को युवा जगत, मंगलवार को मनोरंजन, बुधवार को लोकपर्व, वृहस्पतिवार को विविधा, शुक्रवार को गांव-ढाणी, शनिवार को आध्यात्म तथा रविवार को रविवारीय परिशिष्ट।”³⁸

प्रस्तुत हैं राजस्थान पत्रिका से कुछ सिने-खबरें। एक खबर हॉलीवुड से और एक बॉलीवुड से-
हॉलीवुड से-

लांस एंजेलिस,

राजस्थान पत्रिका 23 फरवरी, 2015

आस्कर पुरस्कारों में पोलैंड की फिल्म ‘इदा’ को सर्वश्रेष्ठ विदेशी भाषा फिल्म का खिताब मिला है। इस श्रेणी में ‘इदा’ की टक्कर रूस की ‘लेविआतन’, इस्तोनिया की ‘तानडोयिस’ और अर्जेंटीना की ‘वाइल्डस टेलर्स’ सहित 10 फिल्मों से थी। ‘इदा’ आस्कर जीतने वाली पोलैंड की पहली फिल्म है। निर्देशक पावेल पावलिकोवस्की की इस ब्लैक एंड व्हाइट फिल्म की कहानी द्वितीय विश्व युद्ध के बाद पोलैंड में अनाथ हुई एक यहूदी लड़की की कहानी है। इससे पहले ‘इदा’ ने ब्रिटेन के बाफ्टा अवार्ड में भी सर्वश्रेष्ठ विदेशी फिल्म का पुरस्कार जीती थी।

बॉलीवुड से-

नेता जी- मुलायम सिंह यादव का पोस्टर रिलीज

राजस्थान पत्रिका, 13 अगस्त, 2015

³⁷-हिंदी पत्रकारिता : विकास और विविध आयाम, पृ. 176

³⁸-हिंदी पत्रकारिता : विकास और विविध आयाम, पृ. 180

उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री और समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष मुलायम सिंह यादव पर बन रही फिल्म 'नेता जी-मुलायम सिंह यादव' का पोस्टर रिलीज किया जा चुका है। उत्तर प्रदेश के लोक निर्माण मंत्री शिवपाल सिंह यादव ने बुधवार को फिल्म का पोस्टर लांच किया।

3.4.1.2.7 राष्ट्रदूत

इस पत्र की शुरुआत जयपुर से सन् 1951 में हुई। 1975 से यह पत्र कोटा से भी निकलने लगा। अब यह समाचार-पत्र बीकानेर से भी निकलना प्रारंभ हो गया है। पत्र की विशेषता यह है कि यह रविवारीय संस्करण न निकालकर एक विविध विषयों वाली रंगीन साप्ताहिक पत्रिका निकालता है। समाचार-पत्र बुधवार को 'मध्य साप्ताहिक परिशिष्ट' निकालता है। परिशिष्ट में विषयों की व्यापकता व विविधता होती है, जिससे इस परिशिष्ट को हाथों-हाथ लिया जाता है, जिसमें चोखी-अनोखी, रोचक सामग्री, अद्यतन जानकारी, विचार-प्रवाह, रोगियों के लिए उपचार, क्रीड़ा जगत और फिल्म की जानकारी व नई फिल्म की समीक्षा आदि शामिल की जाती है।

3.4.1.2.8 जलते दीप

इस पत्र के संस्थापक स्व.माणिक मेहता थे। यह समाचार-पत्र जोधपुर से सन् 1969 में शुरू किया गया। माना कि यह एक कम प्रसार संख्या वाला दैनिक समाचार-पत्र है, फिर भी गुणवत्ता में उच्च है। इसके संवाददाता मुंबई, कोलकता, दिल्ली व तमिलनाडु में भी हैं। इसमें सिने खबरों को नियमित रूप से प्रकाशित किया जाता है। परंतु बुधवार के रंगारंग पृष्ठ पर सिनेमा को विशेष प्रमुखता दी जाती है।

3.4.1.2.9 वीर अर्जुन

यह पत्र दिल्ली से निकलता है। चार पृष्ठों वाला यह पत्र 1954 से निकलना प्रारंभ हुआ। रविवार को यह समाचार-पत्र आठ पृष्ठ का साप्ताहिक प्रकाशित करता है। इस समाचार-पत्र का एक विशेष पाठक वर्ग है। इसका संपादकीय निष्पक्ष होता है और समाचार चयन में किसी प्रकार का बिरादरीवाद नहीं चलता। इसका रविवारीय साप्ताहिक बहुत ही रोचक होता है, जिसमें लेख, वार्ता, फीचर, यात्रा वृत्तांत, साप्ताहिक भविष्य, कहानी, वीर बालक, संसद, कार्टून, नारी संसार, जीवनियाँ, पुण्यतिथि, शूटिंग आदि की खबरें प्रकाशित होती हैं। इस पत्र का शूटिंग कॉलम सिनेमा से संबंधित है, जिसमें फिल्मों की समीक्षा और फिल्म संबंधी सूचनाएं दी जाती हैं।

3.4.1.2.10 नवजीवन

इस पत्र को नेशनल हेराल्ड (अंग्रेजी) व कौमी आवाज (उर्दू) की प्रकाशन संस्था दि एसोसिएटेड जर्नल्स लिमिटेड ने आजादी के उषाकाल में सर्वप्रथम लखनऊ से सन 1947 में प्रकाशित किया गया। वैचारिक रूप से यह पत्र कांग्रेसी नीति का समर्थन करता है। इतने सब के बाद भी यह सिने-समाचार प्रकाशित करता रहता है।

3.4.1.2.11 देशबंधु

इस पत्र की शुरुआत सन् 1959 में रायपुर से हुई। शुरुआत में इसका संपादन मायाराम सुरजन ने किया। यह रायपुर, जबलपुर और भोपाल से एक साथ प्रकाशित होता है। देशबन्धु के मनोरंजन कॉलम के अंतर्गत फिल्म टी.वी. एवं ग्लैमर की चर्चा की जाती है।

3.4.1.2.12 जनसत्ता

जनसत्ता एक उल्लेखनीय समाचार-पत्र है, जिसकी शुरुआत इंडियन एक्सप्रेस प्राइवेट लिमिटेड द्वारा 17 नवंबर 1983 को दिल्ली से की गई। प्रसिद्ध पत्रकार स्व. प्रभाष जोशी इसके सम्पादक बने। बाद में इसे मुम्बई (1988), कोलकता सहित कई अन्य नगरों से भी निकाला गया। यह एक 12 पृष्ठीय अखबार है। रविवार के इसके परिशिष्ट का विशेष आकर्षण है-नहीं दुनिया, कहानी, कविता, गीत, सप्ताह के सितारे, जोग लिखी जैसे स्तंभ। आज यह हिंदी के अग्रणी समाचार-पत्रों में गिना जाता है। इसके संस्करण फिलहाल दिल्ली व चंडीगढ़ (1987) से भी प्रकाशित होते हैं। इंडियन एक्सप्रेस प्राइवेट लिमिटेड द्वारा ही मुंबई में लोकसत्ता जैसे मराठी का समाचारपत्र प्रकाशित होता है।

प्रस्तुत है जनसत्ता वेब संस्करण से यह सिने समीक्षा का अंश- “कंगना रानाउत के प्रशंसकों की संख्या इन दिनों बढ़ी है। लेकिन ‘कट्टी-बट्टी’ से इन प्रशंसकों को काफी निराशा होने वाली है और जहाँ तक इमरान खान का सवाल है उनके प्रशंसकों की संख्या इन दिनों काफी कम हो गई है। इस फिल्म के बाद इस संख्या में इजाफा नहीं होने वाला है। लेकिन इन दोनों बात के लिए जिम्मेदार कंगना और इमरान नहीं है बल्कि इस फिल्म के निर्देशक निखिल आडवाणी हैं जिन्होंने ऐसी फिल्म बनाई है जिसकी शुरुआत तो दमदार है लेकिन जैसे ही फिल्म आगे बढ़ती है वैसे ही धीरे-धीरे इसका दम निकलने लगता है। दरअसल निर्देशक ने इसे प्रेम कहानी बनाना चाहा है जो प्रेम कहानी लगी ही नहीं और यहीं फिल्म मार खा जाती है। गुड़ खाकर गुड़ से परहेज क्यों है बंधू”³⁹

³⁹-www.jansatta.com 20.09.2015, मनोरंजन स्तंभ

3.4.1.2.13 दैनिक भास्कर

इस समय यह भारत का सबसे अधिक प्रसार संख्या वाला समाचार-पत्र है। इसकी स्थापना सन 1958 में इसे दैनिक भास्कर नाम से भोपाल से प्रारंभ किया गया था। समाचार पत्रों के अतिरिक्त कई अन्य समाचार पत्र हैं, जो स्वाधीनता पश्चात शुरू किए गए और इनमें व्यापक रूप से सिने समाचार प्रकाशित होते हैं। जैसे- “पंद्रह अगस्त(अहमदाबाद, गुजरात, 1963), हिमकेसर(शिमला, 1960), स्वदेश(इंदौर, 1966), एन.बी.टी.(बंबई, 1950), जन नायक(कोटा, 1973), सन्मार्ग(कोलकाता, 1948) और वीर अर्जुन (दिल्ली, 1954) आदि”⁴⁰

3.4.1.3 समाचार एजेंसिया

समाचार एजेंसियों से क़िफायती दर पर समाचार वितरित किए जाते हैं। समाचार समिति निर्माण की दिशा में पहला प्रयास “19 वीं शताब्दी के प्रथम दशक में भारत में पायनियर, स्टेट्समैन, इंग्लिशमैन तथा इंडियन डेली न्यूज-चार प्रमुख पत्र प्रकाशित थे, जो ब्रिटिश सरकार के समर्थक थे। इन चारों में हैसमैन के व्यक्तित्व के कारण पायनियर अधिक प्रभावशाली था। अतः स्टेट्समैन के कार्टस, इंग्लिशमैन के बक तथा इंडियन डेली न्यूज के डालस ने मिलकर एसोसिएटेड प्रेस ऑफ इंडिया (ए.पी.आई.) के नाम से सन् 1905 में समाचार समिति की स्थापना की।”⁴¹

हिंदी भाषा की न्यूज एजेंसियाँ

स्वाधीनता के बाद हिंदी में भी न्यूज एजेंसियाँ स्थापित की गईं, जो निम्नवत हैं-

3.4.1.3.1 यूनिवार्ता

इसकी स्थापना यू.एन.आई द्वारा 1 मई 1982 को किया गया। इसे संक्षेप में युवा लिखा जाता है। “हिंदी प्रदेशों में इस संस्था के करीब 105 कार्यालय हैं और करीब 225 पत्र इसकी सेवा का लाभ उठा रहे हैं।...इसका ध्येय वाक्य-छोटे समाचार-पत्रों को कम व्यय में हिंदी में देश विशेष के समाचार उपलब्ध कराना।”⁴² यूनिवार्ता हर प्रकार की खबरों की सेवा देता है, जिसमें फिल्मी खबरें भी शामिल रहती हैं।

⁴⁰-स्वतंत्र्योत्तर हिंदी पत्रकारिता: परिचय और वर्गीकरण-हिंदी पत्रकारिता : विकास और विविध आयाम द्वारा डॉ श्रीमती सुशीला जोशी, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी जयपुर तृतीय संस्करण , 1994 पृ, 145

⁴¹-स्वतंत्र्योत्तर हिंदी पत्रकारिता: परिचय और वर्गीकरण-हिंदी पत्रकारिता : विकास और विविध आयाम द्वारा डॉ श्रीमती सुशीला जोशी, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी जयपुर तृतीय संस्करण , 1994 पृ, 131

⁴²- स्वतंत्र्योत्तर हिंदी पत्रकारिता: परिचय और वर्गीकरण-हिंदी पत्रकारिता : विकास और विविध आयाम द्वारा डॉ श्रीमती सुशीला जोशी, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी जयपुर तृतीय संस्करण , 1994, पृष्ठ-133

3.4.1.3.1 हिंदुस्तान समाचार

यह एक भाषाई समाचार समिति है। इसका मुख्यालय कनॉट पैलेस, नई दिल्ली में है। इसकी स्थापना में एस.एस. आम्टे की प्रेरणा थी। उन्हीं के प्रयासों से दिसंबर 1948 में इसे स्थापित किया जा सका। प्रारंभ में इसके क्षेत्रीय कार्यालय दिल्ली, बम्बई, कलकत्ता, पटना, नागपुर, जयपुर, एवं लखनऊ में स्थापित किए गए। सन् 1957 में यह सहकारी समिति अर्थात् प्रा. लिमिटेड के रूप में परिवर्तित हुआ। आज पूरे देश में पचास से अधिक केंद्र स्थापित हो चुके हैं। विभिन्न भारतीय भाषाओं के 150 से अधिक समाचार पत्र इसके ग्राहक हैं। सन् 1968 में युगवार्ता शीर्षक से इसने एक प्रसंग सेवा की शुरुआत की, जिसमें सिनेमा से संबंधित सूचनाएं भी होती हैं। वर्तमान में यह आर्थिक संकट के दौर से गुजर रहा है।

3.4.1.3.3 समाचार भारती

इस समाचार एजेंसी की स्थापना 2 अक्टूबर, 1946 को की गई। सन् 1979 से इसने अपनी फिचर सेवा शुरू की। इससे साप्ताहिक समाचार पत्रों की जरूरत के साथ सिने-सामग्री की उपलब्धता में भी वृद्धि दर्ज किया गया।

3.4.1.3.4 भाषा

पी.टी.आई. ने 18 अप्रैल 1986 को इसकी स्थापना, हिंदी समाचार सेवा को गति देने के लिए की गई। यह हिंदी की एक प्रतिष्ठित समाचार एजेंसी है, जिसके द्वारा अन्य खबरों के अतिरिक्त सिने खबरें भी उपलब्ध कराई जाती हैं।

3.4.1.4 मुख्यधारा की पत्रिकाएं

सिनेमा पर सामग्रियाँ, सिने-त्रिकाओं के अतिरिक्त दूसरे प्रकार की पत्रिकाओं में भी प्रकाशित होती रही हैं। यहाँ कुछ ऐसी ही पत्रिकाओं का उल्लेख किया जाएगा, जो सीधे-सीधे सिनेमा की पत्रिका नहीं है, लेकिन सिनेमा पर जानकारी इनमें दी जाती रही है। इनमें मुख्यधारा की समसामयिक पत्रिकाएं प्रमुख हैं-

3.4.1.4.1 इंडिया टुडे

इंडिया टुडे के संस्थापक संपादक थे मधु त्रेहान। इसका प्रथम अंक (01-15 दिसंबर) 1975 में आया। इस समय इसके प्रधान संपादक अरुण पुरी हैं। अब यह एक साथ हिंदी, तमिल, मलयालम, तेलुगु व अंग्रेजी में छपती है। माना कि यह समसामयिक घटनाओं पर आधारित एक साप्ताहिक राजनैतिक पत्रिका है। परंतु इसमें सिने-खबरों को भी पर्याप्त स्थान दिया जाता है। कभी सिनेमा पर आवरण कथा तो कभी सिने विशेषांक भी इस पत्रिका द्वारा

निकाले जाते हैं। उदाहरण के लिए 25 फरवरी 2015 को इसमें छपे आलेख 'क्रिकेट से नहीं डरता बॉलीवुड' को ले सकते हैं-“बात अक्टूबर 1987 की है। विश्व क्रिकेट अपने उफान पर था। दिग्गजों की भिड़ंत चल रही थी। भारत खिताबी जंग में उलझा था। यह जंग क्रिकेट की दुनिया में बुलंदियों को छू रहे देश में चल रही थी। बॉलीवुड ने अपने हाथ खींच रखे थे और बड़े डायरेक्टर फिल्म रिलीज करने की जोखिम नहीं उठा रहे थे। लेकिन एक सयाने डायरेक्टर ने इस मौके को ताड़ते हुए फिल्म को रिलीज कर दिया। फिल्म नफे में रही। डायरेक्टर थे के.सी.बोकाडिया और फिल्म थी *कुदरत का कानून*। बोकाडिया कहते हैं-‘उस समय बड़े प्रोड्यूसर्स ने हाथ खींच रखा था। मुझे इसमें मौका नजर आया और मैं दांव खेल गया।....ऐसे मुल्क में जहाँ क्रिकेट को धर्म माना जाता हो, वहाँ इस तरह का डर होना स्वाभाविक है।....लेकिन इस विश्वकप के दौरान यह मिथक टूटता नजर आ रहा है और बॉलीवुड लगभग 10 से ज्यादा छोटी-बड़ी फिल्में इस डेढ़ माह में रिलीज करेगा।”⁴³

प्रस्तुत है इसी पत्रिका के किसी दूसरे अंक से दूसरा सिने आलेख-“मायानगरी मुंबई के वर्सोवा समुद्रतट पर अपनी तस्वीरें खिंचवाते हुए वे उत्साह और उत्तेजना की रिमझिम फुहारों में भीग रहे हैं।....मिलिए बालीवुड के ताजातरीन और बहुमुखी प्रतिभा वाले राजकुमार यादव से।....अपनी दोनों फिल्मों लव, सेक्स, धोखा और रागिनी एम.एम.एस. में वे यौन शोषण करने वाले की भूमिका में दिखे, जिनमें वे अपनी प्रेमिका के अश्लील वीडियो बनाते हैं।”⁴⁴ इस खबर में अभिनेता राजकुमार यादव ,जो अब राजकुमार राव बन चुके हैं,के विषय में कई जानकारियां दी गई हैं।

3.4.1.4.2 दिनमान

दिनमान सन् 1965 से निकलना शुरू हुआ। इसकी शुरुआत अज्ञेय द्वारा की गई। अज्ञेय ही इसके पहले संपादक थे। अज्ञेय के बाद क्रमशः रघुवीर सहाय और सर्वेश्वर दयाल सक्सेना संपादक बने और इसे बड़े मुकाम तक ले गए। यह गंभीर मनोभूमि की राजनीतिक-साहित्यिक-सांस्कृतिक पत्रिका थी। इसका संपादकीय स्पष्ट व प्रखर हुआ करता था। इसकी योजना टाइम मैग्जीन के तर्ज पर की गई थी। इस पत्रिका में संवादाता और उफ-संपादक में अंतर नहीं था। प्रस्तुति एवं लेखन में यह एक बेजोड़ पत्रिका थी, इसीलिए प्रबुद्ध वर्ग में इसे काफी गंभीरता से लिया जाता था। साहित्य व संस्कृति पर इस पत्रिका की गंभीर पकड़ थी जो टाइम्स ऑफ इंडिया की एक बेहतरीन प्रस्तुति थी और नेशनल प्रिंटिंग वर्क्स से मुद्रित होती थी। “पहले यह 48 पृष्ठ का समाचार व

⁴³-क्रिकेट से नहीं डरता बॉलीवुड, द्वारा नेंद्र सेनी, इंडिया टुडे, 25 फरवरी, 2015, पृ. 62

⁴⁴-लीक तोड़ते नए सितारे, द्वारा प्राची रेगे, इंडिया टुडे, 06 जुलाई, 2011, पृ. 52

सामयिक खबरों का महत्वपूर्ण साप्ताहिक था, जिसमें चित्र, रेखाचित्र, ग्राफ तथा व्यंग्य आदि यथास्थान होते थे। दिनमान के स्थाई स्तंभ थे-मत और सम्मत, पिछले सप्ताह, देश-विदेश, पत्रकार संसद, राष्ट्र, प्रदेश, समाचार भूमि, विश्व खेल और खिलाड़ी, रंगमंच फिल्म और आवरण पृष्ठ था। दिनमान का आवरण दुंगा होता था जिस पर रंग-बिरंगा चित्र अंदर दी गई घटना पर आधारित होता था। यही नहीं, आवरण पर दिनमान में समाहित घटनाओं को छोटे-छोटे व सशक्त शीर्षकों में दिया जाता था।⁴⁵ यह पत्र अत्यंत प्रखर इसने कभी –कभी राजनीतिक भविष्यवाणी भी की दिनमान मापनी एक रिपोर्टिंग पर जवाहर कौल याद करते हुए कहते हैं दिनमान ने अपनी प्रखरता को बनाए रखा और बाद में पंकज गोस्वामी के संपादकत्व में ‘दिनमान टाइम्स’ के नाम से निकलने लगा। परंतु इतने परिवर्तन के बाद भी अंततः यह पत्रिका बंद हो गई।

3.4.1.4.3 साप्ताहिक हिंदुस्तान

यह एक साहित्यिक व सांस्कृतिक पत्रिका है जो हिंदुस्तान टाइम्स लि, द्वारा प्रकाशित की जाती है। इसका प्रथम अंक 02 अक्टूबर 1950 को निकला। इसके प्रथम संपादक मुकुटबिहारी वर्मा थे। उनके बाद इसका संपादकत्व बांके बिहारी भटनागर के हाथ में आ गया। श्री भटनागर ने अपनी मेहनत और लगन से इसे लोकप्रिय बना दिया। उन्होंने लेखकों का विश्वास अर्जित कर लिया था, फलस्वरूप उन्होंने लेखकों, साहित्यकारों व विद्वानों का भरपूर सहयोग लिया। इसी के बल पर वे कई विशेषांक निकाल सके। श्री भटनागर जी के बाद संपादकत्व का भार मनोहर श्याम जोशी के हाथ में आ गया। 56 से 64 पृष्ठों वाला यह साप्ताहिक तीन अथवा चार कालमों में विभक्त होता था। इसके अधिकांश स्तंभ अक्सर स्थाई ही होते थे जिसमें आपके पत्र, कनारतीर, पुस्तक चर्चा, फिल्म, दूरदर्शन, बात-बतंगड़ व फुलवारी आदि प्रमुख थे। फिल्मी जानकारी के लिहाज से इसका एक स्तंभ ‘बोलती छाया’ उल्लेखनीय था। इस स्तंभ में फिल्मी सितारों और फिल्मों का विश्लेषण प्रस्तुत किया जाता था। यह विश्लेषण व समीक्षाएँ निष्पक्ष हुआ करती थीं। निश्चित रूप से यह एक बेहतरीन पत्रिका थी, जो सन् 1992 में बंद हो गई।

3.4.1.4.4 रविवार

इस पत्रिका का प्रकाशन आनंद बाजार पत्रिका लिमिटेड द्वारा किया जाता था। यह एक साप्ताहिक पत्रिका थी, जिसका प्रकाशन 1977 में शुरू हुआ। कम समय में ही इसने बड़ा मुकाम प्राप्त कर लिया था। इसके प्रथम संपादक

⁴⁵-स्वतंत्रयुत्तर पत्र-पत्रिकाएं : एक मूल्यांकन, हिंदी पत्रकारिता : विकास और विविध आयाम, द्वारा डॉ. (श्रीमती सुशीला जोशी), तृतीय संस्करण 1994, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, पृ. 190-191

एम.जे.अकबर थे। बाद में संपादकत्व का भार उदयन शर्मा के कंधों पर आ गया। कलकत्ता से निकलने वाली इस पत्रिका में समसामयिक घटनाओं को प्रमुखता प्राप्त थी। इसमें तीन कॉलम होते थे, जिसमें आमुख कथा, देश-देशांतर, साहित्य तथा विविध शामिल थे। इस पत्रिका का मुखपृष्ठ दो रंगों वाला होता था जिसमें प्रस्तुत सप्ताह में घटित प्रमुख घटना से संबंधित व्यक्ति का चित्र होता था। इस पत्रिका का मूल स्वर राजनीति था, जिसे प्रमुखता से मुखपृष्ठ पर स्थान दिया जाता था। इसके साथ उस सप्ताह में घटित राजनैतिक, सामाजिक व सांस्कृतिक घटनाओं को भी स्थान दिया जाता था। साहित्य इसका एक महत्वपूर्ण स्तंभ हुआ करता था, जिसमें कहानी, संस्मरण, उपन्यास, कविता, आदि छपती थीं। साथ ही इसके विशेष कॉलम का नाम 'विविध' था। इस कॉलम में खेल जगत के साथ फिल्मों एवं फिल्मी कलाकारों का जीवन, चित्रकथा व नाटक आदि प्रकाशित होते थे। बहुत ही सुरुचिपूर्ण व प्रखर राजनीतिक चिंतन वाली यह पत्रिका अक्टूबर 1989 में बंद हो गई।

3.4.1.4.5 इतवारी पत्रिका

आज इस पत्रिका का स्वतंत्र अस्तित्व है, किंतु इसका जुड़ाव राजस्थान पत्रिका से रहा है। इसीलिए राजस्थान पत्रिका और इसका साझा इतिहास रहा है। यह एक बेबाक पत्रिका है, जिसमें राजनीति, अर्थनीति, सामाजिक व सांस्कृतिक क्रियाकलापों की चेतस्थ व्याख्याएं प्रस्तुत की जाती रही हैं। इस पत्रिका की शुरुआत 1973 में हुई, जिसे शिखर तक पहुँचाने में श्री सी.एल.माथुर, श्री गोपाल पुरोहित और इंदु चंद्रशेखर की विशेष भूमिका रही। दो वर्ष तक इसका संपादन श्री राजेश रेडडी जी ने भी किया। इसके स्तंभों में विविधता को विशेष महत्व प्राप्त होता रहा है, जिसमें राष्ट्र, कहानी, कविता, ललित कला, युवा-विश्व, महिला मंच, स्मृति घटना, खेल, विज्ञान, बालगोपाल, चित्रकथा, अटीक-सटीक, आंखन-देखी कागद लेखी, परत दर परत राजस्थान, पुरातत्व फीचर, रू-ब-रू, सिनेमा, संगोष्ठी व संगीत जैसे स्तंभ शामिल हैं।

3.4.1.4.6 ब्लिट्ज

इसका प्रकाशन बंबई (मुंबई) से 17 फरवरी 1962 को श्री आर.के.करंजिया द्वारा किया गया। यह साप्ताहिक पत्र था। दरअसल यह अंग्रेजी साप्ताहिक ब्लिट्ज का हिंदी संस्करण था। इसलिए इसकी प्रस्तुति एवं अंतर्वस्तु के चयन में अंग्रेजी का प्रभाव झलकता था। इसके प्रधान संपादक श्री आर.के. करंजिया थे, लेकिन इसके संपादन का भार श्री मुनीश नारायण सक्सेना को सौंपा गया, जिनके दस साल के कार्यकाल में इसने अपार लोकप्रियता हासिल की। इसमें नियमित फिल्म का कॉलम छपता था। “यह एक सनसनीखेज समाचार प्रधान साप्ताहिक था। इसमें समाचारों का संकलन जिस विशेष रंगत के साथ होता है, उसी रंगत के साथ उसका प्रकाशन

करना इसकी अपनी विशेषता थी। संपादन, भाषा व प्रस्तुतिकरण में इसका अपना अलग ही स्थान था। ब्लिट्ज 15 अगस्त व 26 जनवरी को अपना विशेषांक निकालता था।⁴⁶

हिंदी सिनेमा के बहुत प्रबुद्ध व्यक्ति ख्वाजा अहमद अब्बास का संबद्ध ब्लिट्ज से था। “पानीपत में 07 जून 1914 को जन्मे ख्वाजा अहमद अब्बास ने अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय से कानून की तालीम ली थी। उनका ताल्लुक मशहूर शायर ख्वाजा अल्ताफ हुसैनी ‘हाली’ के घराने से था। उनके दादा ख्वाजा गुलाम अब्बास 1857 के स्वतंत्रता संग्राम की अग्रिम पंक्ति में शामिल थे, जिन्हें ब्रिटिश सरकार ने तोप से बांधकर शहीद कर दिया था। देश के लिए कुछ करने की सीख ख्वाजा अहमद अब्बास को अपने पुरखों से मिली थी। उस पर अमल करते हुए उन्होंने कलम को अपना हथियार बनाया। अलीगढ़ में रहते हुए उन्होंने ‘नेशनल काल’ अखबार और ‘अलीगढ़ ओपिनियन’ पत्रिका में लिखा। तालीम पूरी कर 1935 में जब वह फिल्म नगरी पहुँचते तो ‘बांबे क्रॉनिकल’ अखबार से जुड़े। वहाँ उन्होंने फिल्मी लेखन पर ज्यादा ध्यान दिया। इसी बीच उनका नाता ‘ब्लिट्ज’ जैसे अखबार से जुड़ा जो जीवन के आखिर (01 जून, 1987) तक कायम रहा। हर सप्ताह छपने वाले उनके स्तंभ ‘द लास्ट पेज’ (अंग्रेजी) तथा ‘आज़ाद कलम’ (हिन्दी) को काफी लोकप्रियता मिली।”⁴⁷

3.4.1.4.7 नन्दन

हिंदुस्तान टाइम्स प्रकाशन समूह द्वारा इसका प्रकाशन मुख्यतः बच्चों के लिए किया जाता है। इसकी शुरुआत नवंबर 1964 में हुई। प्रथम संपादक श्री राजेंद्र अवस्थी थे। दो कॉलमों में विभाजित यह पत्रिका कुछ खास है, जिसका सामान्य अंक भी 64 पृष्ठों में प्रकाशित होता है। साल भर में इसके तीन विशेषांक प्रकाशित होते हैं जिनमें दो 80 पृष्ठों वाले और एक 128 पृष्ठों वाला होता है। अपनी आकर्षक छपाई एवं साज सज्जा के कारण यह पत्रिका सहज ही बच्चों को आकर्षित कर लेती है, जिसके लिए कई बार राष्ट्रीय पुरस्कार हासिल कर चुकी है। इसमें सिनेमा पर भी लेख व चित्रों के माध्यम से जानकारी दी जाती है। इसमें हिंदी के अतिरिक्त दूसरी भारतीय भाषाओं के लेखकों के आलेख प्रकाशित किए जाते हैं। साथ ही देश के प्रतिष्ठित नेता, खिलाड़ी, अभिनेता, वैज्ञानिक व साहित्यकार भी इसके लिए लिखते हैं।

⁴⁶-हिंदी पत्रकारिता : विकास और विविध आयाम, पृ.192

⁴⁷-तहलका संस्करण 7, अंक, 15 जनवरी, 2015 द्वारा अटल तिवारी

3.4.1.4.8 गृहशोभा

दिल्ली से इस पत्रिका का प्रकाशन सन् 1979 में किया गया। चूँकि यह एक महिला प्रधान (मासिक) पत्रिका है, इसलिए महिलाओं की समस्याओं को प्रमुखता प्राप्त है, जिसमें समाचार दर्शन, पति-पत्नी उलझाव-सुलझाव, हाथ में शर्म से लाल हुई व फूल भी कांटे भी जैसे स्तंभ शामिल हैं। साथ ही कथा साहित्य, स्वास्थ्य, सौंदर्य समस्या, फिल्म, बागवानी, परिवार, फैशन, सिलाई, पकवान व साज सज्जा जैसे स्तंभ भी प्रकाशित होते हैं। इसका एक स्तंभ फैशन है जिसमें फैशन के बहाने सिनेमा और सिनेमा में फैशन की चर्चा होती है।

3.4.1.4.9 आउटलुक

यह पत्रिका जितना अपने समसामयिक राजनीतिक टिप्पणी के लिए जानी जाती है, उतना सिने टिप्पणी के लिए नहीं जानी जाती। फिर भी समय-समय पर इसमें सिनेमा पर अच्छी सामग्री प्रस्तुत की जाती रही है। आउटलुक के दिसंबर के प्रथम पक्ष (1-15) में भोपाल गैस ट्रेजडी पर बनी फिल्म भोपाल-ए फेयर फॉर रेन (निर्देशक रवि कुमार, कलाकार-राजपाल यादव और तनिष्ठा चटर्जी) पर आकांक्षा पारे काशिव ने 'त्रासदी का दर्द पर्दे पर' के अंतर्गत यह टिप्पणी की है-“ फिल्म उन असावधानियों की पड़ताल करती है, जिसकी वजह से इतना बड़ा हादसा हो गया। हाल में इस हादसे के लिए जिम्मेदार कंपनी से जुड़े एक वरिष्ठ अधिकारी की मृत्यु हो गई। लेकिन फिल्म की नायिका तनिष्ठा चटर्जी और सह-निर्देशक प्रदीप कुमार दोनों मानते हैं कि यह फिल्म कोई अवसर नहीं है। फिल्म इस तरह बनी है कि इसके लिए किसी अतिरिक्त प्रचार की जरूरत नहीं होगी।”⁴⁸

3.4.1.4.10 माया

यह एक पाक्षिक पत्रिका है जो 1929 से ही इलाहाबाद से निकलने लगी थी। पत्रिका के संस्थापक स्व. क्षितींद्र मोहन थे। प्रारंभ में यह साहित्यिक-सांस्कृतिक पत्रिका थी, परंतु धीरे-धीरे व्यावसायिक होती गई। अब इसमें सिने सामग्री की प्रस्तुति निहार प्रवृत्ति को बढ़ाने के लिए होने लगी है।

3.4.1.5 साहित्यिक-पत्रिकाएं

किंचित मात्र में ही सही किंतु साहित्यिक पत्रिकाओं द्वारा भी सिनेमा पर सामग्री प्रस्तुत की जाती है। यह रुझान इन दिनों थोड़ा बढ़ा भी है। प्रस्तुत है ऐसी कुछ साहित्यिक पत्रिकाएं।

⁴⁸- आउटलुक, दिसंबर, 1-15, संपादक निलाभ मिश्र

3.4.1.5.1 सरिता

सन् 1945 से प्रकाशित होने वाली यह एक साहित्यिक-सांस्कृतिक पत्रिका है जो निर्भीकतापूर्वक सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध आवाज़ बुलन्द करती है। “विशिष्ट संपादकीय लेकर चलने वाली यह पत्रिका अपने आप में बेजोड़ है। इसमें हमेशा पुरानी मान्यताओं को वैज्ञानिक कसौटी पर कसकर देखा जाता है। अवैज्ञानिक बातों पर इसने हमेशा चोट की है। यही कारण है कि यह रूढ़िवादियों के आक्रोश का कारण भी बनी, पर इसकी लोकप्रियता में कमी नहीं आई। जीवन नए मार्गों पर चलता रहे, आगे बढ़ता रहे इस उद्देश्य को सरिता भली भाँति पूरा कर रही है।”⁴⁹ अपनी प्रस्तुति में भी यह एक आकर्षक और प्रभावशाली पत्रिका रही है। “सरिता का मुखपृष्ठ रंग-बिरंगा होता है, जिस पर सदा ही किसी युवती का चित्र रहता है। सरिता में जगह-जगह दिए गए व्यंग्यमय-चित्र प्रभावशाली, चुटीले व सामयिक होते हैं। बीच-बीच में दूंगी छपाई करके यह अपना आकर्षण और बढ़ा लेती है। 8.50x5.50 आकार की यह पत्रिका 150 पृष्ठ से लेकर 200 पृष्ठ तक निकलती है और दो कॉलम में विभक्त रहती है। इसके स्थाई स्तंभों में आपके पत्र, सरित-प्रवाह, श्रीमती, ये पत्नियाँ, दिन दहाड़े, जीवन की मुस्कान, बच्चों के मुख से, यह भी खूब रही, चंचल छाया, बिंब-प्रतिबिंब आदि हैं।”⁵⁰

विविध स्तंभों से इसकी पठनीयता एवं रोचकता विकसित होती है। इसका “चल छाया स्तंभ फिल्मों का है जिसमें अभिनेताओं और अभिनेत्रियों का लोकप्रियता के आधार पर वर्गीकरण किया जाता है। इसके लिए चार सितारे अति उत्तम, तीन तारे माध्यम, एक साधारण शून्य, बेकार के लिए निहित किया गया है। इसी के अंतर्गत फिल्मों की समीक्षा भी होती है और पिछले बारह महीनों में शीर्षक के अंतर्गत चलचित्रों की गुणवत्ता के आधार पर वर्गीकरण होता है।”⁵¹

3.4.1.5.2 धर्मयुग

यह पत्रिका टाइम्स ऑफ इंडिया द्वारा प्रकाशित की जाती रही है। इसका आरंभ मुंबई (बंबई) से सन् 1950 में किया गया। “यह साहित्य की अप्रतिम पत्रिका थी, जिसके पहले संपादक इलाचंद जोशी जी थे। इनके बाद क्रमशः हेमचंद्र जोशी व सत्यदेव विद्यालंकार से होते हुए संपादकत्व का उत्तरदायित्व धर्मवीर भारती जी पर आ गया। धर्मयुग प्रत्येक संपादक के काल में एक नया मोड़ लेती रही और निरंतर देश व साहित्य को नई दिशा देती हुई आगे

⁴⁹-हिंदी पत्रकारिता : विकास और विविध आयाम, पृ. 196

⁵⁰-हिंदी पत्रकारिता : विकास और विविध आयाम, पृ. 196-197

⁵¹-हिंदी पत्रकारिता : विकास और विविध आयाम, पृ. 197

बढ़ती रही। केवल भारत ही नहीं, दुनियाभर में हिंदी भाषी लोगों में यह विशेषप्रिय रही है। व्यवसायिक साप्ताहिक होते हुए भी यह एक साहित्यिक व सांस्कृतिक पत्रिका के रूप में पाठक वर्ग में विशेष लोकप्रिय रही।....यह पाठकों को साहित्यिक सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनैतिक सामग्री प्रदान करती थी। इस पत्रिका की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि जैसी जनरुचि होती थी, वैसी ही यह पाठकों को सामग्री देती थी। पहले यह पत्रिका साप्ताहिक थी, पर जुलाई 1990 से यह पत्रिका पाक्षिक हो गई।⁵² अपने समय में धर्मयुग ने अपार लोकप्रियता अर्जित की। यह सिनेमा पर भी सुरुचिपूर्ण एवं विचारोत्तेजक सामग्री प्रस्तुत करती रही। “विभिन्न भाषाओं से अनूदित कविताओं की बानगी भी इसमें रहती। इसके अतिरिक्त लेख, वार्ता, साक्षात्कार, रिपोर्टाज, संस्मरण आदि साहित्य की जितनी भी विधाएं हो सकती है, सभी विधाओं पर यह सामग्री प्रकाशित करती। धर्मयुग अपने विशेष आकर्षण के कारण हिंदी के चोटी के पत्रों में गिनी जाती। इसका अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि 1986 में इसकी प्रसार संख्या 01 लाख 41 हजार थी।”⁵³ धर्मयुग ने दिसंबर 1988 में ‘भारतीय सिनेमा’ अंक निकाला। इस अंक के कार्यवाहक संपादक गणेश मंत्री जी थे। कई तरह से यह सिनेमा का एक अर्थपूर्ण अंक है। इसमें कई महत्वपूर्ण लेखकों ने सिनेमा पर आलेख लिखे हैं जिसमें दामोदर खड़से, द्रोणवीर कोहली, रूमा सेनगुप्ता, हरिश तिवारी, इसाक मुजावर जैसे साहित्यकार शामिल हैं। इस अंक में एक बहुत ही महत्वपूर्ण आलेख देविका रानी पर लिखा गया है, जिसे बी. गीता ने लिखा है। हालांकि यह आलेख लंबा है जिसे साक्षात्कार के फार्म में लिखा गया है। यहाँ उनसे पूछे गए दो-एक प्रश्न और उनके उत्तर दिए जा रहे हैं-

बी.गीता- आप भारतीय सवाक फिल्मों की पहली नायिका थीं....कैसा लगा आपको?आपके प्रशिक्षक विदेशी थे, उनका आपके प्रति (एक पराधीन देश के नागरिक के नाते) कैसा रुख था?

देविका रानी- मुझे नहीं लगता कि मैं भारतीय सवाक फिल्मों की पहली नायिका थी। मेरे ख्याल से शायद साधना बोस पहली भारतीय सवाक फिल्म की नायिका थीं। हमारी फिल्म ‘कर्मा’ पहली भारतीय सवाक फिल्म थी जो अंग्रेजी और हिंदी में बनी थी। यह सच है कि पाबस्ट, राइन हार्ट जैसे विदेशी प्रशिक्षकों ने मुझे ट्रेनिंग दी, किंतु मेरे असली प्रशिक्षक हिमांशु राय थे। मैं उन्हें अपना गुरुमानती हूँ।

बी.गीता- फिल्म उद्योग और कलाकारों के भविष्य के बारे में (मेरा संकेत गिरते हुए मूल्यों, बढ़ती व्यावसायिकता आदि के बारे में था) क्या कहना चाहेंगी?

⁵²- हिंदी पत्रकारिता : विकास और विविध आयाम, डॉ. श्रीमती सुशीला गुप्ता, पृ. 188

⁵³-हिंदी पत्रकारिता : विकास और विविध आयाम, डॉ. श्रीमती सुशीला गुप्ता, पृ. 189

देविका रानी- देखो, कला के क्षेत्र में बारे में कोई निश्चित भविष्यवाणी कैसे की जा सकती है? यह तो उतना ही अनिश्चित है जितना की यह संसार! किसी भी क्षण कुछ भी घट सकता है। मैंने एक बार इंदु से (इंदिरा गांधी) से चिंता व्यक्त की थी कि यह सब क्या हो रहा है? तब उन्होंने कहा था कि यह प्रक्रिया तो घूमते पहिये की तरह चलती रहेगी। इसलिए उत्थान के बाद पतन और पतन के बाद उत्थान वास्तविक है। अभी हम नीचे जा रहे हैं तो ऊपर भी आएं। यह किस क्षण से घटित होने लगेगा, कह नहीं सकते।

3.4.1.5.3 सारिका

सारिका एक साहित्यिक व सांस्कृतिक पत्रिका है। रतनलाल जोशी के संपादकत्व में यह 1960 से निकलनी प्रारंभ हुई। इसका संपादकत्व भार रतनलाल जोशी, चंद्रगुप्तविद्यालंकार से होते हुए मोहन राकेश तक आया। सन् 1967 में इसका संपादकत्व कमलेश्वर के हाथ में आ गया। कमलेश्वर ने अपनी सूझ-बूझ से इसे नई ऊँचाई पर पहुँचा दिया।

साहित्य को समर्पित इस पत्रिका में सिने-सामग्री भी दी जाती थी। साथ ही सिनेमा से जुड़े लोग भी सारिका के लिए लिखते रहे जिसमें ख्वाजा अहमद अब्बास जैसा नाम भी शामिल है-“सारिका पत्रिका में ख्वाजा अहमद अब्बास ने भी अकालग्रस्त क्षेत्रों का दौरा कर ‘बिहार की डायरी’ नामक रिपोर्टाज लिखा था, जो धारावाहिक रूप में छपा था। इसके अंत में उन्होंने कई जरूरी सवाल उठाए थे, जिसका उल्लेख करना यहाँ प्रासंगिक होगा। ‘बिहार का सूखा और अकाल-बंगाल के महाकाल की तरह एक ऐतिहासिक ट्रेजडी है मगर इस ट्रेजडी ने हिंदुस्तान की जनता को चौका दिया है।....सोचने, समझने और सवाल करने पर मजबूर कर दिया है। कब तक हमारे किसान आसमान की ओर देखते रहेंगे? कब तक बारिश के लिए भगवान से प्रार्थना करते रहेंगे? कब तक सूखा और बाढ़ का चक्कर चलता रहेगा।”⁵⁴ सारिका में सिने-सामग्री छपती थी और सिनेमा से जुड़े लोग इसमें लिखते थे। साथ ही यह वही पत्रिका थी जिससे जुड़कर कमलेश्वर जी सिनेमा से जुड़े। “मुंबई से ‘सारिका’ के संपादन के दौरान ही कमलेश्वर फिल्मी जगत के करीब आए और फिल्मों के लिए आलेख भी लिखने प्रारंभ कर दिए। इस तरह रचनात्मक लेखन के साथ फिल्म लेखन का एक नवीन आयाम भी उनके साथ जुड़ गया, जिससे उनके लिए स्पेस और भी बड़ा हो गया। हिंदी फिल्म जगत में लेखक का दर्जा एक मुंशी से उठाकर सम्मानित लेखक का बनाने का काम जिन लोगों ने किया उसमें कमलेश्वर प्रमुख थे। उन्होंने सैकड़ों फिल्मों व धारावाहिकों

⁵⁴-फणीश्वरनाथ रेणु के रिपोर्टाज, द्वारा भरत यायावर, ई. प्रकाशन, प्रेरणा प्रकाशन, पृ. 60

की पटकथाएँ भी लिखीं। उनकी पटकथा पर आधारित फिल्म ‘आँधी’ और ‘द बर्निंग ट्रेन’ काफी चर्चित रही।....भारत में दूरदर्शन को रंगीन बनाने में भी कमलेश्वर का बहुत बड़ा हाथ रहा। उन्होंने ही सर्वप्रथम दिल्ली में हुए एशियाड के रंगीन प्रसारण के लिए तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी को राजी किया था। यही नहीं कमलेश्वर को भारतीय दूरदर्शन के प्रथम पटकथा लेखक के रूप में जाना जाता है। दूरदर्शन के उनके कार्यक्रम ‘परिक्रमा’ और ‘बंद फाइलें’ काफी लोकप्रिय हुईं। लगातार सात सालों तक चलने वाले उनके कार्यक्रम ‘परिक्रमा’ की लोकप्रियता का यह आलम था कि दर्शक सारे कार्य छोड़कर उस समय टी.वी. से चिपक जाते थे। यही नहीं कार्यक्रम के दौरान अगर बिजली चली गई तो कई बार बिजली विभाग वालों को जनता का कोपभाजन भी बनना पड़ा। भारतीय कथाओं पर आधारित साहित्यिक धारावाहिक ‘दर्पण’ भी कमलेश्वर ने ही लिखा और दूरदर्शन पर साहित्यिक कार्यक्रम ‘पत्रिका’ की भी शुरुआत भी उन्होंने ही की।”⁵⁵

3.4.1.5.4 मुक्ता

यह साहित्य व संस्कृति की एक महत्वपूर्ण पत्रिका रही है जो दिल्ली से सन् 1960 से निकलना प्रारंभ हुई। यह युवाओं में खासी लोकप्रियता अर्जित करने वाली पत्रिका रही है। इसके प्रथम संपादक विश्वनाथ थे और पहले यह मासिक थी जो सन् 1972 में पाक्षिक बन गई। यह युवाओं को बौद्धिक खुराक देने वाली पत्रिका रही है। इसमें कहानियाँ, लेख, वार्ताएँ व मनोरंजन सामग्री प्रस्तुत की जाती है। इसका “मुखपृष्ठ रंग-बिरंगा तथा अपने में आवरण-कथा को समेटे हुए होता है। इसके स्थाई स्तंभों में मुक्त विचार, शब्द पहेली, मेरे शहर का, विचार, प्रतियोगिता चित्रावली.....दुनिया भर की कविता, लेख, व्यवहार, चित्रकारी, नृत्य, फिल्म, मनोरंजन आदि हैं।”⁵⁶

3.4.1.5.5 नवनीत

नवनीत साहित्य और संस्कृति की पत्रिका है। इसकी शुरुआत जनवरी 1992 में मुंबई (तब बंबई) से श्री गोपाल नेवटिया द्वारा की गई। इसके दो प्रथम संपादक थे-रतनलाल जोशी व सत्यकाम विद्यालंकार। इनके बाद संपादकत्व की जिम्मेदारी विश्वनाथ सचदेव के हाथों में आ गई। आजकल यह भारतीय विद्या भवन की मासिक पत्रिका से संयुक्त हो चुकी है और नवनीत प्रकाशन लिमिटेड द्वारा वेंकटेश्वर प्रेस, मुंबई से प्रकाशित होती है। निश्चित

⁵⁵-www.sahityashilpi.com से कमलेश्वर जी पीछे छोड़ गए अपनी रचनात्मक बेचैनी, द्वारा कृष्ण कुमार यादवा

⁵⁶- स्वतंत्रयोत्तर पत्र-पत्रिकाएं : एक मूल्यांकन, हिंदी पत्रकारिता : विकास और विविध आयाम, द्वारा डॉ. (श्रीमती सुशीला जोशी), तृतीय संस्करण 1994, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, पृ. 190-191

रूप से यह सिनेमा पर प्रत्यक्ष रूप से अंक नहीं निकालती है, परंतु अप्रत्यक्ष रूप से सिने आलेख या व्यक्तित्व पर चर्चाएँ इसमें समय-समय पर प्रकाशित होते रहते हैं।

3.4.1.5.6 पटकथा

समय-समय पर साहित्यिक पत्रिकाओं द्वारा भी सिनेमा पर अंक निकले हैं। इसके अतिरिक्त कुछ पत्रिकाएँ ऐसी भी थीं, जिनका ध्येय विषय सिनेमा ही था। इस तरह की पत्रिका में 'पटकथा' विशेष उल्लेखनीय पत्रिका है। यह पत्रिका मध्य प्रदेश फिल्म विकास निगम से प्रकाशित होती थी। पत्रिका के संपादक श्री राम तिवारी थे। अपनी प्रस्तुति एवं सामग्री के लिहाज से यह एक प्रबुद्ध पत्रिका थी। सामग्री चयन एवं प्रस्तुति में अंतरराष्ट्रीय, राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय सिनेमा पर ध्यान दिया जाता था। उदाहरण के लिए 'पटकथा' के आलेखों के कुछ अंश यहाँ प्रस्तुत किए जा रहे हैं। फ्रेदोरिक विती: लोगों ने कहा है कि फ्रांस में बहुत कम ऐतिहासिक फिल्मों का निर्माण हुआ है किंतु बहुत सारी वेशभूषा वाली फिल्मों बनाई गई हैं, उदाहरणार्थ, नेपोलियन पर बनाई गई फिल्मों। स्तेनदाल और बाल्जाक के अधिकांश उपन्यासों पर और अलेक्जेंद्र दुमा या मार्किस् दे आंगेस की कहानियों पर फिल्मों बनाई जा रही हैं। संभवतः इन वेशभूषा वाली फिल्मों के लिए जो कि ऐतिहासिक फिल्मों नहीं हैं एक विशेष वर्ग होना चाहिए। ऐतिहासिक फिल्म वह फिल्म होगी, जिसमें स्वयं इतिहास फिल्म का विषय हो, न कि किसी कथावस्तु की पृष्ठभूमि मात्र हो, जिसे किसी भी अन्य संदर्भ में पक्षांतरित किया जा सकता है।⁵⁷

दरअसल यह एक संवाद है, जिसमें फ्रेदोरिक विती, इमेनुएल ले रॉय, लादुी, फ्रेदोरिक वितो, माइकल सिने, रेने ऐल्लिओ व मार्क फेरो 'सिनेमा और इतिहास' विषय पर बातचीत कर रहे हैं। ऊपर फ्रेदोरिक विती का विचार दिया गया है। उसी प्रश्न में सहभागी होते हुए इमेनुएल ले राय लादुी का कहना है- "रोमर की फिल्म *ला मार्किस् द ओ* को एक सीमावर्ती मामला समझा जा सकता है। वह एक महान सफल फिल्म है जो मात्र वेशभूषा वाली फिल्म नहीं है, वह एक अनुचिंतन है जिसमें कला का उपयोग, जैसी कि अठारहवीं शताब्दी के अंत में और उन्नीसवीं शताब्दी के आरंभ में विद्यमान थी- बिंदु के रूप में किया गया है। यह फिल्म एक उत्कृष्ट साहित्यिक रचना पर आधारित है जिसमें रुचिकर ऐतिहासिक समस्याएं उपस्थित की गई हैं। उदाहरणार्थ विवाह संबंधी संपूर्ण चर्चा जिसमें स्त्री, मार्किस् शामिल नहीं हैं, पूर्णतः उसके माता-पिता और विवाह के इच्छुक पुरुष के बीच होती है। वह एक पुराने ढंग के परिवार की प्रतिमा है- संभवतः किंचित अतिशयोक्तिपूर्ण तथा सच्ची जहाँ पुरानी पीढ़ी हर

⁵⁷-सिनेमा और इतिहास, पटकथा, वर्ष 5, अंक 2, जून 1992, संपादक श्रीराम तिवारी, पृ. 4, भोपाल फिल्म विकास निगम

चीज का यहाँ तक कि एक युवा विधवा के भविष्य का भी जो कि स्वयं एक माता है, विनिश्चयन करती है। ऐतिहासिक फिल्म का उद्देश्य है औसत दर्शक को जो कि इतिहास की अधिक जानकारी नहीं रखता, प्राचीन समाज विज्ञान के विषय में कुछ प्रत्यय देना और 'फिल्म ला मार्किव्स द ओ' यह कार्य भलीभांति करती है।⁵⁸

भयावह की काव्यत्मकता : दिखने से कुछ ज्यादा

यह आलेख डेनिस एल व्हाइट ने लिखा है। प्रस्तुत आलेख का चयन पटकथा द्वारा संभवतः इसलिए किया गया होगा ताकि भयावहता और उससे उत्पन्न मनोरंजन के रसायन का तात्त्विक विश्लेषण आसानी से किया जा सके। इस आलेख में डेनिस एल व्हाइट ने लिखा है- “हॉरर फिल्में अपने अभिनय, फोटोग्राफी के निर्देशन की शर्तों पर या अपने सामाजिक सरोकारों, अपनी उपादेयता की शर्तों पर परखी जाती हैं तो वे अपनी दूसरी साथी पश्चिमी हास्य या भावना प्रधान फिल्मों जैसी ही होती हैं। उतनी ही बुरी या कमोबेश उससे कुछ अधिक बुरी। फिल्मों का इस तरह का पारंपरिक विभाजन उस बात को नहीं छूता जो दरअसल में फिल्म बनाता है। इसी तरह कोई फिल्म हॉरर फिल्म सिर्फ इसलिए नहीं हो जाती कि उसमें हॉरर फिल्मों में प्रयुक्त अवयवों का इस्तेमाल हो रहा होता है। अवयवों का योग न भयावहता बनाता है न गुणवत्ता।”⁵⁹ सवाल किया जा सकता है कि आखिर इस तरह की फिल्मों की सफलता का रहस्य या पैमाना क्या है? “फिल्म सफल तब होती है जब वह देखने वालों को भावनात्मक रूप से छेड़े। जितनी सार्थक भावना जागेगी फिल्म उतनी ही सफल होगी। फिल्म द्वारा जगाए भावों में से एक है भयावहता। हॉरर फिल्मों के ऊपरी आवरण से उनकी आलोचना और बनाने की प्रक्रिया को सही दिशा नहीं दी जा सकती।”⁶⁰

चलचित्रिय भाषा

पटकथा के लिए इस आलेख को सगीर अहमद ने लिखा है। प्रस्तुत आलेख में सगीर जी ने सिनेमा के जरिए सिने अभिव्यक्ति के विजन पर प्रकाश डाला है। बड़ी बात है कि इस आलेख में सिनेमा को बतौर उत्पाद न लेकर एक कलात्मक अभिव्यक्ति के रूप में लिया गया है। साथ ही इसके संप्रेषण को संभाव्य बनाने वाले तमाम उपकरणों पर भी बड़े मुफीद तरीके से चर्चा की गई है। उन्होंने सिनेमा की अभिव्यक्ति के पहले इसकी उपयुक्तता पर चर्चा की है- “इतिहास में अंतर्निहित ऊपर उल्लिखित द्वैधता को दृष्टिगत रखते हुए, इतिहास और सिनेमा के बीच

⁵⁸-सिनेमा और इतिहास, पटकथा, वर्ष 5, अंक 2, जून 1992, संपादक श्रीराम तिवारी, पृ. 5, भोपाल फिल्म विकास निगम

⁵⁹-भयावह की काव्यत्मकता: दिखने से कुछ ज्यादा, डेनिस एल व्हाइट, पटकथा, पृ. 28

⁶⁰-भयावह की काव्यत्मकता: दिखने से कुछ ज्यादा, डेनिस एल व्हाइट, पटकथा, पृ. 28

एक जीविष्णु संबंधस्थापित करने की दिशा में किए जाने वाले किसी भी प्रयास में एक विरोधाभास को भी संज्ञान में लेना चाहिए और उससे बचा जाना चाहिए वह विरोधाभास यह है कि यद्यपि इतिहास अपने आरंभ के समय से ही पृथ्वी पर एक सामाजिक प्राणी के रूप में मनुष्य के विकास और मनुष्य की प्रगति को अभिनियंत्रित करने वाली स्थितियों और परिस्थितियों का एक प्रामाणिक अभिलेख प्रस्तुत करने का प्रयत्न करता आया है तथापि सिनेमा का उपयोग उसके प्रवर्तकों द्वारा प्राथमिक रूप से एक ध्यानाकर्षी उपकरण के रूप में किया गया है और उसका उपयोजन पलायन के एक साधन के रूप में किया जाता है, जिसका अभिप्राय मनुष्य की शक्तियों की रक्षा करना और मनुष्य के आज के अस्तित्व को अभिनियंत्रित करने वाली सच्चाई और वास्तविकताओं से उसे फंतासियों आदि के जरिए कुछ राहत दिलाना है।”⁶¹

प्रस्तुत आलेख में उन्होंने उन ऐतिहासिक उतार-चढ़ाव वाले बिंदुओं पर पर्याप्त प्रकाश डाला है जिन्होंने काफी हद तक सिनेमा के प्रत्येक विभाग को प्रभावित किया था। इस संदर्भ में चर्चा करते हुए उन्होंने मानवता को नष्ट करने वाली विचारधाराओं, युद्धों एवं मनुष्यता की इमारत को मजबूती देने व बुलंद करने वाली रीतियों के दस्तावेजीकरण एवं सामाजिक-सांस्कृतिक महत्व को भी उद्घाटित किया है- “प्रथम विश्व युद्ध का एक अधिक महत्वपूर्ण परिणाम, जिसने चलचित्रिय भाषा के ऐतिहासिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान किया, बोलशेविक क्रांति के बाद सन् 1917 में सोवियत एशिया का आविर्भाव था। सामूहिक प्रचार और संप्रेषण के एक माध्यम के रूप में सिनेमा की मान्यता के कारण फिल्म उद्योग का राष्ट्रीयकरण हुआ और शासन ने फिल्म निर्माण को जनता की शिक्षा के एक माध्यम के रूप में अपनाया। तथापि सन् 1926 तक विश्व के विभिन्न देशों में निर्मित की जाने वाली सभी फिल्में मूक हुआ करती थीं और उनके निर्माण के समय ध्वनि का अभाव हुआ करता था। फिल्मों की यह मूकता संप्रेषण के एक तात्त्विक साधन के रूप में चित्रात्मक प्रतिमा के विकास में बहुत सहायक थी।”⁶² सिनेमा हो या साहित्य या कोई अन्य कला माध्यम, सभी के लिए परिस्थितियां महत्वपूर्ण होती हैं। परिस्थितियां ही इन कला माध्यमों में अभिव्यक्ति का रुख अख्तियार करती है, जो शब्द, रंग, चित्र एवं चलचित्र के रूप में अभिव्यक्ति होती हैं। परिस्थितियों को मूर्तिवान करते समय कलाकार (सर्जक) कुछ अपनी ओर से भी जोड़ (घटा) देता है। इसलिए अभिव्यक्ति में नयापन एवं अनोखापन आ जाता है। किंतु परिस्थितियां आखिर है क्या? परिस्थितियों के विभाजन अथवा प्रकार के कई आधार हो सकते हैं। इसे मनोविज्ञान, समाजविज्ञान एवं संप्रेषण

⁶¹-चलचित्रिय भाषा, पटकथा, पृ. 57

⁶²-चलचित्रिय भाषा, पटकथा, पृ. 61

माध्यम के आधार पर वर्गीकृत किया जाता सकता है। यदि सगीर अहमद के हवाले से कहा जाए, जो सिनेमा के विषय में कहा गया है, तो कहा जा सकता है कि परिस्थितियां समकालीन ऐतिहासिक, बाह्य एवं आंतरिक प्रकार की हो सकती हैं। किंतु जब सिनेमाकार सिनेकृति का निर्माण करता है तो उस समय उसके अंदर का जैविक सत्य भी इन परिस्थितियों को अध्यारोपित करता है। इसलिए कोई भी सिनेकृति किसी भी परिस्थिति की हू-ब-हू नकल अथवा फोटोकॉपी नहीं हो सकती है। यह बात फीचर फिल्म, डाक्यूमेंट्री और यहाँ तक कि वीडियो न्यूज फिल्मों तक पर लागू होती है।

3.4.1.5.7 समयांतर

समयांतर एक वैचारिक लघु-पत्रिका है जिसकी टैग लाइन है- समयांतर-समाचार विचार और संस्कृति की मासिक। बाजवारवाद एवं भूमंडलीकरण को बेहतर ढंग से समझने वाली यह पत्रिका निरंतर बाजारवादी नकारात्मक ताकतों से साहित्य एवं संस्कृति से जुड़े लोगों को आगाह करती है। इस पत्रिका के संपादक पंकज बिष्ट हैं। पत्रिका दिलशाद गार्डन, दिल्ली से छपती है। पत्रिका के अंतिम पृष्ठों पर सिनेमा से संबंधित टिप्पणियां या समीक्षाएं छपती हैं। अक्टूबर 2003 के समयांतर अंक में भी सिनेमा पर लिखी गई पुस्तक पर जवरीमल पारख की समीक्षा प्रकाशित की गई है। यह समीक्षा हिंदी साहित्य के वरिष्ठ कवि विनोद दास की सिनेमा पर लिखी गई पुस्तक 'भारतीय सिनेमा का अंतःकरण' पर आधारित है। समीक्षा का शीर्षक है- 'भारतीय सिनेमा की दूसरी परंपरा'। प्रस्तुत सिने समीक्षा में जवरीमल पारख ने कहा है- "भारतीय सिनेमा का अंतःकरण भारतीय सिनेमा पर केंद्रित है। इसमें तेरह फिल्मकारों पर लेख संकलित हैं, जिनमें से ऋत्विक घटक को छोड़कर शेष सभी एक-एक फिल्मकार को केंद्र में रखकर उनकी फिल्मों पर विचार किया गया है। ऋत्विक घटक पर लिखे गए लेख में उनकी कोई एक फिल्म केंद्र में नहीं है। जिन फिल्मों पर विनोद दास ने इस पुस्तक में विचार किया है, उनमें से सात हिंदी की, चार बांग्ला की और दो मलयालम की हैं। लेकिन इन सात हिंदी फिल्मों के फिल्मकार हिंदी भाषी नहीं हैं। यद्यपि श्याम बेनेगल, मणिकौल, गोविंद निहलानी, मकबूल फिदा हुसैन को हिंदी फिल्मकार माना गया है। अगर ऋत्विक घटक को छोड़ दें तो शेष फिल्मों के निर्माण का समय सत्तर के बाद का है। गर्म हवा सबसे पुरानी फिल्म है, जिसका प्रदर्शन 1973 में हुआ था और उत्तरा सबसे नई जो 2001 में प्रदर्शित हुई थी। इनके अतिरिक्त सद्गति, अकालेर संधाने, मंथन, थम्पू, नौकर की कमीज, मुखामुख, गजगामिनी, परमा, आक्रोश व पार जैसी फिल्मों पर विचार किया गया है।"⁶³ जवरीमल पारख ने इसी समीक्षा में पुस्तक के इस अंश को उद्धृत किया है "अपर्णा सेन

⁶³- जवरीमल पारख, भारतीय सिनेमा की दूसरी परंपरा, समयांतर, पृ. 15, अक्टूबर 2015

की फिल्म कला में काव्य संवेदना की तरलता और रागात्मकता मुखर रूप से दृष्टिगोचर होती है। उनकी पहली फिल्म 36 चौरंगी लेन को परदे पर लिखी एक कविता कहा जाता है, 'परमा' फिल्म में भी उन्होंने काव्यात्मक फिल्मांकन की अपनी शैली को ही अपनाया है।"⁶⁴

सिनेमा की स्त्री और समाज का यथार्थ

यह आलेख दरअसल फिल्म अभिनेत्री पूर्व अध्यक्ष, फिल्म सेंसर बोर्ड के अध्यक्ष शर्मिला टैगोर का वक्तव्य है, जिसका हिंदी रूपांतरण भारत भूषण तिवारी द्वारा किया गया है। आउटलुक के वेब संस्करण से लेकर इसे समयांतर, जनवरी 2014 में प्रकाशित किया गया। शर्मिला टैगोर के इस वक्तव्य का परिचय देते हुए लिखा गया है- "27 नवंबर 2013 को शर्मिला टैगोर द्वारा दिया गया जस्टिस सुनंदा भंडारे स्मृति व्याख्यान 'रिप्रेजेंटेशन ऑफ वीमेन इन इंडियन सिनेमा एंड बियॉंड' (भारतीय सिनेमा और उससे परे महिलाओं का निरूपण)"⁶⁵ प्रस्तुत आलेख में भारतीय परिदृश्य में आधी आबादी की दुर्दशा पर शर्मिला टैगोर राजेश कॉमत की पुस्तक रिलीजन, पैट्रिआर्की एंड कैप्टिलिज्म पुस्तक के हवाले से कहती हैं- "चारों ओर से बंद यह मनोवृत्ति लड़कियों को आर्थिक बोझ समझकर स्त्री भ्रूणहत्या के विचार को बढ़ावा देती है। दहेज प्रथा और बेटी अपने पति की अमानत होती है, इस विचार (जो एक प्रकार से स्त्री को पुरुष से बांधता है) के कारण स्त्री के साथ उसके अपने ही परिवार में एक महंगे जिंस के तौर पर बर्ताव होता है। विज्ञान और तकनीकी के संदर्भ में सामाजिक विकास के दौर में भी स्त्री को कोई वास्तविक लाभ नहीं प्रतीत होता है। बल्कि जो देखा जा रहा है वह पीछे को जाने वाला सामाजिक आयाम है।"⁶⁶

आलेख (वक्तव्य) के अगले हिस्से में वे खुद का अनुभव सुनाती हैं- "लगभग पचास साल पहले 1957 में जब मैंने अपुर संसार में अभिनय किया तो मुझे स्कूल छोड़ने को कहा गया। प्रिंसिपल को लगा था कि लड़कियों पर मेरी संगत का गलत असर पड़ेगा। 1936 में कश्मीर की कली की शूटिंग के दौरान हुआ एक वाक्या मुझे अच्छी तरह याद है, जब एक प्रतिष्ठित उद्योगपति परिवार की बेटी उस जगह आई। उस मौके पर खींची गई तस्वीरें फिल्मफेयर के मुख्य पृष्ठ पर आ गई। एक फिल्म पत्रिका में अपनी बेटी के फिल्म स्टारों के साथ नजर आने के विचार से व्याकुल उस परिवार ने उस अंक की सारी प्रतियां खरीद डालीं।"⁶⁷ शर्मिला जी सिनेमा में औरत की

⁶⁴-जवरीमल पारख, भारतीय सिनेमा की दूसरी परंपरा, समयांतर, पृ. 17, अक्टूबर 2015

⁶⁵-शर्मिला टैगोर, सिनेमा की स्त्री और समाज का यथार्थ, समयांतर, पृ. 38-39, जनवरी, 2014

⁶⁶-शर्मिला टैगोर, सिनेमा की स्त्री और समाज का यथार्थ, समयांतर, पृ. 38-39, जनवरी, 2014

⁶⁷-शर्मिला टैगोर, सिनेमा की स्त्री और समाज का यथार्थ, समयांतर, पृ. 38-39, जनवरी, 2014

उपस्थिति के संदर्भ में समांतर सिनेमा को याद करती हैं, साथ ही भारतीय सिनेमा के 30 के दशक की चर्चा करते हुए औरत और सिनेमा में उसकी उपस्थिति एवं सांस्कृतिक सहभागिता पर भी अपनी राय स्पष्ट करते हुए कहती हैं-“आज हम दुनिया में फिल्मों के सबसे बड़े निर्माता हैं। हमारी फिल्मों की तकनीकी मामलों और निर्माण मूल्यों के संदर्भ में हुई प्रगति को नकारा नहीं जा सकता, मगर जब महिलाओं के चित्रण की बात होती है तो मुझे लगता है कि बदलाव महज दिखावटी है। कभी-कभी मुझे लगता है कि ‘चीजें जितनी अधिक बदलती हैं, उतनी ही वे जस की तस रहती हैं’ वाली कहावत बिल्कुल इसी के लिए बनाई गई होगी। फिल्में अब भी महिलाओं की ऐसी छवि आगे लाती हैं जो मुख्य रूप से सजावटी और दोयम दर्जे की है। अपवाद बेशक हैं। समांतर सिनेमा, कुछ क्षेत्रीय सिनेमा में औरतों को पूरी तरह अलग, अधिक बराबर और अधिक यथार्थपरक तौर पर चित्रित किया जाता था। मगर देश का प्रधान फिल्म उद्योग तो मुख्यधारा का हिंदी सिनेमा है। यह सामाजिक और सांस्कृतिक रीति-रिवाजों को दर्शाता भी है, उन्हें प्रभावित भी करता है। सो आज की चर्चा में मैं इस खास धारा पर ही ध्यान केंद्रित करूंगी।”⁶⁸

30 के दशक पर वे कहती हैं-“सिनेमा में महिलाओं की बात करें तो 30 का दशक प्रगतिशील दौर था। हमारे पास देविका रानी थीं। उनके अस्सी साल बाद भी उनके समकक्ष किसी और महिला निर्माता के बारे में मैं नहीं सोच पाती। फातिमा बेगम पहली भारतीय महिला निर्देशक थीं जिन्होंने बुलबुल-ए-पाकिस्तान बनाई थी। दुर्गा खोटे थीं एक ब्राह्मण स्त्री जिन्होंने फिल्मों में अभिनय करने का असाधारण फैसला उस समय लिया जब उसे संदिग्ध माना जाता था। मेरी इंवास जो निडर नाडिया के नाम से मशहूर थीं के रूप में हमारे पास नारीवाद पद के लोकप्रिय होने के बहुत पहले से एक नारीवादी थीं।”⁶⁹ सिनेमा में बाजार का प्रत्यक्ष निवेश होता है। फलस्वरूप पुरुषवादी लोलुपता समाप्त होने की जगह यहां भी जड़ जमाती जा रही है। यहां भी नारी के साथ भेद-भाव अपने चरम पर है। इसी लैंगिक असमानता पर शर्मिला टैगोर कहती हैं- “पचास की उम्र छू रहे हीरो को बीस की उम्र के पास वाली हीरोइन के साथ रोमांस करते हुए देखा जा सकता है, मगर इसका उल्टा शायद ही कभी देखने को मिले। किसी अमिताभ बच्चन या किसी अनुपम खेर और किसी नसीरुद्दीन शाह तक के लिए पटकथाएं खासतौर पर लिखी जाती हैं, मगर किसी प्रौढ़ होती अभिनेत्री के लिए ऐसा नहीं होता। यह सब इसलिए संभव है क्योंकि दर्शक,

⁶⁸-शर्मिला टैगोर, सिनेमा की स्त्री और समाज का यथार्थ, समयांतर, पृ. 38-39, जनवरी, 2014

⁶⁹-शर्मिला टैगोर, सिनेमा की स्त्री और समाज का यथार्थ, समयांतर, पृ. 32, जनवरी, 2014

पुरुष और महिला दोनों इस प्रकार की सोच का अनुमोदन करते हैं।⁷⁰ शर्मिला टैगोर ने मुख्य धारा के जिस सिनेमा की रूपरेखा प्रस्तुत की है वह काफी हद तक सही है परंतु यह पूरा सत्य नहीं है। बड़े उम्र के नायक के साथ छोटी उम्र की नायिका का चलन इसलिए नहीं है कि भारतीय दर्शक ऐसा देखना पसंद करता है या उसे ऐसी ही फिल्में अच्छी लगती हैं। इसका कारण सिनेमा को हर स्थिति में पैसा वसूल टाइप का बनाना है। दर्शक का पूर्ण दोहन करना है। साथ ही सिनेमाकारों में मौलिकता का अभाव भी एक कारण है। सही अर्थों में विचार किया जाए तो पता चलेगा कि एक ही कहानी बार-बार थोड़े बहुत परिवर्तन के साथ दोहराई जाती है। अर्थात् बालीवुड में सफलता सुनिश्चित करने का एक बासी फंडा कायम है जिससे मुक्त होना भारतीय फिल्मकारों के वश की बात नहीं है। भारतीय सिनेमा की बात न भी करें तो भी हिंदी सिनेमा में ही ऐसी तमाम फिल्मों के उदाहरण मौजूद हैं जहां नायिका नायक से बड़ी या बराबर की उम्र की रही है, जैसे सौदागर (अमिताभ, नूतन), लीला (सैफ अली खान, डिंपल कपाडिया), दिल चाहता है (डिंपल कपाडिया, अक्षय खन्ना), उत्सव (रेखा, शेखर सुमन), माया मेम साहब (सुजात मेहता, शाहरुख खान), तिरंगा (नाना पाटेकर, डिंपल कपाडिया), बी ए पास, मोहब्बत (माधुरी दीक्षित, अक्षय खन्ना), चंद्रमुखी (श्री देवी, सलमान खान) एवं सूर्यवंशी (अमृता सिंह, सलमान खान) आदि।

प्रस्तुत उदाहरणों से यह भी स्पष्ट होता है कि बड़ी उम्र की नायिका एवं कम उम्र के नायक वाली ये सभी फिल्में पापुलर सिनेमा (मुख्यधारा की सिनेमा) का उदाहरण हैं। ज्यादा अच्छा होता कि समांतर सिनेमा में इस तरह की कथाओं को आधार बनाकर फिल्में निर्मित की जातीं। प्रस्तुत उदाहरण शर्मिला टैगोर के विरोध में नहीं बल्कि उन्हीं की बात के पूरक के रूप में देखे जाने चाहिए।

इस लेख के अंतिम हिस्से में सिनेमा में लैंगिक असमानता के सवाल पर राजनीति और राजनीतिक छद्म पर भी निगाह दौड़ायी गयी है।

3.4.1.5.8 कादंबिनी

प्रस्तुत शोध में इस पत्रिका के विषय में पहले भी बताया जा चुका है। भारतीय सिनेमा के 100 साल पूरे होने के अवसर पर इसने मई 2012 में सिनेमा विशेषांक निकाला था, जिसके विषय में लिखा गया है- “यह भारतीय सिनेमा का शताब्दी वर्ष है। सौ साल पहले 03 मई 1913 को दादा साहब फाल्के ने पहली भारतीय फिल्म ‘राजा हरिश्चंद्र’ बनाई थी। तब से अब तक भारतीय सिनेमा ने एक लंबी यात्रा तय की है। मूक फिल्मों से शुरू होकर अब

⁷⁰-शर्मिला टैगोर, सिनेमा की स्त्री और समाज का यथार्थ, समयांतर, पृ. 41, जनवरी, 2014

यह मल्टीप्लेक्स तक पहुँच गया है। सिनेमा में नए-नए प्रयोग हो रहे हैं और इसकी एप्रोच भी अब वैश्विक हो चली है।”⁷¹ इस अंक की विशेषता यह है कि सिनेमा पर सिनेमा से जुड़े लोगों की राय ली गई है। सिनेमा पर सिनेकारों की राय एक ओर छोर को छूती है जिससे बाहर के लोग अछूते रहते हैं। उदाहरणार्थ आर्ट सिनेमा पर नसीरुद्दीन शाह कहते हैं-“सौ साल के सिनेमा में सत्तर के दशक वाले उस कला फिल्मों के दौर पर बात करूंगा तो अधिकारपूर्वक करूंगा। क्योंकि मैं इस सिनेमा का खुद बड़ी गहराई से एक हिस्सा रहा हूँ। दरअसल आज जब मैं कला फिल्मों के उस आंदोलन के बारे में सोचता हूँ तो मेरी धारणा उस आंदोलन के बारे में पूरी तरह बदल चुकी है। आज मेरा मानना है कि वह कोई आंदोलन नहीं था। दरअसल एक भूख थी आर्टिस्ट को अच्छी फिल्म देखने की और एक जरूरत थी प्रेस को, न कुछ मूवमेंट हो रहा था न कोई वेव आया। असलियत यह थी कि दो-चार लोग थे जो एकाध अच्छी फिल्म बनाकर हथियार डालकर भाग गए और कामर्शियल फिल्म बनाने लगे। इन सबके बारे में आप देखिए, इनकी पहली फिल्म ही सबसे अच्छी फिल्म है।....आज की बात करूँ तो मेरे दिल में कद्र है गुलजार भाई के लिए, सई परांजये के लिए और तीसरा नाम दूढ़ने में मुझे मुश्किल हो रही है। आज मैं कद्र करता हूँ वीरेंद्र सैनी जैसे लोगों की, रजतकपूर जैसे लोगों की और ऋतुपर्णों घोष जैसे लोगों की जिन्होंने हथियार नहीं डाले हैं। इन लोगों को थकान नहीं हुई, पर श्याम बेनेगल जैसे लोगों को थकान हो गई, तो मुझे ताज्जुब होता है। इसलिए भी कि कभी वह कला फिल्मों के सबसे बड़े अलमबरदार और पैरोकार थे। मैं अपनी बात शेक्सपीयर के इस फ्रेज से खत्म करूंगा- *एवरी क्लाउड हैज सिल्वर लाइन*। हिंदुस्तानी सिनेमा पर जो मसाला फिल्मों की बदरी छाई हुई है, वह छंटेगी और कला फिल्मों और अर्थपूर्ण फिल्मों का सूरज बदली चीरकर निकलेगा और रोशनी फैलाएगा।”⁷²

कादंबिनी के इस अंक में फिल्म संसार के कई मशहूर लोगों के आलेख या टिप्पणियाँ शामिल की गई हैं, जिसमें श्याम बेनेगल (100 साल का सिनेमा), प्रहलाद अग्रवाल (मूक से मल्टिप्लेक्स तक), नसीरुद्दीन शाह (आर्ट सिनेमा को खुद आर्ट फिल्म मेकरों ने डुबोया), राजेंद्र घोड़पकर (कितने परवाने आए और लौ में खाक हुए), मनोज वाजपेयी (अमिताभ का करिश्मा और नसीर का अभिनय), मुजफ्फर अली (मेकिंग से थिंकिंग गायब हो गई है), शर्मिला टैगोर (फिल्मों वह दौर लौटने से रहा), लेख टंडन (राजकपूर का वह तमाशा कभी खत्म नहीं होगा), रंकी भट्टाचार्य (सिनेमा के स्कूल थे बाबा) व रवींद्र जैन (आज भी सांस में बसा है पुराना संगीत) शामिल हैं। इन साहित्यिक पत्रिकाओं के अतिरिक्त और भी कई साहित्यिक पत्रिकाओं द्वारा भी सिनेमा के सौ साल पूरे होने पर

⁷¹-कादंबिनी, मई 2012, वर्ष 52, अंक प्रधान संपादक - शशि शेखर, कादंबिनी, हिंदुस्तान मीडिया, वेंचर्स लि., पृ. 2

⁷²-आर्ट सिनेमा को खुद आर्ट फिल्म मेकरों ने डुबाया, नसीरुद्दीन शाह, कादंबिनी, मई 2012, पृ. 18

अंक निकाले गए जैसे- हंस, संवेद, इस्पातिका व प्रगतिशील वसुधा आदि साथ ही अन्य साहित्यिक पत्रिकाओं में नियमित रूप से सिनेमा पर सामग्री दी जाती है- परिकथा, कथादेश, पाखी व वर्तमान साहित्य आदि। इस प्रकार बाजार की प्रचंड शक्तियों के दौर में सिनेमा पर सार्थक सामग्री देते हुए साहित्य की ये सभी पत्रिकाएं निरंतर अपना प्रतिरोध दर्ज कर रही हैं। साहित्यिक पत्रिकाओं में कुछ पत्रिकाएं ऐसी भी हैं जो वैसे तो साहित्यिक रचनाएं प्रकाशित करती हैं किंतु समय-समय पर सिने सामग्रियां भी प्रस्तुत करती हैं जिनमें वागर्थ, पाखी, कथादेश, समकालीन भारतीय साहित्य, नया ज्ञानोदय एवं वाक जैसी पत्रिकाएं शामिल हैं।

3.4.1.5.9 वागर्थ

यह पत्रिका मासिक है। इसे भारतीय भाषा परिषद, कोलकाता से प्रकाशित किया जाता है। इस समय इसके संपादक एकांत श्रीवास्तव व कुसुम खेमानी हैं। इसमें सिने सामग्री भी कभी-कभी प्रकाशित होती रहती है। वागर्थ 2007 के अप्रैल अंक में हिंदी सिनेमा के गीत-संगीत पर एक आलेख प्रकाशित किया गया, जिसमें हिंदी सिने संगीत के इतिहास की रूपरेखा प्रस्तुत की गई है- “कालजयी प्रस्तुति के लिहाज से इस दशक में के.एल. सहगल का गाया ‘प्रेसिडेंट’ (1937) फिल्म का खूबसूरत गीत ‘एक बंगला बने न्यारा, रहे कुनबा जिसमें सारा.....फिल्म स्ट्रीट सिंगर(1938) का बाबुल मोरा नइहर छूटो ही जाय.....तथा फिल्म जिंदगी(1940) में केदार शर्मा की लिखी लोरी ‘सो जा राजकुमारी, सो जा....’ सर्वश्रेष्ठ है। बेहद लोकप्रिय और सफलतम फिल्मों की फेहरिस्त में देवदास (1935) में सहगल बतौर नायक-गायक बेजोड़ रहे हैं। बावजूद इसके इस दौर में के.सी.डे., पंकज मलिक, पारूल घोष, राजकुमारी, उमा शशि, पहाड़ी सन्याल, नूरजहां, खान मस्ताना, सुरेंद्र, शांता आपटे, जोहरा बाई, कानन देवी व खुशींद जैसे गायकों ने अपनी जगह बनाई। इस दशक में संगीतकारों में आर.सी. बोराल, पंकज मल्लिक, अनिल विश्वास, शंकर राव व्यास का सिक्का खूब चमका और गीतकारों में पं.सुदर्शन, केदार शर्मा, दीनानाथ मधोक की कलम का परचम खूब लहराया।”⁷³ इस आलेख में चालीस के दशक के हिंदी फिल्म संगीत का बेहतरीन जायजा लिया गया है।

3.4.1.5.10 कथादेश

साहित्यिक पत्रिका कथादेश सहयात्रा प्रकाशन प्रा.लि.से प्रकाशित होती है। इसका संपादन हरिनारायण करते हैं। इसमें कहानियाँ, कविताएँ और साहित्यिक आलेख के साथ मीडिया और सिनेमा पर भी कभी-कभी आलेख

⁷³-हिंदी सिनेमा का कालजयी गीत संगीत, राजीव श्रीवास्तव, वागर्थ, संपादक एकांत श्रीवास्तव, अप्रैल 2007, पृ. 136

प्रकाशित किए जाते हैं। उदाहरणार्थ अगस्त 2011 के कथादेश के अंक में सिनेमा पर दो आलेख प्रकाशित किए गए हैं- **1, 'सिनेमा में बिंब विधान : परदे की भाषा' द्वारा अरुण कुमार। 2, 'देल्ही बेली' के पक्ष में द्वारा मिहिर पंड्या।** 'सिनेमा में बिंब विधान: परदे की भाषा' आलेख में सिनेमा के मेटाफर की छानबीन गहराई से की गई है- "बिंबों के विश्लेषण में कहा जाता है कि अमूर्तन (abstract) ही एक ऐसी विधि है जो कल्पना से व्यापक यथार्थ को बिंबों में समेट देता है। अमूर्तन यानी कोई वस्तु अपने बाह्य रूप से कवि की कल्पना में एक पूर्ण इकाई के रूप में अनुभव कराए। अमूर्तन का अर्थ ही है किसी अंश को उसके संपूर्णसंदर्भ से काट देना। सिनेमा अमूर्त नहीं है। वहाँ निर्देशक की कल्पना साहित्य के कई रूपों के कुशल संयोजन में आकार लेती है। इसलिए वहाँ बिंबों (image) की रचना अनेक रूपों से होती है, अभिनय, पार्श्व, संगीत, गीत, दृश्य इत्यादि"⁷⁴ इसी पत्रिका के अगस्त 2011 के अंक में सिनेमा पर एक और आलेख दिया है जो 'देल्ही बेली' फिल्म पर आधारित है। परंतु इसमें सत्यजीत राय और उनकी फिल्मों पर भी चर्चा की गई है- "सत्यजीत राय की 'चारुलता' के उस प्रसंग को हिन्दुस्तानी सिनेमा के इतिहास में क्रांतिकारी कहा जाता है जहाँ नायिका चारुलता झूले पर बैठे स्वयं गुरुदेव का लिखा गीत गुनगुना रही है और उसकी नजर लगातार नायक अमल पर बनी हुई है। सदा से व्यवस्था का पैरोकार रहा हिंदुस्तानी सिनेमा भूमिकाओं का निर्धारण करने में हमेशा बड़ा सतर्क रहा है। ऐसे में यह 'भूमिकाओं का बदलाव' उसके लिए बड़ी बात थी। चारुलता को आज भी भारत में बनी सर्वश्रेष्ठ फिल्मों में शुमार किया जाता है।"⁷⁵ लेखक ने इसी आलेख में सिनेमा के परिवर्तन के दौर की चर्चा करते हुए लिखा है कि समय के साथ न केवल सिनेमा का विषय बदला बल्कि भाषा में भी बदलाव देखा गया। साथ ही किरदार भी बदल गए। लेखक ने कहा भी है- "'देव डी' में जब पहली बार हम सिनेमा के पर्दे पर इस 'भूमिकाओं के बदलाव' को देखते हैं तो यह अपने आप में वक्तव्य है। 'देल्ही बेली' को इसके लिए 'देव डी' का शुक्रिया अदा करना चाहिए कि वो उसके लिए रास्ता बनाती है। उसी के कंधे पर चढ़कर 'देल्ही बेली' इस प्रसंग को इतने कैजुअल तरीके से कह पाई है। हमारा सिनेमा आगे बढ़ रहा है। अब यह अपने आप में स्टेटमेंट भर नहीं रह गया बल्कि अब कहानी दृश्य के इस माध्यम से दोनों किरदारों के बारे में, उनके आपसी रिश्तों के बारे में कुछ बातें कहने की कोशिश कर सकती है। विषय की विविधता पर बोलते हुए पुनः लेखक ने कहा है- तमाम अन्य हिंदी फिल्मों की तरह इसमें समलैंगिक लोगों का मजाक नहीं उड़ाया गया है, बल्कि उन लोगों का मजाक उड़ाया गया है जो किसी के समलैंगिक होने को

⁷⁴- सिनेमा में बिंब विधान : परदे की भाषा, अरुण कुमार, कथादेश, अगस्त 2011, संपादक- हरिनारायण, कथादेश और सहयात्रा प्रकाशन प्र.लि., पृ. 77

⁷⁵- सिनेमा में बिंब विधान : परदे की भाषा, अरुण कुमार, कथादेश, अगस्त 2011, संपादक- हरिनारायण, कथादेश और सहयात्रा प्रकाशन प्र.लि., पृ. 78

असामान्य चीज की तरह देखते हैं, उसे गॉसिप की चीज मानते हैं।”⁷⁶ इसी विषय की प्रासंगिकता पर आगे बताया गया है- “हिंदी सिनेमा भी विश्व सिनेमा के उस वृहत दायरे का हिस्सा है जिसे हम सराहते हैं तो उसे भी वो आजादी दीजिए जो आजादी विश्व के अन्य देशों का सिनेमा देखते हुए उन्हें दी जाती है।”⁷⁷ फिल्म देल्ही बेली की विचारधारा पर कहा गया है- “यह फिल्म और चाहे कुछ भी हो, अधिकांश मुख्यधारा हिंदी फिल्मों की तरह ‘एंटी-युमन’ नहीं है।”⁷⁸

3.4.1.5.11 हंस

हंस की स्थापना सन् 1930 में प्रेमचंद द्वारा की गयी। इतिहास के लिहाज से यह समय बहुत ही संकटपूर्ण एवं आंदोलनजन्य रहा है। यह दौर गांधी के राजनीतिक उद्भव व विस्तार का दौर है। महात्मा गांधी इस दौर में राजनीतिक रूप से पूर्ण सक्रिय नजर आते हैं। इसलिए इस दौर को राजनीतिक रूप से उल्लेखनीय माना जाता है। किंतु साथ-साथ यह भी कि यह दौर सांस्कृतिक रूप से भी उल्लेखनीय है। क्योंकि यह सत्य है कि यही वह दौर है जिसमें भारत में कई सांस्कृतिक क्रिया-कलापों को भी प्राणशक्ति प्राप्त हुई। निश्चित रूप से साहित्यिक पत्रकारिता व गांधी जी की इसमें विशेष भूमिका रही। गांधी जी के करिश्माई व्यक्तित्व पर लिखा गया- “उन की पैगंबर जैसी दृष्टि थी और उन्होंने महसूस किया कि युद्धों से राष्ट्रों के बीच की खाई अधिक चौड़ी होगी और उनके बीच समझदारी घटेगी और इस प्रकार अधिक युद्धों तथा अधिक घृणा के लिए रास्ता तैयार होगा और अंततः मानवता बर्बरता तक पहुँच जाएगी। यह विश्व शांति के लिए गांधी जी की देन है।”⁷⁹ कुछ चिंतकों ने इसीलिए गांधी की ‘चिंतनधारा’* को साहित्य व संस्कृति में प्रवेशित होते हुए उस दौर को हिंदी पत्रकारिता का गांधी युग कहा है। ध्यातव्य है कि साहित्यिक दृष्टि से यह दौर हिंदी साहित्य के छायावाद का दौर भी है। प्रेमचंद ने इस दौर में हंस को प्रारंभ अवश्य किया किंतु इसके सामाजिक, सांस्कृतिक व राजनीतिक तैवर से इंकार नहीं किया जा सकता है। उन्होंने अपना मंतव्य इसके प्रथमांक में ही स्पष्ट कर दिया था- “मगर स्वाधीनता केवल मन की एक वृत्ति है। इस वृत्ति का जागना ही स्वाधीन हो जाना है। अब तक इस विचार ने जन्म ही न लिया था। हमारी चेतना इतनी मंद,

⁷⁶- देल्ही बेली के पक्ष में, मिहिर पांड्या, कथादेश, अगस्त 2011, संपादक-हरिनारायण, कथादेश एवं सहयात्रा प्रकाशन प्रा.लि., पृ. 81

⁷⁷- देल्ही बेली के पक्ष में, मिहिर पांड्या, कथादेश, अगस्त 2011, संपादक-हरिनारायण, कथादेश एवं सहयात्रा प्रकाशन प्रा.लि., पृ. 81

⁷⁸- देल्ही बेली के पक्ष में, मिहिर पांड्या, कथादेश, अगस्त 2011, संपादक -हरिनारायण, कथादेश एवं सहयात्रा प्रकाशन प्रा.लि., पृ. 81

⁷⁹- लुई फिशर, सामाहिक हिंदुस्तान, 5 अक्टूबर, 1953

शिथिल और निर्जीव हो गई थी कि उससे ऐसी महान कल्पना का आविर्भाव ही न हो सकता था, पर भारत के कर्णधार महात्मा गांधी ने इस विचार की सृष्टि कर दी, अब वह बढ़ेगा, फले-फूलेगा।”⁸⁰

निश्चित रूप से हंस ने महात्मा गांधी रूप के विचार को अंगीकृत करके राजनीतिक रुझान का परिचय दिया। इसीलिए इस पत्रिका को तत्कालीन सामाजिकता, राजनीति एवं साहित्य की दृष्टि से महत्व का माना गया। फलस्वरूप सन् 1986 में इस पत्र को पुनः राजेंद्र यादव द्वारा प्रारंभ किया गया। राजेंद्र यादव के संपादकत्व में इस पत्रिका को साहित्य के साथ राजनीतिक टिप्पणी के लिए याद किया जाता है। साहित्यिक दृष्टि से पत्र ने कई समकालीन विमर्शों को विस्तार दिया। इसी पत्रिका का फरवरी 2013 अंक हिंदी सिनेमा को समर्पित रहा। इस अंक की टैग लाइन थी- हिंदी सिनेमा के सौ साल। हंस के इस अंक का अतिथि संपादन संजय सहाय द्वारा किया गया। किंतु अपने संपादकीय कालम ‘तेरी मेरी उसकी बात’ में इसके नियमित संपादक राजेंद्र यादव ने लिखा- “फिल्मी दुनिया से मेरा सबसे पहला संपर्क ‘सारा आकाश’ के दौरान हुआ। अरुण कौल, बासु इत्यादि ने एक फिल्म फोरम बनाया हुआ था और उसकी ओर से पूना के एन.एफ.डी.सी. से ‘सारा आकाश’ के लिए लोन स्वीकृत करवा चुके थे। बासु उसी सिलसिले में मुझसे मिलने शक्तिनगर में आए थे। वे दरियागंज के फ्लोरा होटल में रुके थे। ‘सारा आकाश’ के अनुबंध की सारी बातें हमने शक्तिनगर में की। फिल्म छोटे बजट की थी। इसलिए मुझे केवल दस हजार रुपए कहानी के लिए दिए गए।”⁸¹ आगे राजेंद्र यादव ने पटकथा लेखन के सवाल पर कहा- “अब पटकथा लेखन का सवाल था। फ्लोरा होटल में शाम को मित्रों के साथ बैठे कमलेश्वर ने छाती ठोकते हुए कहा कि इस फिल्म की पटकथा मैं लिखूंगा। उसे टी.वी. में काम करने का अनुभव था और ‘परिक्रमा’ वाला धारावाहिक अभी शुरू नहीं हुआ था। बाद में कमलेश्वर ने जो पटकथा भेजी उस पर बासु ने जगह-जगह अपनी टिप्पणियाँ दी थीं। उनका कहना था कि यह फिल्म की पटकथा नहीं है। सिर्फ उपन्यास को जगह-जगह से विस्तार दे दिया गया है। इसके बाद उन्होंने स्वयं पटकथा लिखी। कमलेश्वर की लिखी स्क्रिप्ट आज भी मेरी फाइलों में रखी है।”⁸² राजेंद्र यादव ने इसी संपादकीय में फिल्म ‘सारा आकाश’ व ‘रजनीगंधा’ को याद करते उनके निर्देशन-निर्माण एवं इन फिल्मों के कलाकारों आदि की भी चर्चा की है। संपादकीय के अंत में साहित्य से गहराई से जुड़े हुए फिल्मकार

⁸⁰-अर्जुन तिवारी, संपूर्णपत्रकारिता, विश्वविद्यालय प्रकाशन, चतुर्थ संस्करण, 2014, पृ. 105

*“Mahatma Gandhi took over the leadership of national movement and for over twenty five years shaped not only the course of India's history but left an indelible imprint on the thinking of India” के.एम. पनिकर, द फाउंडेशन ऑफ नोव इंडिया, पृ. 172

⁸¹-राजेंद्र यादव, तेरी मेरी उसकी बात, हंस, फरवरी, 2013, अक्षर प्रकाशन प्रा.लि., पृ. 2

⁸²-राजेंद्र यादव, तेरी मेरी उसकी बात, हंस, फरवरी, 2013, अक्षर प्रकाशन प्रा.लि., पृ. 2

किशोर शाहू को भी प्रमुखता से याद किया है- “फिल्मी दुनिया के साथ मेरा दूसरा संपर्क किशोर शाहू* के माध्यम से हुआ। उन दिनों ‘हंस’ का संपादन शुरू नहीं हुआ था और हम अक्षर प्रकाशन से पुस्तकें छाप रहे थे। किशोर की आत्मकथा मुझे अच्छी लगी और मैंने उसे छापने का मन भी बना लिया। किशोर शाहू की फिल्मों का मैं पुराना भक्त था। ‘राजा’, ‘कुंवारा बाप’, ‘आया सावन झूम के’ इत्यादि फिल्मों में मैं कई बार देख चुका था। सबसे अंत में किशोर को मैंने ‘गाइड’ में देखा। रमोला किशोर* की प्रिय हिरोइन थी। नन्ही-मुन्नी सी चंचल, चुलबुली और समर्पित लड़की। कलकत्ते में मुझे पता लगा कि इकबालपुर रोड के जिस फ्लैट में मैं रहता हूँ उसके चार-पांच मकान बाद ही रमोला भी रहती है। एक रोज उस घर का दरवाजा खटखटाने पर निकली एक काली ठिगनी सी बुढ़िया से जब मैंने रमोला का नाम लिया तो उसने धड़ाक से दरवाजा बंद कर लिया। यह मेरे लिए भयंकर मोहभंग था। क्या इसी रमोला की तस्वीर मैं अपनी डायरी में लिए फिरता था और कविताएं लिखता था।”⁸³ किंतु राजेंद्र जी इस पैराग्राफ में किशोर शाहू की बात करते करते रमोला की बात करने लगे। हालांकि उन्होंने किशोर शाहू और उनकी आत्मकथा की चर्चा की थी। संपादकीय के अगले हिस्से में उन्होंने इस प्रकरण पर प्रकाश डाला है। वे इस पर कहते हैं- “आत्मकथा प्रकाशन के सिलसिले में किशोर शाहू ने मुझे मुंबई बुलाया।... मैं ठहरा कमलेश्वर के यहाँ। शाम को किशोर के यहाँ खाने पर उस परिवार से मेरी भेंट हुई।”⁸⁴ राजेंद्र जी अगली पंक्तियों में हालांकि किशोर शाहू की रचना पर ही बात करते हैं, किंतु इससे किशोर शाहू के व्यक्तित्व का भी ज्ञान हो जाता है। “अगले दिन किशोर मुझे अपने वासोंवा वाले फ्लैट पर ले गए, जहाँ वे अपना पुराना बंगला छोड़कर शिफ्ट कर रहे थे। वहाँ बीयर पीते हुए हमने दिनभर आत्मकथा के प्रकाशन की बात की। वे इस आत्मकथा में दुनिया भर की तस्वीरें खूबसूरत ढंग से छापना चाहते थे। लागत देखते हुए हम लोगों की स्थिति उसे छापने की नहीं थी। उन्होंने शायद कुछ हिस्सा बंटाने की भी पेशकश की। मगर वह राशि इतनी कम थी कि आत्मकथा को अभिनंदन ग्रंथ की तरह छाप सकना हम लोगों के सामर्थ्य के बाहर की बात थी। आखिर बात नहीं बनी और मुझे दिल्ली वापस आना पड़ा। वैसे किशोर में एक खास किस्म की अभिजात्यता थी और वह नपे-तुले ढंग से ही बातचीत का व्यवहार करते थे। शायद वे इस अहसास से मुक्त नहीं थे कि वे घर पर भी ऐसा व्यवहार करें जैसे फिल्म के किसी सेट पर

⁸³ राजेंद्र यादव, तेरी मेरी उसकी बात, हंस, फरवरी, 2013, अक्षर प्रकाशन प्रा. लि., पृ. 4

⁸⁴ राजेंद्र यादव, तेरी मेरी उसकी बात, हंस, फरवरी, 2013, अक्षर प्रकाशन प्रा. लि., पृ. 4

* किशोर शाहू-हिंदी सिनेमा के एक बड़े निर्माता, निर्देशक और अभिनेता

* रमोला-हिंदी सिनेमा की एक पुरानी अभिनेत्री

हों।”⁸⁵ हंस के इस अंक का संपादन चूंकि संजय सहाय ने किया है। उन्होंने ‘सिनेमा की बात’ शीर्षक से अपना संपादकीय लिखा है। वे संपादकीय का प्रारंभ भारतीय सिनेमा के उस संशय से करते हैं कि आखिर भारतीय सिनेमा का जन्मदाता किसे माना जाए। सिनेमा जैसी इतनी नई विधा पर भी उसके जन्मदाता पर ही संशय बने रहना इतिहास के प्रति हमारी उदासीनता को व्यक्त करने वाली प्रवृत्ति है। संजय सहाय का कहना है-“हिंदुस्तानी सिनेमा को जन्में सौ वर्ष हो गए, कुछ का मानना है, एक सौ एक वर्ष। पैदाइश को लेकर संशय है कि जन्मदाता रामचंद्र गोपाल दादा साहब तोरणे (13.04.1890-19.01.1960) थे, जिनकी फिल्म ‘श्री पुंडलिक’ 18 मई 1912 को मुंबई के कोरोनेशन सिनेमैटोग्राफ थिएटर में रिलीज हुई थी या कि धुंडिराज गोविंद दादा साहब फाल्के, जिनकी ‘राजा हरिश्चंद्र’ उसी थिएटर में 03 मई 1913 को रिलीज हुई थी। उत्तर जो भी हो, एक दिन अवश्य मिल जाएगा किंतु एक अवैध अनाथ संतान की तरह मुख्यधारा का हिंदुस्तानी सिनेमा पिछले सौ सालों से क्यों अवरुद्ध विकास की गति से घिसट रहा है? उसका उत्तर जटिल है।”⁸⁶ उस दौर को याद करते हुए उन्होंने न केवल उस दौर के सिनेमा को याद किया है बल्कि उस परिवेश और सिनेमाकारों को भी याद किया है। संजय सहाय जब उस समय के सिनेमा को याद करते हैं तो वे उस समय के संगीत, राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय कहानी का प्लॉट याद करते हुए उसकी तुलना आज के दौर से करते पाए जाते हैं-“ऐसा नहीं कि कुछ भी अच्छा नहीं बीता। वी.शांताराम, के.आसिफ, महबूब खान, विमल राय, अब्बास अलवी, चेतन आनंद, सत्यजीत रे, ऋत्विक् घटक, मृणाल सेन, श्याम बेनेगल, मणि कौल, गोविंद निहलानी, गौतम घोष, मणिरत्नम जैसे राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त निर्देशक हुए। सोवियत संघ से अफ्रीका तक गुनगुनाए जाने वाले गीतकार-संगीतकार हुए। और ‘जय हो’ से तो रहमान ने विश्व भर में अपनी अलग पहचान बना ली। यह बात दीगर है कि चापलूसी भरे उत्साह में उन्हें ‘मद्रास का मोतुजार्ट’ की संज्ञा दे दी गई है। यह संज्ञा मोतुजार्ट के लिए अपमानजनक होने के साथ-साथ खुद रहमान को शर्मिंदगी का अहसास क्यों नहीं कराती, यह विस्मय की बात है।”⁸⁷

अतिथि संपादक ने उस समय और आज के समय के अभिनय को याद किया है। उन्होंने समय के साथ ‘अभिनय परिवेश’ को भी याद किया है। अभिनय परिवेश और प्रतिभा की एक प्रकार की सिने-समीक्षा की है। समय की विडंबना को याद करते हुए कहा है- “अभिनय के क्षेत्र में भी मेधा की कमी नहीं रही। बलराज

⁸⁵- संजय सहाय, सिनेमा की बात, विशेषांक संपादकीय, हंस, फरवरी 2013, अक्षर प्रकाशन प्रा.लि.

⁸⁶- संजय सहाय, सिनेमा की बात, विशेषांक संपादकीय, हंस, फरवरी 2013, अक्षर प्रकाशन प्रा.लि.

⁸⁷- संजय सहाय, सिनेमा की बात, विशेषांक संपादकीय, हंस, फरवरी 2013, अक्षर प्रकाशन प्रा.लि.

साहनी, किशोर साहू, दिलीप कुमार, अमिताभ बच्चन, अमरीश पुरी, ओमपुरी, नसीर जैसे खासे सशक्त अभिनेता हुए हमारे देश में। किंतु दो को छोड़कर कोई चरित्र अभिनेता से ऊपर मुख्यधारा में स्वीकृत नहीं हो पाए। जो दो थे, उनको निर्माताओं ने इतना निचोड़ा कि सिवाय अभिनय करने के उनके पास कुछ नहीं बचा। दोष उनका भी बराबर का रहा। क्यों सेलेक्टिव नहीं हुए? जबकि किल्लतों से तो वे कब का ऊपर उठ चुके थे। अपने आदमखोर जगत में शायद वे साहस नहीं जुटा पाए या फिर यह मान लिया जाए कि ऐसे विवेक का ही उनमें सर्वथा अभाव था।”⁸⁸

प्रचुर सिने प्रतिभा के बावजूद सिनेमा की एक शानदार परंपरा नहीं विकसित हो पाई है। तमाम समर्थवान अभिनेत्रियों के होने के बाद भी महिला विषय पर आधारित फिल्मों की संख्या अपवाद स्वरूप है। भारतीय खास तौर पर हिंदी सिनेमा में यह अक्सर देखा जाता है कि अभिनेत्रियां कम उम्र में ही अपने से बड़े उम्र के अभिनेताओं की मां, बहन या भाभी की चरित्र भूमिका निभाते देखी जाती है। ऐसा शायद इसलिए है क्योंकि भारतीय जनमानस आज भी पुरुषवादी है और फिल्मकार इसके अपवाद नहीं। उन्होंने इसी संपादकीय में लिखा है- “अभिनेत्रियों में मीना कुमारी, नूतन, रेखा, स्मिता पाटिल, शबाना आजमी सरीखी विलक्षण प्रतिभाएं रहीं किंतु दो चार फिल्मों को छोड़ मुख्यधारा की पुरुष प्रधान फिल्मों में प्रेमिका, पत्नी, बहन, बेटी, मां या अबला-सबला नारी के साइड रोल निभाने को अभिशप्त रहीं।”⁸⁹ आगे कहा गया है- “साठ का दशक बीतते-बीतते नई पीढ़ी के निर्देशक हिंदी सिनेमा को बदलने के लिए छटपटा रहे थे। वैभवशाली सिनेमा का युग समाप्त हो चला था और सपनों की राख में भारतीय नवयथार्थवाद का जन्म हो रहा था। पर दर्शकों की जो कंडीशनिंग हो चुकी थी वे इन समानांतर रेखाओं को जोड़ नहीं पाए। अत्यंत समर्थ निर्देशकों की नए कथ्य और शिल्प की फिल्में या तो क्षेत्रीय बाजारों में समेट कर रख दी गईं या फिर उनका सिनेमा प्रयोगवादी/कलावादी कह मुख्यधारा के दर्शकों द्वारा खारिज कर दिया गया। संभव है, वे समय से पहले आ गए थे।”⁹⁰

सिनेमा स्वयं में एक उत्पाद है। उत्पादन के निर्माण में पूंजी का इस्तेमाल होता है। साथ ही उसके पूंजीगत उगाही के लिए बाजार की भी जरूरत पड़ती है। सिनेमा वैसे तो एक रचनात्मक अभिव्यक्ति का भी माध्यम है, किंतु उसने स्वयं को बतौर उत्पाद समझकर स्वयं को पूंजीगत, बाजारगत रवायत के हवाले कर दिया। इसलिए उसमें जो सांस्कृतिक उन्नयन का भाव था वह क्षीण हो गया। इसीलिए सिनेमा में एक कहानी को अनन्त बार कहा गया,

⁸⁸-संजय सहाय, सिनेमा की बात, विशेषांक संपादकीय, हंस, फरवरी 2013, अक्षर प्रकाशन प्रा.लि.

⁸⁹-संजय सहाय, सिनेमा की बात, विशेषांक संपादकीय, हंस, फरवरी 2013, अक्षर प्रकाशन प्रा.लि.

⁹⁰-संजय सहाय, सिनेमा की बात, विशेषांक संपादकीय, हंस, फरवरी 2013, अक्षर प्रकाशन प्रा.लि.

जिससे फार्मूलाबद्ध सिनेमा की एक अंतहीन एवं बोरियत भरी श्रृंखला दिखाई पड़ने लगी। इस विषय पर संजय सहाय ने बड़ी गंभीरता से लिखा है- “सिनेमा में रूपयों की बारिश और अपरिपक्व दर्शकों की भीड़ ने गिद्धों को भी दावत दी। मुख्यधारा के अधिकतर निर्माता-वितरक धनपशुओं की तरह सिर्फ चरने के लिए इस मैदान में आने लगे, जिनका साहित्य, कला, संस्कृति से दूर-दूर तक कोई नाता नहीं था। समझदारी के अभाव में एक के बाद एक हॉलीवुड की चालू धमाकेदार फिल्मों की शुरुआत भी हो गई। सिने कला की समझ रखने वाले निर्देशक भी ऐसे निर्माताओं-वितरकों के दबाव में निहुरने लगे। यह स्थिति आज भी बनी हुई है।.... इतालवी माफिया से उधार लिए इग्नेशन में फिट बमों से गाड़ियों को आग के गोले सा उड़ने दो, क्या फर्क पड़ता है कि हमारे पिछड़े से मुल्क में ऐसा आज तक नहीं घटा। ना सही, उड़ने दो, सीन तो धाकड़ लगता है ना थोथी हिंसक-सी देशभक्ति, इडीपसीय-सा दिखता मां-पुत्र प्रेम, समलैंगिक-सी लगती दोस्तियां, थोड़ा वक्ष-नितंब दोलन, थोड़ा जंघा दर्शन, एहसान लादती अमेरिकी-सी समाजसेवा, खासी छिछोराबाजी, थोड़ा ईश्वरीय हस्तक्षेप और चीखते-चिल्लाते धांसू संवाद जिस पर सुपरस्टार खा पाए सबको। खा गया भई खा गया। डिशुम-डिशुम, धांय-धांय, फिल्म हिट, जन गण मन अधिनायक जय हो। इसी चूंचू के मुरब्बे को दशकों से हम मुख्यधारा के सिनेमा की तरह देखते रहे हैं। अगर यही हमारा अक्स है तो निस्संदेह हमें खुद को बदलने की कोशिश तत्काल आरंभ कर देनी चाहिए।”⁹¹

इसी संपादकीय में भारत एवं दुनिया के सर्वश्रेष्ठ निर्देशकों की चर्चा की गई है। साथ ही सिनेमा के विडंबनात्मक विकास के विषय में आश्चर्य प्रकट करते हुए कहा गया है- “इधर कुछ युवा निर्देशकों ने मिजाज बदलने की शुरुआत की है, किंतु उन्हें और दर्शकों दोनों को अभी लंबा फासला तय करना है और ऐसा विश्व सिनेमा से परिचित हुए बिना नहीं किया जा सकता। जार्ज मेलिपस से शुरू कर ग्रिफिथ, चैप्लिन, आडंजेस्टाइन, क्रासलैंड, रेनुआर, वेल्स, बर्गमैन, हिचकॉक, कुरुसवा केली से होते हुए डी-सीका, फेलिनी, एंटोनिनी, बुनुएल, सत्यजित रे, डेविडलीन, ओलिवर, स्टोन, लार्स, अलेहांशे से लेकर टॉम टाइकर, आंग ली, अब्बास किरोस्तोमी और मिएशल होनेके जैसे अनेक मंजे हाथों से सिनेमा पर्त दर पर्त किस तरह विकसित हुआ है और आज जहाँ खड़ा है, सचमुच आश्चर्यजनक है।”⁹²

प्रस्तुत संपादकीय में सिनेमा के नकारात्मक पक्ष को काफी प्रमुखता से अभिव्यक्त किया गया है जिससे स्पष्ट होता है कि सिनेमा का बड़ा हिस्सा खराब सिनेमा से भरा पड़ा है। फिर भी जब सिनेमा के इतिहास पर ध्यान

⁹¹-संजय सहाय, सिनेमा की बात, विशेषांक संपादकीय, हंस, फरवरी 2013, अक्षर प्रकाशन प्रा.लि.

⁹²-संजय सहाय, सिनेमा की बात, विशेषांक संपादकीय, हंस, फरवरी 2013, अक्षर प्रकाशन प्रा.लि.

दिया जाता है तो पाते हैं कि सिनेमा का थोड़ा धवल पक्ष भी है। हालांकि सिनेमा संरक्षण के मामले में हम लगभग फिसड्डी जैसे ही हैं। फिलहाल धवल सिनेमा निर्माण में सत्यजित राय एक प्रमुख नाम है। “पाथेर पांचाली (1953) से लेकर आगंतुक (1991) तक सत्यजित राय ने पूरे छत्तीस वर्ष काम किया और छत्तीस फिल्मों बनाई यानी हर साल एक फिल्म। मगर औसतन किसी वर्ष कोई फिल्म नहीं। किसी वर्ष एकाधिक बनाई”⁹³ बताया गया है कि “उनकी छत्तीस फिल्मों में ज्यादातर फीचर फिल्में रहीं। इनके साथ पांच फिल्मों वृत्तचित्र की विधा में बनाई और दो लघु फिल्मों के रूप में”⁹⁴ फिल्मों का विवरण बताते हुए कहा गया है “दू” या दो (1964) उनकी पहली लघु फिल्म थी, पर फिल्म लगभग बारह मिनट की है। पीकू छब्बीस मिनट की। दो श्वेत-श्याम थी, जबकि पीकू रंगीन। दोनों फिल्मों विदेशी प्रस्ताव पर बनाई गईं। पीकू के निर्माता फ्रांसिसी आंद्री फ्रेज थे। दो अमेरिकी प्रतिष्ठान एसो वर्ल्ड थिएटर (यू.एस.पब्लिक टेलीविजन से संबद्ध) ने बनवाई।⁹⁵ सत्यजित राय और उनके अंतरराष्ट्रीय सिने-संपर्क पर प्रकाश डालते हुए कहा गया है- “एसो वर्ल्ड थिएटर ने भारत पर तीन छोटी फिल्मों की योजना बनाई थी, जिसमें इस एक का प्रस्ताव उन्होंने राय को दिया। बाकी दो इंगमार बर्गमैन (स्वीडन) और टोनी रिचर्डसन (इंग्लैंड) को। निर्माता चाहते थे, राय बंगाल की पृष्ठभूमि में कोई लघु फिल्म बनाएं, मगर अंग्रेजी में।”⁹⁶ सत्यजित राय और उनके साहित्यिक संबंध पर भी इस लेख में प्रकाश डाला गया है। बताया गया है कि किस प्रकार उन्होंने साहित्य पर आधारित फिल्मों का निर्माण किया। “वृत्तचित्रों को छोड़कर राय ने अपनी सभी फिल्मों बंगाल की पृष्ठभूमि में ही बनाई और बांग्ला जुबान में ही। बस प्रेमचंद की कहानियों पर बनी ‘शतरंज के खिलाड़ी’ और ‘सद्गति’ छोड़कर जिन्हें हम अपवाद मान सकते हैं। ये दोनों फिल्मों हिंदी में बनाई गई थीं। प्रसंगवश, कुछ लोग ‘सद्गति’ को भी राय की लघु फिल्म मानते हैं- राय की पत्नी विजया भी- लेकिन लगता है उनका यह आग्रह फिल्म की अवधि (पचपन मिनट) की वजह से ज्यादा होगा। यों भी फीचर फिल्म और लघु फिल्म में एक संधि रेखा मौजूद है, जहाँ दोनों तरफ निकटता खोजी जा सकती है। ‘सद्गति’ की दिशा मुझे फीचर फिल्म की ओर ले जाती है, जैसे कि पीकू की लघु फिल्म की ओर।”⁹⁷ ‘दो’ फिल्म के विषय में जानकारी देते हुए कहा गया है- “तो यह

⁹³-ओम थानवी, किसी एक फिल्म का नाम दो, हंस, फरवरी 2013, पृ. 13 अक्षर प्रकाशन प्रा. लि.

⁹⁴-ओम थानवी, किसी एक फिल्म का नाम दो, हंस, फरवरी 2013, पृ. 13 अक्षर प्रकाशन प्रा. लि.

⁹⁵-ओम थानवी, किसी एक फिल्म का नाम दो, हंस, फरवरी 2013, पृ. 13 अक्षर प्रकाशन प्रा. लि.

⁹⁶-ओम थानवी, किसी एक फिल्म का नाम दो, हंस, फरवरी 2013, पृ. 13 अक्षर प्रकाशन प्रा. लि.

⁹⁷-ओम थानवी, किसी एक फिल्म का नाम दो, हंस, फरवरी 2013, पृ. 13 अक्षर प्रकाशन प्रा. लि.

‘दो’ फिल्म उनकी अकेली ‘मूक’ फिल्म है। वह उनकी सबसे छोटी फिल्म है। वह उनकी सबसे कम देखी गई फिल्म भी है-ज्यादातर राय- पुनरवलोकन आयोजनों में उसकी उपेक्षा होती आई है और उसे कोई पुरस्कार भी नहीं मिला। उसकी वजह यह रही होगी कि भारत में उसका कहीं प्रिंट ही उपलब्ध न था। इसका अंदाज विजया राय की आत्मकथा (मालिक एंड आई) से चलता है, जिसमें वे कहती हैं कि 20 अप्रैल 1925 को एसो (अमेरिकी निर्माता) ने हमें ‘दो’ की एक प्रति भेजी। रात निर्मल्य (आचार्य) घर आए और हम सबने मिलकर इस फिल्म को देखा। यह बहुत छोटी फिल्म है, मगर फिल्म खत्म होने पर हमारी आखें नम हो आई थीं। इस चर्चा को आगे बढ़ाते हुए कहा गया है- दरअसल ‘दो’ निरी पटकथा है। उसमें कहानी दूढ़ी जा सकती है पर वह कहानी नहीं है। इस तरह अपनी सबसे छोटी फिल्म में ही सही सत्यजित राय कहानी से फिल्म को मुक्त करने की सफल चेष्टा कर गए हैं। अब तो कई निर्देशक (मसलन मिशेल हानेके) फिल्म की विधा को कहानी से बाहर ले आए हैं, जहाँ पटकथा ही फिल्म की कहानी होती है।⁹⁸

माना कि हंस का यह अंक सिनेमा पर एक अपेक्षित अंक नहीं बन पाया, किंतु इससे कुछ रेअर व महत्वपूर्ण सामग्री अवश्य प्राप्त हो सकी है, जिसका कहीं न कहीं दस्तावेजी महत्व अवश्य है। इन सामग्रियों के अवलोकन से न केवल सिने वैचारिकी प्राप्त होती है, बल्कि वे ऐतिहासिक तत्व भी प्राप्त होते हैं, जिनसे किसी सिनेमाकार का मानस निर्मित होता है। मूक सिनेमा के प्रभाव पर स्वयं सत्यजित राय मानते हैं-“मेरे जन्म के समय मूक-सिनेमा की धूम थी। चार्ली चैप्लिन, बस्टर कीटन और हेरॉल्ड लॉपड (तीनों ही विख्यात फिल्म अभिनेता व निर्देशक) उस समय ठाहकेदार हास्य समझी जाने वाली फिल्मों बना रहे थे, जिन्हें अब हम महान कलाकृतियों के रूप में देखते हैं। कलकत्ता के उत्तरी हिस्से में रहते हुए, बायस्कोप देखने यहाँ से जाना कभी-कभी ही हो पाता था। अतः बहुत ज्यादा फिल्मों मैंने नहीं देखीं। फिर भी हर एक फिल्म एक खास अनुभव थी और देखने के बाद हफ्तों इसका जादू छाया रहता था।”⁹⁹

प्रस्तुत पत्रिका में गौतम घोष से लिया गया एक साक्षात्कार भी प्रकाशित किया गया है, जिसमें एक सवाल के जवाब में उन्होंने कहा है-“तकनीकी पर पकड़ आ जाने से आप अपने आइडिया को अच्छे से शक्ति दे सकते हैं। आपको पता होता है कि आप दरअसल क्या कर रहे हैं। तब आप पैसे बरबाद नहीं करते और अपने काम पर फोकस करते हैं। और एक चीज यह है कि आपको अपने आपको हमेशा अपडेट करते रहना पड़ेगा,

⁹⁸ - ओम थानवी, किसी एक फिल्म का नाम दो, हंस, फरवरी, 2013, पृ. 14, अक्षर प्रकाशन प्रा. लि.

⁹⁹ -सत्यजितराय, शुरु के दिन (मेरा जीवन मेरी फिल्मों लेख से), हंस, फरवरी 2013, पृ. 24, अक्षर प्रकाशन प्रा. लि.

क्योंकि सिनेमा एक ऐसी चीज है जो ऐसी डायकोटॉमी (द्विभाजन) के साथ जन्मी है। डायकोटॉमी बहुत इंट्रेस्टिंग चीज है। सिनेमा दरअसल वैज्ञानिकों या कहें कि टेक्नोलॉजिस्ट द्वारा आविष्कृत किया गया, आर्टिस्ट द्वारा नहीं।”¹⁰⁰ इसके बाद उन्होंने ल्युमिएर ब्रदर्स के एक शानदार इंटरव्यू को याद करते हुए कहा-“ल्युमिएर ब्रदर्स का एक शानदार इंटरव्यू जो मैंने पढ़ा था। अपनी पहली फिल्म ‘अराइवल ऑफ द ट्रेन इन ए पेरिस कैफे’ के बाद उन्होंने यह इंटरव्यू दिया था। इस इंटरव्यू के बाद उन्होंने एक बड़ी शानदार बात कही थी कि ‘आवर जॉब इज ओवर, वी हैव इन आवर जॉब’ हमें जो करना था, कर दिया। अब कलाकार को इसमें प्रवेश करना चाहिए और इस माध्यम की भाषा गढ़नी चाहिए।”¹⁰¹

हंस के प्रस्तुत अंक में फिल्म एक्टिविस्ट अविनाश द्वारा फिल्मकार अनुराग कश्यप का एक साक्षात्कार लिया गया है। अविनाश ने एक सवाल किया है, “मेरा सवाल यह है कि साहित्य का पाठक सीमित होते हुए भी उसमें देश आ रहा है, संघर्ष आ रहा है, सिनेमा में ऐसा क्यों नहीं हो रहा? इस प्रश्न के जवाब में अनुराग कश्यप ने उम्मीद जताई है कि परिस्थिति एवं पीढ़ी बदल रही है, तो सिनेमा भी बदलेगा। उन्होंने कहा है, सिनेमा भी बदलेगा, लेकिन दो पीढ़ियों के बाद। आज का जो नया सिनेमा है, उसकी आडिेंस कौन है? सब तीस के अंदर वाली है। अधिकतर इस नए सिनेमा को इंटरनेट पर टॉरेंट के जरिए देखते हैं।”¹⁰² इसी प्रश्न के दूसरे पक्ष अर्थात् इसके अर्थपक्ष पर वे प्रकाश डालते हैं- “आज फिल्में बना कौन रहा है? पहले जैसा नहीं है कि इंडीविजुअल प्रोड्यूसर बना रहा है। आज स्टूडियो फंड कर रहा है। स्टूडियो क्या होता है? स्टूडियो वो होता है जिसके पास पब्लिक का पैसा है। प्राइवेट फंडर से लिया गया है। प्राइवेट फंडर क्यों फंड करता है किसी चीज को, उसके पास तो अथाह पैसा है। हमलोग क्यों इनवेस्ट करते हैं, ग्रोथ फंड में डालते हैं अपना पैसा। क्योंकि हमारा पैसा सेव रहे और बढ़ता रहे। ताकि भविष्य में काम आए...एक मिडिल क्लॉस आदमी का फंडा यह है। जो बड़ा आदमी है, वो भी इसी फंडे पर चलता है। वो अपना अथाह पैसा उठा के डाल देता है कि चलो एक कंपनी बनाओ। उसे दुगना करो। उस पैसे से स्टूडियो चला, ‘वासेपुर’ चली....इसलिए, लेकिन स्टूडियो बहुत चेंज नहीं होता है, किस वजह से? सिर्फ सुजॉय घोष, सुजीत सरकार, अनुराग कश्यप को कुछ भी बनाने की आजादी मिल जाती है।”¹⁰³

¹⁰⁰-सेंसरशिप अपमानजनक है, गौतम घोष से बातचीत, पृ. 25-26, हंस, फरवरी, 2013, अक्षर प्रकाशन प्रा.लि.

¹⁰¹- सेंसरशिप अपमानजनक है, गौतम घोष से बातचीत, पृ. 25-26, हंस, फरवरी, 2013, अक्षर प्रकाशन प्रा.लि.

¹⁰²-नया सिनेमा छोटे-छोटे गांव मोहल्लों से आएगा, फिल्मकार अनुराग कश्यप, हंस, पृ. 30, फरवरी, 2013, अक्षर प्रकाशन प्रा.लि.

¹⁰³-नया सिनेमा छोटे-छोटे गांव मोहल्ले से आएगा, फिल्मकार कश्यप, हंस, पृ. 30, फरवरी 2013, अक्षर प्रकाशन प्रा.लि.

इसी साक्षात्कार में औपनिवेशिक परिस्थिति में पनपते सिनेमा की चर्चा करते हुए हिंदुस्तानी सिनेमा एवं ईरान के सिनेमा पर चर्चा की गई है। सवाल इस तरह है- “यानी आपका मानना है कि जो हिंदुस्तानी सिनेमा है वो गुलाम सिनेमा है”¹⁰⁴ जवाब में अनुराग कश्यप ने कहा है- “मैं बता रहा हूँ कि दुनिया का सिनेमा गुलाम सिनेमा है, सिर्फ हिन्दुस्तान का सिनेमा गुलाम सिनेमा नहीं है”¹⁰⁵ इसके प्रतिउत्तर में साक्षात्कारकर्ता ने कहा है- “नहीं, ईरान में तो मजीदी जैसे फिल्मकार नई लकीर खींच रहे हैं.....”¹⁰⁶ साक्षात्कारकर्ता के इस प्रश्न के उत्तर में अनुराग कश्यप ने विस्तृत व ब्यौरावार उत्तर दिया है- “ईरान का सिनेमा भी गुलाम सिनेमा है। ईरान में वही सिनेमा बन रहा जो स्टेट फंडेड है। वे जफ़र पनाही की फिल्म नहीं बना सकते। माजिद मजीदी की जो भी फिल्म है उन्हें स्टेट ने पहले अप्रूव किया है। वहाँ आपकी स्क्रिप्ट को पहले स्टेट सेंसर करता है, तभी आप आगे बढ़ सकते हैं”¹⁰⁷

इस प्रकार हम हंस के इस सिनेमा अंक में कई महत्वपूर्ण फिल्मकारों एवं विद्वानों के आलेख पाते हैं, जिसमें गुलजार, गोविंद निहलानी, सुधीर मिश्रा, श्याम बेनेगल, ओमपुरी, चंद्रप्रकाश द्विवेदी, तत्याना पुल्लेई, पंकज राग, विनोद भारद्वाज, मनमोहन चड्ढा, जयप्रकाश चोकसे व फ्रैंक हुजूर आदि के नाम शामिल हैं। इसके अतिरिक्त इस अंक में इन व्यक्तियों पर भी आलेख शामिल हैं- गुरुदत्त, उदय शंकर एवं जफर पनाही।

3.4.1.5.12 लमही (जुलाई-सितंबर 2010)-सिनेमा विशेषांक

संपादकः ऋत्विक् राय

3/343, विवेक खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ 226010

ईमेल-vijairai,lamhi@gmail.com

इस अंक में आलेख, परिचर्चा एवं साक्षात्कार शामिल किए गए हैं। पत्रिका का पहला आलेख ‘ओद्रे तारकेवस्की दुनिया को बनाए रखने की चिंता’ के अंतर्गत प्रसिद्ध साहित्यकार कुंवर नारायण ने फिल्मकार आंद्रे तारकेवस्की के सिने व्यक्तित्व व कर्म को याद किया है। तारकेवस्की संसार के अत्यंत प्रतिष्ठित फिल्म निर्देशकों में से हैं। उनका निधन 1986 में हुआ, लेकिन रूस के बाहर उन्हें जितनी मान्यता प्राप्त थी उतनी रूस में नहीं। उनकी फिल्में सहज बोधगम्य नहीं हैं और एक ऐसे समाज में जहाँ सामान्यीकरण और लोकप्रियता को सबसे पहले जरूरी माना जाता

¹⁰⁴-नया सिनेमा छोटे-छोटे गांव मोहल्ले से आएगा, फिल्मकार कश्यप, हंस, पृ. 30, फरवरी 2013, अक्षर प्रकाशन प्रा.लि.

¹⁰⁵-नया सिनेमा छोटे-छोटे गांव मोहल्ले से आएगा, फिल्मकार कश्यप, हंस, पृ. 30, फरवरी 2013, अक्षर प्रकाशन प्रा.लि.

¹⁰⁶-नया सिनेमा छोटे-छोटे गांव मोहल्ले से आएगा, फिल्मकार कश्यप, हंस, पृ. 30, फरवरी 2013, अक्षर प्रकाशन प्रा.लि.

¹⁰⁷-नया सिनेमा छोटे-छोटे गांव मोहल्ले से आएगा, फिल्मकार कश्यप, हंस, पृ. 30, फरवरी 2013, अक्षर प्रकाशन प्रा.लि.

हो वहाँ उन फिल्मों की अत्यंत जटिल शैली सहसा कठिनाई उत्पन्न कर सकती है¹⁰⁸ इस आलेख में तारकेवस्की की फिल्म 'रूबलेव' की चर्चा की गई है और बताया गया है कि "रूबलेव में अगर आत्मकथात्मक तत्व भी पढ़े जाएं तो रूस में एक-दूसरे स्तर पर भी कठिनाई उत्पन्न होगी। मध्ययुगीन कलाकार रूबलेव (1370-1430) की जीवनी को माध्यम बनाकर तारकेवस्की ने उस समय की बर्बरता को चित्रित किया है जिससे परेशान होकर रूबलेव ने कला छोड़कर अंत में सन्यास ले लिया।"¹⁰⁹

फिल्म बनाने की कला एवं अंतर्वस्तु पर फिल्मकार ऋत्विक् घटक का मानना है- "प्रतिभावान डॉ. सिगफ्रीड क्रेकॉर भी जब सभी फिल्मों पर भौतिक यथार्थ के निवर्चन का अपना सिद्धांत थोपने की कोशिश करते हैं तो लक्ष्य से दूर चले जाते हैं। उनके लिए हिचकॉक बड़े और महत्वपूर्ण कलाकार हो जाते हैं और औलिवियर की 'हेमलेट' कोई फिल्म ही नहीं रह जाती। पार्कटायलर के साथ भी यही होता है, जब वे अपनी प्रसिद्ध विस्थापित अट्टहास की पद्धति के बजाय सभी फिल्मों का विशिष्ट साहित्यिक दृष्टि से ध्वनित अर्थ पढ़ने की कोशिश करते हैं।"¹¹⁰

फिल्म वैसे तो प्रस्तुति का एक माध्यम है, किंतु इसके निर्माण का अपना सिद्धांत एवं कला पक्ष भी होता है। इसलिए इसमें विज्ञान के कलात्मक योगदान से इनकार नहीं किया जा सकता। स्वयं ऋत्विक् घटक ने कहा है- "फिल्म कोई एकरूप नहीं है, इसके कई रूप हैं, सिने-कैमरा के विशिष्ट स्थान से कोई इंकार नहीं करता, लेकिन सिर्फ इसी पहलू से विचार बिल्कुल नहीं किया जाना चाहिए, उद्घाषित भावों और कृति को पूर्णता तक संवारने में लगे व्यक्ति की व्यक्तिगत प्रतिभा की दृष्टि से भी विचार किया जाना चाहिए। अंततः परिणाम प्राप्त होते हैं और आप जन के लिए सृजन करते हैं।"¹¹¹ लमही के इस अंक में सिनेमा, साहित्य एवं सिने सिद्धांत पर यथासंभव सामग्री देने एवं उपलब्ध कराने की चेष्टा की गई है, जिसमें लेखों के साथ विजय शर्मा का आलेख 'होलोकास्ट सिनेमा' विशेष उल्लेखनीय है। इस आलेख में एक प्रकार से विश्व के यातना शिविरों का सिने इतिहास पेश किया गया है।

इस प्रकार हम पाते हैं कि नई आर्थिक व्यवस्था से लघु पत्रिकाओं को कड़े संघर्ष का सामना करना पड़

¹⁰⁸ -कुंवर नारायण, आंद्रे तारकोवस्की, दुनिया को बनाए रखने की चिंता, लमही, जुलाई-सितंबर, 2010, पृ. 4, संपादक ऋत्विक् राय

¹⁰⁹ - कुंवर नारायण, आंद्रे तारकोवस्की, दुनिया को बनाए रखने की चिंता, लमही, जुलाई-सितंबर, 2010, पृ. 4, संपादक ऋत्विक् राय

¹¹⁰ - ऋत्विक् घटक, फिल्म और मैं, लमही, जुलाई-सितंबर, 2010, पृ. 7, संपादक ऋत्विक् राय

¹¹¹ - ऋत्विक् घटक, फिल्म और मैं, लमही, जुलाई-सितंबर, 2010, पृ. 7, संपादक ऋत्विक् राय

रहा है, किंतु इस जटिल परिस्थिति का एक सकारात्मक पक्ष यह है कि इस दौर में बाजारवादी प्रवृत्ति के विश्लेषण वाले लेख लिखे गए, जिसमें सिनेमा को एक उत्पाद के रूप में देखा गया। साथ ही सिने विशेषांक भी निकाले गए, जिनसे सम्बन्धित कुछ पत्रिकाओं का उल्लेख इस शोध प्रबंध में पहले ही किया गया है।

इन साहित्यिक पत्रिकाओं के अतिरिक्त बहुबचन, सृजनगाथा और मीडिया विमर्श जैसी पत्रिकाओं द्वारा भी सिनेमा पर अंक निकाले गए और निरंतर सिने सामग्री प्रस्तुत किया जाता है।

3.4.1.6 सिने-पत्रिकाएँ व समाचार-पत्र

3.4.1.6.1 माधुरी

माधुरी के निकालने की आवश्यकता पर सिने पत्रकार विनोद तिवारी का कहना है-“माधुरी का घोष वाक्य यही था जिसे उसने सच कर दिखाया पारिवारिक फिल्म पत्रिका” निश्चितरूप से यह पत्र सिने-पत्रकारिता की महत्वपूर्ण पत्रिका है। इसने अपने समय में सिने-पत्रकारिता की बहुत सेवा की। इसके जन्म के विषय में विनोद तिवारी का कहते हैं-“माधुरी का जन्म जनवरी 1964 में उस समय हुआ जब हिंदी सिनेमा के प्रति चला आ रहा दुराग्रह कम हो चला था। सिनेमा को सरकारी तथा गैर सरकारी प्रश्रय प्राप्त होने लगा था और सामाजिक तौर पर इस माध्यम की शक्ति को पहचान कर प्रतिष्ठा दी जाने लगी थी। लेकिन पत्रकारिता के क्षेत्र में सर्वाधिक सफल और मान्य संस्था द टाइम्स ऑफ इंडिया प्रकाशन समूह (बेनेट कोलमैन एंड कंपनी) द्वारा हिंदी में फिल्म पत्रिका प्रकाशित करने का फैसला उक्त कारणों से नहीं लिया गया। इसके पीछे जो भावना थी उसने सिर्फ हिंदी फिल्म पत्रकारिता को ही नहीं पूरी हिंदी पत्रकारिता को असीम लोकप्रिय और प्रतिष्ठा प्रदान की।”¹¹²

3.4.1.6.2 सुषमा

यह सिनेमा की महत्वपूर्ण पत्रिका है जो शमा प्रकाशन से प्रकाशित और द इंडियन प्रिंटिंग प्रेस, दिल्ली से मुद्रित होती रही यह सन् 1959 में निकली। प्रथम संपादक करुणाशंकर थे। निश्चितरूप से यह सिनेमा की पत्रिका है किंतु इसमें साहित्यिक व सांस्कृतिक गतिविधियों को भी पर्याप्त स्थान दिया जाता है। सिनेमा बतौर विचार व सांस्कृतिक कार्यक्रम के रूप में, इस पत्रिका में पूरी गंभीरता से प्रस्तुत किया जाता है। सिनेमा पर इसकी गंभीरता इसी बात से परिलक्षित होती है कि “इसका संपादकीय भी फिल्मी समस्या को लिए होता है। पत्रिका फिल्मी

¹¹²- महत्वपूर्ण मोड़ : माधुरी का प्रकाशन, द्वारा विनोद तिवारी, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2007, प्रथम संस्करण 2007, पृ. 89

सितारों का परिचय तो देती ही है, साथ ही आने वाली फिल्मों की संक्षिप्त कहानी भी प्रस्तुत करती है। इसके अलावा एक दो कहानी व गजलें भी इसमें रहती हैं।...तीन कॉलमों में विभक्त व 9.50x7.50 आकार की यह पत्रिका 96-100 पृष्ठ की निकलती है।...यह पत्रिका पूर्णतः फिल्मी पत्रिका है जो अपने पाठकों को फिल्मी दुनिया की चकाचौंध से परिचित कराती है।”¹¹³ इस पत्रिका के विषय में ‘फिल्म पत्रकारिता का इतिहास’ पुस्तक के लेखक विनोद तिवारी का कहना है- “एक समय फिल्म उद्योग में उर्दू का जबरदस्त बोलबाला था। बहुत सारे नामी लेखक उर्दू में ही लिखते थे। इन्हीं में से कई निर्देशन के क्षेत्र में भी सफल हुए। इसलिए फिल्म पत्रिकाएं उर्दू में भी निकलती थीं। उर्दू की एक लोकप्रिय फिल्म पत्रिका थी शमां जो उर्दू पाठकों के बीच काफी लोकप्रिय थी लेकिन समय के साथ उर्दू पाठकों संख्या घटने लगी। तब इस पत्रिका के प्रकाशकों ने हिंदी में फिल्म पत्रिका निकाली- सुषमा। इसके संपादक थे करुणाशंकर।”¹¹⁴

3.4.1.6.3 फिल्मी दुनिया

यह पत्रिका दिल्ली से निकली, जिसके संपादक नरेंद्र कुमार थे। आम फिल्म पत्रिकाओं की तरह यह एक अल्पजीवी नहीं बल्कि दीर्घजीवी पत्रिका है जो आज भी निकल रही है।

3.4.1.6.4 फिल्मीस्तान

यह पत्रिका सन् 1958 में फिरोजपुर से निकली। यह पत्रिका मासिक रही है।

3.4.1.6.5 मायापुरी

यह एक पुरानी हिंदी सिने पत्रिका है साथ ही बड़े पैमाने पर प्रकाशित होती है, जो सन् 1974 से निकल रही है। यह साप्ताहिक पत्रिका है और प्रति सप्ताह 3,40,000 प्रतियाँ छपती हैं। इसे मायूपुरी समूह द्वारा निकाली जाती है।

(स्रोत -118 मायापुरी विकीपीडिया)

3.4.1.6.6 फिल्म फेयर

फिल्म फेयर मूल रूप से अंग्रेजी भाषा की टेब्लायड प्रकार की सिने पत्रिका है, जिसे हिंदी भाषा में भी प्रकाशित किया जाता है। यह टाइम्स ग्रुप की पत्रिका है, जो सन् 1952 से निरंतर निकल रही है। आज के समय में फिल्म फेयर के वेबसाइट पर हिंदी सिनेमा की तमाम जानकारियों पर लेख, साक्षात्कार और सिने वीडियो उपलब्ध

¹¹³-आजादी के बाद फिल्म पत्रकारिता, द्वारा विनोद तिवारी, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2007, प्रथम संस्करण 2007, पृ. 206

¹¹⁴- आजादी के बाद फिल्म पत्रकारिता, द्वारा विनोद तिवारी, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2007, प्रथम संस्करण 2007, पृष्ठ-206

हैं। हिंदी के फिल्म फेयर पर अंग्रेजी भाषा में छपने वाली फिल्म फेयर का स्पष्ट प्रभाव देखा जाता है। सन् 1950 बाद फिल्मी पत्रिकाओं की संख्या में आश्चर्यजनक इजाफा हुआ। उस दौर की निकली इन पत्रिकाओं उपलब्धता लगभग न के बराबर है। कुछ के बस नाम ही ज्ञात किए जा सके हैं। संक्षेप में इन पत्रिकाओं का विवरण इस प्रकार है-

- फिल्म करण (1959), मासिक, जबलपुर।
- चित्रछाया (1959), मासिक, दिल्ली।
- इंदुमति (1959), मासिक, दिल्ली।
- सिने एक्सप्रेस (1959), साप्ताहिक, इंदौर।
- चित्रावली (1959), मुंबई।
- प्रीत (1959), मासिक, जोधपुर।
- नीलम (1960), मासिक, दिल्ली।
- मधुबाला (1960), मासिक, दिल्ली।
- राधिका (1962), दिल्ली।
- मनोरंजन (1962), दिल्ली।
- रस नटराज (1963), मुंबई (संपादक, प्रकाशक-बट्टी काचवाला)।
- माधुरी (1963), मुंबई (संपादक, अरविंद कुमार)।
- कजरा (1963), मासिक, कानपुर।
- फिल्म अप्सरा (1963), मासिक, दिल्ली।
- फिल्मी कलियाँ (1965), मासिक, दिल्ली (यह पत्रिका आज भी प्रकाशित हो रही है)।
- मेनका (1965), मासिक, दिल्ली।
- फिल्मलता (1965), मासिक, दिल्ली।
- बबीता (1967), मासिक, दिल्ली।

- सिने पोस्ट (1968), मासिक, दिल्ली।
- फिल्मरेखा (1968), मासिक, दिल्ली।
- फिल्मांकन (1969), साप्ताहिक, मुंबई।
- सिने-हलचल (1969), पाक्षिक, अजमेरा।
- अभिनेत्री (1970), मासिक, लुधियाना।
- फिल्म श्रृंगार (1970), मासिक, मेरठ।
- फिल्म कमल (1970), मासिक, मेरठ।
- फिल्म अभिनेत्री (1970), मासिक, मेरठ।
- फिल्म परियाँ (1970), मासिक, लखनऊ।
- पूनम की रात (1970), साप्ताहिक, जबलपुर।

(स्रोत- फिल्म पत्रकारिता, विनोद तिवारी, वाणी प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2007, पृ.49-51)

सिने-पत्रकारिता की दृष्टि से सत्तर का दशक महत्वपूर्ण दशक है। क्योंकि सिनेमा के साथ सिने-पत्रकारिता ने भी अब तक एक यात्रा तय कर ली थी, परंतु सिने-पत्रकारिता चित्र मोह से नहीं उबर पाई थी। “फिल्म पत्रकारिता के प्रारंभिक काल में और उसके काफी बाद भी पत्रिका का आकार बड़ा होना उसे विशिष्टता प्रदान करता था। वजह शायद यह रही हो कि उस काल की सबसे प्रतिष्ठित पत्रिका ‘द इलेस्ट्रेटेड वीकली’ जो अंग्रेजी में थी, बड़े आकार में छपती थी। शायद इसीलिए सन् 1964 में प्रकाशित ‘माधुरी’ का साइज भी बड़ा रखा गया। वैसे भी इसकी छपाई उसी फोटोमशीन ग्रेव्यर मशीन पर की जाती थी जिस पर ‘द इलेस्ट्रेटेड वीकली’ और ‘धर्मयुग’ जैसी सफल पत्रिकाएं छपती रही थीं।”¹¹⁵

सिने-पत्रकारिता में निहार वृत्ति की प्रवृत्ति आज भी बनी हुई है। माना जाता है कि ‘माधुरी’ की देखा देखी 70 के दशक में स्वर्गीय श्री ए.पी.बजाज ने दिल्ली से मायापुरी प्रकाशित की। आज भी वे इसके प्रकाशक और संपादक हैं। पी.के.बजाज इस पत्रिका के अंक की तारीख अथवा प्रकाशन वर्ष मुखपृष्ठ पर प्रकाशित न करने की

¹¹⁵- आजादी के बाद फिल्म पत्रकारिता, द्वारा विनोद तिवारी, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2007, प्रथम संस्करण 2007 पृ.41,

नीति अपनाई है। मायापुरी का आकार भी बड़ा रखा गया। हालांकि बाकी सब पत्रिकाओं ने बाद में अपना साइज छोटा कर लिया, लेकिन 'मायापुरी' अब भी अपेक्षाकृत बड़े आकार में ही निकल रही है।

यह धारणा भी रही है कि बड़े आकार में प्रकाशित चित्र ज्यादा आकर्षक लगते हैं। इस धारणा का फायदा अखबारों ने उठाया। उनके परिशिष्ट बड़े-बड़े, रंगीन चित्रों से सजे होते हैं, जिनमें ज्यादातर अभिनेत्रियों के गलैमरस फोटोग्राफ्स शामिल किए जाते हैं। किसी गंभीर तथा उपयोगी सामग्री की कमी इन चित्रों के जरिए पूरी हो जाती है। यह विचारधारा फिल्म पत्रकारिता के विकास में सदा बाधक रही है।¹¹⁶

हिंदी सिने-पत्रकारिता की एक विशेषता यह थी कि पहले कोई सिने-पत्रिका बड़ी धूमधाम से निकलती परंतु कुछ महीने या साल में यह उत्साह धीरे-धीरे थम जाता और उसकी जगह दूसरी पत्रिका पूरे आन-बान-शान से निकलने लगती। 1950 से 80 के दशकों में यह प्रवृत्ति बनी रही। “फिर भी पत्रिका निकालने वालों ने पुरानों की असफलता से कोई सबक नहीं लिया। हर नए उत्साही ने यही सोचा कि फिल्म पत्रिका निकालना या चलाना आसान काम है जिसे दो चार पत्रकार बखूबी पूरा कर सकते हैं। बगैर योजना, बगैर रिसर्च, बगैर तैयारी, बगैर दृष्टिकोण के किए गए कामों का जो हश्र होता है वही इन पत्रिकाओं का भी होता रहा।”¹¹⁷ ऐसी पत्रिकाओं के संपादकों का मानना रहा कि पत्रिका के कुछ अंक पश्चात पर्याप्त विज्ञापन मिलने लगेंगे, किंतु प्रायः ऐसा होता नहीं था। इसीलिए पत्रिकाएं निकलती रहीं और बंद होती रहीं। इस स्थिति को एक उदाहरण से आसानी से समझा जा सकता है। “सुरेंद्र गुप्ता पहले बैंक में नौकरी करते थे, लेकिन ‘माधुरी’ की सफलता ने उन्हें फिल्म पत्रकारिता की ओर आकर्षित किया और उन्होंने ‘सिनेमा रील’ पत्रिका निकाली। कुछ समय तो पत्रिका चलाते रहे लेकिन जल्दी ही उन्हें यह बात समझ में आ गई कि उनकी हर कोशिश के बावजूद पत्रिका को विज्ञापन नहीं मिलने वाला। आखिर उन्होंने पत्रिका बंद कर दी।”¹¹⁸

सुरेंद्र गुप्ता आगे चलकर पुनः सिने-पत्रकारिता की ओर आकर्षित हुए और उन्होंने “अपने अनुभव से लाभ उठाने का फैसला किया और जून 1985 फिल्म का टैब्लायड निकाला ‘फिल्मसिटी’। इसमें उन्होंने यह प्रयोग किया कि ‘टैब्लायड’ निकालने का जितना भी खर्च प्रति कॉपी आता उसमें अपने लिए थोड़ा मुनाफा जोड़कर अखबार की एक कीमत तय की जाए और सर्कुलेशन सिर्फ उतना रखा जाए जितने अखबार बिक जाने की सौ

¹¹⁶- आजादी के बाद फिल्म पत्रकारिता, द्वारा विनोद तिवारी, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2007, प्रथम संस्करण 2007 पृ. 41

¹¹⁷- आजादी के बाद फिल्म पत्रकारिता, द्वारा विनोद तिवारी, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2007, प्रथम संस्करण 2007 पृ. 42

¹¹⁸- आजादी के बाद फिल्म पत्रकारिता, द्वारा विनोद तिवारी, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2007, प्रथम संस्करण 2007, पृ. 43

प्रतिशत गारंटी हो। इसका मतलब यह कि अखबार कम बिके या ज्यादा, घाटा होने की संभावना नहीं रहेगी। इसका मतलब यह भी था कि संपादकीय तथा ऑफिस संबंधी खर्चों को कम से कम रखा जाए तथा कागज की छपाई पर भी कठोर नियंत्रण रखा जाए”¹¹⁹

3.4.1.6.7 सिने-पत्रकारिता का एक रूप फिल्म टैब्लायड भी

सुरेंद्र गुप्ता का सोचना सही था। वे अल्प मात्रा में ही सही, परंतु सफल हुए। उन्होंने जिस टैब्लॉयड का प्रतिपादन प्रारंभ किया, उसमें कोई नवीनता नहीं थी। ‘फिल्मसिटी’ के लिए विज्ञापन का आग्रह त्याग दिया गया था। इसलिए इसे अपने ऊपर विश्वास करते हुए निकाला जाने लगा। इसलिए तमाम बासीपन के बाद भी थोड़े-बहुत मुनाफे के साथ इसका प्रकाशन होता रहा, होता है और इसी रूप में यह सफल है। किंतु इसकी इस मामूली सफलता से दूसरे सिने प्रेमियों को भी प्रोत्साहन प्राप्त हुआ। इसीलिए सुरेंद्र गुप्ता के भाई नरेंद्र गुप्ता ने सन् 1990 में फिल्म टैब्लायड ‘किंग स्टार’ की शुरुआत की। ‘किंगस्टार’ का भी नियमित प्रकाशन हो रहा है।

3.4.1.6.8 अंग्रेजी बाई प्रोडक्ट की हिंदी सिने-पत्रिका स्टारडस्ट

स्टारडस्ट हिंदी की सिने पत्रिका अवश्य है किंतु यह पूरी तरह अंग्रेजी मनोभूमि की पत्रिका है। सामग्री चयन से लेकर प्रस्तुति तक में इस पर अंग्रेजी वाली ‘स्टारडस्ट’* का प्रभाव व दबाव देखा जाता है। स्टारडस्ट का पहला अंक 1971 में नारी हीरा (Nari Hira) द्वारा निकाला गया। आज यह मासिक रूप में फिल्म गॉसिप को प्रकाशित करने वाली महत्वपूर्ण पत्रिका मानी जाती है जिसका वितरण 2,88,000 है। उल्लेखनीय है कि इस पत्रिका का संपादन शोभा डे ने भी किया। इसे प्रकाशित करने वाली कंपनी मैग्ना पब्लिशिंग प्रा. लि. है।

3.4.1.6.9 सिने-पत्रिकाओं का पतन

वैसे यह भी सत्य है कि 1980 के बाद एक-एक कर सिने-पत्रिकाओं का प्रकाशन थमने लगा। इसके दो कारण थे। एक तो यह कि टाइम्स ऑफ इंडिया प्रकाशन समूह ने अपनी पत्रिकाओं को एक के बाद एक बंद करना शुरू कर दिया था।....टाइम्स ऑफ इंडिया जैसा प्रतिष्ठित संस्थान अपनी जमी-जमाई पत्रिकाएं बंद करने पर मजबूर क्यों हुआ? यह कम ही लोगों को पता चल पाया कि पत्रिकाएं घाटे की वजह से नहीं, कंपनी स्वामित्व में परिवर्तन और नए बॉस की नई धारणाओं के कारण बंद की जा रही हैं।¹²⁰ इसके साथ कई अन्य कारणों से सिने-पत्रिकाओं

¹¹⁹ - आजादी के बाद फिल्म पत्रकारिता, द्वारा विनोद तिवारी, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2007, प्रथम संस्करण 2007 पृ. 43

¹²⁰ - फिल्म पत्रकारिता, द्वारा विनोद तिवारी, वाणी प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2007, पृ. 44

*Stardust, the flogship magazine of magna publications, a Mumbai based publishing company owned by Nari Hari, started

को विकसित होने में दिक्कत हुई, जिसमें एक तो यह कि अखबार एवं टी.वी. ने सिनेमा के व्यवसायिक पक्ष को समझ कर अपने पृष्ठों एवं कार्यक्रमों में सिने सामग्री की प्रस्तुति को बढ़ा दिया। ध्यातव्य है कि अखबार प्रतिदिन छपते हैं और टेलीविजन 24 घंटे कार्यक्रम प्रस्तुत करता है अर्थात् इन दोनों संप्रेषण माध्यमों के पास किसी सिने पत्रिका से ज्यादा अवसर है। फलस्वरूप पत्रिकाओं के सामने नयेपन का दबाव बढ़ता गया। निश्चित रूप से इस दबाव को कई पत्रिकाएं नहीं झेल पाईं और डूब गईं। फिल्म-पत्रिकाओं का यह हाल इसलिए भी हुआ क्योंकि उन्होंने सिने-सामग्री की प्रस्तुति में निहार-प्रवृत्ति को अधिक महत्व दिया और विचार पक्ष को कम। यदि विचार या विश्लेषण को फिल्म पत्रिकाएं अपना पक्ष बनाती तो इससे न केवल इनका भला होता बल्कि सिनेमा और सिने समझदारी के परिवेश निर्माण में भी मदद मिलती। चंद सिने-पत्रिकाओं ने इस दिशा में ध्यान दिया और वे आज भी छप रही हैं। साथ ही कुछ सिने पत्रिकाओं ने सिने-समाचार प्रस्तुतीकरण को फोटो पत्रकारिता ही बना दिया, फलस्वरूप वे भी सांस ले रही हैं। हालांकि फिल्म पत्रकारिता के इतिहासकार विनोद तिवारी का मानना है-“हिंदी फिल्म पत्रकारिता में पत्रिकाओं के प्रकाशन का जो ज्वार एक समय देखने को मिला था, उसके थम जाने की तीसरी वजह थी फिल्म पत्रिका की बढ़ती लागत। एक समय फिल्म पत्रिका छपाई के साधारण कागज पर छापने से भी काम चल जाता था, सिर्फ मुखपृष्ठ के लिए जरा बेहतर कागज लगाना होता था। धीरे-धीरे फिल्म पत्रकारिता ग्लैमर का हिस्सा हो गया। जब तक कवर पेज चिकना न हो, अंदर के पेजेज ग्लैज्ड पेपर पर न हों और फिल्मी सितारों की तस्वीरें एक्जक्यूटिव तथा स्पेशल फोटो सेशन में न खिंचवाई गई हों, तब तक पत्रिका का बाजार में टिक पाना संभव नहीं रहा।”¹²¹

3.4.1.6.10 हिंदी फिल्म-पत्रकारिता की विमर्श हीनता

सिनेमा के लोग विशिष्ट जन माने जाते हैं। बड़े पर्दे पर उपस्थिति के कारण इन्हें लार्जर दैन लाइफ का रूतबा हासिल रहा जिसका उन्हें राजनीतिक लाभ भी मिलता रहा। पृथ्वीराज कपूर, वैजयंतीमाला, सुनील दत्त, अमिताभ बच्चन व गोविंदा जैसे हिंदी सिनेमा के सितारे संसद सदस्य रहे, तो एन.टी.रामाराव, जयललिता व चिरंजीवी जैसे दक्षिण भारतीय सिनेमा के कलाकारों ने राजनीति में बड़ा मुकाम हासिल किया। इस तरह सिने-सितारों ने अपने राजनीतिक एवं सामाजिक रुझान का पर्याप्त परिचय दिया। सिने-संसार खास तौर पर हिंदी सिनेमा में एक समय

publication in 1971. The best selling magazine formerly edited by pulp fiction writer and Shobha De, is entirely devoted to film gossip and scandal and is modeled on the American Magazine photoplay. - Pop Culture India, Media, Arts and Life Style- by Asha Kasbekar at www.abc.cilo.com

¹²¹- फिल्म पत्रकारिता, द्वारा विनोद तिवारी, वाणी प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2007, पृ. 44

ऐसा आया जब उसने खुले तौर पर राजनीतिक हस्तक्षेप करने की कोशिश की। भारतीय राजनीति में सत्तर का दशक महत्वपूर्ण माना जाता है। आजादी के दो दशक बीत गए थे, जनता निराश थी। सरकार जनता की उम्मीदों पर खरी नहीं उतर पायी थी। तब फिल्म जगत ने यह जिम्मेदारी उठाने की कोशिश की। “लेकिन बुद्धिजीवियों की उदासीनता और मीडिया, खासतौर पर फिल्म पत्रकारिता ने उस ओर कोई तवज्जो नहीं दी और आज भी इस प्रयत्न को लगभग मखौल ही मान लिया गया है।....अभिनेता, निर्माता, निर्देशक देवानंद ने एक पहल की थी। उन्होंने एक ऐसी पार्टी का गठन किया था, जिसमें मूलतः और मुख्यतः फिल्म जगत के लोग ही शामिल हों और बाद में इसका दायरा बढ़ता चला जाए। उन्होंने इस पार्टी का नाम **‘नेशनल पार्टी’** रखा था और नाम के अनुरूप इसे राष्ट्रीय स्तर तक ले जाना चाहते थे।”¹²²

सिनेमा और सिने कर्मियों द्वारा यह एक अच्छी पहल थी। देवानंद सही दिशा में विचार कर रहे थे। उनका मानना था कि फिल्म जगत सही अर्थों में सेकुलर है। “सबका सम्पूर्ण सम्यक सहयोग एक सुनिश्चित लक्ष्य अर्थात् एक अच्छी फिल्म बनाने के प्रति होता है। अगर यही गुण राष्ट्रीय स्तर पर विकसित हो सके तो देश की तस्वीर बदल सकती है। दूसरी बात यह कि फिल्म जगत में उन बुद्धिजीवियों की भी कमी नहीं जो सही सोच और विकास को सही दिशा दे सकें। आखिर फिल्म लेखक और निर्देशक सामाजिक विद्रूपों की ओर इंगित करने से कभी चूकते नहीं हैं।”¹²³

हिंदी सिनेमा की इस पहल पर समय रहते ध्यान नहीं दिया गया। खुद सिनेमा की चर्चा की जाए तो यह समय सिनेमा के लिए भी सहज नहीं था। बाजार की सामान्य शर्तें सिनेमा को अपनी गिरफ्त में लेने लगी थीं। यदि ऐसा हो पाता तो सिनेमा के सामाजिक परिवेश का दायरा और जवाबदेही में विस्तार होता। इतना तो सत्य है कि सिनेमा में उस तरह की सांप्रदायिकता नहीं थी (नहीं है) जैसा सामान्य राजनीति में पाया जाता है और इसका लाभ समाज को निश्चित रूप से प्राप्त होता। **‘नेशनल पार्टी’** की परिकल्पना में यह कहा गया था कि आम चुनावों में यह अपने उम्मीदवार खड़ा करेगी। उन्हें पूरे फिल्म उद्योग का समर्थन प्राप्त होगा और ये न केवल फिल्म उद्योग का बल्कि जनसामान्य का प्रतिनिधित्व करेंगे। लेकिन यह पार्टी उचित समर्थन के अभाव में असामयिक ही काल कवलित हो गई। इसे फिल्म उद्योग के भीतर से ही वह समर्थन और उत्साह नहीं मिल सका जो इसका संबल बन सकता था। फिल्म उद्योग में ऐसे लोगों की कमी नहीं, जिनमें अपने प्रति सामाजिक स्वीकृति का विश्वास पैदा नहीं

¹²²- फिल्म पत्रकारिता, द्वारा विनोद तिवारी, वाणी प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2007, पृ. 47

¹²³- फिल्म पत्रकारिता, द्वारा विनोद तिवारी, वाणी प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2007, पृ. 48

हो पाता हो। वे यही मानकर चलते हैं कि वे सिर्फ एंटरटेनर हैं और इसके आगे उनका कोई दायित्व नहीं बनता।....स्वस्थ फिल्म पत्रकारिता इस मनोवृत्ति को तोड़ सकती है। यही एकमात्र वह शक्ति है जो फिल्म जगत से जुड़े हर छोटे-बड़े के मन में यह भावना प्रतिष्ठित कर सकती है कि फिल्मकारों के अंदर भी वे बीज छिपे हैं जो इन्हें बड़े कामों को अंजाम देने लायक बना सकते हैं लेकिन फिल्म पत्रकारिता ने इस दिशा में न कोई पहल की और न अब नजर आती है।¹²⁴ विनोद तिवारी का कहना सही है। आज भी स्थिति यही है। फिल्म से राजनीति में जाने वाले कलाकारों पर फिल्म पत्रकारिता मौन रहती है। चेतनाहीन सिने-पत्रकारिता स्वयं में एक आश्चर्य है। माना कि यह खामोशी टूटी भी है, परंतु ऐसा बहुत कम बार हुआ है।

3.4.1.6.11 अस्सी के बाद की सिने-पत्रकारिता

अस्सी का दशक सिनेमा के लिए भी बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है। टेलीविजन और वीडियो का तेजी से लोकप्रिय होना इसी दशक में प्रारंभ हुआ। टेलीविजन व वीडियो के आने से सिने-जगत में बेचैनी का माहौल निर्मित होने लगा। हालांकि यह भी सत्य है कि टेलीविजन के बढ़ते कदम सिने-विज्ञापन की सौगात भी साथ ला रहे थे, जो आज सिने-समाचार व सिने-विज्ञापन और सिने-कलाकारों के धनार्जन का भी महत्वपूर्ण माध्यम बन चुका है। किंतु यह सत्य है कि वीडियो के बढ़ते दायरे से सिनेमा को गहरा आर्थिक आघात लगा (लग रहा है)। आज वीडियो की वह प्रवृत्ति कम्प्यूटर या लैपटाप ने आत्मसात कर ली है। पहले वीडियो पायरेसी कुछ खास एजेंटों द्वारा की जाती थी किंतु आज एक सामान्य कम्प्यूटर उपयोगकर्ता इतना तकनीकी दक्ष हो गया है कि वह खुद के तकनीकी कौशल से नई से नई फिल्मों को रिलीज होने के पहले पाइरेटेड कर देता है। सिने-उद्योग अभी तक इसका कोई समाधान नहीं पा सका है। वैसे टेलीविजन भी जहाँ सिनेमा के लिए सहायक है, वहीं काफी हद तक इसने सिने दर्शक को अपना नियमित दर्शक बनाकर सिनेमा के आर्थिक स्रोत पर चोट की है। फलस्वरूप सिने स्वरूप एवं प्रस्तुति में परिवर्तन लाया गया ताकि हर हाल में यह टेलीविजन से ज्यादा प्रभावी प्रतीत हो और अपनी मनोरंजन क्षमता को बरकरार रख सके। फिर भी वीडियो, टेलीविजन और मल्टीप्लेक्स (वैश्विक पूंजी के सहयोग से) के दबाव से ग्रामीण प्रकार की फिल्म बननी बन्द हो गई है और बड़े शहरों से लेकर छोटे शहरों व कस्बों तक सिनेमा हालों पर ताले लगाए जा रहे हैं/जा चुके हैं (तोड़कर मॉल बनाए जा चुके हैं) इतना हताश कर देने वाले परिवेश के बावजूद हिंदी सिने जगत ने कुछ बहुत ही शानदार फिल्में दी हैं।

¹²⁴ - फिल्म पत्रकारिता, द्वारा विनोद तिवारी, वाणी प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2007, पृ. 48

अस्सी का दशक दोनों प्रकार की फिल्मों का गवाह बना। इस दौर में फार्मूला फिल्मों के साथ कला फिल्म (समांतर फिल्में) भी बनीं और सफल हुईं। इस दौर में जहाँ एक तरफ 'राम तेरी गंगा मैली' जैसी फिल्म बनीं तो वहीं दूसरी ओर सूखा (एम.एस.सथ्यू),स्पर्श,चश्मेबंदू,कथा (सई परांजये), अल्बर्ट पिंटो को गुस्सा क्यों आता है, मोहन जोशी हाजिर हो, सलीम लंगड़े पर मत रो (सईद मिर्जा) और उमराज जान व गबन (दोनों मुजप्फर अली) जैसी फिल्में दर्शकों के सामने आईं।

अस्सी के दौर में ही,जाने भी दो यारो (कुंदन शाह),अब आएगा मजा (पंकज पराशर),अर्थ, सारांश(महेश भट्ट),गांधी (रिचर्ड एटनबरो),जुनूस (श्याम बेनेगल),आक्रोश,अर्धसत्य,तमस(गोविंद निहलानी) जैसी प्रबुद्ध फिल्में आईं।

3.4.1.6.12 अस्सी का दशक और समांतर सिनेमा

समांतर सिनेमा दरअसल सिनेमा ही है, बस इसमें साहित्यिकता व प्रबुद्धता अधिक होती है। साहित्य की कई कृतियों पर चलचित्र निर्माण किया गया। प्रेमचंद की गोदान, मिल मजदूर, सद्गति और शतरंज के खिलाड़ी, रेणु के मैला आँचल व तीसरी कसम, राजेंद्र यादव के सारा आकाश, मन्नू भंडारी के यही सच है, कमलेश्वर की रचनाओं पर आँधी व मौसम, धर्मवीर भारती की रचना पर सूरज का सातवां घोड़ा, आर.के.नारायण की रचना पर 'गाइड' व महाश्वेता देवी की पुस्तक पर 'रूदाली' जैसी सफल फिल्मों का निर्माण किया गया। इतना ही नहीं बल्कि संस्कृत साहित्य मृच्छकटिकम् (उत्सव), बांग्ला साहित्य (टैगोर, शरतचंद्र) व गुजराती साहित्य (सरस्वती चंद्र) पर फिल्में बनीं व सफल हुईं।

समांतर सिनेमा आंदोलन में एक सशक्त हस्ताक्षर के रूप में उभरे गोविंद निहलानी मानते हैं कि-“एक फिल्मकार के लिए साहित्यिक कृतियों में जब तक चुनौती का तत्व मौजूद नहीं हो वह उन पर फिल्म बनाने का प्रयास नहीं कर सकता। वे कहते हैं कि जिसमें दर्शकों का हित निहित हो, वैसी फिल्म अगर कलात्मकता से बनाई जाए तो वह साहित्यिक परिवेश में नजर आती है, चाहे वह किसी साहित्यिक कृति पर आधारित हो अथवा काल्पनिक हो। निहलानी की कामयाब फिल्म 'अर्धसत्य' मराठी रचनाकार एस.डी.पानवलकर की लघु कथा 'सूर्य' पर आधारित थी। इस फिल्म को इतनी लोकप्रियता मिली कि 'सूर्य' का उजाला और बढ़ गया और 'अर्धसत्य' के पात्र हिंदी सिनेमा में अमर हो गए।....मराठी उपन्यासकार अरुण साधु के राजनीतिक उपन्यास 'सिंहासन' पर मराठी में जब्बार पटेल ने इसी नाम से फिल्म बनाई, जिसमें डॉ.श्रीराम लागू और नीलू फुले ने मुख्य भूमिका निभाई थी। ज्ञानपीठ विजेता लेखक टी.शिवशंकरपिल्लै के मलयाली उपन्यास 'चेम्मीन' पर रामू करियान

ने सत्यन और शीला को लेकर इसी शीर्षक से फिल्म का निर्माण किया। कन्नड़ में गिरीश कर्नाड ने यू.आर.अनंतमूर्ति की कृति 'संस्कार' पर फिल्म बनाई, तो मृणाल सेन ने प्रेमेंद्र मित्र की कहानी पर 'खंडहर' जैसी चर्चित फिल्म बनाई। बांल्ला के बहुपठित उपन्यास 'देवदास' (लेखक शरतचंद्र चट्टोपाध्याय) में तो कुछ ऐसा सम्मोहन है कि हर दौर में फिल्मकारों ने इसे परदे पर उतारा....स्पष्ट है साहित्य की संगत के कारण सिनेमा को संस्कार मिले हैं, उसकी दृष्टि विकसित हुई है। एक जोखिम भरा काम होते हुए भी फिल्मकारों ने साहित्यिक कृतियों को सिनेमाई नजरों से परखने का प्रयास किया। लेखक को समझना, रचना के काल और परिवेश को आत्मसात करना, लेखक के अंदर रचना प्रक्रिया के दौरान जो घट रहा है और रचना में जो कुछ घटित है उसे गहराई से समझना और रचना में शामिल प्रत्येक पात्र का अध्ययन करना भी किसी फिल्मकार के लिए बहुत जरूरी है।¹²⁵ हॉलीवुड ने भी साहित्य को काफी शिद्दत से आत्मसात किया और सफलता प्राप्त की। "नोएल कोआर्ड के नाटक पर आधारित 'कैवलकेड', मार्गरेट मिशैल के उपन्यास पर 'गॉन विद द विंड', डाफने डी मॉरिएर की कृति पर 'रेबेका' और मैक्किनले केन्टार के उपन्यास पर आधारित 'द बेस्ट इवर्स ऑफ ऑवर लाइव्ज' जैसी फिल्मों का निर्माण तीस और चालीस के दशक में ही हो गया था। बोरिस पास्तरनाक के उपन्यास पर आधारित 'डॉ.जिवागो' (1965) को साहित्यिक कृति पर बनने वाली श्रेष्ठ फिल्मों की सूची में सबसे ऊपर रखा जाता है।"¹²⁶

3.4.1.6.13 सिनेमा पर साहित्यकारों के विचार

सिनेमा पर साहित्यकारों के विचार उत्साहवर्धक नहीं रहे। माना कि कुछ अपवाद भी हैं किंतु ज्यादातर साहित्यकार सिनेमा और सिनेमाकारों पर कुपित ही रहे। रामवृक्ष वेनीपुरी, आर.के.नारायण, भगवतीचरण वर्मा व अमृतलाल नागर इस कला विधा की ओर आकर्षित अवश्य हुए, किंतु इसके साथ निभा नहीं पाए। कथा सम्राट मुंशी प्रेमचंद भी ऐसी ही राय रखते हैं। यहाँ कथाकार राजेंद्र अवस्थी एवं प्रेमचंद के विचार देना आवश्यक प्रतीत होता है। पहले राजेंद्र अवस्थी का कथन प्रस्तुत है। राजेंद्र अवस्थी अपने उपन्यास 'जंगल के फूल' पर फिल्म बनाने के क्रम में लिखते हैं- "कुछ वर्षों पहले दिलीप कुमार से मेरे उपन्यास जंगल के फूल पर फिल्म बनाने की चर्चा चली थी।....एक रात पाली हिल में निर्माता हितेंद्र चौधरी के मकान में दिलीप, हितेंद्र और मैं- हम तीनों मिले। काफी देर तक कहानी पर बातें होती रहीं। इसके बाद हितेंद्र साहब ने एक सीन पेश किया- अंधेरी रात है। छुक-छुक-छुक एक छोटी सी रेलगाड़ी चली आ रही है। स्टेशन पर बूढ़ा स्टेशन मास्टर हरी लालटेन लिए खड़ा है।

¹²⁵- सिने पत्रकारिता, द्वारा श्याम माथुर, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, प्रथम संस्करण, 2008, पृ. 150

¹²⁶- सिने पत्रकारिता, द्वारा श्याम माथुर, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, प्रथम संस्करण, 2008, पृ. 150

स्टेशन के पास ही स्टेशन मास्टर के रहने का क्वार्टर है। उसकी जवान लड़की अकेली है और अपने पिता के लौटने की प्रतीक्षा में है। उसी समय गाड़ी की गड़गड़ाहट बढ़ती है और एक जोर की चीख निकलती है, इत्यादि। मैंने हितेंद्र जी को रोकते हुए कहा हितेंद्र भाई, आप 'जंगल के फूल' पर फिल्म बनाना चाहते हैं या अपनी कोई कहानी सुना रहे हैं? उन्होंने तपाक से कहा- आपके उपन्यास को ही मैंने इस तरह कंसीव किया है। उसी दिन इसी बात पर हमारे बीच मतभेद हो गए थे।....स्पष्ट है कि यदि मैं अपने उपन्यास की सच्चाई छोड़ने के लिए राजी हो जाता तो 'जंगल के फूल' पर फिल्म बन जाती। परंतु तब शायद यह फिल्म मेरी नहीं दिलीप कुमार की होती।"¹²⁷ प्रेमचंद ने सिनेमा को नजदीक से देखा था। उन्होंने सिनेमा के लिए कुछ फिल्में न केवल लिखीं, बल्कि बाकायदा उन पर फिल्में बनीं भी, जिसमें 'मिल मजदूर' व 'बाजारे हुस्न' शामिल हैं। उन्होंने सिनेमा और सिने संसार की व्यावसायिक बुद्धि पर कुछ तंज किए हैं- "सिनेमा से किसी सुधार की आशा करना बेकार है। यह कला भी उसी तरह पूंजीपतियों के हाथों में है। इनको इससे मतलब नहीं कि पब्लिक की मानसिकता पर क्या प्रभाव पड़ता है। इन्हें तो अपनी पूंजी से मतलब है। नग्नता, नृत्य, चुंबन और मर्दों का औरतों पर हमला....ये सब इनकी नजरों में जायज है।....बेशक आवाम वीरता भरी जवांमर्दी देखना चाहता है, इश्क, मोहब्बत भी उसके लिए आकर्षण रखता है, लेकिन यह ख्याल गलत है कि उत्तेजना व चुंबन के बगैर मुहब्बत का इजहार हो नहीं सकता और सिर्फ तलवार चलाना ही जवांमर्दी है या बिना किसी जरूरत के गीत पेश करना जरूरी है। इन बातों से ही आवाम को खुशी मिलती है, तो यह इंसानियत की गलत कल्पना है।"¹²⁸ हालांकि अब समय में बदलाव आया है, कई रचनाकार सिनेमा और साहित्य दोनों के लिए लेखन कर रहे हैं और वे सफल भी हैं। दरअसल अब लेखकों को दृश्य माध्यम की क्षमता और सीमा दोनों का ज्ञान हो गया है।

स्वाधीनता के बाद इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों की सिने-पत्रकारिता में विशेष वृद्धि हुई। उपग्रहों और संचार क्रांति के बदौलत पूरे भारत में सूचनाओं का आदान-प्रदान सहज और सुलभ हो गया। रेडियो, टीवी, इंटरनेट और सोशल मीडिया से सूचना, मनोरंजन और ज्ञान का अनवरत प्रवाह पूरे देश में होने लगा। इन सभी आधुनिक संचार माध्यमों का प्रभाव सिने-पत्रकारिता पर भी पड़ा, जिसका विवरण अगले अध्याय में प्रस्तुत किया गया है।

¹²⁷- माधुरी, 27 अप्रैल, 1973

¹²⁸-सिने पत्रकारिता, द्वारा श्याम माथुर, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, प्रथम संस्करण, 2008, पृष्ठ 156

चतुर्थ अध्याय

हिंदी सिने-पत्रकारिता: इलेक्ट्रानिक माध्यम

तीसरे अध्याय में स्वाधीनता पूर्व व पश्चात की सिने-पत्रकारिता का विवरण व विश्लेषण प्रस्तुत किया गया। चूंकि इलेक्ट्रानिक पत्रकारिता का सबसे पुराना संप्रेषण माध्यम, रेडियो स्वाधीनता पूर्व ही प्रचलन में आ चुका था। इसके साथ इलेक्ट्रानिक जनसंचार के दूसरे माध्यम स्वाधीनता पश्चात प्रकाश में आए। इसलिए इस अध्याय में इलेक्ट्रानिक माध्यमों की सिने-पत्रकारिता अलग से विचार किया गया है।

मुद्रण-माध्यमों के अतिरिक्त पत्रकारिता का एक रूप इलेक्ट्रानिक माध्यमों में भी पाया जाता है, जिसमें रेडियो, वीडियो, टी.वी. व इंटरनेट (ब्लॉग, फेसबुक एवं ट्विटर) शामिल हैं। इलेक्ट्रानिक माध्यमों के विकास क्रम में पहला नाम रेडियो का है जिसे परिभाषित करते हुए बताया गया है- *“Radio is a way to send electronic signals over a long distance, to deliver information from one place to another. A machine that sends radio signals called a transmitter, while a machine that ‘picks up’ the signals is called a receiver (a Machine that does both jobs is called a ‘transceiver’) when radio signals are sent out to many receivers at the same time, it is called a broadcast.”*¹ अर्थात् रेडियो वह माध्यम है जिससे वैद्युत संकेत अधिक दूरी पर भेजा जाता है। इससे सूचना एक स्थान से स्थान भेजी जाती है। इसमें एक ट्रांसमीटर जैसी युक्ति होती है जो रेडियो संकेत को एक स्थान से दूसरे स्थान भेजी जाता है, रेडियो संकेत को प्राप्त करने वाले यंत्र को प्रापक (रिसीवर-एक यंत्र जिसे ट्रांस रिसीवर कहा जाता है) जब रेडियो संकेत एक साथ बहुत सारे रिसीवरों को भेजा जाता है, तो उसे ब्रॉडकास्ट या प्रसारण कहा जाता है। 24 दिसंबर 1906 की शाम रेडियो इतिहास में महत्वपूर्ण माना जाता है, क्योंकि इसी शाम कनाडाई वैज्ञानिक रेगिनार्ल्ड फेसेंडेन ने अपना वॉयलिन बजाया जो अटलांटिक महासागर में तैरते जहाजों के रेडियो द्वारा तमाम लोगों तक पहुँचा। इससे पहले जगदीश चंद्र बसु ने भारत में और मार्कोनी ने सन् 1900 में इंग्लैंड से अमरीका तक बेतार संदेश भेजा था। इसे बाद में ली द फॉरेस्ट और चार्ल्स हेराल्ड के द्वारा परिष्कृत किया गया। परंतु 1917 ई. के प्रथम विश्व युद्ध के बाद किसी भी गैर फौजी के लिए रेडियो रखना प्रतिबंधित कर दिया गया। विश्व में पहला रेडियो स्टेशन सन्

¹-Radio- simple English Wikipedia.

1918 में ली द फॉरेस्ट द्वारा न्यूयार्क के हाईब्रिज इलाके में शुरु किया गया, किंतु कुछ दिनों बाद पुलिस को पता लग जाने पर इसे बंद करा दिया गया।

4.1 रेडियो एवं सिने-पत्रकारिता

भारत में रेडियो की शुरुआत 'मद्रास प्रेसिडेंसी रेडियो क्लब' के नाम से 16 मई, 1924 को की गई, किंतु अर्थाभाव के कारण इसे बंद करना पड़ा। आगे चलकर मद्रास कार्पोरेशन द्वारा इसके व्यवहारिक पक्ष को समझा गया और 01 अप्रैल, 1930 से इसने नियमित प्रसारण सेवा शुरू कर दी, जिसके कार्यक्रम इस प्रकार थे-

संगीत - दो घंटा प्रतिदिन : शाम 05.30 से 07.30

स्कूल शिक्षा - संगीत के माध्यम से : शाम 04.00 से 04.30

रविवार- ग्रामोफोन रेकार्ड : प्रातः 10.00 से 11.00 बजे तक

सोमवार - पाश्चात्य संगीत

ध्यातव्य है कि लोगों को रेडियो की उपयोगिता समझ में आ चुकी थी। इसलिए 16 जून, 1938 से मद्रास में आल इंडियारेडियो द्वारा 10 किलोवाट शार्ट वेव तथा 0.25 किलोवाट मीडियम वेव प्रसारण शुरू किया गया। मद्रास की ही तरह भारत के पश्चिमी क्षेत्र जैसे लाहौर (अब पाकिस्तान) में प्रायोगिक रूप में रेडियो की शुरुआत की गई। यह रेडियो सेवा 1937 तक चली और उसके बाद 16 दिसंबर 1937 को आल इंडियारेडियो में समाहित हो गयी।

सरकारी स्तर पर भारत में पहला रेडियो प्रसारण केंद्र 26 जुलाई 1927 को बंबई (मुंबई) में इंडिया ब्राडकास्टिंग के नाम से खोला गया। इसके एक महीने बाद अर्थात् 26 अगस्त, 1927 को इंडिया ब्राडकास्टिंग का दूसरा केंद्र कलकत्ता (कोलकाता) में खोला गया। ध्यान दिया जाए कि इन केंद्रों की क्षमता 1.5 किलोवाट थी, जिससे मात्र 30 मील की परिधि में ही प्रसारण सुना जा सकता था। इतने के बाद भी भारत में रेडियो को ज्यादा सरकारी प्रोत्साहन नहीं मिल सका। इसलिए धीरे-धीरे रेडियो केंद्र बंद होने लगे। भारत सरकार की इस निरंकुशता को देखते हुए बी.बी.सी. द्वारा खास पहल की गई। इस पहल के पीछे भी ब्रिटिश साम्राज्य एवं उसकी उपनिवेश नीति को मजबूत करने की मंशा थी। इसलिए बी.बी.सी. ने भारत में रह रहे अंग्रेजों के लिए रेडियो का प्रसारण किया। इससे भारत में प्रसारण को प्रोत्साहन मिला। रेडियो सेटों की मांग बढ़ी। व्यवसाय का परिवेश निर्मित होते देख सरकार ने रेडियो का प्रोत्साहन देने का निर्णय लिया और इसकी रूपरेखा बनाने के लिए बी.बी.सी. से एक व्यक्ति को बुलाया।

4.1.1 भारत में रेडियो का विकास

साम्राज्यवादी हुकूमत को पता चल गया था कि भारत को उपनिवेश बनाए रखने के लिए रेडियो जैसा जन-संप्रेषण माध्यम बहुत उपयोगी साबित हो सकता है। इसलिए “1935 ई. के अगस्त महीने में बी.बी.सी. से आए फिल्डन नामक व्यक्ति ने ‘कंट्रोलर ऑफ ब्राडकास्टिंग’ की पदवी धारण कर भारत आकर दिल्ली, बंबई, कलकत्ता, के केंद्रों को चलाने एवं अन्य स्थानों पर केंद्रों को खोलने की योजनाओं जैसे कठिन कामों का बीड़ा उठाया।”² इस तरह तमाम प्रकार से एवं कई लोगों के विशेष सहयोग से भारत में रेडियो की व्यवस्थित शुरुआत सन् 1936 में हुई। “1936 ई. की पहली जनवरी को दिल्ली में रेडियो केंद्र चालू किया गया और उसी वर्ष इसका ‘ऑल इंडिया रेडियो’ नामकरण किया गया। तीन वर्ष के भीतर लाहौर, लखनऊ, मद्रास, त्रिचनापल्ली आदि नौ और केंद्र खोले गए और दिल्ली, कलकत्ता, बंबई की शार्ट वेव ट्रांसमिशन में वृद्धि की गई।”³

4.1.2 पंचवर्षीय योजनाएं एवं रेडियो विस्तार

देश को आजादी मिल जाने के बाद संप्रेषण माध्यमों के क्रमबद्ध विकास पर ध्यान दिया जाने लगा। इसलिए “1951 ई. से जब से पंचवर्षीय योजना प्रारंभ हुई, तो रेडियो का विधिवत विकास शुरू हुआ। भारत का नए ढंग से राजनैतिक कायाकल्प शुरू हुआ। भाषा, संस्कृति एवं शासन व्यवस्था को ध्यान में रखकर नए सिरे से राज्यों का गठन किया गया। अब रेडियो नीति स्पष्ट रूप से दो भागों में विभक्त कर दी गई।”⁴ इन दोनों भागों में इस बात का ध्यान रखा गया कि पूरे देश को राष्ट्रीय कार्यक्रमों से परिचित कराया जाए ताकि एक राष्ट्रीय जनसंचार माध्यम स्थापित किया जा सके। साथ ही दूरराज के गांवों तक ज्ञानवर्धन एवं मनोरंजन के लिए देश में जगह-जगह प्रसारण केंद्र खोले गए। प्रथम पंचवर्षीय योजना को पूरा होते-होते देश का एक तिहाई हिस्सा रेडियो से जोड़ा जा चुका था।

4.1.3 रेडियो द्वारा सिने-पत्रकारिता

भारत जैसे देश में जहाँ आज भी पूर्ण साक्षरता का लक्ष्य पूरा नहीं किया जा सका है, में ध्वनि संप्रेषण माध्यम की विशेष भूमिका रही है। इसीलिए कहा गया है-

²-रेडियो लेखन, श्री मधुकर गंगाधर, बिहार ग्रंथ अकादमी, संस्करण 1974, पृ. 79

³-रेडियो लेखन, श्री मधुकर गंगाधर, बिहार ग्रंथ अकादमी, संस्करण 1974, पृ. 79

⁴-रेडियो लेखन, श्री मधुकर गंगाधर, बिहार ग्रंथ अकादमी, संस्करण 1974, पृ. 30

“Radio provides speed-up of information that also cause acceleration in other media, it certainly contracts the world to village size creates insatiable village testes for gossip, rumors and personal malice” - Marshall Mcluhan

अर्थात् तेज गति से सूचना प्रसारित करता है, जिससे दूसरे जन माध्यमों में भी तेजी आती है। यह तेजी से पूरे संसार में सूचनाएं इस प्रकार प्रसारित करता है, जैसे गाँव की आम बतकही, अफवाहें और व्यक्तिगत चर्चा। -
मार्शल मैकलुहन

प्रारंभ से ही सूचना, ज्ञान एवं मनोरंजन के लिए रेडियो का उपयोग किया गया, जो अब और अधिक बढ़ गया है। इसमें एक नये पहलू विज्ञापन के जुड़ जाने से इसका स्वरूप अब व्यवसायिक हो गया है। रेडियो के कार्यक्रमों में सिनेमा एवं सिने-जगत की चर्चा को प्रमुखता से स्थान दिया जाता है और आज एफ.एम. संस्कृति में तो सिनेमा को ही प्रमुखता प्राप्त है, बाकी सारी चीजें गौण हो गई हैं।

संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल भाषाओं के कार्यक्रम प्रस्तुत करने के कारण रेडियो पर क्षेत्रीय सिनेमा पर भी चर्चा की जाती है जो इसकी अपनी खास विशेषता है। इससे क्षेत्रीय सिने-पत्रकारिता को प्रोत्साहन मिलता है। इस समय रेडियो की सेवाओं का व्यापक विस्तार हो चुका है। ये सभी सेवाएं सर्व समावेशी हैं, जो इस प्रकार हैं-

1. राष्ट्रीय सेवा
2. प्राइमरी सेवा
3. विविध भारती
4. एफ.एम.
5. डाइरेक्ट टू होम

सिने-गीत और सिनेमा से संबंधित सूचनाएं राष्ट्रीय एवं प्राइमरी सेवा के कार्यक्रमों में भी प्रस्तुत की जाती हैं, किंतु विविध भारती, एफ.एम. एवं डाइरेक्ट टू होम में सिनेमा एवं सिने-पत्रकारिता का प्रतिशत अधिक पाया जाता है।

4.1.4 विविध भारती-देश की सुरीली धड़कन

विविध भारती भारत में सार्वजनिक क्षेत्र के रेडियो चैनल आकाशवाणी की एक प्रमुख प्रसारण सेवा है। भारत में रेडियो के श्रोताओं के बीच में ये सबसे अधिक सुनी जाने वाली सेवा है। इस पर मुख्यतः हिंदी फ़िल्मी

गीत और हिंदी सिनेमा से जुड़ी सूचनाएं दी जाती हैं। इसकी शुरुआत 03 अक्टूबर 1957 को हुई थी। प्रारंभ में इसके केवल दो प्रसारण केंद्र थे-बंबई (मुंबई), मद्रास (चेन्नई) में। धीरे-धीरे बढ़ती लोकप्रियता के कारण अन्य आकाशवाणी केंद्रों से इसके कार्यक्रम प्रसारित होने लगे। आज यह अपने सिने कार्यक्रमों एवं विज्ञापन के लिए लोकप्रियता के चरम पर पहुँच चुकी है। इसके विषय में कहा गया है-

“Vividh Bharati service offers much more beyond film music to the ‘Masses’. ‘Jaimala’, ‘Hawamahal’, ‘Inse Miliye’, ‘Sangeet Sarita’, ‘Bhoole Bisre Geet’, ‘Chitralok’, ‘Chaayageet’ are few of the many popular programmes which were and are part of the listener’s daily life, generation after generation from 05th October, 2008. Vividha Bharati programmes are available on DTH, Making Vividh Bharti 24 Hours popular musical channel”⁵.

अर्थात् विविध भारती व्यापक स्रोत समूह के लिए फिल्म संगीत प्रस्तुत करता है। इसमें से कुछ हैं- जयमाला, हवामहल, इनसे मिलिए, संगीत सरिता, भूले बिसरे गीत, चित्रलोक और छायागीत आदि। ये ऐसे कार्यक्रम हैं, जिनसे रोज मर्रा का जीवन संचालित होता है। 5 अक्टूबर, 2008 से विविध भारती के कार्यक्रम डीटीएच पर भी 24 घंटे उपलब्ध हैं।

इसकी व्यापकता एवं पहुँच के लिए कहा गया-*“Vividh Bharti with its wide network consisting of 37 Vividh Bharti centers and some Local Radio Stations now reaches more than 97% population of the country. Vividh Bharti programmes are also very popular in neighboring countries as listeners who listen to it through short-wave network, have been writing appreciation letters to All India Radio regularly.”⁶*

अर्थात् विविध भारती अपने 37 केंद्रों और कुछ स्थानीय रेडियो चैनलों के माध्यम से पूरे देश के 97 प्रतिशत हिस्से तक पहुंचता है। विविध भारती के कार्यक्रम सार्ट वेव द्वारा पड़ोसी मुल्क में भी सुने जाते हैं। कार्यक्रमों के विषय में आल रेडियो को इन देशों से निरंतर खत प्राप्त होते रहते हैं।

⁵-All India Radio की वेबसाइट से।

⁶-All India Radio की वेबसाइट से।

पचास के दशक के उत्तरार्ध में आकाशवाणी के प्राइमरी चैनल देश के सभी प्रमुख शहरों में सूचना एवं मनोरंजन की जरूरतें पूरी कर रहे थे। किंतु “जब 1953 में भारत सरकार का सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय ‘केसकर’ को दिया गया जो शास्त्रीय संगीत के अनन्य प्रेमी थे और फ़िल्मी गीतों को तिरस्कार की दृष्टि से देखते थे। उनका ख्याल था कि संचार माध्यमों का काम जनता का मनोरंजन करना नहीं, उसे शिक्षित करना है। लिहाजा तय किया गया कि रेडियो से फ़िल्मी गीत प्रसारित नहीं किए जाएंगे। शास्त्रीय गायन न केवल प्रसारित किया जाएगा बल्कि श्रोताओं को उसकी शिक्षा भी दी जाएगी, ताकि वे उसका ज्ञानाश्रित आनंद ले सकें और फ़िल्मी संगीत पर शास्त्रीय संगीत की उत्कृष्टता के प्रति आश्चर्य हो सकें। रेडियो सिलोन ने इस सुअवसर को हाथों-हाथ लिया और फ़िल्मी गीतों पर आधारित तरह-तरह के कार्यक्रम प्रसारित करके श्रोता बटोरने शुरू कर दिए।”⁷ यह वही रेडियो सिलोन था, जो श्रीलंका से प्रसारित होता था। इसका लोकप्रिय कार्यक्रम ‘बिनाका गीत माला’ था, जिसकी प्रस्तुति अमीन सयानी करते थे। बिनाका गीत माला रेडियो पर भारतीय फिल्म संगीत का सबसे पहला काउंट-डाउन प्रोग्राम था। 1950 और 1960 के दशक फिल्म, संगीत और रेडियो के दशक थे। उन दिनों फिल्म और रेडियो के अलावा मनोरंजन का कोई और विशेष साधन नहीं था। लोकप्रिय फ़िल्मी गीतों पर आधारित रेडियो सिलोन से एक कार्यक्रम प्रसारित होता था- बिनाका गीतमाला। यह उस समय का फ़िल्मी गीतों से संबंधित सबसे लोकप्रिय कार्यक्रम था। हर बुधवार को रात 08 बजे से 09 बजे तक बिनाका गीतमाला सुनने के लिए लोग रेडियो से चिपक जाया करते थे।

बिनाका गीतमाला का पहला कार्यक्रम सन् 1952 के अंतिम सप्ताह में प्रसारित हुआ था। यह महल, नागिन, उड़न खटोला जैसी फिल्मों का दौर था। उस समय केवल मधुर संगीत बजता था। सन् 1952-53 तक केवल 07 गाने प्रसारित किए जाते थे, इस कार्यक्रम में गीतों की लोकप्रियता का दर्जा भी नहीं दिया जाता था। सन् 1954 से बिनाका गीतमाला काउंट-डाउन कार्यक्रम बन गया और गानों को रेटिंग दी जाने लगी। इसके पहले कार्यक्रम में तलत महमूद का गाया गीत- जाएं तो जाएं कहाँ... शीर्षक गीत टॉप पर था। ज्ञात हो कि सुनील दत्त ने भी इस रेडियो चैनल में कार्यक्रम प्रस्तुतकर्ता की नौकरी की थी।

यह वह दौर था जिसमें हिंदी सिनेमा के दिग्गज संगीतकार एक से बढ़कर एक गीत तैयार कर रहे थे और रेडियो सिलोन ने उनके गीतों का प्रसारित करके सफलता का परचम लहरा दिया था। ऐसी परिस्थिति में आकाशवाणी के तत्कालीन महानिदेशक गिरिजाकुमार माथुर ने पंडित नरेंद्र शर्मा, गोपालदास, केशव पंडित और

⁷-जन्मशती : शब्द बनाम दृश्य, फ़िल्मी दुनिया में हिंदी कवि. कांति मोहन सोज. समयांतर. जुलाई. 2013

सहयोगियों के साथ एक अखिल भारतीय मनोरंजन सेवा का विचार प्रस्तावित किया, जिसे विविध भारती, आकाशवाणी की पंचरंगीसेवा नाम दिया गया। पंचरंगी शब्द का विशेष प्रयोजन था। इस शब्द से अभिप्राय पाँचों ललित सेवाओं का इसमें समावेश 69 करने से था। इस प्रकार तमाम तैयारियों के पश्चात 03 अक्टूबर, 1957 को विविध भारती की सेवा मुंबई से प्रारंभ की गई। इसमें सबसे पहले बजने वाले गीत की रचना पं. नरेंद्र शर्मा ने की, संगीत अनिल विश्वास ने दिया और स्वर दिया मन्ना डे ने। इस गीत के बोल थे- 'नाच मयूरा नाच'। विविध भारती की पहली उद्घोषणा शील कुमार द्वारा की गई। विविध भारती के प्रमुख कार्यक्रमों को निम्न रूप में देख सकते हैं-

1. संगीत सरिता (प्रातः 07.00 - 07.30)
2. आज के मेहमान (प्रत्येक बुधवार, 04.00 बजे)
3. सरगम के सितारे (प्रत्येक शुक्रवार 04.00 बजे)
4. उजाले उनकी यादों के (प्रत्येक रविवार 04.00 बजे)
5. विशेष जयमाला (प्रत्येक शनिवार, शाम 07.50 बजे)
6. इनसे मिलिए (प्रत्येक बुधवार शाम 07.45 बजे)
7. सेल्युलाइड के सितारे (रविवार विशेष रात 10.00 बजे)

1. संगीत सरिता

सुबह सात बजे प्रसारित होने वाले कार्यक्रम संगीत सरिता के माध्यम से विविध भारती ने अपने तमाम श्रोताओं के भीतर संगीत की समझ विकसित करने के लिए इस कार्यक्रम की अभिकल्पना की है। इस कार्यक्रम में आमंत्रित विशेषज्ञ संगीत की बारीकियों को आसान भाषा में समझाते हैं। उदाहरण सहित गायन को व्याख्यायित करते हैं और उस राग पर आधारित फ़िल्मी गीत सुनवाकर श्रोताओं को उस राग से पूरी तरह परिचित करा देते हैं। बरसों यह विविध भारती के लोकप्रिय कार्यक्रमों में से एक है। संगीत और फिल्म जगत की अनगिनत बड़ी हस्तियाँ इस कार्यक्रम में शामिल होती रही हैं, होते रहते हैं। संगीतकार अनिल विश्वास और उनकी पत्नी गायिका मीना कपूर की कार्यक्रम श्रृंखला 'रसिकेशु' एक लोकप्रिय श्रृंखला थी। प्रस्तुत कार्यक्रम में जिन प्रमुख लोगों की सहभागिता रही है, वे हैं-विदुषी गिरजा देवी, पंडित शिव कुमार शर्मा, उस्ताद फैयाज वसीफुद्दीन डागर, उल्हास बापट एवं शोभा मुद्गल आदि।

2. आज के मेहमान

इस कार्यक्रम में अपने क्षेत्र की मशहूर हस्तियों को आमंत्रित किया जाता है। उनसे सवाल पूछे जाते हैं। यह कार्यक्रम सामान्य श्रोताओं से लेकर विशेष श्रोताओं तक के लिए बहुत ज्ञानवर्धक होता है। इसमें ये कलाकार शिरकत कर चुके हैं- प्रेम चोपड़ा, तनुजा, तब्बू, श्याम बेनेगल, फारुक शेख, पार्थो घोष, कल्पना लाजमी और शहरयार आदि।

3. सरगम के सितारे

विविध भारती का यह कार्यक्रम सिने-संगीत की बारीकियों में रुचि रखने वाले श्रोता को बहुत पसंद आता है। कार्यक्रम में आमंत्रित की गई हस्ती संगीत में गहरी रुचि रखने वाला व्यक्ति होता है। इस कार्यक्रम में सिने-संगीत की नामचीन हस्तियाँ भाग लेती रही हैं, जैसे गायिका मुबारक बेगम, गायिका अनुपमा देशपांडे, गायिका वसुंधरा दास, गायक महेंद्र कपूर और संगीतकार व गायक बप्पी लहरी आदि।

4. उजाले उनकी यादों के

विविध भारती अपनी सांस्कृतिक जवाबदेही को समझती है। विविध भारती सिनेमा एवं सिने संगीत की धरोहर को सहेजती रही है। इस कड़ी में वह फ़िल्मी हस्तियों की स्मृति को सहेजने में गंभीरता से जुटी हुई है। 'उजाले उनकी यादों के' जैसे कार्यक्रम के तहत यह बीते दौर के सिनेमाकारों से बात करता है और उसे संरक्षित रखता है। इसमें नौशाद, ओ.पी. नैय्यर, खय्याम, रवि, लक्ष्मीकांत प्यारेलाल की जोड़ी के प्यारेलाल, कल्याणजी आनंद जी की जोड़ी के आनंद जी, माला सिन्हा एवं प्रकाश मेहरा आदि जैसी हस्तियों के नाम शामिल हैं।

5. जयमाला

जयमाला सोमवार से शुक्रवार तक फौजी भाईयों के पसंद के फिल्मी गीतों का कार्यक्रम है। जबकि शनिवार को कोई मशहूर फिल्म हस्ती इसे प्रस्तुत करती है। विगत कुछ वर्षों से रविवार को जयमाला का नाम जयमाला संदेश होने लगा है, जिसमें फौजी भाई अपने आत्मीय जनों को और फौजियों के आत्मीय जन देश की सेवा कर रहे इन फौजियों के नाम अपने संदेश विविध भारती के जरिए आदान-प्रदान करते हैं। यह कार्यक्रम लगातार लोकप्रियता के शिखर पर रहा है। यहाँ यह रेखांकित कर देना जरूरी है कि विविध भारती पहला ऐसा रेडियो चैनल था, जिसने खासतौर पर फौजियों के मनोरंजन के लिए कार्यक्रम शुरू किया। बाद में इस पहल की नकल अन्य चैनलों द्वारा भी की गयी। जयमाला विविध भारती का एक गौरवशाली कार्यक्रम है। कारगिल के समय इस कार्यक्रम के दौरान इसने सेना के जवानों और उनके परिजनों को सिने गीतों के माध्यम से संवेदनात्मक सहयोग

दिया। अब तक इसमें देव आनंद, धर्मेन्द्र, राजकुमार, शशि कपूर और अमिताभ बच्चन सहित कई नामचीन कलाकार फौजी भाईयों से अपने मन की बात कह चुके हैं। अभिनेत्री नरगिस ने विविध भारती पर पहला जयमाला कार्यक्रम पेश किया था। इसके बाद तो फौजी भाईयों के इस कार्यक्रम में आशा पारेख, माला सिन्हा, वहीदा रहमान, हेमा मालिनी से लेकर अमृता राव तक कई तारिकाएं शामिल हो चुकी हैं।

6. इनसे मिलिए

इनसे मिलिए विविध भारती का एक महत्वाकांक्षी एवं ज्ञानवर्धक कार्यक्रम है, जिसमें हिंदी सिनेमा की बेहतरीन शख्सियतों को सुनने का अवसर प्राप्त होता है। इसमें अब तक भाग लेने वाली हस्तियों में नृत्य निर्देशक लोग्निश फर्नांडिज, अभिनेता बीरबल, गायिका उषा तिमांती, अभिनेता बीजू खोटे, संगीतकार उत्तम सिंह, गायिका अनुराधा पौडवाल, लेखिका शोभा डे एवं गायिका मधुश्री आदि जैसे अनेक नाम शामिल हैं। प्रस्तुत है एक कार्यक्रम के कुछ अंश-

कलाकार - भूपेंद्र (पार्श्व गायक)

साक्षात्कारकर्ता - रेणु बंसल (विविध भारती)

रेणु बंसल - दोस्तों, पार्श्व गायन की दुनिया में यूं तो बहुत सी आवाज सुनाई देती हैं, लेकिन एक आवाज सबसे अलग सुनाई पड़ती है, यूं लगता है जैसे बहुत अलसाई सी हो और मीठी खुमारी से भरी हो। जैसे-जैसे वो आवाज तान लेती है, यूं लगता है कोई दोशीजा अंगड़ाई ले रही हो। यह वो आवाज है, जो कभी हमारा हाथ पकड़ कर बचपन की गलियों में, कभी गाँवों की मेड़ों पर दू किसी राह पर ले जाती है, जहाँ यादों के साथ जिंदगी के कितने ही रंगों के खूबसूरत अहसासों से होकर हम गुजरते हैं। कभी इन्होंने खुद ही कहा था-

मेरी आवाज ही पहचान है, गर याद रहे

(यह गीत बजता है)

रेणु बंसल - याद आया आपको? आज हम रू-ब-रू हैं इनसे मिलिए प्रोग्राम के तहत पार्श्व गायक भूपेंद्र जी से, आपका विविध भारती के स्टूडियो में स्वागत है, नमस्कार।

भूपेंद्र जी - नमस्कार, बहुत बहुत शुक्रिया।

रेणु बंसल - आप दिल्ली के रहने वाले हैं, और दिल्ली से आपके कदम जब मुंबई की तरफ बढ़े तो वो फिल्मी दुनिया के लिए ही बढ़े थे क्या ?

भूपेंद्र जी - मैं बॉम्बे तो फिल्मी दुनिया के लिए ही आया था, विशेष तौर पर मुझे बॉम्बे आने का कुछ शौक नहीं था। लेकिन अच्छे लोगों ने यहाँ आने के लिए कहा था.... मरहूम मोहन साहब ने और चेतन आनंद साहब ने, उनकी फिल्म हकीकत बन रही थी तो शायद उनको कोई नयी आवाज चाहिए थी। तो उनके कहने पर मैं फिल्म इंडस्ट्री में गाने के लिए आया था।
होके मजबू मुझे उसने भुलाया होगा।

(हकीकत का पूरा गाना बजता है)

रेणु बंसल - भूपेंद्र जी, आइए यहाँ से एक बार फिर मुड़ जाते हैं कविताओं और शायरी की तरफ। कविता लिखने का या शायरी पढ़ने का एक तरीका होता है, एक नियम होता है, यानि कविता लिखने या शायरी लिखने में 'मीटर' का ध्यान रखा जाता है और आपने कई गीत ऐसे गाए हैं जिनमें 'मीटर' का ध्यान नहीं रहा, यानी इसे 'एक्सपेरिमेंट' कह सकते हैं, जैसे फिल्म मौसम का एक गीत है, ऐसे एक्सपेरिमेंट को आप क्या कहेंगे?

भूपेंद्र जी- उसको ब्लैक वर्स कहते हैं, ब्लैक वर्स जिसका मीटर नहीं होता है। जैसे आप मुझसे बात कर रही हैं, जैसे हम आपसे बात कर रहे हैं। 'इट्स काल ब्लैक वर्स' आई इंजॉय सिंगिंग इट आलवेज।

(विविध भारती, मेरी आवाज ही पहचान है, बृहस्पतिवार, दिनांक 06 नवंबर, 2008)

7. सेल्युलाइड के सितारे- सन् 1996 में विविध भारती से मनोरंजन के एक नए पैकेज का आरंभ हुआ, जिसे 'पिटारा' नाम दिया गया। वास्तव में यह सूचना एवं मनोरंजन का पिटारा ही है। इस कार्यक्रम में सिनेमा के नायक एवं नायिकाओं का साक्षात्कार लिया जाता है। इस कार्यक्रम में अमिताभ बच्चन, गोविंदा, भगवान दादा, वी.शांताराम, राजेश खन्ना और हेमा मालिनी जैसे अनेक कलाकारों के विषय में जानकारी दी जा चुकी है। इसके अतिरिक्त विविध भारती ने समय-समय पर कई कालजयी सिनेमाकारों के साक्षात्कार लिए जो हिंदी सिनेमा के इतिहास लेखन के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसमें कुछ नाम इस प्रकार हैं- अनिल विश्वास, गुलाम मुहम्मद, राजेंद्र कृष्ण, पंकज मलिक और मजरूह सुल्तानपुरी आदि। प्रस्तुत है एक साक्षात्कार-

कलाकार - पंकज मलिक

साक्षात्कारकर्ता - दीप नारायण बिजोरिया

दीपनारायण बिजोरिया- पंकज दा, सबसे पहले यह जानना चाहेंगे कि आप फिल्मी दुनिया में कब से आए?

पंकज मलिक -

बिजोरिया भाई, बोलती फिल्म के भारत में शुरु होने के दो साल पहले ही मैं फिल्मी दुनिया में आ चुका था। यानि सन् 1928 में, उस समय मूक फिल्में दिखाई जाती थीं। उनके साथ जिस संगीत के बजने का रिवाज था, उस संगीत की रचना मैं किया करता था। उसके बाद जब बोलती फिल्में आईं, तो कलकत्ते में मुझे ही संगीत देने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

दीपनारायण बिजोरिया ने अगला सवाल किया था, कि फिल्मी दुनिया में आने के पहले वे क्या करते थे, तो जवाब में पंकज दा ने बताया कि वे विज्ञान के विद्यार्थी थे।

इस प्रकार विविध भारती से कई रोचक एवं उल्लेखनीय जानकारी प्राप्त होती है, जिसमें प्रमुख है आकाशवाणी की 'सिग्नेचर ट्यून्' के बनने की कहानी। "आज हो सकता है कि रेडियो सुनने वाले घरों की तादाद कम हो गई हो पर आकाशवाणी की संकेत ध्वनि कायम है। इसके बाद आता है 'वंदे मातरम' और 'मंगल ध्वनि'। सचमुच अनमोल है वो आवाज। अफसोस कि आकाशवाणी के जो केंद्र अब चौबीस घंटे चलते हैं, अर्थात् जहाँ अलग से सुबह, दोपहर और शाम की सभाएं नहीं होतीं, वहाँ ये सिग्नेचर ट्यून् नहीं बजाई जाती।... आज कई लोगों के मोबाइल पर इसे रिंग टोन के रूप में सुनकर आश्चर्यमिश्रित हर्ष होता है। लेकिन यह सच है कि आकाशवाणी की संकेत ध्वनि का अपना इतिहास है।

आम धारणा है कि इस संकेत ध्वनि को पंडित रविशंकर या फिर पंडित वी. जी, जोग ने बनाया। लेकिन ये सच नहीं है।... तो फिर सच क्या है। दरअसल आकाशवाणी की इस अनमोल कालजयी अनूठी और असाधारण 'सिग्नेचर ट्यून्' को बनाया था चेकस्लोवाकिया में जन्मे कंपोजर वाल्टर कॉफमैन ने⁸ निश्चित रूप से विविध भारती अपनी लोकप्रियता को बनाए रखते हुए सिने पत्रकारिता को एक विश्वसनीयता प्रदान करता है। इसका फोनिंग कार्यक्रम सोशल मीडिया को प्रोत्साहित करने वाला प्रथम कार्यक्रम माना जाता है।

4.1.5 एफ. एम. रेडियो एवं सिने-पत्रकारिता

4.1.5.1 एफ.एम. रेडियो

प्रथम एफ.एम. चैनल प्रायोगिक स्तर पर सन् 1977 में चेन्नई में प्रारंभ किया गया। यह ऐसा रेडियो चैनल होता है, जिसका प्रसारण स्थानीय/नियंत्रित क्षेत्र में होता है और इसमें स्थानीय जरूरतों एवं संस्कृति को प्राथमिकता

⁸-अनमोल है आकाशवाणी की सिग्नेचर ट्यून्', युनुश खान, रेडियो नाम, 06 जुलाई, 2011

दी जाती है। ऑल इंडिया रेडियो ने 01 फरवरी 1993 को चेन्नई में एफ.एम. रैनबो की स्थापना की। इस चैनल का प्राथमिक उद्देश्य युवा श्रोताओं को प्रोत्साहित करना था। एफ.एम. रेडियो के रेडियो जॉकी ने रेडियो उद्घोषकों को स्थानांतरित कर दिया। रेडियो जॉकी की जोरदार प्रस्तुति के अंदाज ने युवाओं को काफी आकर्षित किया। निश्चित रूप से एफ.एम. रेडियो ने मनोरंजन एवं ज्ञानवर्धन की प्रस्तुति को उत्साह से भर दिया।

इस समय पूरे देश में एफ.एम. के 206 ट्रांसमीटर हैं, जिनकी पहुँच भारत के 36.8 प्रतिशत क्षेत्र में है। आबादी के हिसाब से भारत की 94.94 प्रतिशत आबादी तक इनकी पहुँच है।

4.1.5.1.1. एफ.एम. सेवा

ऑल इंडिया रेडियो द्वारा एफ.एम. के दो चैनल सेवा देते हैं- पहला एफ.एम. रैनबो और दूसरा एफ.एम. गोल्ड।

4.1.5.1.1.1 एफ. एम. रैनबो

यह एफ.एम. रेडियो चैनलों का एक समूह है, जो पूरे भारत-भर में प्रसारित होता है। पहले इस चैनल समूह को एफ.एम. मैट्रो कहा जाता था, किंतु सन् 2002 से इनका नाम एफ.एम. रैनबो रख दिया गया। प्रसारण मुख्यतः हिंदी एवं क्षेत्रीय भाषाओं में होता है, किंतु समय-समय पर अंग्रेजी में भी कार्यक्रम पेश किए जाते हैं। अलग-अलग आवृत्तियों पर इसके कार्यक्रम मुंबई, लखनऊ, विजयवाड़ा, हैदराबाद, काकीनाड़ा एवं बंगलुरु में सुने जाते हैं।

हालाँकि एफ.एम. रैनबो से समसामयिक घटनाओं, समाचारों एवं मनोरंजन से सम्बन्धित कार्यक्रम प्रस्तुत किए जाते हैं। मनोरंजन के कार्यक्रमों को प्राथमिकता दी जाती है जिसमें सिने गीतों, कलाकारों एवं सिनेमात्मक तथ्यों की प्रधानता होती है।

4.1.5.1.1.2 एफ.एम. गोल्ड

एफ.एम. गोल्ड का प्रसारण मुंबई, दिल्ली, कोलकाता और चेन्नई से होता है। दिल्ली में इसकी शुरुआत 15 अगस्त 2001 को हुई थी। इसे एफ.एम. 2 कहा जाता है। उस समय के मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री अनिल बालाजी इसे एफ.एम. क्लासिक नाम देना चाहते थे, परंतु एफ.एम.2 ज्यादा प्रसिद्ध हो गया। एफ.एम. गोल्ड 24 घंटे प्रोग्राम देता रहता है। कार्यक्रमों में समाचार एवं तत्कालीन मामलों को प्राथमिकता दी जाती है। परंतु सारे कार्यक्रम फिल्मी गानों की चासनी में भीगे होते हैं। साथ ही फिल्म व फिल्मी कलाकारों के साक्षात्कार भी लिए जाते हैं और प्रसारित होते रहते हैं।

सन् 2003 में रेडियो उद्योग की विसंगतियों को दूर करने के लिए “सरकार ने डॉ.अमित मित्रा की अध्यक्षता में एक समिति का गठन किया।...समिति ने अपनी लाइसेंस फीस कम करने और नियमों में थोड़ी ढील देने का सुझाव दिया।”⁹ सरकार ने समिति की संस्तुतियोंको स्वीकार कर लिया। फलस्वरूप प्राइवेट रेडियो चैनलों के विकास का मार्ग प्रशस्त हो गया। इस समय कई निजी एफ.एम. चैनल कार्यरत हैं-

निजी रेडियो चैनल

आधिकारिक संस्था

रेडियो मिर्ची

टाइम्स समूह

रेडियो सिटी

स्वर समूह

बिग एफ.एम.

रिलायंस समूह

रेड एफ.एम.

एन.डी.टी.वी. समूह

रेडियो टुडे

इंडिया टुडे समूह

रेडियो तड़का

पत्रिका समूह

माई एफ.एम.

भाष्कर समूह

निजी एफ.एम. रेडियो चैनलों द्वारा कई प्रबुद्ध सिने कार्यक्रम प्रस्तुत किए जाते हैं। जैसे सुहाना सफर विद अन्नू कपूर (92.7 बिग एफ.एम.), पुरानी जींस, फिल्मी बाइस्कोप, फिल्मी मिर्ची, पहला नशा, और मीठी मिर्ची आदि (रेडियो मिर्ची)। थोड़ी चर्चा सुहाना सफर विद अन्नू कपूर की आवश्यक प्रतीत होती है। अन्नू कपूर ने इस कार्यक्रम की पहली प्रस्तुति में प्रसिद्ध फिल्म गायक श्री मुकेश (मुकेश माथुर) के विषय में बताया। कार्यक्रम में बताया गया कि मुकेश अपने समय के अति प्रसिद्ध कलाकार मोतीलाल के रिश्तेदार थे। उन्ही के कहने पर वे मुंबई आए और सन् 1941 में अशोक घोष के संगीत निर्देशन में फिल्म निर्दोष में अभिनय एवं गाने का अवसर प्राप्त हुआ। दरअसल यह वह दौर था जब अभिनेता और अभिनेत्री अपना गाना स्वयं गाते थे। इस प्रकार मुकेश ने बतौर अभिनेता एवं गायक फिल्म निर्दोष (01 जनवरी 1941 को प्रदर्शित) से फिल्म दुनिया में प्रवेश किया। इस फिल्म में उनकी हिरोइन नलिनी जयवंत थीं। जो गीत मुकेश ने पहली बार गाया, उसके बोल थे- ‘दिल ही बुझा हुआ हो तो’ (गीतकार- एम. नीलकांत) हालाँकि फिल्म बुरी तरह असफल रही। मुकेश को ज्यादा लाभ न हुआ। परंतु उन्हें दूसरी फिल्म ‘पहली नजर’ (मोतीलाल) में संगीतकार अनिल विश्वास के संगीत निर्देशन में गाने का अवसर प्राप्त हुआ। गाने के बोल थे- ‘दिल जलता है तो जलने दे’। कार्यक्रम में आगे बताया गया कि मुकेश के.एल.सहगल के

⁹-निजी रेडियो चैनलों का विकास, भारतीय इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, द्वारा. डॉ. देवरत सिंह, प्रभात प्रकाशन, 2009, पृ. 77

बड़े फैम थे और गायकी में उनकी नकल करते थे। किंतु नौशाद ने उन्हें अपनी मौलिक शैली में गाने की सलाह दी और साथ ही फिल्म 'अंदाज' में गाने का अवसर दिया। इस फिल्म में उन्होंने दिलीप कुमार को आवाज दी थी। प्रारंभ में उन्हें दिलीप की आवाज माना गया।

इसके अतिरिक्त बीबीसी द्वारा भी सिने-पत्रकारिता प्रोत्साहन पाती रही। अपने जन्म (सन् 1920) से ही इसने सिनेमा को एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक उपलब्धि के रूप में व्याख्यायित किया। "इसके हिंदी में प्रसारित समाचार, विश्व भारती, आजकल, पिछले पहर जैसे आकृष्ट प्रसारण उच्चस्तरीय पत्रकारिता के उदाहरण हैं।"¹⁰

इसके संग्रहालय के माध्यम से विश्व सिने-पत्रकारिता का इतिहास तैयार किया जा सकता है। इसके संग्रहालय में मूक सिनेमा की अनेक फिल्में, कलाकारों के साक्षात्कार मौजूद हैं, जैसे- चार्ली चैप्लिन, ईरोल फ्लाइन, रिता हाववर्थ एवं सिडनी पोयटियर आदि। इसी प्रकार इसके संग्रहालय में हिंदी सिनेमा के कई दिग्गजों के साक्षात्कार मौजूद हैं, जैसे- दिलीप कुमार (1985), राजेश खन्ना (1975), के.एल. सहगल (बी.बी.सी. संगीत), अमिताभ बच्चन और शाहरुख खान आदि।

सूचना प्रौद्योगिकी ने आकाशवाणी को अनुभव के नए क्षेत्र में लाकर खड़ा कर दिया है। आकाशवाणी ने वैश्विक सिने संसार से परिचित कराने के लिए हॉलीवुड, रूसिया, चीन एवं वियतनाम के सिनेमा पर सामग्री प्रस्तुत करने की कवायद तेज कर दी है।

● फिल्म इतिहास का बेहतरीन रेडियो कार्यक्रम-सुहाना सफर विद अन्नु कपूर

निजीकरण ने निश्चित रूप से सिनेमा जैसे बेहद रचनात्मक माध्यम को उत्पादन बना दिया है। फिर भी कभी-कभी इस प्रवृत्ति द्वारा भी महत्वपूर्ण कार्यक्रम बन जाते हैं। मनोरंजन उद्योग में व्यापक निवेश से प्राइवेट रेडियो चैनलों की बाढ़ सी आ गई है। एक विशेष प्रकार की एफ.एम. संस्कृति इस समय पूरे देश में विकसित हो गई है और अप्रासंगिक होते-होते रेडियो फिर से प्रासंगिक हो गया है। ऐसे ही एक प्राइवेट एफ.एम. चैनल का नाम है - 'बिग एफ एम 92.7'¹¹ इस चैनल पर फिल्म संगीत के कार्यक्रम पूरे दिन चलते रहते हैं। इसी चैनल का एक रेडियो कार्यक्रम है- 'सुहाना सफर विद अन्नु कपूर'। इसमें सिनेमा के सभी पक्षों पर पूर्णतः प्रामाणिक कार्यक्रम फिल्म

¹⁰ रेडियो, संपूर्ण पत्रकारिता, अर्जुन तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, चतुर्थ संस्करण, 2015, पृ. 368

¹¹ Big FM 92.2 – 97.2 Big FM is a nationwide private FM Radio station in India owned by Indian Businessman Anil Ambani, it broadcasts at 92.7 MHz (92.7FM). currently it covers 45 cities. This is the only private Radio FM Station which is being broadcast from Srinagar and Jammu & Kashmir Sate. From July 1, 2008. Big FM included Singapore, the First city outside india, in its broad casting network. it broadcasts its programmes daily from 5 to 8 PM an XFM 96.3, under the name of Big Bollywood 96.3 FM. In May 2012, veteren Films critic, Bhawana Samaaya started appearing on air, as a Friday Film reviewer. Big FMs main tagline is sceno sunao, Life Banao. – www.big927FM.com

अभिनेता अन्नु कपूर द्वारा प्रस्तुत किया जाता है। खास खबर डाट काम पर यह खबर इस प्रकार दी गई है-“टीवी एंकर और बॉलीवुड के जाने माने अभिनेता अन्नु कपूर अब रेडियो जॉकी ‘आरजे’ बनकर श्रोताओं को स्वर्णिम दौर के गाने सुनाएंगे। अन्नु कपूर को 92.7 बिग एफ एम का रेडियो जॉकी बनाया गया है। इसके तहत प्रसारित होने वाले कार्यक्रम ‘सुनाहा सफर विद अन्नु कपूर’ में संगीत प्रेमी स्वर्णिम दौर के गाने सुन सकेंगे। राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित अन्नु कपूर ने कहा कि इस कार्यक्रम के दौरान मैं भारतीय सिनेमा की अनसुनी कहानियों को बताऊंगा, जो मैंने अपने 31 वर्ष के कैरियर के दौरान अपने फिल्मकारों से सुनी थी।”¹² खबर में आगे बताया गया है- “इस कार्यक्रम के दौरान संगीत प्रेमी वर्ष 1955 से 1985 के मधुर गीत सुन सकेंगे।”¹³

● बिनाका गीत माला इन्फोटेनमेंट का एक जनप्रिय रेडियो कार्यक्रम

बिनाका गीतमाला रेडियो का एक अत्यंत जनप्रिय फिल्म संगीत कार्यक्रम था। यह एक काउंटडाउन कार्यक्रम था। कार्यक्रम के अंतर्गत अपने समय के टॉप गीत सुनाए जाते थे। इस कार्यक्रम की प्रायोजक बिनाका नाम की एक कंपनी थी जो टूथब्रश बनाती थी। उसी के नाम पर इस कार्यक्रम का नाम बिनाका गीतामाला रखा गया। इस कार्यक्रम की प्रस्तुति अपने समय के प्रसिद्ध रेडियो जॉकी अमीन सयानी जी करते थे। बिनाका गीतमाला की शुरुआत रेडिया सिलोन पर 1952 में हुई, जो बाद में सन् 1989 से विविध भारती से प्रसारित होने लगा और सन् 1994 तक चला। बिनाका गीत माला में सन् 1953 में टॉप पायदान पर रहने वाला गीत था- ये जिंदगी उसी की है, जो किसी का हो गया, प्यार ही में खो गया। गीत के बोल राजेंद्र कृष्ण के थे, आवाज लता मंगेशकर की, संगीत चितलकर रामचंद्र और फिल्म थी- अनारकली। वर्ष 1954 में इस कार्यक्रम का सर्वश्रेष्ठ गीत था-

जाएं तो जाएं कहा,

समझेगा कौन यहां

दर्द भले दिल की जुबां।

गीत के बोल-साहिर लुधियानवी

स्वर- तलत महमूद

संगीत- सचिन देव बर्मन

फिल्म- टैक्सी ड्राइवर

¹² - khaskhabar.com

¹³ - khaskhabar.com

हर वर्ष के गीतों को यहाँ देना प्रासंगिक नहीं। कुछ अन्य वर्षों के गीत दिए जा रहे हैं, जिन्हें भारतीय फिल्म संगीत प्रेमियों ने पूरे साल पहले क्रम पर रखा। उसमें कुछ हैं-

वर्ष 1957-

जरा सामने आ ओ छलिए
छुप छुप छलने में क्या राज है।

गीत - भरत व्यास

स्वर - लता मंगेशकर, मो. रफी

संगीत- एस.एन. त्रिपाठी

फिल्म- जनम जनम के फेरे

वर्ष 1961-

तेरी प्यारी प्यारी सूरत को
किसी की नजर ना लगे,

गीत - हसरत जयपुरी

स्वर - मो. रफी

संगीत- शंकर, जयकिशन

फिल्म- ससुराल

वर्ष 1968-

दिल विल प्यार-व्यार
मैं क्या जानूँ रे

गीत - मजरूह सुल्तानपुरी

स्वर - लता मंगेशकर

संगीत- लक्ष्मीकांत प्यारेलाल

फिल्म- शार्गिद

वर्ष 1973-

यारी है ईमान मेरा यार मेरी जिंदगी

गीत - गुलशन बावरा

स्वर- मन्ना डे

संगीत- आर.डी. बर्मन

फिल्म - जंजीर

वर्ष 1978-

अंखियों के झरोखे से...

गीत- रवींद्र जैन

स्वर- हेमलता

संगीत- रवींद्र जैन

फिल्म -अंखियों के झरोखे से

वर्ष 1984-

तू मेरा हीरो है

गीत- आनंद बक्सी

स्वर- मनहर उधास, अनुराधा पौडवाल

संगीत- लक्ष्मीकांत प्यारेलाल

फिल्म - हीरो

वर्ष 1990-

गोरी हैं कलाईयां, तू ला दे मुझे हरी हरी चूड़ियाँ

गीत- अंजान

स्वर- लता मंगेशकर, सब्बीर कुमार

संगीत- बप्पी लहरी

फिल्म- आज का अर्जुन

वर्ष 1991 में साजन एवं वर्ष 1993 में खलनायक के गीत बिनाका गीतमाला में टाप पर थे।

- बिनाका गीतमाला और अमीन सयानी

हिंदी फिल्मों के प्रचार का यह प्रथम लोकप्रिय कार्यक्रम था। यह भारतीय फिल्मी संगीत का सबसे पहला काउंटडाउन कार्यक्रम था, जो रेडियो द्वारा प्रसारित हुआ। सन् 1950-60 के दशक में रेडियो सबसे जनप्रिय मनोरंजन माध्यम था। हालांकि बिनाका गीतमाला 90 के दशक में यहां तक कि आज की एफ. एम. संस्कृति में भी प्रस्तुत होता है। साथ ही तमाम फिल्म संगीत के कार्यक्रम इससे प्रभावित नजर आते हैं। उस दौर में प्रत्येक बुधवार को रात 8 बजे से 9 बजे तक बिनाका गीतमाला का कार्यक्रम चलता था। पूरे देश में इस कार्यक्रम के प्रस्तुतकर्ता अमीन सायानी की आवाज गूंजती थी। साथ ही उस समय के बेहतरीन गीत भी, जिनमें से कुछ के नाम ऊपर दिये गए हैं।

● इस कार्यक्रम की शुरुआत

इस कार्यक्रम की शुरुआत सन् 1952 के अंतिम सप्ताह में हुई। महल, नागिन, उड़न खटोला जैसी फिल्मों के गीत इस कार्यक्रम में बजते थे। इन गीतों के मधुर बोल एवं धुन के साथ अमीन सायानी की आवाज का एक अपना ही अंदाज था। सन् 1952-55 तक केवल 7 गाने ही इस कार्यक्रम में पेश किए जाते थे। और इन गीतों की लोकप्रियता को भी दर्ज नहीं किया जाता था किंतु 1954 से काउंट डाउन शुरू हो गया और गीतों को रेटिंग दी जाने लगी।

रेटिंग गानों के रिकार्डों की बिक्री के आधार पर तय की जाती थी, साथ ही श्रोताओं के मत लिए जाते थे। किंतु बाद में ज्ञात हुआ कि कई श्रोता अलग-अलग नामों से मतपत्र भेजते हैं, इसलिए वोटिंग पद्धति को हटा दिया गया।

● पुर्ननामकरण

बिनाका गीतमाला का नाम दो बार बदला गया। पहले बिनाका गीतमाला और फिर कोलगेट गीतमाला। बाद में विविध भारती से यह सिबाका गीतमाला के रूप में प्रसारित होने लगा, जिसमें एक गीत 25 बार बजने के बाद हटा दिया जाता था, यह 25 बार बजने के क्रम में जितने पायदान ऊपर नीचे हो, उसे जोड़कर इसकी वार्षिक रेटिंग तय कर दी जाती थी। साल का सबसे पापुलर गाना दिसंबर के आखिर बुधवार को प्रसारित किया जाता। बाद में इस कार्यक्रम की लोकप्रियता को भुनाने के लिए इसी तरह के कई कार्यक्रम न केवल रेडियो पर बल्कि टी.वी. पर भी प्रारंभ किए गए। फलस्वरूप इसकी लोकप्रियता गिरती गई। इसलिए अपने प्रारंभ होने के 42वें वर्ष अर्थात् 1994 में इसे बंद कर देना पड़ा।

4.2 दूरदर्शन एवं सिने-पत्रकारिता

संचार शास्त्री डेविड वेंगराइट का कहना है-“*Journalism is the television picture became by satellite direct from some warzone, showing men dying in agony in accurate color, it is the television picture of a man stepping on to the surface of the moon, seen in millions of homes as it happens.*”¹⁴

अर्थात् पत्रकारिता सैटेलाइट द्वारा उपलब्ध कराई गई टीवी की तस्वीरें हैं। इसमें युद्ध क्षेत्र की ऐसी तस्वीरें पेश की जाती हैं, जिसमें मानव की मृत्यु को वास्तविक रंगों में दिखाया जाता है। टीवी ने मानव द्वारा चंद्रमा पर कदम रखने का प्रसारण करोड़ों लोगों तक पहुंचाया। टी.वी. ने घटनाओं या समाचार को घटित होते हुए दिखाने की शुरुआत की जिसकी वजह से संचार में क्रांति आ गई। इसने विश्व संचार परिदृश्य ही बदल दिया है।

सन् 1922 में जेकिंस नीज (अमेरिका) ने यांत्रिक दूरदर्शन बनाकर उसका प्रदर्शन किया। इस कड़ी में सन् 1927 भी एक महत्वपूर्ण साल रहा है क्योंकि इसी साल न्यूयार्क और वाशिंगटन के बीच टेलीफोन प्रयोगशाला द्वारा भेजे गए सिग्नल द्वारा पहला टेलीविजन कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। वैज्ञानिक फाइलों टेलर फनर्बर्थ ने टेलीविजन का आविष्कार किया। उन्होंने प्रकाश किरणों को विद्युत संकेतों में परिवर्तित कर अथक परिश्रम से अनंत टी.वी. बनाने में सफलता प्राप्त की।

4.2.1 टी.वी. का विकास

सन् 1939 में न्यूयार्क में विश्व मेला का आयोजन किया गया। उस समय अमेरिका के राष्ट्रपति फ्रैंकलिन डी रूजवेल्ट थे। मेले में पहली बार नियमित टी.वी. कार्यक्रम दिखाया गया, जिसके अंतर्गत राष्ट्रपति फ्रैंकलिन डी रूजवेल्ट को टी.वी. में दिखाया गया (टी.वी. में दिखाए जाने वाले पहले राष्ट्रपति)। प्रस्तुत कार्यक्रम को डेविड सारनॉफ द्वारा दिखाया गया। इस प्रकार सारनॉफ द्वारा एक साल तक न्यूयार्क के आर.सी.ए. स्टेशन से टी.वी. के कार्यक्रम प्रस्तुत किए जाते रहे। ये कार्यक्रम सामान्य जनता के लिए थे। इसके पहले जो भी कार्यक्रम प्रस्तुत होते रहे, वे प्रायोगिक थे और सामान्य जनता के लिए नहीं थे।

¹⁴-संपूर्ण पत्रकारिता, अर्जुन तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, चतुर्थ संस्करण, 2014, पृ. 375

4.2.2 द्वितीय विश्व युद्ध एवं टेलीविजन

सन् 1941 में टी.वी. के 18 व्यवसायिक स्टेशनों के निर्माण पर आम सहमति बनी, परंतु द्वितीय विश्व युद्ध शुरु हो जाने के कारण इसे पूर्ण नहीं किया जा सका। विश्व युद्ध के बाद इसके विकास पर तेजी से कार्य किया गया। इसी क्रम में 15 सितंबर 1959 को यूनेस्को के सहयोग से भारतीय लोगों को भी टी.वी. देखने का अनुभव प्राप्त हुआ। इसके 06 साल बाद 15 अगस्त, 1965 से भारत में नियमित रूप से प्रतिदिन एक घंटे का टी.वी. कार्यक्रम दिखाया जाने लगा। वैज्ञानिक विकास ने दूरसंचार एवं दूरदर्शन की गुणवत्ता एवं उपलब्धता को सहज व सरल बना दिया।

4.2.3 भारत में टेलीविजन का विकास

भारत में टेलीविजन विकास में तेजी सन् 1960 के बाद आया। सन् 1964 ई. में दिल्ली में टेलीविजन केंद्र स्थापित किया गया। धीरे-धीरे पूरे देश में इसके प्रसारण को व्यापक बनाया गया। 15 अगस्त 1982 से भारत में रंगीन दूरदर्शन का सूत्रपात हुआ। नवंबर 1982 में नवें एशियाई खेलों को दूरदर्शन के माध्यम से प्रदर्शित करने हेतु 100 वाट के 20 ट्रांसमीटर आयात किए गए। इनके द्वारा देश के दूरस्थ क्षेत्रों में दर्शकों ने दूरदर्शन का आनंद उठाया गया। भारत में पहला स्वदेशी उपग्रह इनसेट-1-ए अप्रैल 1982 में छोड़ा गया जिसके कारण राष्ट्रीय कार्यक्रमों का एक साथ प्रसारण सम्भव हुआ.... 1984-1985 तक यह माध्यम सारे देश के घर-घर में पहुंच गया। इसकी प्रसारण अवधि भी सारे देश में क्षेत्रीय कार्यक्रमों के साथ राष्ट्रीय कार्यक्रमों के रूप में बढ़ गई। धारावाहिकों और राष्ट्रीय प्रसारणों ने दर्शकों की रुचियों में परिवर्तन प्रारंभ कर दिया। नेटवर्क कार्यक्रमों ने संस्कृति, साहित्य, कला एवं जीवनपयोगी प्रसारणों द्वारा जनता को गौरवान्वित किया है। कुतुबमीनार से भी तीन गुना ऊंचे पीतमपुरा टी.वी. टावर का उद्घाटन 1988 में हुआ।¹⁵

सन् 1982 में राष्ट्रीय प्रसारण सेवा की शुरुआत की गई। उस समय सिर्फ एक चैनल था, जिसे दूरदर्शन¹⁶ कहा जाता था। 1982 के बाद दूरदर्शन के प्रति लोगों की दिलचस्पी में अचानक उछाल आया। लोग बड़े पैमाने पर टी.वी. सेट खरीदने लगे। व्यापक जनरुचि को एक चैनल द्वारा पूरा कर पाना असंभव प्रतीत होने लगा। इसलिए भारत सरकार ने ऐसे चैनल को खोला जिसमें राष्ट्रीयता के साथ क्षेत्रीयता का भी समावेश था। इस चैनल को डीडी

¹⁵-संपूर्ण पत्रकारिता, अर्जुन तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, चतुर्थ संस्करण, 2014, पृ. 377

¹⁶-Doordarshan (often abbreviated DD) is autonomous India's Central Government founded Public Service Broadcaster a division Prasar Bharti.

2 कहा गया, जिसे बाद में डी.डी. मेट्रो का नाम दिया गया। दूरदर्शन के कार्यक्रम संचारगत वैज्ञानिक आविष्कारों से जन-जन तक पहुँचाए गए।

“PAS-1 and PAS-4 are satellites whose transponders help in the telecasting of DD programmes in half the regions of the world an international channel called DD International was started in 1995 and it telecasts programmes for 19 hours a day to foreign countries via PAS-4 to Europe, Asia and Africa and via PAS-1 to North America.”¹⁷

अर्थात् पीएएस-1 और पीएएस-4 वह सैटेलाइट सूचना प्रदाता हैं, विश्व के आधे हिस्से में दूरदर्शन की सेवा उपलब्ध कराते हैं। इस चैनल को डीडी इंटरनेशनल कहा जाता है और इसकी शुरुआत 1995 में हुई। यह एक दिन में 19 घंटे का प्रसारण देते हैं। पीएएस के द्वारा यूरोप, एशिया और अफ्रिका को सेवा दिया जाता है, जबकि पीएएस द्वारा उत्तरी अमेरिका को।

4.2.4 दूरदर्शन के कार्यक्रम एवं सिने-पत्रकारिता

वर्तमान में दूरदर्शन के तमाम चैनलों द्वारा सिने-सामग्री प्रस्तुत की जाती है। भारत में इस समय लगभग 690 उपग्रह चैनल (जिसमें 80 समाचार चैनल) हैं। ऐतिहासिक विकास क्रम की दृष्टि से देखा जाए तो ज्ञात होता है कि टेलीविजन की विकास यात्रा राष्ट्रवाद व उपनिवेशवाद के दौर से शुरू हुई। नब्बे के दशक में भूमंडलीकरण की जो शुरुआत हुई वह आज भी जारी है। किंतु इतनी विपरीत परिस्थिति में भी टेलीविजन पर प्रतिरोधी सिने-समाचार प्रसारित किए जा सके एवं फिल्में बनाई जा सकीं और दिखाई जा सकीं।

4.2.5 भारतीय राष्ट्रीय चैनल एवं सिने-पत्रकारिता

वर्तमान में राष्ट्रीय चैनलों की संख्या 05 हैं- डीडी 1, डीडी न्यूज, डीडी भारती, डीडी स्पोर्ट्स और डीडी उर्दू। डीडी स्पोर्ट्स के अतिरिक्त सभी चैनलों पर सिने-सामग्री (समाचार, साक्षात्कार, फिल्मों का विश्लेषण एवं फिल्में, फीचर फिल्म व डॉक्यूमेंट्री) प्रस्तुत की जाती है। सिनेमा से संबंधित प्रस्तुति रात्रि 08.30 बजे से मध्य रात्रि तक होती है जिसमें शुक्रवार, शनिवार और रविवार को फीचर फिल्में दिखाई जाती हैं साथ ही माह के अंतिम रविवार को पुरस्कृत क्षेत्रीय फिल्मों का प्रसारण भी शामिल है। ये फिल्में राष्ट्रीय स्वर्ण पदक एवं रजत पदक से

¹⁷-टेलीविजन इन इंडिया विकिपीडिया।

सम्मानित हुई होती हैं। प्रसार भारती ने उदयीमान फिल्म निर्माताओं द्वारा बनाए गए वृत्तचित्रों को प्रसारित करने का भी प्रावधान किया है, जिन्हें रात्रि 09.30 बजे डी.डी. नेशनल पर प्रसारित किया जाता है। राष्ट्रीय चैनल शुरू होने के साथ सिने-कलाकारों की उपस्थिति दूरदर्शन पर दिखाई पड़ने लगी। अशोक कुमार जैसे अभिनेता का सहयोग टी.वी. के कई धारावाहिकों को प्राप्त हुआ। उन्होंने प्रथम टी.वी. धारावाहिक 'हम लोग' (सूत्रधार की भूमिका) में काम किया साथ ही बहादुर शाह जफर और भीम भवानी में मुख्य किरदार का रोल किया। उनके द्वारा अभिनीत अंतिम धारावाहिक 'उजाले की ओर' था। सिने-पत्रकारिता के लिए दूरदर्शन (डीडी1) के कार्यक्रमों की रूप-रेखा देख लेने से ज्ञात हो जाएगा कि यहाँ सिने-सामग्री प्रस्तुत करने का क्या स्वरूप है। दरअसल दृश्य जनसंचार माध्यमों में सिने-पत्रकारिता का स्वरूप वही नहीं है जैसा मुद्रण माध्यमों में होता है। दृश्य-श्रव्य जनसंचार माध्यमों में स्वयं सिने-पत्रकारिता की प्रस्तुति शेष पत्रकारिता से बहुत भिन्न होती है। इसका कारण यह है कि सिनेमा और सिने-पत्रकारिता को आज भी मनोरंजकपूर्ण माध्यम के रूप में देखा जाता है। इसलिए सिनेमा पत्रकारिता कभी-कभी पेज श्री जर्नलिज्म तो कभी-कभी यलो जर्नलिज्म के रूप में भी दिखाई पड़ती है। दूरदर्शन द्वारा प्रस्तुत सिने-पत्रकारिता एवं सिने-प्रस्तुति में गंभीरता पायी जाती है। देखिए सिने कार्यक्रमों की यह सूची-

1. भारतीय सिनेमा की श्रेष्ठता
2. बाईस्कोप सिनेमा
3. शनिवार जुबली
4. संडे मेट्रो
5. संडे एच.बी.एन
6. फ्राइडे हाउसफुल

इन कार्यक्रमों के संदर्भ को जानने के लिए थोड़ा विस्तार आवश्यक प्रतीत होता है-

4.2.5.1 भारतीय सिनेमा की श्रेष्ठता

इस कार्यक्रम के विषय में कहा गया है- *“As many as 104 award winning and critically acclaimed films are being showcased by Doordarshan under the initiative ‘Best of Indian Cinema’*

as a part of the Bi-weekly initiative which started in November 2013, DD has been screening multilingual films such as 'Maati Maay' by Chitra Palikar, 'Harud' by Amir Basir and 'Kanchivaram' by priyadarshan, among many others"¹⁸

अर्थात् श्रेष्ठ सिनेमा के अंतर्गत दूरदर्शन द्वारा 104 पुरस्कृत फिल्मों दिखाई जाती थीं। इसी तरह दूरदर्शन पर दो सप्ताह वाला एक बहु-भाषीय सिने कार्यक्रम नवंबर 2013 को प्रारंभ किया गया। इसके अंतर्गत चित्रा पॉलिकर की माटी माय, आमिर बसीर की हरुद, प्रियदर्शन की कांचीवरम जैसी भाषाई फिल्मों दिखाई गईं। ये फिल्मों प्रत्येक रविवार और सोमवार को रात्रि 10.00 बजे से दिखाई जाती हैं। इस कार्यक्रम के अंतर्गत श्रेष्ठ हिंदी फिल्मों भी दिखाई जाती हैं-खरगोश (निर्देशक- परेश कामदार) और वन मोर (निर्देशक- शिवाजी चंद्र भूषण)।

4.2.5.2 बाइस्कोप सिनेमा

दूरदर्शन द्वारा सप्ताह में दो दिनों (सोमवार, मंगलवार को) एक-एक घंटे की प्रस्तुति द्वारा किसी महत्वपूर्ण फिल्म के विषय में पूरे विस्तार से बताया जाता है। दूरदर्शन के वेबसाइट पर इस कार्यक्रम के संदर्भ में इस प्रकार जानकारी दी गई है- *"Bioscope is a TV show an feature film."* अर्थात् बायस्कोप फीचर फिल्म का एक टी.वी. कार्यक्रम है।

Format and History- A Hindi feature film is divided into 2 parts and presents on the National channel of Doordarshan by a popular TV Host on 2 consecutive days.

Day one- One every Monday, the host introduces the film along with its main cast and credits. Some interesting facts about the film are also shared with the viewers. Host also reads names of these who has answered the question asked in previous episodes.

Day two- A brief summary of the first part is shared by the host viewers and the names of the winners of filmy axan (quiz) are announced and select letter from viewers is read and replied when the films ends, the host puts before the viewers a question related with film. Film of the next week announced and its glimpses are shown in the end of show.

¹⁸-Doordarshan's Best of Indian Cinema- series to screen 'Shevri', Kontatar and other critically acclaimed films- 07 April, 2014.IBN Live.

Host- presently Tridha is hosting the show which is telecasted an every Tuesday and Wednesday at 11.00 PM. previously it was hosted by Rupali Ganguly.

-bioscope (TV)

इतिहास और स्वरूप

एक हिंदी फीचर फिल्म को दो भागों में बाँटा जाता है। जिसे लोकप्रिय टी.वी. एंकर द्वारा दो क्रमिक दिनों में दिखाया जाता है।

पहला दिन

प्रत्येक सोमवार को टीवी प्रस्तुतकर्ता फिल्म के कलाकारों और फिल्म के विषय में बताता है। साथ ही फिल्म के विषय में कुछ रोचक किस्से भी बताए जाते हैं। एंकर गत सप्ताह में सवाल पूछने वालों का नाम भी पढ़ता है।

दूसरा दिन

पिछले सप्ताह की बातों को संक्षेप में दोहराते हुए टीवी एंकर सही जवाब देने वाले विजेताओं के नाम पढ़ता है। इस समय इसकी प्रस्तुति त्रिधा कर रही हैं। इसके पहले रूपाली गांगुली प्रस्तुत करती थीं। - बायस्कोप (टीवी) हाल ही में इन फिल्मों पर चर्चा हुई- मुस्कान, हर दिल जो प्यार करेगा, अरमान (2003), राजा, राजा जी, हम तो मुहब्बत करेगा और खुदा गवाह।

4.2.5.3 शनिवार जुबली (Saturday Jubilee)

शनिवार जुबली एक महत्वाकांक्षी सिने कार्यक्रम है, जिसमें मुख्य धारा एवं समानांतर सिनेमा, दोनों को क्रमशः दिखाया और बताया जाता है। प्रस्तुत कार्यक्रम के लिए प्रसार भारती की उदघोषणा इस प्रकार है-

Prasar Bharti

(India's Public Service Broadcaster)

DG: Doordarshan

New Delhi

*Announcement for e-auction of Saturday Jubilee slots of Hindi Feature Films
Doordarshan invites applications from 'Films' rights holder, to participate in the e-auction of its Saturday Jubilee Film Slots (at 9.30 Pm on DD National) of Hindi Films,*

Scheduled for telecast from 2nd August to 25th October 2014 (total 13 slots). Those interested may apply as per the guidelines and format of the application placed on the website www.ddindia.gov.in. Last date for the receipt of applications is 23rd May, 2014.

Sd

(A.K. Gandhi)

Dy. Director General (Films)

प्रसार भारती

(जन सेवा प्रसारण, भारत)

डी जी-दूरदर्शन नई दिल्ली।

शनिवार जुबली में हिंदी फिल्मों को दिखाए जाने के लिए समय आवंटन हेतु ई-नीलामी आमंत्रित की जाती है। दूरदर्शन 2 अगस्त से 25 अगस्त 2014 तक कुल 16 खेपों के समय आवंटन के लिए फिल्म स्वात्वाधिकार मालिकों से आवेदन आमंत्रित करता है। यह कार्यक्रम शाम के 9.30 से दूरदर्शन पर प्रसारित होगा। इच्छुक व्यक्ति 23 मई, 2014 तक आवेदन करें। आवेदन पत्र और दिशा निर्देश वेबसाइट www.ddindia.gov.in पर उपलब्ध है।

आज्ञा से

(ए.के. गांधी)

उपनिदेशक (फिल्म)

प्रत्येक तीन माह के बाद इसी तरह आवेदन आमंत्रित किए जाते हैं। यह कार्यक्रम दर्शकों द्वारा बहुत पसंद किया गया। इसलिए इस कार्यक्रम को आगे भी जारी करने का आदेश प्राप्त हुआ। अब तक इस कार्यक्रम के अंतर्गत कई फिल्में दिखाई गईं जैसे- स्वामी (मनोज वाजपेयी, जूही चावला), इश्क (आमिर खान, अजय देवगन, जूही चावला, काजोल) व पान सिंह तोमर (इरफान खान, माही गिल) आदि। प्रस्तुत कार्यक्रम के अंतर्गत शनिवार 27 जून, 2015 को रात 10.00 बजे रेस-2 दिखाई गई। साथ ही इस फिल्म और कलाकारों के विषय में सामग्री भी प्रस्तुत की गई।

4.2.5.4 संडे रेट्रो (Sunday Retro)

क्लासिक हिंदी सिनेमा को प्रोत्साहित करने और आज की पीढ़ी को हिंदी सिनेमा की कलात्मकता से परिचित कराने के लिए इस कार्यक्रम की संकल्पना की गई। इस कार्यक्रम के अंतर्गत कई कालजयी फिल्मों दिखाई गईं, जिनमें कागज के फूल, संसार व सारांश जैसी फिल्मों शामिल हैं।

4.2.5.5 फ्राइडे हाउसफुल (Friday Housefull)

जिस तरह हिंदी फिल्मों प्रायः शुक्रवार को रिलीज की जाती है और उसी दिन तय कर लिया जाता है कि फिल्म कितना चल पाएगी। शुक्रवार को दूरदर्शन के राष्ट्रीय चैनल द्वारा भी फिल्मों दिखाई जाती हैं। जैसे-जेल, ओम शांति ओम, भूतनाथ और मेरे ब्रदर की दुल्हन आदि। इसी प्रकार संडे एच.बी.एन. जैसे अन्य बहुत से सिने कार्यक्रम प्रस्तुत किए जाते हैं। इसी प्रकार एक रविवार को संडे एच.बी.एन. में पूरी सूचना के साथ 28 जून, 2015 को फिल्म 'अमरदीप' को दिखाया गया। दूरदर्शन के इस राष्ट्रीय चैनल के संग्रहालय से बीते दिनों की सिने-प्रस्तुति व सिने-पत्रकारिता के कई आयामों की तथ्यात्मक सूचना प्राप्त होती है। 'हम लोग' से दूरदर्शन पर धारावाहिक की प्रस्तुति का सूत्रपात हुआ। इस धारावाहिक में अशोक कुमार की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। इस धारावाहिक से अशोक कुमार की लोकप्रियता का आकलन इस तथ्य से किया जा सकता है। "हम लोग-आम दर्शकों के 1,50,000 खत अशोक कुमार के लिए आए।"¹⁹

¹⁹-A Tribute to Classic Doordarshan (Website)

4.3 दूरदर्शन के अन्य माध्यम और सिने-पत्रकारिता

आज जिस संचार माध्यम को सबसे तेज एवं लोकप्रिय माना जाता है, वह है दूरदर्शन। इस संचार माध्यम की प्रासंगिकता और इससे जुड़ी आशंका को शुरू में ही महसूस कर लिया गया था- “मेरा विचार है कि अज्ञान से मुक्ति भी उतनी ही आवश्यक है जितनी भूख से मुक्ति...जनसंचार के लिए जो बहुत उपयोगी है, उसमें अपने आप में खतरे का अंश निहित है। इसके अनुसार उसे निजी स्वार्थों के लिए तोड़ा-मरोड़ा जा सकता है।...धनी समूह अथवा धनी राष्ट्र जनसंचार के माध्यम से किसी देश और संसार में अपनी विचारधारा का धुँआधार प्रचार कर सकते हैं जो सही या गलत कैसी भी हो सकती है।”²⁰ नेहरू जी ने जो आशंका व्यक्त की थी वह आज फलीभूत हो रही है। इसीलिए ढाई घंटे की फिल्म का प्रदर्शन साढ़े तीन घंटे में पूरा होता है। बाजार ने दर्शकों के समय पर डाका डाल दिया है। फिलहाल तमाम उतार-चढ़ाव के साथ टी.वी. चैनलों की संख्या में आशातीत वृद्धि हुई है-

“Government has stalled its plan for new television channels as they were bound of the Model code which forbade the government from clearing the deck for the pending channels. The three new channels have got a clearance as on July 28 bringing the total number of channels to 798. Status of permitted private satellite T.V. channels in India as on 28/02/2014.

Permitted private satellite TV channels in India-798

News and Current Affairs Channels-397

Non-news and Current Affairs Channels-401

there have been some changes in the number of channels as the total number of News channels have gone up from 398 to 397 and the General Entertainment has been reduced from 402 to 401.”²¹

Government has stalled its plan for new television channels as they were bound of the Model code which forbade the government from clearing the deck for the pending

²⁰-दूरदर्शन का भारतीय स्वरूप, (जवाहरलाल नेहरू, फ्रीडम ऑफ इंफार्मेशन, 05 मार्च, 1961) प्रकाशन विभाग, पृ.3, संस्करण वर्ष 1985

²¹-Total number permitted TV channels in India as of July is 798, I&B Ministry gives clearance to 3 New Channels

channels. The three new channels have got a clearance as on July 28 bringing the total number of channels to 798.

Status of permitted private satellite T.V. channels in India as on 28/02/2014.

दूरदर्शन का उद्देश्य सत्यम शिवम सुंदरम की स्थापना करना है। इसलिए सूचना, ज्ञान एवं मनोरंजन की प्रस्तुति द्वारा यह भारत को राष्ट्रीयता के सूत्र में बांधने के प्रयास में लगा रहता है। आज जब टेलीविजन के सैकड़ों चैनल आ गए हैं तो स्वाभाविक रूप से सिने-पत्रकारिता का स्वरूप भी व्यापक हो गया है। रामायण, महाभारत धारावाहिक के पहले उसके साथ और उसके बाद के कुछ सालों तक सिने-पत्रकारिता की उपस्थिति चित्रहार (रात्रि के 08 बजे से 08.30 तक) और सिनेमा (प्रत्येक रविवार की शाम 04.00 बजे से) और कभी-कभी क्षेत्रीय सिनेमा के रूप में रहा। टेलीविजन के उस दौर पर संक्षिप्त चर्चा आवश्यक है।

● कैसा था वह दौर?

रामायण धारावाहिक 1987 से शुरू हुआ। उसी दौर में प्रत्येक रविवार को शाम 04.00 बजे से हिंदी फिल्म दिखाई जाती थी। इसके विषय में कहा गया है-

“Sunday Hindi Movie-This program was probably the most anticipated program of the week. In the days before the VCR, this was the only opportunity to watch a Hindi movie outside a movie theater.”²²

अर्थात् संडे मूवी- यह कार्यक्रम पूरे सप्ताह का सबसे बेहतरीन कार्यक्रम था। वीसीआर आने के पहले सिर्फ यही वह माध्यम था, जिससे हिंदी सिनेमा सिनेमा हॉल के अतिरिक्त कहीं अन्यत्र देखा जा सकता था। ऐसे ही समय में 05 फरवरी, 1978 को फिल्म जेवर दिखाई गई थी। फिल्म का निर्देशन बासु चटर्जी ने किया था। फिल्म का सामान्य परिचय इस प्रकार है-

कहानी - शरतचंद्र चटर्जी

संवाद - गुलजार

पटकथा - गुलजार

सहपटकथा लेखन - गुलजार

²²-Mumbai Doordarshan – Black and White TV Era, Amit Paranjape's Blog

कलाकार - अनुपम खेर, आलोक नाथ, रवि वासवानी,
 सुस्मिता मुखर्जी, राकेश पांडेय और संगीतनायक आदि।

संगीत - सलील चौधरी

फिल्मांकन - अजय प्रभाकर

संपादन - कमल सैगल

फिल्म का निर्माण बासु चटर्जी द्वारा किया गया।

श्वेत-श्याम टी.वी. दौर में फिल्में इसी तरह दिखाई जाती थीं। कभी-कभी फिल्म के विषय में भी थोड़ी बहुत जानकारी परोस दी जाती थी, जिसमें मुगले आजम, सेहरा और सिकंदर जैसी फिल्में शामिल हैं।

4.3.1 चित्रहार

रामायण धारावाहिक के समय के पहले फिल्मी गीतों का कार्यक्रम चित्रहार प्रत्येक शुक्रवार रात 08.00 बजे से दिखाया जाता था, जिसके विषय में कहा गया है- *“Chitrahar is a Bollywood songs television program on DD National, Most widely watched in the 1970s. The word literally means a garland of pictures it airs for half hours every Friday on prime-time where the videos of the latest songs in Hindi film (Bollywood) Music are televised.*

*It is the longest running film-based programme in TV history, having started in the 1960s.”*²³

अर्थात् चित्रहार हिंदी फिल्मी गानों का वह प्रोग्राम है, जो 1970 के दशक में डीडी नेशनल के सर्वाधिक देखे जाने वाले कार्यक्रमों में शुमार होता है। चित्रहार का शाब्दिक अर्थ चित्रों की माला है। यह उन दिनों प्रत्येक शुक्रवार को प्राइम टाइम में दिखाया जाने वाले नयी हिंदी फिल्मी गीतों का कार्यक्रम था। सन् 1960 से प्रारंभ होने वाला यह टीवी का सबसे लंबा चलने वाला कार्यक्रम था। प्रकारांतर से इस कार्यक्रम का उद्देश्य ग्रामीण भारत में हिंदी प्रयोग को प्रोत्साहित करना था।

“Chitrahaar has started using same language subtitling (SLS) where Hindi subtitles of the song’s lyrics scroll across the screen. The idea behind SCS is that people

²³-Chitrahaar Wikipedia

who are just learning to read would benefit by reading lyrics of the song they are listening and watching it's an engaging way to promote literacy, specially in villages. This initiative of Doordarshan has been technically supported by Indian Institute of Management, Ahmadabad."²⁴

अर्थात् चित्रहार ऐसा कार्यक्रम था, जिसमें हिंदी फिल्मों के गीतों के बोल टीवी के पर्दे पर चलते रहते थे। इसका उद्देश्य गाने देखते हुए शैक्षिक दर को प्रोत्साहित करना था, खास तौर पर गांवों में। दूरदर्शन के इस कार्यक्रम को तकनीकी सहायता भारतीय प्रबंधन संस्थान अहमदाबाद से प्राप्त हुआ।

4.3.2 रंगोली

आगे चलकर दूरदर्शन (डीडी-1) द्वारा चित्रहार जैसा एक दूसरा हिंदी सिने गीत कार्यक्रम रंगोली प्रारंभ किया गया। इसका प्रसारण प्रत्येक रविवार को प्रातः 08.00 के बीच होता है। इसकी एक खास विशेषता यह है कि शुरू में नए फिल्मी गाने दिखाए जाते हैं, किंतु अंतिम गीत किसी पुराने गायक (फिल्म) का सुनाया जाता है, जो अक्सर के.एल. सहगल का होता है।

²⁴-Chitrahaar Wikipedia

4.4 वर्तमान समय में दूरदर्शन और सिने-पत्रकारिता

वैश्विकता ने जनसंचार के सभी माध्यमों को प्रभावित किया है जिसमें टेलीविजन भी शामिल है। वैश्विकता की एक खास विशेषता यह है कि वह जीवन की सभी घटनाओं में तेजी लाने की कोशिश करती है। इसीलिए फटाफट के इस दौर में सिने-पत्रकारिता के स्वरूप में भी व्यापक बदलाव देखने को मिलता है। चूँकि सिनेमा का व्यवसायिक पक्ष अत्यंत प्रभावी है। इसीलिए आज तमाम टी.वी.चैनलों पर सिने कार्यक्रमों की प्रचुरता है। उदाहरण के लिए राज्यसभा टी.वी.जैसा घोर राजनीतिक समाचार चैनल भी सिने-सामग्री प्रस्तुत करता है। इसमें गुफ्तगू शख्सियत एवं विरासत जैसे कार्यक्रम शामिल हैं। शख्सियत एक ऐसा कार्यक्रम है जिसमें सिने संसार की शख्सियतों को पूरे विस्तार से बताया जाता है। इसमें उनके सिने कर्म के साथ, राजनीतिक और सामाजिक सरोकारों को भी बताया व दिखाया जाता है। इसी तरह राज्यसभा टी.वी. का एक अन्य सिने-कार्यक्रम उनकी नजर उनका शहर है, जिसमें फणीश्वरनाथ रेणु, भूपेन हजारिका, साहिर लुधियानवी, अमृता प्रीतम और गीतकार शैलेन्द्र जैसे फनकारों पर पूरे विस्तार से बताया जाता है। इतने तेजी भरे समय में भी एक घंटे तक बिना किसी नमक मिर्च के शोधपूर्ण सिने-सामग्री प्रस्तुत करना किसी उपलब्धि से कम नहीं है।

4.7 रियलटी शो और सिने-पत्रकारिता आज के दौर में

फिल्म कलाकारों की जीवनचर्या को नजदीक से दिखाए जाने का प्रचलन हॉलीवुड की देन है। इस तरह के कार्यक्रमों ने हॉलीवुड के कलाकारों की सनसनीपूर्ण, यौनमूलक एवं विवादास्पद दिनचर्या को दिखाकर पर्याप्त मोटी रकम अर्जित की। ऐसा ही एक कार्यक्रम है 'बिग ब्रदर'। इस कार्यक्रम की अवधारणा को इंडीमोल²⁵(Endimol) नाम की एक डच मनोरंजन कंपनी (Multiform Entertainment Company) द्वारा नीदरलैंड में विकसित किया गया। वास्तव में यह कंपनी ट्वेंटी वन सेंचुरी फॉक्स (21 Century Fox) से उत्पन्न हुई है। इंडीमोल द्वारा 10 मार्च 1997 को वेरोनिका, नीदरलैंड में हॉलीवुड के मामूली कलाकारों को शामिल करके बिग ब्रदर नाम का कार्यक्रम शुरू किया गया। विवादास्पद मनोभूमि वाले इन कलाकारों से सजे इस कार्यक्रम ने पर्याप्त धनार्जन किया। इसीलिए इसी के तर्ज पर भारत में उसी जैसा कार्यक्रम 'बिग बॉस' 03 नवंबर 2006 को

²⁵-Endimol- Endimol comprises a global network of operations in more than 30 countries and works with over 300 broadcasters, digital platforms and licensees worldwide.

सोनी टी.वी.द्वारा प्रारंभ किया गया, किंतु पहले सत्र के बाद अब इसकी प्रस्तुति कलर्स टी.वी. द्वारा की जाने लगी है। अब तक इस कार्यक्रम के प्रस्तोता एवं विजेता इस प्रकार रहे हैं-

सत्र	प्रस्तोता	विजेता	पुरस्कार राशि
1.	अरशद वारसी	राहुल राय	01 करोड़
2.	शिल्पा शेट्टी	आशुतोष कौशिक	01 करोड़
3.	अमिताभ बच्चन	बिंदु दारा सिंह	01 करोड़
4.	सलमान खान	श्वेता तिवारी	01 करोड़
5.	संजय दत्त	जुही परमार	01 करोड़
6.	सलमान खान	गौहर खान	50 लाख
7.	फराह खान	गौतम गुलाटी	50 लाख

इसके अतिरिक्त सभी टी.वी. चैनलों द्वारा सिने-सामग्री, फिल्म समीक्षा, सिने-समाचार, फिल्म गीत, सिने-साक्षात्कार एवं सिनेमा परिचय के रूप में प्रस्तुत की जाती है, जो स्वयं में बहुत विस्तृत है, जिस पर अलग से शोध कार्य करने की आवश्यकता है।

4.5.1 वीडियो सिने-पत्रकारिता

दूरसंचार माध्यमों के तूफानी विकास ने कई चीजों को सहज, सस्ता और सर्वसुलभ बना दिया है। हालांकि इससे बाजार को भी सहूलियत हुई है, फिर भी कहीं-कहीं इसके बहुत ही जनप्रिय उदाहरण दिख जाते हैं। वीडियो सिने-पत्रकारिता कुछ ऐसा ही माध्यम है। माना जाता है कि वर्तमान समय में बनी हुई फिल्म के लिए थिएटर उपलब्ध कराना एक जटिल प्रक्रिया बन गई है। थिएटर में फिल्म लग भी जाए तो सिने उपभोक्ताओं (सिने दर्शकों) को थिएटर तक ले आना दूसरी बड़ी चुनौती है। इस चुनौती से निपटने के लिए विज्ञापन का सहारा लेना पड़ता है। स्थिति इतनी गिर चुकी है कि फिल्म की प्रायोजित समीक्षा लिखाई/दिखाई जाने लगी है। ऐसे हालात में फिल्म निर्माण और उसका प्रदर्शन एक जटिल और जोखिमपूर्ण प्रक्रिया हो गई है।

सरल, सहज एवं सस्ती फिल्मों के लिए बाजार में जगह लगभग समाप्त हो चुका है। फलस्वरूप हिंदी सिनेमा में एक दौर ऐसा भी आया, जब केवल तड़क-भड़क वाली बड़े बजट की फिल्मों ही बनने लगीं। तभी कुछ अंतराल के बाद सोशल मीडिया का प्रादुर्भाव हुआ, जिसमें सबसे महत्वपूर्ण भूमिका फेसबुक एवं यूट्यूब की रही। फेसबुक जहां एक ओर माउथ पब्लिसिटी का काम करता है, वहीं दूसरी ओर संलग्न वीडियो (यूट्यूब से प्राप्त)

द्वारा फिल्म के विजुअल भी उपलब्ध कराता है जिसे कोई भी अपनी पसंद से चुन सकता है और इसे लोग शेयर करते हैं।

यू-ट्यूब, दृश्य-श्रव्य दुनिया में एक क्रांति जैसी उपलब्धि है। बहुत ही प्रबुद्ध किंतु आर्थिक रूप से कमजोर फिल्मकार अपनी फिल्में बनाकर इससे संलग्न कर देते हैं। संलग्न की गई ये फिल्में मिनटों में ही संसार के हर कोने में पहुँच जाती हैं। यू-ट्यूब की दूसरी विशेषता यह भी है जो इसे जनप्रिय एवं लोकतांत्रिक बनाती है। यू-ट्यूब अपने से संबद्ध वीडियो के लिए पसंद-नापसंद के बारे में टिप्पणी शेयर करने का विकल्प उपलब्ध कराता है। साथ ही वीडियो की विजुअल दर के अनुसार वीडियो निर्माता को भुगतान भी किया जाता है।

4.5.2 यू ट्यूब

यू ट्यूब एक वीडियो जन माध्यम है (*Video-sharing medium*) जिसका अविष्कार फरवरी 2005 में पे पाल द्वारा किया गया। इसका मुख्यालय सैन ब्रुनो, कैलीफोर्निया, संयुक्त राज्य अमेरिका में है। इस समय यह गूगल के सहायक के रूप में कार्य कर रहा है। (*YouTube now operates as one of Google's subsidiaries*)

जिस तरह गूगल सभी प्रकार की सूचनाओं को तत्काल उपलब्ध कराने के लिए जाना जाता है, उसी प्रकार यू-ट्यूब भी वीडियो क्लिप्स, टी.वी. क्लिप्स, संगीत वीडियो, फिल्म एवं वीडियो ब्लॉग खोज कर तत्काल उपस्थित कर देता है। आज के समय में इसके द्वारा मूक-सिनेमा को देखा जा सकता है। राजा हरिश्चंद्र, लंका दहन एवं मोहिनी भष्मासुर के क्लिप्स देखे जा सकते हैं। साथ ही सिने-समाचार को भी देखा-सुना जा सकता है। यहाँ तक कि दुर्लभ सिने-सूचना, साक्षात्कार व तस्वीरें इसके माध्यम से प्राप्त की जा सकती हैं। उदाहरण के लिए दो सिने घटनाओं की चर्चा करेंगे- एक हिंदी सिनेमा से जुड़ी शख्सियत की और दूसरी हॉलीवुड के किसी महत्वपूर्ण व्यक्ति की।

● पृथ्वीराज कपूर का साक्षात्कार

पृथ्वीराज कपूर का एक साक्षात्कार ऑल इंडिया रेडियो, सूचना प्रसारण मंत्रालय द्वारा यू-ट्यूब पर डाउनलोड किया गया है, जिसमें पृथ्वीराज कपूर हिंदी थियेटर के अखिल भारतीय स्वरूप पर चर्चा कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि थिएटर के लिए उन्होंने पूरे देश का भ्रमण किया। लोगों ने समझा कि वे थिएटर के माध्यम से हिंदी का प्रचार-प्रसार कर रहे हैं। इस संदर्भ में उन पर हिंदी वादी होने का आरोप लगा, जिसका उन्होंने सहजता से सामना किया। इस साक्षात्कार में वे कहते हैं- “इस देश में रंगमंचकभी मरा नहीं। मैंने इस देश में 1944 से 1960

तक भ्रमण किया। अर्थात् 16 साल तक देश भ्रमण किया। जहाँ लोग हिंदी नहीं समझते थे, वहाँ भी लोगों ने हमारे शो को बड़ी संख्या में देखा। हमें अपनाया। इस देश में रंगमंचका भविष्य अत्यंत उज्ज्वल है।” यह साक्षात्कार 1 मिनट 58 सेकंड का है।

- **श्वेत-श्याम दौर की अभिनेत्री जीन हार्लव (Jean Harlov)**

यू-ट्यूब पर 08 अप्रैल 2014 को एक क्लिप डाली गई है। यह क्लिप पुराने दौर की ग्लैमरपूर्ण अभिनेत्री जीन हार्लव पर है। इस क्लिप में बताया गया है कि जीन वह अभिनेत्री हैं जिसकी शोहरत 1940 के दौर में बुलंदियों पर थी। अमेरिकी फिल्म इंस्टिट्यूट ने उन्हें ग्रेटेस्ट अभिनेत्री का खिताब दिया हुआ है। अमेरिकी सिने आलोचकों ने भले ही इनकी फिल्म को नहीं सराहा, परंतु दर्शकों की नजर में इनकी फिल्में सुपर-डुपर हिट रहीं। मात्र 26 वर्ष की अवस्था में 07 जून 1937 को इनका देहांत हो गया।

सन् 1937 में उनकी अंतिम फिल्म साराटोगा (Saratoga) प्रदर्शित हुई, जिसने सफलता के सारे कीर्तिमान ध्वस्त कर दिए। बाद में मार्लिन मूनरो ने जीन हार्लव के जीवन पर बनी फिल्म मिसफिट्स (1962) में काम किया, जिसे फिल्म समीक्षकों ने सराहा और इस फिल्म को कई पुरस्कार भी मिले।

- **यू ट्यूब ने लघु फिल्मों के लिए दर्शक और बाजार दिया**

वर्तमान में कई लघु फिल्मों के लिए यू ट्यूब ने एक बड़ा दर्शक समूह उपलब्ध कराया है। इसके माध्यम से कुछ चर्चित लघु फिल्में इस प्रकार हैं-

- **टाइम**

एक बालक, जो प्राथमिक विद्यालय में पढ़ाने वाली अपनी शिक्षिका से प्यार करता है। वह बहुत गरीब परिवार से है। शिक्षिका सभी बच्चों की तरह उसे भी चाहती है, चूंकि वह पढ़ाई में कमजोर है तो उसे वह निःशुल्क ट्यूशन देती है। बालक सालाना परीक्षा में न केवल प्रथम श्रेणी में पास होता है बल्कि पूरी कक्षा में तीसरा स्थान हासिल करता है।

वह शिक्षिका बहुत खुश होती है और कहती है-“विजय एक दिन तुम बहुत बड़े आदमी बनोगे।” फिर वह विवाह कर नासिक चली जाती है। लड़का डॉक्टर बनता है। एक दिन वह शिक्षिका उसी की डिस्पेंसरी में आती है। वह बूढ़ी हो चुकी है। उसके पास पैसे नहीं हैं। डॉक्टर उसका एकसरे देखता है और ज्ञात होता है कि उसके घुटने खराब हो चुके हैं। वह कहता है कि आपके घुटने बदलने होंगे, सर्जरी करनी होगी। शिक्षिका कहती है-“डॉक्टर

साहब, कोई दर्द निवारक दवा दे दें। मैं बहुत गरीब हूं। घुटने बदलवाने और सर्जरी के पैसे नहीं हैं मेरे पास।” डॉक्टर बहाना बनाते हुए कहता है-“हमारा एक एन. जी. ओ. है। वहां आपका पूरा इलाज फ्री में हो जाएगा।” शिक्षिका खुश हो जाती है। वह डॉक्टर के चेंबर से बाहर आ जाती है। डॉक्टर एक दूसरे डॉक्टर को फोन करके आपरेशन की तैयारी करा देता है और कहता है कि मैं पूरा खर्च जमा कर दूंगा।

फिल्म के अगले दृश्य में वह औरत डॉक्टर और नर्स के साथ खड़ी नजर आती है। डॉक्टर उन्हें लिफ्ट की पेशकश करते हुए कहता है-“आइए आप लोगों को छोड़ दूँ” दोनों गाड़ी में बैठ जाते हैं। वह शिक्षिका उसे संतरा देती है जैसे बचपन में देती थी। नर्स मना कर देती है, किंतु डॉक्टर संतरे का एक टुकड़ा ले लेता है। गाड़ी मंजिल की ओर बढ़ती जाती है। प्रस्तुत फिल्म की लंबाई (अवधि) 10.53 मिनट है। इसकी कहानी अहमद फैयाज ने लिखी है। अभिनय किया है-विक्रम साहू, अमरदीप झा, पिया सुकन्या, गौरव कानन एवं कजली ने। चित्रांकन-राजवल ओलिवरन, संपादन संजय कंगले, ध्वनि-हर्ष कोहली ने किया है। निर्देशन एवं पटकथा लेखन आरती एस बागड़ ने किया और निर्माण ओक पब्लिशिंग एवं हुमर मुवी डॉट काम ने किया है।

● ए लिटल बिट ऑफ लाइफ

हम सभी की जिंदगी कहानियों की तरह नहीं होती परंतु हर किसी के जीवन की एक कहानी जरूर होती है- जैसे वाक्य से शुरू होने वाली यह एक लघु फिल्म है, जिसकी लंबाई 15.1 मिनट है। फिल्म में चार किरदार हैं जिसमें दो लड़के एवं दो लड़कियां हैं। चारों एक इंजीनियरिंग कॉलेज में पढ़ते हैं और परस्पर दोस्त हैं। सबके अपने ख्वाब हैं सबकी अपनी मंजिलें हैं, फिर भी उनमें एक दूसरे की फिक्र और एक दूसरे के उसकी मंजिल तक पहुँच जाने की दुआ भी है। फिल्म में यह बताने की कोशिश की गई है कि जिंदगी को अलग अलग मोड़ों पर अलग-अलग तरह के सवालों का सामना करना पड़ता है, जिसमें कुछ सवालों के जबाब कभी नहीं मिलते। हो सकता है कि कोई इन सवालों के जबाब न पाने से परेशान हो सकता है तो साथ ही यह भी हो सकता है कोई किसी भी सवाल से परेशान न हो और मजे में रहता हो। इस तरह हर किसी के जीने का अपना रंग-ढंग होता है और हमें उसका सम्मान करना चाहिए। फिल्म के अंत में अल्बर्ट कामू का वक्तव्य दिया गया है-

“the only way to deal with unfree world is to become so absolutely free that your very existence is a act of rebellion” अर्थात् इस परतंत्र जगत से निपटने का सही तरीका यही है कि आप पूर्ण स्वतंत्र हो कर जी लें और यह एक तरह की विद्रोहात्मक गतिविधि है। फिल्म का लेखन एवं निर्देशन एस के कार्तिक ने किया है।

● आई एम कलाम

इस फिल्म का निर्माण सन् 2011 में किया गया। निर्माण कंपनी थी स्माइल फाउंडेशन और निर्देशक थे विला माधव पंडा। इसके मुख्य पात्र छोटू का किरदार हर्ष मायर ने निभाया है। यह फिल्म 12 मई 2010 को कांस फिल्म महोत्सव में दिखाई गई। यह फिल्म कई फिल्म महोत्सवों में दिखाई गई और सम्मानित की गई। कांस फिल्म महोत्सव के पहले इसे डॉ. ए.पी.जे.अब्दुल के निवास स्थान पर विशेष रूप से उनके लिए 29 जुलाई, 2011 को दिखाया गया। फिल्म को तमाम अंतरराष्ट्रीय ख्यातियां प्राप्त हुईं, किंतु इतने के बाद भी इसे व्यापक रूप से भारत में प्रदर्शित नहीं किया जा सका। कुछ मैट्रो शहरों को छोड़ दिया जाए तो शेष शहरों और कस्बों में यह फिल्म प्रदर्शित नहीं की जा सकी। बाद में इसे यू-ट्यूब पर उपलब्ध कराया गया, जिसे 335632 लोगों ने देखा। साथ ही कई हजार लोगों ने इसे शेयर किया। यू-ट्यूब के विकल्प के कारण यह फिल्म उन सभी के लिए उपलब्ध हो सकी जिनके लिए थिएटर जाना सम्भव नहीं है या जिन शहरों में इस तरह की फिल्में दिखाई नहीं जाती हैं। साथ ही यू-ट्यूब पर किसी भी फिल्म को टुकड़े-टुकड़े में दो तीन दिन में देख पाना भी संभव है। या कोई जब चाहे, तब देख सकता है।

वीडियो सिने-पत्रकारिता के माध्यम से सिनेमा के विषय में विस्तार एवं प्रस्तुति की गंभीरता का भी समावेश हो सका है। सस्ता माध्यम होने के कारण जीवन के सूक्ष्म से सूक्ष्म विषयों पर लघु फिल्में बनने लगी हैं, जिनके विषयों में खेती-किसानी, बाढ़, गरीबी, भुखमरी, अमीरी, पेंसिल, कॉपी, फूल, पहाड़, पत्ते यहाँ तक कि खिड़कियाँ भी शामिल हैं।

4.5.3 क्या है लघु फिल्म?

सबसे प्रमुख शार्ट फिल्म है *Hemp of Victory* जो द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान यूनाइटेड स्टेट्स, डिपार्टमेंट ऑफ एग्रीकल्चर द्वारा निर्मित की गई। ध्यान दिया जाए तो मूक दौर की फिल्में शार्ट फिल्में ही हुआ करती थीं। शार्ट फिल्म को तकनीकी रूप से मोशन पिक्चर कला एवं विज्ञान अकादमी (*Motion Picture Art and Science*)²⁶ ने परिभाषित किया है-“एक वास्तविक लघु फिल्म 40 मिनट में पूरी हो जानी चाहिए” (*An original Motion Picture that has running time of 40 Minutes or less, including all credits*)²⁷ इसमें आगे यह भी बताया गया है कि लघु फिल्मों का विषय भी छोटा होता है। फिलहाल लघु फिल्मों की श्रेणियां हैं-

²⁶-The Academy of Motion Picture Arts and Science is a professional honorary organization dedicated to the advancement of the Arts and Science of Motion Pictures - www.oscar.org

²⁷-Shortfilmwiki

1. मूक लघु फिल्म

2. लघु डॉक्युमेंट्री फिल्म

3. लोकवादी लघु फिल्म

4. डी लघु फिल्म

5. एनेमिटेड लघु फिल्म

4.5.4 डॉक्युमेंट्री फिल्म

आज कई अभिकरणों द्वारा युद्ध, महामारी, आतंकवाद, महान साहित्यकार, वैज्ञानिक एवं आदिम जातियों पर फिल्में बनने लगी हैं। यह दृश्य-श्रव्य माध्यम का वह प्रकार है जिसमें सिनेमा और पत्रकारिता दोनों का समावेश होता है। डॉक्युमेंट्री फिल्म²⁸ में किसी विषय को पूरी प्रामाणिकता से प्रस्तुत किया जाता है। डॉक्युमेंट्री फिल्मों के प्रकार और प्रवृत्ति के आधार पर डॉक्युमेंट्री फिल्में निम्नलिखित प्रकार की होती हैं-

4.5.4.1 कहानी डॉक्युमेंट्री

इस प्रकार की डॉक्युमेंट्री किसी कहानी पर आधारित होती है।

4.5.4.2 यात्रा वृत्तांत डॉक्युमेंट्री

इस प्रकार की डॉक्युमेंट्री में तथ्य नहीं बल्कि दृश्य तय किए जाते हैं। निश्चित विषय के अनुकूल दृश्य सामग्री, घटनाएं, साक्षात्कार आदि का संकलन करके कैमरामैन प्रयोगशाला पहुँचाता है, जहाँ पटकथा लेखक इसमें आवश्यक संवाद जोड़ता है। “यात्रा में आने वाली कठिनाइयों, दृश्य, मौसम, स्थान, लोगों के चरित्र, खान-पान, निवासियों के कथन, वृत्तांत आदि को चित्रों एवं ध्वनि के माध्यमों से दिखाने वाली चित्रकथा इस विधा में आती है।”²⁹

4.5.4.3 सामाजिक डॉक्युमेंट्री

इसमें सामाजिक रीति-रिवाज, मानसिकता, जागरूकता आदि का समावेश होता है। सामुदायिक सौहार्द एवं बंधुता के लिए इस तरह की डॉक्युमेंट्री का इस्तेमाल किया जाता है।

²⁸-A Documentary film is a nominational Motion picture intended to document some aspect of reality, primarily for the purpose of instruction or maintaining a historical record such films were regionally shot on film stock- the only medium available- but now include video and digital productions that can be either direct to video made into a TV show or released for screening in cinemas – Documentary Film Wikipedia.

²⁹-संपूर्ण पत्रकारिता, डॉ. अर्जुन तिवारी, चतुर्थ संस्करण, 2014, वि.वि. प्रकाशन, पृ. 413

4.5.4.4 शोधपरक डॉक्युमेंट्री

इस तरह की डॉक्युमेंट्री में किसी विषय के अनुसंधानात्मक पक्षों को गहराई से दिखाया जाता है। खासतौर पर विज्ञान जगत की डॉक्युमेंट्री शोधपरक होती है किंतु यह ऐतिहासिक इमारतों एवं स्थलों से भी संबंधित हो सकती है।

4.5.4.5 ऐतिहासिक डॉक्युमेंट्री

ऐतिहासिक डॉक्युमेंट्री भी अनुसंधान या शोध डॉक्युमेंट्री ही है जिसमें ऐतिहासिक व्यक्तित्वों, सामाजिक-सांस्कृतिक चेतना आदि के ऐतिहासिक संदर्भों को दिखाया जाता है। डॉक्युमेंट्री पर डॉ. अर्जुन तिवारी ने लिखा है-“किसी विशेष धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक समस्याओं में संपृक्त मनोरम चलचित्र ही वृत्तचित्र है जिससे दर्शक की ज्ञान वृद्धि होती है। इसमें कथा, रूपक, मनोरंजन का तत्व गौढ़ होता है किंतु तथ्यपरक सूचना की प्रधानता होती है। शिक्षा, सूचना तथा संदेश की प्रधानता के कारण वृत्तचित्र को विशुद्ध जनसंचार माध्यम कहा जा सकता है। मुद्रित संचार माध्यम में जो स्थान ‘फीचर’ (रूपक) का है, वही स्थान श्रव्य-दृश्य संचार में वृत्तचित्र का है।....ओरियंटल फिल्म कंपनी के सुचेत सिंह द्वारा निर्मित लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक के अंतिम संस्कार से संबंधित वृत्तचित्र ‘दि क्रिमिनेशन ऑफ द लेट लोकमान्य तिलक’ बहुचर्चित था। ऐसा ही एक ऐतिहासिक वृत्तचित्र 6 अप्रैल 1930 को बापू की दांडी यात्रा पर बना जिसके निर्माता नानक मोरवानी थे। अपने देश में 1 फरवरी 1943 को इनफार्मेशन फिल्म्स ऑफ इंडिया की स्थापना की गई।”³⁰

सूचना के अगले हिस्से में डॉ. तिवारी कुछ महत्वपूर्ण जानकारी देते हुए कहते हैं कि इनफार्मेशन फिल्म्स ऑफ इंडिया ने *Indian News Parade* के नाम से वृत्तचित्र बनाया। वृत्तचित्रों में ‘*Our Heritage*’, ‘*The Golden River*’ व ‘*A tree wealth*’ भी महत्वपूर्ण मानी जाती हैं। सन् 1948 में भारतीय चलचित्र विभाग (*The films Division of India*) की स्थापना श्री मोहन भवनानी द्वारा की गई। इसने ‘*A Private life of a silkworm*’ (1950), ‘*The story of steel*’ (1951), ‘*Mahabalipuram*’ (1952), ‘भारत दर्शन’ (1956), ‘*Calls of Mountains*’ (1959) व ‘*Tajmahal*’ (1960) का निर्माण किया, जो काफी रोचक व ज्ञानवर्धक वृत्तचित्र हैं।

³⁰ - संपूर्ण पत्रकारिता, डॉ. अर्जुन तिवारी, चतुर्थ संस्करण, 2014, वि.वि. प्रकाशन, पृ. 413

4.5.4.6 साहित्य अकादमी द्वारा डॉक्युमेंट्री निर्माण

साहित्य अकादमी समय-समय प्रतिष्ठित साहित्यकारों पर वृत्तचित्र बनाती है। ये वृत्तचित्र प्रबुद्ध लेखकों या ख्याति प्राप्त निर्देशकों द्वारा बनाए गए हैं जो इस प्रकार हैं-

वृत्तचित्र	समय अवधि	निर्देशक
अमृता प्रीतम	60 मिनट	बासु भट्टाचार्य
अख्तर-उल-ईमान	60 मिनट	सईद मिर्जा
वी.के. गोकाक	60 मिनट	प्रसन्न
तकासी शिवशंकर पिल्लई	60 मिनट	एम.टी.वासुदेवन नायर
गोपालकृष्ण अडिगा	60 मिनट	गिरिश कर्नाड
विष्णु प्रभाकर	60 मिनट	प्रभा सचदेव
बालमनी अम्मा	30 मिनट	मधुसूदन
विंदा करंदीकर	60 मिनट	नंदन कुदयदि
आनंद शंकर राय	60 मिनट	बलदेव ओम गुप्ता
हरभजन सिंह	30 मिनट	दीपक राय
धर्मवीर भारती	30 मिनट	उदय प्रकाश
सचिरावत राय	30 मिनट	बिजोय केतन मिश्रा
श्री जयकांतन	30 मिनट	एस ए कंडासामी
नारायण सुर्वे	30 मिनट	दिलीप चित्रे
भीष्म साहनी	30 मिनट	नंदन कुदयानी
सुभाष मुखोपाध्याय	30 मिनट	राजा सेन
ताराशंकर बंधोपाध्याय	30 मिनट	अमिया चट्टोपाध्याय
विजयदान देशा	30 मिनट	उदय प्रकाश
नवकांत बरुआ	30 मिनट	गौतम बोरा
मुल्कराज आनंद	30 मिनट	सुरेश कोहली

कुर्तुलुन हैदर	30 मिनट	मजहरक्यू कामरान
त्रिलोचन शास्त्री	30 मिनट	सत्य प्रकाश
रहमान राही	30 मिनट	एम.के. रैना
केदारनाथ सिंह	30 मिनट	विक्रम सिंह
कुंवर नारायण	30 मिनट	विक्रम सिंह
यशपाल	30 मिनट	कामना प्रसाद
कृष्णा सोबती	30 मिनट	संजोय सिंह

(स्रोत : साहित्य अकादमी की वेबसाइट)

4.6 इंटरनेट एवं सिने-पत्रकारिता

सूचना प्रौद्योगिकी के नवीनतम एवं तीव्रतम संचार माध्यम का नाम है- इंटरनेट। वैश्विकता की संकल्पना को साकार करने में इंटरनेट की महत्वपूर्ण भूमिका है। मीडिया विशेषज्ञ डॉ. अर्जुन तिवारी का मानना है-“सूचना प्रौद्योगिकी के अधिकाधिक प्रयोग एवं इंटरनेट के विस्तार के कारण मानव जीवन की विभिन्न क्षेत्रों की गतिविधियों में क्रांतिकारी परिवर्तन आए हैं। इसका प्रभाव समाज की अर्थव्यवस्था एवं प्रशासनिक व्यवस्था पर व्यापक रूप से पड़ा है।”³¹ अर्जुन तिवारी के संकेत को यदि फिल्म पत्रकारिता पर लागू किया जाए तो ज्ञात होता है कि इंटरनेट ने सिने पत्रकारिता की उपलब्धता, व्यापकता एवं विश्वसनीयता को बहुत बढ़ा दिया है, किंतु आगे बढ़ने से पहले इंटरनेट की संक्षिप्त जानकारी लेना आवश्यक है।

4.6.1 इंटरनेट क्या है?

इंटरनेट का हिंदी पर्याय अंतरजाल है अर्थात् एक दूसरे से जुड़े संगणकों का एक विशाल विश्वव्यापी जाल। अंतरजाल से जुड़े हुए संगणक आपस में अंतरजाल नियमावली (Internet Protocol) के जरिए सूचना का आदान-प्रदान करते हैं। संगीत, चलचित्र, वीडियो के इलेक्ट्रॉनिक स्वरूप का आदान-प्रदान भी अंतरजाल के जरिए होता है।

4.6.2 भारत में इंटरनेट

भारत में इंटरनेट का आगमन 80 के दशक में हुआ। शैक्षिक अनुसंधान संजाल (*Educational & Research Network*) ने भारत सरकार के इलेक्ट्रॉनिक विभाग और संयुक्त उन्नतिकार्यक्रम (GNDP) की ओर से प्रोत्साहन प्राप्त किया। सामान्य उपयोग के लिए इसे 15 अगस्त 1995 को अर्जित किया गया। हाल ही में जारी एक रिपोर्ट से पता चलता है कि भविष्य में हमारे देश में इंटरनेट उपलब्धता समाप्त हो सकती है, जिसका कारण इंटरनेट उपयोगकर्ताओं की बढ़ती संख्या एवं इंटरनेट सर्विस प्रोवाइडरों की घटती उपलब्धता बताई जाती है। इंटरनेट द्वारा संचार एवं सूचना के क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन आए हैं। खासतौर पर कम्प्यूटर एवं मोबाइल पर इसकी उपलब्धता ने व्यक्ति (उपभोक्ता) को सजग सूचना एवं मनोरंजन प्रेमी बना दिया है।

³¹-ई-जनलिंजम, संपूर्ण पत्रकारिता, अर्जुन तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, पृ. 438

4.7 सोशल मीडिया-व्यक्ति विशेष द्वारा सिने-पत्रकारिता

कम्प्यूटर, मोबाइल और इंटरनेट ने सूचनाओं के आदान-प्रदान में अभूतपूर्व सहजता और सरलता ला दी है। अब व्यक्ति स्वयं में सूचना प्राप्तकर्ता व प्रदाता की हैसियत में आ गया। इससे व्यक्ति पत्रकारिता (Personal Journalism) अस्तित्व में आई। व्यक्ति स्वयं की इच्छा से एक आभासी सूचना समाज (Virtual Social Media) की सर्जना हुई, जहाँ वह सूचना दे सकता है, ले सकता है। दरअसल इससे एक ऐसा व्यक्ति और समाज बना, जो सूचना संपन्न होने की राह पर था। इन्हीं सब कोशिशों से व्यक्ति विशेष सिने-पत्रकारिता का विकास हुआ। अब खुद फिल्मकार भी इन माध्यमों द्वारा अपने प्रशंसकों से संवाद करने लगे हैं। प्रशंसकों द्वारा पूछे गए सिने सवाल के अतिरिक्त व्यक्तिगत जीवन की जानकारी भी दी जाने लगी है। फिल्म से जुड़ी तमाम जानकारियाँ विश्वसनीय स्रोतों से प्राप्त होना किसी चमत्कार से कम नहीं है।

व्यक्ति विशेष सिने-पत्रकारिता के आयाम

व्यक्ति विशेष सिने-पत्रकारिता के निम्नलिखित आयाम हैं-

4.7.1 फेसबुक (Facebook)

यह एक ऑन लाइन सोशल नेटवर्किंग सेवा है, जिसकी प्रतिस्थापना मार्क जुकरबर्ग ने अपने साथियों एवं हारवर्ड विश्वविद्यालय के शोधार्थियों ऐंड्रैव मैकलम, दस्तिन मोस्को विट्ज व क्रिस हग्स के सहयोग से 04 फरवरी 2014 को की। इसका मुख्यालय मेनलो मुख्यालय, कैलिफोर्निया (संयुक्तराज्य अमेरिका) में स्थित है। आज फेसबुक समूहबद्ध एवं व्यक्ति संप्रेषण का महत्वपूर्ण जनमाध्यम बन चुका है। इस पर सिने-सामग्री प्रचुरता से प्राप्त होती है।

इंग्रिड बर्गमैन, ग्रेटा गार्वो, मर्लिन मुनरो, चार्ली चैपलिन, एलिजाबेथ टेलर, मोतीलाल, कन्हैया, लीला नायडू, भारत भूषण, दिलीप कुमार, प्राण, देव आनंद, सुरैया, राजकपूर, सुनील दत्त, नरगिस, अमिताभ बच्चन, मिथुन चक्रवर्ती, रेखा, हेमा मालिनी व माधुरी दीक्षित आदि कलाकारों पर प्रचुरता से सिने-सामग्री प्राप्त होती है। संजय दत्त के फेसबुक एकाउंट से उनके सिने व्यक्तित्व की पूरी जानकारी प्राप्त होती है। जैसे कि उनका जन्म 23 जुलाई 1959 को हुआ और उनकी पहली फिल्म 'रेशमा और शोरा' थी, जिसमें उन्होंने एक कव्वाल की छोटी सी भूमिका निभाई थी। बतौर मुख्य अभिनेता इनकी पहली फिल्म 'रॉकी' (1981) थी। इस प्रकार देखा जाता है कि फेसबुक पर प्रचुर सिने-सामग्री उपलब्ध है, जिसका स्वरूप भले ही मुख्य पत्रकारिता की भाँति

औपचारिक न होकर अनौपचारिक होता है। इस पर उपलब्ध सिने जानकारी इतनी व्यापक एवं भिन्न है कि यह स्वयं में शोध का विषय हो सकता है।

4.8 सिने-पत्रकारिता और सामाजिक जनसंचार के अन्य माध्यम

आज के समय में सोशल मीडिया अत्यंत विस्तृत हो चुका है। प्रतिदिन लाखों शब्द इसके माध्यम से सिनेमा के लिए लिखे जा रहे हैं। सिने-पत्रकार, सिने तकनीकी विद एवं स्वयं फिल्म अभिनेता व अभिनेत्री अपने और अपने सिनेमा के विषय में टेलीविजन या यू-ट्यूब के माध्यम से बताते हैं। इसका लाभ यह हुआ है कि अब सिने-जानकारी प्राप्त करना उतना कठिन नहीं रहा जितना पहले था। जनसंचार माध्यमों की ताकत व प्रभाव इतना बढ़ गया है कि अब बड़े से बड़ा फिल्म अभिनेता न केवल फिल्मों के विषय में बताता है, अपितु इसके माध्यम से अपने लिए सिने माहौल व सिने दर्शक भी बनाने व बढ़ाने की कोशिश करता है। ब्लॉग इसी प्रकार का एक सिने माध्यम है।

4.8.1 ब्लॉग (Blog)

ब्लॉग ऑनलाइन डायरी जैसा है। यह एक ऐसा शब्द है जिसे सीधे-सीधे अंग्रेजी से उठा लिया गया है। यह शब्द जॉन बार्गर द्वारा 17 दिसंबर 1997 को दिया गया। आज यह अभिव्यक्ति की महत्वपूर्ण सोशल नेटवर्किंग सेवा बन गयी है। माना जाता है कि ब्लॉग (ब्लॉग लिखने वाला) न केवल स्वयं लिखता है, बल्कि अपने पाठकों और अन्य ब्लॉगर्स के साथ संप्रेषण का रिश्ता भी बनाता है। यहाँ परस्पर संवाद की संभावना सर्वाधिक होती है।

ब्लॉग कागज पर लिखे जाने वाली डायरी से ज्यादा व्यापक और आकर्षक होता है। अर्थात् इसके अलग-अलग हिस्से होते/हो सकते हैं। जैसे- लिखित ब्लॉग, कला ब्लॉग, फोटो ब्लॉग, वीडियो ब्लॉग, संगीत ब्लॉग और स्वर ब्लॉग आदि। इतनी विशेषताओं के कारण ब्लॉग की लोकप्रियता लगातार बढ़ती जा रही है। इस समय संसार में 172 लाख टैबलेट और 75.8 लाख वर्ल्ड प्रेस³² हैं। एक सर्वे में बताया गया कि 22 फरवरी 2014 तक पूरे संसार में 1.3 लाख ब्लॉग थे।

4.8.1.1 ब्लॉग के प्रकार

ब्लॉग विभाजन के कई आधार हैं, किंतु हम केवल मीडिया ब्लॉग की चर्चा करेंगे, जिसे प्रवृत्ति के आधार पर इस प्रकार विभाजित किया गया है-

1. वीडियो ब्लॉग

³² - "wordpress.com is a blog, web hosting service provider owned by automatic and powered by the open source world press software. it provides free blog hosting for registered users and is financially supported via upgrades, VIP services and advertising" wordpress.com

2. चरित्र ब्लॉग
3. माइक्रोब्लॉगिंग मंच
4. फोटो ब्लॉग
5. संयुक्तमीडिया ब्लॉग

4.8.1.2 सिने ब्लॉग की सूची

सिने जानकारी प्रदान करने वाले ब्लॉग पूरे संसार में कार्य कर रहे हैं, जो निम्नवत हैं-

1. द आई आन याहू (*The I On Yahoo*)
2. ए मोटलेग विजन (*A Motleg Vision*)
3. आडियोमेटेड (*Audiomated*)
4. ब्लॉग्सक्रिटिक्स (*Blogcritics*)
5. ब्लॉगस्वर (*Blogswara*)
6. ई. क्यू. म्यूजिक (*E.Q. Music*)
7. इंडिया अनकट (*India Uncut*)
8. मोनोस्टर्स एंड क्रिटिक्स (*Monosters and Critics*)

इनके अतिरिक्त हिंदी सहित तमाम भाषाओं में ब्लॉग लिखे जा रहे हैं, जिसमें सिने-सामग्री वाले हजारों ब्लॉग हैं। हिंदी सिनेमा की सामाजिक पत्रकारिता को ब्लॉग से बहुत बड़ा सहयोग प्राप्त होता है। इस छोटी कालावधि में ही इलेक्ट्रानिक माध्यमों के आने से फिल्म पत्रकारिता को एक नया आकाश मिला है। अब शोधार्थियों के लिए शोध सामग्री की कमी नहीं रहेगी।

नई आर्थिक नीतियों का सिने-पत्रकारिता पर प्रभाव

नई आर्थिक नीतियों से पूरा विश्व प्रभावित हुआ है। इन नीतियों ने आम आदमी के जीवन, समाज और देश को न केवल प्रभावित किया है, वरन उनके अंतर्सम्बन्धों में भी बदलाव किया है। भारत में आजादी के तुरंत बाद, कुछ ही दिनों में सांस्कृतिक आजादी की राहें मुश्किल होने लगी थीं। अर्थव्यवस्था का नेहरू दौर प्रश्रंस्कृत हो चुका था। लोगों ने आजादी से जो उम्मीद लगाई थी, वह महज एक सपना बन कर रह गया। विकास की मंजिलें अब भी बहुत दूर थीं। आम मेहनतकश इंसान को जीवन यापन के लिए कड़ा संघर्ष करना पड़ रहा था। उसे आसानी से कुछ भी प्राप्त नहीं हो पाता था। सरकारी फैसलों और जनता के बीच ठेकेदारी, रंगदारी, दादागिरी जैसे अवरोधों ने सामान्य जीवन को नरक बना दिया था। इन सभी लालची प्रवृत्तियों ने धीरे धीरे भ्रष्टाचार, कालाबाजारी, स्मगलरी और आतंकवाद को जन्म दिया। सरकार इन जनविरोधी प्रवृत्तियों को रोकने में पूरी तरह असफल साबित होने लगी। लोग निराश होने लगे। लोगों की समझ में नहीं आता था कि वे क्या करें। बहरहाल जो करना था उन्हें ही करना था। सो, जो किया उन्होंने ही किया। उस दौर में हालात का मारा अकेला आदमी पूरी भ्रष्ट व्यवस्था से लड़ता था। इस जीवन संघर्ष में वह अपना सब कुछ खो देता था। बस एक सारहीन सफलता उसके हाथ लगती थी। वे देखते कि ताकतवर खलनायक अंत में मारा जाता, पर व्यवस्था में कोई बदलाव नहीं होता था। फिल्मों में बार-बार यही कहानी अलग-अलग ढंग से दिखाई जाती रही। इस तरह की कहानी हिंदी सिनेमा के लिए सफलता का हिट फार्मूला रही। बेचारा सिने दर्शक इस छद्म आनंद को प्राप्त कर तृप्त हो जाता था। हिंदी सिनेमा के गौरव में इस तरह की फिल्मों का बड़ा हिस्सा शामिल है। यह सब घटित होते हुए देश एक ऐसे मुहाने पर आ गया, जहाँ उसकी अर्थव्यवस्था जर्जर होकर चरमरा गई। राजनीतिक प्रतिबद्धता खोखली सिद्ध हो चुकी थी। विश्व परिदृश्य भी काफी बदल चुका था। संबंधों के समीकरण परिवर्तन की मांग कर रहे थे। तमाम प्रकार की नकारात्मक शक्तियां भारत में ताकतवर हो चुकी थीं। हालांकि वे आज भी हैं। बस उनके छद्म को पकड़ पाना मुश्किल हो गया है। तमाम शक्तियों की नकारात्मकता से उबरने के लिए विश्व बिरादरी ने खुली अर्थव्यवस्था और खुले बाजार का तर्क प्रस्तुत किया। न चाहते हुए भी भारत को इस तर्क को मानना पड़ा। आज वह निर्णय एक बड़ी विवशता के रूप में सामने आ चुकी है।

5.1 क्या है नई आर्थिक नीति ?

नई आर्थिक नीति, एक विशेष प्रकार की नीतियों का समुच्चय है। इसे एक साथ अमेरिका और चीन जैसे परस्पर विरोधी देशों से मान्यता प्राप्त हुई। गुटनिरपेक्षता के दम पर अस्तित्व की लड़ाई लड़ रहे भारत को भी आगे बढ़ने में परेशानी हो रही थी। 9वें दशक के प्रारंभ में तय हो चुका था कि इस देश को भी नई आर्थिक नीतियों की शरण में जाना ही होगा। सूचना की संस्कृति ने संसार की पुरानी रवायत को बदल दिया। पूरा संसार 'विश्वग्राम' बन गया। देशों की सरहदें रेत की दीवारों की तरह बहुत कुछ दरकने लगीं। मुक्त बाजार का परिवेश निर्मित होने लगा। अब सभी चीजों की पहचान उत्पाद के रूप में होने लगी। अच्छाई और बुराई की पहचान उनके पुण्य से आंकी जाने लगी। मनुष्यता, ईमानदारी, सामाजिकता दूसरे पायदान पर आ गए। माना जाता है कि 'सन् 1992 से बाद का समय भारत में आर्थिक उदारीकरण के लिए जिम्मेदार है। भूमंडलीकरण की वजह से आज पूरा विश्व ग्लोबल विलेज में तब्दील हो गया है। भूमंडलीकरण का असर सार्वजनिक जीवन के हर क्षेत्र में पड़ा है। इसके प्रभाव ने हिंदी सिनेमा को भी अछूता नहीं छोड़ा है।¹

आगे बढ़ने के पहले नई आर्थिक नीति के शास्त्रीय आधार को जानना आवश्यक है। बताया जाता है-
*“The NEP represented a more capitalism oriented economic policy, deemed necessary after the Russian Civil war of 1917 to 1922, to foster the economy of the country which was almost ruined the complete nationalization of the industry established during the period of war. communism was partially revoked and a system of mixed economy was introduced which allowed private individuals to own small enterprises while the state continued to control banks foreign trade and large industries”*²

अर्थात् नई आर्थिक नीति पूंजीवादी उन्मुख आर्थिक नीति है। इसका विकास रूस के सिविल वार 1917-1922 के दौरान हुआ। ऐसा प्रतीत होता है कि तब इसे जरूरी समझा गया था। इसे देश के आर्थिक उन्नति के लिए उपयोगी माना गया। इसके दौरान रूस में औद्योगिकीकरण को प्रोत्साहित किया गया। फलस्वरूप मिश्रित अर्थव्यवस्था का अनुमोदन किया गया जिससे निजीकरण और स्व लघु प्रक्रमों के विकास का मार्ग प्रशस्त हुआ। राज्यों द्वारा बैंकों का नियंत्रण, विदेशी व्यापार एवं व्यापार उद्योगों के संचालन को गति में लाया गया।

1-सिनेमा के चार अध्याय, द्वारा डॉ. टी. शशिधरन, वाणी प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2014, पृ. 98

2-NEP Encyclopedia

5.2 नई आर्थिक नीति और भारत

माना जाता है कि भारत की अर्थव्यवस्था विश्व की तीसरी बड़ी अर्थव्यवस्था है। दुनिया की 17 प्रतिशत आबादी के साथ यह देश जनसंख्या के आधार पर दूसरे स्थान पर आता है और कुल 2.4 प्रतिशत भौगोलिक क्षेत्र के साथ क्षेत्रफल की दृष्टि से यह विश्व में सातवें स्थान पर है।

भारत में सन् 1991 में एक बड़ी आर्थिक परिघटना हुई। उस समय इसकी सुस्त पड़ी अर्थव्यवस्था में तेजी आई और इसने रफ्तार पकड़ ली। यह उदारीकरण एवं आर्थिक सुधार की नीति लागू कर विश्व की एक बड़ी आर्थिक महाशक्ति के रूप में विकसित होता प्रतीत हुआ। इन सुधारों से कई परिवर्तन सामने आए। प्रमुख रूप से पूर्व भारतीय उद्योगों और व्यापार पर लगा सरकारी नियंत्रण ढीला होने लगा। हालांकि इसका बड़े पैमाने पर विरोध भी हुआ (हो रहा है), किंतु इससे विकास की वह गति थमी नहीं। हालांकि इसके चलते होने वाला विकास असंतुलित विकास है।

आर्थिक विकास की इस नई नीति के लिए वर्ष 1991-92 इसलिए भी महत्वपूर्ण है, क्योंकि इस वर्ष भारत की आर्थिक स्थिति तो जीर्ण-शीर्ण थी ही। इसी साल (1991) सोवियत संघ का विघटन भी हो गया। भारतीय राजनीतिज्ञों के लिए सोवियत विघटन किसी सदमे से कम नहीं था। उन्हें अहसास हो गया कि समाजवाद से इतर किसी दूसरे विकल्प की तलाश करनी ही होगी। फलस्वरूप विकल्प के रूप में उसने आर्थिक उदारीकरण का दामन थामा। इसी से नई आर्थिक नीतियों का पल्लवन हुआ।

5.3 सिनेमा एक उद्योग के रूप में

भारतीय सिनेमा को बतौर उद्योग के रूप में देखने के पहले इसकी विराटता पर एक नजर डाल लेना आवश्यक है। दरअसल भारतीय सिनेमा का अभिप्राय एक बहुभाषी, बहु-भौगोलिक एवं बहु सांस्कृतिक सिनेमा से है जिसका प्रभाव क्षेत्र अति विराट है। इसमें आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, असम, बिहार, गुजरात, हरियाणा, जम्मू एवं कश्मीर, झारखंड कर्नाटक, केरल, महाराष्ट्र, ओडिशा, पंजाब, राजस्थान, पश्चिम बंगाल और बालीवुड शामिल है। इसकी विराटता एवं व्यापकता का अनुमान इसी बात से लगा सकते हैं कि बढ़ती हुई अप्रवासी आबादी के साथ भारतीय सिनेमा का बाजार वैश्विक स्तर पर भी अत्यंत व्यापक हो चुका है। वर्तमान में संयुक्त राज्य अमेरिका, मध्य पूर्व एशिया, रूस एवं यूनाइटेड किंगडम भारतीय सिनेमा का अच्छा बाजार बन चुके हैं। आज भारत में सभी भाषाओं को मिलाकर कुल 1600 तक फिल्मों का निर्माण प्रतिवर्ष होता है।

स्थिति कुछ ऐसी बदली कि 20वीं सदी में भारतीय सिनेमा संयुक्त राज्य अमेरिका के सिनेमा हॉलीवुड तथा चीनी फिल्म उद्योग के साथ एक वैश्विक उद्योग बन गया। वर्ष 2013 में भारत वार्षिक फिल्म निर्माण में पहले स्थान पर था। इसके बाद नाइजीरिया सिनेमा, हॉलीवुड और चीन का स्थान आता है। वर्ष 2012 में भारत में 1602 फिल्मों का निर्माण हुआ, जिसमें तमिल सिनेमा अग्रणी रहा। उसके बाद तेलुगु और बॉलीवुड का स्थान आता है। भारतीय फिल्म उद्योग की वर्ष 2011 में कुल आय \$1.86 अरब (रु. 93 अरब) की रही। इसके वर्ष 2016 तक \$3 100 अरब (रु. 150 अरब) तक पहुंचने का अनुमान है। बढ़ती हुई तकनीक और ग्लोबल प्रभाव से भारतीय सिनेमा का चेहरा बदला है.... भारतीय सिनेमा ने 90 से ज्यादा देशों में बाजार पाया है जहां भारतीय फिल्में प्रदर्शित होती हैं।³

आज स्थिति थोड़ी अधिक बाजारोन्मुख हो चुकी है। आज स्थिति बहुत बदल चुकी है। भारतीय फिल्मों एवं फिल्मकारों को वैश्विक हैसियत प्राप्त होने लगी है। हमारी फिल्में विदेशों में सफलता प्राप्त करने लगी हैं। भारतीय सिने उद्योग, उद्योग इसलिए भी बन सका क्योंकि 100 प्रतिशत प्रत्यक्ष निवेश संभव हो गया है। अब भारतीय सिनेमा, खासतौर पर हिंदी सिनेमा को 20वीं सेंचुरी फॉक्स, सोनी पिक्चर्स, वाल्ट डिज्नी पिक्चर्स और वार्नर ब्रदर्स से 100 प्रतिशत निर्माण पूंजी प्राप्त होने लगी है। इसके साथ कई देशी अभिकरणों से फिल्म निर्माण एवं वितरण में सहायता मिलने लगी है। इसमें एवीएम प्रोडक्शन, प्रसाद समूह, सन् पिक्चर्स, पीवीपी, सिनेमा, जी,

3-भारतीय सिनेमा विकीपीडिया

यूटीवी, सुरेश प्रोडक्शन, इरोज फिल्मस, अयनगर्न इंटरनेशनल, पिरामिड साइमिरा, आस्कर फिल्म , पीवीआर सिनेमा, यशराज फिल्म, धर्मा प्रोडक्शन और एडलैब आदि प्रमुख हैं।

भारत सरकार ने मल्टीप्लेक्स के लिए कर में छूट देने का निर्णय लिया, जिससे भारत में मल्टीप्लेक्सों की संख्या में बढ़ोत्तरी हुई, दर्शकों की संख्या में भी वृद्धि दर्ज की गई। वर्ष 2003 तक फिल्म निर्माण, वितरण, प्रदर्शन से संबंधित 30 से ज्यादा कंपनियां भारत के नेशनल स्टॉक एक्सचेंज में सूचीबद्ध की गईं। इन सारे तथ्यों से सिद्ध होता है कि इन सबसे भारतीय सिनेमा विशेषतः हिंदी सिनेमा को आर्थिक बढ़त प्राप्त करने में सुविधा प्राप्त हुई है। एक स्थिति यह भी है कि दक्षिण भारतीय फिल्म उद्योग भारत की चार फिल्म संस्कृतियों को एक इकाई के रूप में परिभाषित करता है। इसमें कन्नड़, मलयालम, तेलुगू एवं तमिल सिनेमा शामिल हैं।

आज हिंदी सिनेमा के साथ क्षेत्रीय सिनेमा के लिए यह जरूरी हो गया है कि उनकी फिल्म विदेशों में भी सफल हों। भारत से बाहर निवास कर रहे प्रवासी भारतीय जिनकी संख्या आज लाखों में है, उनके लिए भारतीय फिल्में ही व्यावसायिक रूप से संभव जगहों में स्क्रीनिंग के माध्यम से प्रदर्शित होती हैं। इस विदेशी बाजार का भारतीय फिल्मों की आय में 12 प्रतिशत तक का महत्वपूर्ण योगदान हो सकता है। इसके अलावा भारतीय सिनेमा में संगीत भी राजस्व का एक साधन बन चुका है। फिल्म संगीत के माध्यम से लगभग 4.5 प्रतिशत की आय होने लगी है।

हिंदी सिनेमा के अप्रवासी झुकाव से जहां एक तरफ उसे बाजार मिला है तो वहीं दूसरी तरफ इसने सिनेमा को प्रभावित भी किया है। फलस्वरूप सिनेमा में कुछ विशेष प्रकार के बदलाव भी आए हैं। अप्रवासी सिने बाजार पर यहां थोड़ी चर्चा और आवश्यक लगती है। फिल्म समीक्षक डॉ. टी. शशिधरन का मानना है- “विश्व स्तर पर हिंदी सिनेमा की जो पहचान बनी है वह अप्रवासी भारतीयों की बढ़ती संख्या व प्रभाव के कारण ही संभव हो पाई है। अप्रवासी दर्शकों के अलावा फिजी, मॉरिशस, सूरीनाम, वेस्टइंडीज, अमेरिका, कनाडा, इंग्लैंड और अरब आदि देशों में हिंदी सिनेमा के सफल बाजार खुले हैं। ओवरसीज मार्केट और मल्टीप्लेक्स कल्चर को ध्यान में रखकर फिल्में बनाने वाले कुछ निर्माता हैं- करण जौहर, यश चोपड़ा, रवि चोपड़ा, सुभाष घई, रामगोपाल वर्मा, संजय लीला भंसाली, फरहान अख्तर आदि। मीरा नायर की अमेरिकी भारतीय अप्रवासी फिल्म ‘मिसीसीपी मसाला’ को अमेरिकी दर्शकों की काफी सराहना मिली है....भूमंडलीकरण से जहां देशों के दर्शकों में नजदीकियाँ बढ़ रही हैं, वहीं बाजारवाद के कारण बहुत मंहगी फिल्मों का निर्माण भी हो रहा है। अमिताभ बच्चन, शाहरुख खान आदि की लोकप्रियता बहुत बढ़ी है। फिल्म का बजट 50 करोड़ के ऊपर चला गया है और मल्टीप्लेक्स में टिकट 200

से 300 रुपए हो गया है।”⁴ वे आगे इसके कुप्रभाव पर कहते हैं- “भूमंडलीकरण के दौर में हिंदी सिनेमा अपना घर भूल गया है। वैश्विक बाजार का अंधेरा पहेली है कि उसने हमारी स्थानीय पहचान को बिसारने की शुरुआत कर दी है, चाहे समाज हो चाहे सिनेमा।”⁵

हिंदी सिनेमा की वर्तमान गति को देखकर अकीरा कुरुसोवा का वह वक्तव्य कभी कभी गलत लगने लगता है। जब उन्होंने कहा था, “भारतीय सिनेमा, खासकर हिंदी सिनेमा कभी मर नहीं सकता।”⁶ कुरुसोवा की यह टिप्पणी वर्तमान हिंदी सिनेमा की प्रवृत्ति के विपरीत जाता है। इसका कारण भूमंडलीकरण के वशीभूत बाजार द्वारा अपनाई गई नई आर्थिक नीति है, किंतु थोड़ा कुरेदकर हिंदी सिनेमा के इतिहास की ओर देखें तो एक दूसरी प्रवृत्ति भी दिखाई देती है। हिंदी सिनेमा में 1971 से 1980 के मध्य एक अलहदा वाणिज्यिक बदलाव देखने को मिला, जिसकी पुष्टि सिने पत्रकारिता द्वारा भी होती है। इस दौर में फिल्मों के सफल होने के मायने एवं सफल कराने के कायदे बदलने लगे थे अथवा बदल गए थे। स्टार सिस्टम का आविर्भाव हो चुका था। राजेंद्र कुमार, जुबली कुमार एवं शम्मी कपूर रिबेल स्टार कहे जाने लगे थे। अभिनेत्रियों में वैजयंतीमाला व वहीदा रहमान के बीच नंबर वन का ओहदा अटक सा गया था। इसका दूसरा रूप सन् 1971-1980 के दशक में आया, जब राजेश खन्ना को सुपर स्टार, फिर एंग्री यंगमैन अमिताभ बच्चन को सुपर-डुपर और इस समय शाहरूख खान को किंग खान कहा जाने लगा है। इसी दशक में आंगिक एवं बोल्ड थीम वाली फिल्में बनने लगीं, जिसमें कुछ नाम हैं-जरूरत, दोराहा, कामशास्त्र, गुप्तज्ञान, कामना, कालगर्ल, यौवन, समझौता, बस्ती और बाजार, कोरा आंचल, कुंवारा बदन, जलते बदन, चरित्र, नशा, अंग से अंग लगा ले, प्यासे दिन, कोरा बदन, बाजार बंद करो और ध्वंस आदि। इसके अतिरिक्त सामाजिक, रोमानी एवं संवेदनशील फिल्मों का स्थान हिंसा ने ले लिया। इससे फिल्मों में कलात्मकता एवं मानवीय पहलू का अभाव होने लगा। एंग्री यंगमैन हिंदी सिनेमा का प्रतिनिधि सुपर स्टार बन गया।

बाजार का दबाव विचित्र होता है। यह इस तर्क पर चलता है कि चाहे जो भी स्थिति हो लाभ होना चाहिए। जब यह मान लिया जाता है तो उचित अनुचित महत्वहीन हो जाता है। इस संदर्भ में विनोद विप्लव का कहना है- “सेक्स एवं ग्लैमर की इस आंधी से राजकपूर व मनोज कुमार जैसे सार्थक फिल्म बनाने वाले निर्माता भी नहीं बच सके। राजकपूर ने सत्यम शिवम सुंदरम व राम तेरी गंगा मैली में तथा मनोज कुमार ने अपनी लगभग सभी फिल्मों में ग्लैमर, सेक्स व अंग प्रदर्शन को बखूबी भुनाया। लेकिन उन्होंने बहुत ही कलात्मक ढंग से ऐसे दृश्यों को

4-सिनेमा के चार अध्याय, द्वारा डॉ. टी. शशिधरन, वाणी प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2014

5-सिनेमा के चार अध्याय, द्वारा डॉ. टी. शशिधरन, वाणी प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2014, पृ.98

6-हिंदी सिनेमा के 150 सितारे, द्वारा विनोद विप्लव, प्रकाशक : ग्रंथ अकादमी, 1659 पुराना दरियागंज, नई दिल्ली पृ.01

फिल्माया और उन पर कुरुचिपूर्ण जिस्म प्रदर्शन को हावी नहीं होने दिया।....हॉलीवुड की फिल्मों में नग्नता और हिंसा के अपनी चरम सीमा पर पहुंच जाने, बॉलीवुड में फिल्मों के ग्लोबलाइजेशन एवं अंतरराष्ट्रीय फिल्म व्यावसायिक प्रतिद्वंद्विता में हॉलीवुड के मुकाबले खड़े होने की फिल्म निर्माताओं की असीम आकांक्षा, लालसा और ललक ने भी फिल्म के कलापक्ष के ताबूत को खड़ा करने का प्रयास किया। लेकिन बॉलीवुड के निर्माता यह तथ्य भूल गए कि तीन दशक पहले इसी सेक्स और हिंसा की वैशाखी पर खड़ी जापानी, फ्रेंच, स्वीडेन एवं ब्राजील की फिल्मों ने भले ही विश्व बाजार में खड़े होने के पायदान ढूंढ लिए थे लेकिन अंततः उनकी यही लालसा उनकी शवयात्रा का पैमाना भी बन गई और अंत में उस सशक्त दौर में उन्मुक्त सेक्स व नग्नता का जितना खुला प्रदर्शन जापान, फ्रांस, स्वीडन, ब्राजील व पोलैंड की फिल्मों में हुआ था उतना अन्यत्र कहीं नहीं, हॉलीवुड तक में नहीं हुआ।”⁷

7-हिंदी सिनेमा के 150 सितारे, द्वारा विनोद विप्लव, प्रकाशक : ग्रंथ अकादमी, 1659 पुराना दरियागंज, नई दिल्ली पृ.19

5.4 अच्छी फिल्म के नाम पर पितृसत्ता एवं बाजार की शर्तों का तुष्टिकरण

हिंदी सिनेमा में अक्सर ऐसा होता है कि फिल्म को बहुत शानदार तरीके से पेश किया जाता है। कभी-कभी उसका वैचारिक पक्ष भी बड़ा मजबूत प्रतीत होता है, किंतु ध्यान देने पर कुछ और ही बात कहने की कोशिश जान पड़ती है। प्रस्तुत विषय पर 'मार्केट फ्रेंडली लव मैरिज' शीर्षक के अंतर्गत प्रणव प्रियदर्शी ने लिखा है- "दिस वर्ल्ड मेंस वर्ल्ड यार-1998 में एक हिंदी फिल्म टी.वी. पर देखते हुए निराश स्वर में एक लड़की ने टिप्पणी की थी। ऑडियंस में हम आठ दस मित्र थे जिनमें तीन चार लड़कियां थीं। फिल्म थी 'वो सात दिन' जिसके अंत में प्रेमी अपनी प्रेमिका को ठुकरा देता है। यह कहते हुए कि बेमन से ही सही पर तुम्हारी शादी हो चुकी है। नायक का डॉयलाग था, मेरी प्रेमिका किसी की पत्नी हो सकती है, पर किसी की पत्नी मेरी प्रेमिका नहीं हो सकती।" जाहिर है कि फिल्म का अंत भारतीय दर्शकों की मानसिकता को ध्यान में रखते हुए किया गया था, लेकिन कमरे में बैठे ज्यादातर दर्शक उस अंत से व्यथित थे। आखिर यह सोच कर तसल्ली दी कि फिल्म 15 साल पुरानी है, समाज तब से काफी बदल चुका है, मगर यह देखकर हम और निराश हुए कि इस घटना के एक साल बाद आई लगभग उसी कथानक पर बनी फिल्म 'हम दिल दे चुके सनम' में भी यही अंत दिखाया गया। अंतर सिर्फ इतना था कि तब नायक ने नायिका को ठुकराया था इस बार नायिका खुद प्रेमी के ऊपर पति को तरजीह देती है। यानी सिंदूर और सुहाग की वेदी पर अपनी आकांक्षाओं की बलि चढ़ाने का फैसला खुद महिला का है।"⁸

इसी तरह की कुछ और फिल्में हैं जैसे वारिस व चांदनी। चांदनी में पति के विकलांग होने व उससे तिरस्कार पाने के बाद नायिका को किसी दूसरे व्यक्ति से प्रेम हो जाता है। वह उसके साथ खुश भी है किंतु भारतीय जनमानस के दबाव में उसे अंततः पति के पास लौटना पड़ता है। अर्पण भी कुछ इसी तरह की फिल्म है। बहुत ही आधुनिक विचारों वाली फिल्म 'दिल चाहता है' में भी यही बात है। वहां हैप्पी एंडिंग जैसा तो कुछ नहीं है, परंतु अंत में सामाजिक रूप से वर्जित प्रेम की मान्यता को पूर्ण करने के लिए नायिका (डिंपल कपाड़िया) की मृत्यु का आयोजन किया जाता है। प्रणव प्रियदर्शी अपने इस आलेख के अगले हिस्से में कहते हैं- "99 की फिल्म की नायिका चेतना के स्तर पर 1831 में आई फिल्म से भी पिछड़ी निकली।"⁹

8- मार्केट फ्रेंडली 'लव मैरिज' द्वारा प्रणव प्रियदर्शी नव भारत टाइम्स, मुंबई, गुरुवार, 5 नवंबर 2015 पृ. सं. 8

9- मार्केट फ्रेंडली 'लव मैरिज' द्वारा प्रणव प्रियदर्शी नव भारत टाइम्स, मुंबई, गुरुवार, 5 नवंबर 2015 पृ. सं. 6

5.5 बाजार और सिने-पत्रकारिता

सन् 1991 के बाद स्पष्ट रूप से बाजार की ताकतें मुखर हो गईं इनका हस्तक्षेप चतुर्दिक था। बाजार ने अपने विस्तार के लिए जनमाध्यमों का विस्तार, निजीकरण को प्रोत्साहन एवं उपयोग की सहजता को प्रशस्त किया। बाजार के विस्फोटक विस्तार के साथ जनमाध्यमों के आकार-प्रकार का विस्तार हुआ। इलेक्ट्रानिक मीडिया के विस्तार एवं निजीकरण ने संप्रेषण के नाम पर बाजार के विज्ञापन के लिए अकूत समय अवधि को उपलब्ध कराया। इन सबकी वजह से मीडिया की सामाजिक प्रतिबद्धता का हास हुआ और उसकी जगह व्यापारिक प्रतिबद्धता ने पैठ बनाना प्रारंभ किया। अब मीडिया (जन माध्यम) के लिए बाजार की शर्तों पर काम करना संकोच का विषय नहीं रह गया था।

विश्व सहित भारत की परिस्थिति तेजी से बदल रही थी। सार्वजनिक क्षेत्र का विस्तार संकुचित हो रहा था और कमजोर भी। इसलिए बाजार के विस्तार एवं निजीकरण को एक तर्क के रूप में प्रचारित किया गया। जनमाध्यमों द्वारा यह कार्य बड़े सलीके से संपन्न किया गया। स्थिति यह हो गई कि बाजार, निजीकरण एवं जनमाध्यम एक दूसरे के पूरक बनते गए। आज स्थिति यह है कि इन्हें अलगाना मुश्किल हो गया है। थोड़ा आगे बढ़कर कहें तो कहा जा सकता है कि बाजार ने खुद अपनी अधिरचना को मजबूत कर अपने लिए समोचित जनमाध्यमों को जन्म दिया। पुराने मीडिया घरानों ने बचे रहने के लिए इस नई उभरती शक्ति से समझौता कर एकदम नया रूप धारण कर लिया। जिन्होंने मूल्यों को बनाए या बचाए रखना चाहा, वे नष्ट हो गए और यत्र-तत्र बचे भी हैं तो निरंतर कमजोर होकर। 90 के पहले भारत में एकल पर्दे वाले सिनेमा गृहों की एक बड़ी संख्या थी। वे शहर से लेकर कस्बे तक विस्तृत हो चुके थे। किंतु बाजार की इस नई शक्ति के सामने वे पराजित हो गए। जिन शहरों या कस्बों में आर्थिक ताकत की गुंजाइश नहीं थी वहां इस तरह के सिनेमा गृह बंद कर दिए गए। आज वे इमारतें खंडहर में तब्दील हो गई हैं। वे सिनेमा गृह जो ताकतवर आर्थिक आधार वाले शहरों में थे, वे खड़े हो गए, किंतु एक नए अवतार यानी माल या मल्टीप्लेक्स के रूप में।

5.6 सिने पत्रकारिता में सिने बाजार की जगह

(समाचार-पत्र, रेडियो एवं टीवी)

सिनेमा स्वयं में एक उत्पाद है। इसका निर्माण ही इसलिए किया जाता है कि ये व्यापक समाज तक पहुँचे और लोग एक निर्धारित मूल्य चुका कर इसे देखें ताकि फिल्म निर्माता को धन की प्राप्ति हो सके। इसलिए इस बात पर व्यापक जोर दिया जाता है कि हर स्थिति में यह न केवल मास सोसायटी तक पहुँचे बल्कि उन्हें भी इसकी ओर आकर्षित भी किया जाए। आकर्षित करने की प्रक्रिया में विज्ञापन की भूमिका महत्वपूर्ण हो जाती है।

सिने-पत्रकारिता (समाचार पत्र, रेडियो, टीवी एवं सोशल मीडिया) सिनेमा को विज्ञापित करने के लिए स्थान एवं समय उपलब्ध कराती है और बदले में मोटी रकम प्राप्त करती है। आजकल सिने पत्रकारिता में इंफोटेनमेंट का बोलबाला है। अर्थात् अब सिने समाचार सूचना, मनोरंजन, विज्ञापन के समन्वित रूप में प्रस्तुत किए जाते हैं और यह कार्य एक विशेष पैकेज के तहत पूर्ण किया जाता है।

फिल्मी विज्ञापन की मूल प्रवृत्ति सिने उपभोक्ता को आकर्षित करने की रही है। इसलिए सिनेमा के विज्ञापन के समय निहारवृत्ति को विशेष महत्व दिया जाता है, जिसके अंतर्गत शारीरिक चेष्टाओं को कुछ इस तरह दिखाया जाता है जैसे कि सिनेमा कुछ और न होकर मात्र शारीरिक चेष्टाओं का ही समुच्चय है। यहां तक तो फिर भी ठीक था। बात अगर उत्पाद बेचने की है तो विज्ञापन की शर्तों को स्वीकार करने में कोई हर्ज नहीं है, किंतु हद तो तब हो जाती है जब सिनेमा बनाया ही इसलिए जाता है ताकि आंगिक चेष्टाओं और हिंसा को बढ़ा-चढ़ाकर दिखाया जा सके। इस तरह की कोशिश पहले भी होती रही है। खुद शोले में 'मेहबूबा मेहबूबा' जैसा कामोत्तेजक नृत्य गीत रखा गया। उस दौर में हेलेन, जयश्री टी, पद्मा खन्ना एवं बिंदू जैसी अभिनेत्रियां खास खल स्त्री चरित्रों या नाचने-गाने के लिए रखी जाती थीं। किंतु बाद में तो फिल्मों के विषय में ही परिवर्तन कर इस तरह के क्रिया कलापों के लिए पर्याप्त अवकाश निकाला गया। एकता कपूर ने रागिनी श्रृंखला की फिल्मों से देह दर्शन को महिमा मंडित किया। महेश भट्ट ने स्वतः एक अच्छे फिल्मकार होने के बावजूद तमाम ऐसी फिल्मों का निर्माण किया जो सीधे सीधे काम प्रधान एवं हिंसा प्रधान फिल्में हैं। इस तरह के फिल्मों के नामों की सूची बहुत लंबी है। अमिताभ बच्चन की एक फिल्म आई थी 'मर्द'। फिल्म देश भक्तिपूर्ण भावभूमि पर बनाई गई थी, किंतु उसमें एक दृश्य जिसे अमिताभ एवं अमृता के बीच प्रणय क्रिया के रूप में फिल्माया गया है, अत्यंत आपत्तिजनक है। निश्चित रूप से यदि उस दृश्य को कलात्मक एवं प्रतीकात्मक रूप से फिल्माया जाता तो यह फिल्म की गरिमा के अनुकूल होता। इस तरह की फिल्में बनाने के मोह से बहुत कम निर्माता-निर्देशक बच पाए। ऐसे दृश्यों में दिलीप कुमार (किला),

शशिकपूर, जीनत अमान (सत्यम शिवम सुंदरम), मंदाकिनी (राम तेरी गंगा मैली), ओमपुरी (आस्था, भंवरी देवी), नसीरुद्दीन शाह (कई फिल्में), अमिताभ बच्चन, जीया खान (निशब्द), संजय दत्त, ऐश्वर्या राय (शब्द), शाहरुख खान, दीपा शाही (माया मेम साहब) और अभय दयोल (देव डी) आदि जैसे कई अभिनेता-अभिनेत्री दिखाई दिए।

फिल्म पत्रकारिता इन विषयों को बहुत ही विज्ञापित तरीके से प्रस्तुत करती रही है। प्रिंट मीडिया तस्वीरों एवं शब्दों के माध्यम से यह कार्य प्रायोजित करता है। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के रूप में रेडियो एवं टीवी 24x7 घंटे सिने विज्ञापन प्रस्तुत कर मोटी रकम प्राप्त करते हैं। प्राइवेट रेडियो चैनलों की कमाई का मुख्य आधार ही सिनेमा के रास्ते से निर्गत होता है। वे सिनेमा के गीत बजाते हैं। बीच-बीच में एंकर सिने उपभोक्ताओं एवं सिने कलाकारों से बात करता है। विज्ञापन प्राप्त करता है और श्रोताओं को नई फिल्मों के टिकट प्राप्त करने का प्रस्ताव देता है, साथ ही इसके लिए लाटरी जैसी सुविधा उपलब्ध कराता है। टी.वी. चैनल समाचार, विज्ञापन एवं रियलिटी शो के माध्यम से सिने उपभोक्ताओं को सृजित करते हैं। आजकल फिल्म से जुड़े सभी सदस्य टी.वी. पर आकर फिल्म के विषय में बताते हैं। उनकी उपस्थिति को बतौर समाचार दिखाया जाता है। फिल्म जब बनने लगती है, तब से लेकर उसकी शूटिंग की तमाम गतिविधियों को बतौर समाचार प्रस्तुत किया जाता है। इस प्रकार फिल्म बनने की घोषणा से ही उपभोक्ताओं के बीच उत्सुकता का परिवेश सृजित किया जाता है। हां यह सत्य है कि मूल कहानी नहीं बताई जाती ताकि उत्सुकता बनी रहे।

विज्ञापन एवं क्यूज के माध्यम से सिने उत्पादन को टी.वी. द्वारा प्रोत्साहित किया जाता है, साथ ही कुछ ऐसे टी.वी. कार्यक्रमों का निर्माण होता है जो मूलतः सिनेमा केंद्रित होते हैं। बिग बॉस, कॉमेडी विद कपिल, इंटरटेनमेंट के लिए कुछ भी करेगा, इंडियन आयडल एवं अनेक नृत्य प्रतियोगिताएं इसी प्रकार के कार्यक्रम हैं। इनमें से बिग बॉस की संक्षिप्त सिने भूमिका यहां दी जा रही है।

5.6.1 बिग बॉस

बिग बॉस एक ऐसा टेलीविजन शो है जो नीदरलैंड के शो बिग ब्रदर का हिंदी रूपांतरण है। इस शो के माध्यम से कई पुराने फिल्म कलाकारों की किस्मत फिर से चमक चुकी है। कुछ साधारण फिल्म कलाकारों या मनोरंजन उद्योग के कलाकारों को शोहरत और पैसा हासिल हुआ है तो कुछ नए लोगों का बॉलीवुड में आगमन हुआ है।

भारत में इस रियलिटी शो को कलर्स चैनल द्वारा प्रस्तुत किया जाता है। सितंबर 2015 में इसका नवां सीजन आया था, जिसकी प्रस्तुति सलमान खान कर रहे थे। इस कार्यक्रम की शुरुआत भारत में सबसे पहले सोनी

टीवी द्वारा की गई। सन् 2010 से इसकी प्रस्तुति (एंकरिंग) सलमान खान द्वारा की जा रही है। कहा जाता है कि बिग बॉस¹⁰ गृह का निर्माण हर सीजन में किया जाता है। पहले के कुछ सीजनों का बिग बॉस हाउस लोनावाला, पुणे था, किंतु अब इसे एनडी स्टूडियो, कर्जत में स्थानांतरित कर दिया गया है। बहुत सारी अद्यतन सुविधाओं से युक्त इस गृह की एक विशेषता यह भी कि यहां जनसंचार माध्यम जैसे टी.वी., टेलीफोन, इंटरनेट सुविधा, घड़ी एवं कागज, कलम आदि उपलब्ध नहीं होते। साथ ही कार्यक्रम की एक विशेषता यह भी है कि प्रतिभागी संवाद के लिए हिंदी भाषा का ही प्रयोग करेंगे। बिग बॉस की गतिविधियों को मीडिया द्वारा काफी महत्व दिया जाता है। भारतीय बिग बॉस की प्रस्तुति (एंकरिंग) एवं प्रतिभागियों में मनोरंजन उद्योग के ख्याति प्राप्त नाम शामिल रहे-

सत्र	प्रमुख प्रस्तुतकर्ता	विजेता
प्रथम	अरशद वारसी	राहुल राय
द्वितीय	शिल्पा शेटी	आशुतोष कौशिक
तृतीय	अमिताभ बच्चन	बिंदु दारा सिंह
चतुर्थ	सलमान खान	श्वेता तिवारी
पंचम	संजय दत्त, सलमान खान	जूही परमार
षष्ठ	सलमान खान	उवर्षा डोलकिया
सातवां	सलमान खान	गौहर खान
आठवां	फराह खान	गौतम गुलाटी

आठवें बिग बॉस सीजन के साथ हल्ला बोल (एक दूसरा रियलिटी शो) को संयुक्त कर दिया गया। इस सत्र की शेष प्रस्तुति फराह खान द्वारा की गई, जिसके विजेता गौतम गुलाटी रहे।

ध्यातव्य है कि नवें सत्र के बिग बॉस की एंकरिंग भी सलमान खान कर रहे हैं जो 11 अक्टूबर 2015 से

10-Big Boss is a reality show based on the original dutch Big Brother format developed by John de Mol. A number contestants (known as housemates) live in a purpose built house and are isolated from the rest of the world. Each week housemates nominate two of three peers for eviction and the housemates who receives the most nominations would face a public vote of these one would eventually leave having been 'evicted' from the house. However there were exceptions to this process as dictated by Big Boss in the final week there were three housemates remaining and the public voted for who they wanted to win. The housemates in the Indian version are primarily celebrities with the exception of one who is a non-celebrity selected via auditions housemate are overseen by a mysterious person known as 'Big Boss' whose only presence in the house is through his voice-Big Boss, Wikipedia.

प्रारंभ हो चुका है। बिग बॉस की साप्ताहिक समीक्षा के दिन नई फिल्मों को प्रमोट किया जाता है। नई फिल्म के कलाकार प्रस्तुतकर्ता एंकर से बात करते हैं और अपनी फिल्म के विषय में बताते हैं साथ ही बिग बॉस गृह में जाते हैं, सभी सदस्यों से मिलते हैं। सभी प्रतिभागी फिल्म के नायक-नायिका से बातचीत के क्रम में वस्तुतः प्रदर्शित हो रही नई फिल्म की चर्चा करते हैं। दरअसल यह पूरा का पूरा आयोजन प्रायोजित विज्ञापन का हिस्सा होता है।

5.6.2 सिने-पत्रकारिता का एक पक्ष यह भी

यह सही है कि मनोरंजन की दुनिया, विज्ञापन की दुनिया की तरह ही है, किंतु कुछ प्रतिबद्ध समाचार पत्रों, सिने समीक्षकों एवं टी.वी. रेडियो द्वारा कभी-कभी अच्छी सिने-पत्रकारिता के उदाहरण भी देखने को मिल जाते हैं। कभी-कभी किसी सिने समाचार द्वारा किसी बड़े फिल्म कलाकार के संघर्ष की बारीकियों का पता चलता है। हालांकि ऐसी खबरें भी किसी न किसी रूप से विज्ञापन का ही हिस्सा होती हैं। परंतु इससे इसकी महत्ता कम नहीं हो जाती। किसी न किसी रूप में सिने इतिहास में इस तरह की खबरों का एक अलग ही महत्व होता है। जनसत्ता के वेब संस्करण पर सलमान से जुड़ा एक समाचार दिया गया है। इस समाचार में वह वीडियो भी संलग्न है जिसे सोनूप शाहादेवन ने लिया था। यह वीडियो 'इंडियन एक्सप्रेस' के सौजन्य से प्राप्त हुआ दिखाया गया है। खबर का महत्वपूर्ण हिस्सा इस प्रकार है-

सलमान खान को सूरज बड़जात्या कर चुके हैं एक बार रिजेक्ट, जाने कब और क्यों?

“सलमान खान ने जब ‘मैंने प्यार किया’ के लिए पहली बार ऑडिशन दिया था तो वे रिजेक्ट हो गए थे। 1989 की इस फिल्म में तब दीपक तिजोरी को लेने की बात होने लगी थी।”¹¹ खबर में सूरज बड़जात्या ने कहा है- “जब सलमान पहली बार मेरे ऑफिस आया था मुझे याद है कि काफी दुबला-पतला छोटा सा दिख रहा था। मैंने खुद से यह सवाल किया- तो यह सलीम सर का बेटा...फिर सलमान मेरे आगे बैठ गया और अपनी तस्वीरें दिखाने लगा। सलमान की तस्वीरें कुछ और ही बयान कर रही थीं। तस्वीरें देखने के बाद मैंने ऑडिशन लिया। सूरज को सलमान का पहला ऑडिशन बिल्कुल पसंद नहीं आया और उन्होंने सलमान को रिजेक्ट करने का मन बना लिया। सलमान खान को ‘मैंने प्यार किया’ के दूसरे ऑडिशन के लिए 4 महीने तक इंतजार करना पड़ा था। दिलचस्प बात यह थी कि जब सलमान खान को इस बात की खबर लगी....तो सलमान खुद उन्हें कई और अभिनेताओं का नाम सजेस्ट करने लगे। सलमान खान के दूसरे ऑडिशन के बाद सूरज एक दिन सलमान खान के फिल्म ‘बीबी हो

11-www.jansatta.com , मुंबई, नवंबर 10, 2015, 2.9 बजे दोपहर

तो ऐसी' के सेट पर पहुँचे, जहाँ सलमान खान जोर से गले लगाकर सूरज को फिल्म 'मैंने प्यार किया' के लिए कोई और हीरो का नाम बताने लगे, तभी सूरज ने अपनी फिल्म 'मैंने प्यार किया' में सलमान खान को ही लेने का फैसला किया और इस तरह प्रेम का जन्म हुआ।"¹²

कौन है प्रेम?

प्रेम फिल्म 'मैंने प्यार किया' का वह पात्र है जिसे सलमान खान ने निभाया है। राजश्री प्रोडक्शन ने इस फिल्म के बाद फिल्म 'हम आपके हैं कौन' और 'हम साथ-साथ हैं' का निर्माण किया जिनमें सलमान खान नायक थे। इन सभी फिल्मों में सलमान खान ने प्रेम के चरित्र को निभाया। सर्वविदित है कि ये सभी फिल्में सुपर हिट रहीं। अबकी बार पुनः सलमान को लेकर राजश्री एक दूसरी फिल्म का निर्माण कर रहा है, जिसका नाम ही है 'प्रेम रतन धन पायो'।¹³ फिल्म में सलमान ने पुनः प्रेम की भूमिका निभाई है।

गौरतलब है कि बगैर सलमान के राजश्री प्रोडक्शन द्वारा अभिषेक बच्चन, ऋत्विक रौशन व करीना कपूर को लेकर 'मैं प्रेम की दीवानी हूँ' का निर्माण किया गया था। फिल्म में अभिषेक व ऋत्विक दोनों ने प्रेम का किरदार निभाया। इतने बड़े कलाकारों को लेकर बनाई गई यह फिल्म औसत हिट रही। इसलिए अब प्रेम के किरदार के लिए पुनः सलमान को लिया गया है।

फिल्म पत्रकारिता द्वारा राजश्री की विभिन्न फिल्मों में सलमान खान द्वारा निभाए 'प्रेम' के किरदार पर काफी रोचक चर्चा हुई। कुछ जगह 'प्रेम' को बतौर टोटका व भाग्य से जोड़कर बताया/लिखा/दिखाया गया तो कई जगह उन फिल्मों के व्यावसायिक पक्षों का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया। ऐसा करते हुए फिल्मों की कहानी, दृश्य संयोजन, संवाद व उनके प्रदर्शन के समय के परिवेश की व्याख्याएं प्रस्तुत की गईं जो निःसंदेह प्रबुद्ध सिने-पत्रकारिता के उदाहरण माने जा सकते हैं। इस प्रकार पाया जाता है कि वैश्वीकरण ने काफी हद तक सिने-पत्रकारिता को प्रभावित किया है।

12-www.jansatta.com, मुंबई, नवंबर 10, 2015, 2.9 बजे दोपहर

13-www.jansatta.com, मुंबई, नवंबर 10, 2015, 2.9 बजे दोपहर

उपसंहार

प्रस्तुत शोध-प्रबंध पांच अध्यायों में विभाजित है। सभी अध्यायों में क्रमवार ढंग से सिने-पत्रकारिता का ऐतिहासिक जायजा लिया गया है। यहां क्रमवार का अभिप्राय कालक्रमिक अध्ययन व विश्लेषण से है। प्रयास किया गया है कि कालक्रम में प्राप्त तथ्यों के आधार पर सही विश्लेषण किया जाए। किंतु मात्र सौ साल पुराने सिनेमा का कोई सिलसिलेवार इतिहास उपलब्ध नहीं है। अंग्रेजी में इस दिशा में कुछ काम अवश्य हुआ है परंतु हिंदी में गिनी चुनी पुस्तकें ही उपलब्ध हैं। एक दिक्कत यह भी रही कि इस देश में सिनेमा का स्वरूप भारतीय रहा है जिसके अंतर्गत भारत की कई भाषाओं-तमिल, तेलुगु, मलयालम, बंगाली, उड़िया, असमी, छत्तीसगढ़ी, मराठी, भोजपुरी (बोली), कोंकणी, गुजराती और हिंदी में फिल्में बनती हैं। इन भाषाओं के अतिरिक्त मिजो व सिंधी जैसी भाषाओं में भी फिल्में बनती हैं।

शोध प्रबंध का लक्ष्य हिंदी सिनेमा की पत्रकारिता तक सीमित था। किंतु हिंदी सिनेमा की प्रथम फिल्म को ही लेकर संशय बरकरार है। जिस फिल्म को प्रथम हिंदी फिल्म मान लेने पर बहुमत है अर्थात् राजा हरिश्चंद्र, वह भी पुणे फिल्म संस्थान व पुणे फिल्म संग्रहालय द्वारा हिंदी फिल्म न मानकर मराठी फिल्म स्वीकार की गई है। उनका मानना है कि मूक फिल्म की कोई भाषा नहीं थी। निर्माता से लेकर सारे कलाकार तक मराठी थे, तो फिल्म मराठी हुई न कि हिंदी। ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि मूक फिल्मों की कोई पटकथा नहीं होती थी। यदि होती भी रही हो तो उपलब्ध नहीं है। फिर भी बहुमत का सहारा लेते हुए प्रस्तुत शोध प्रबंध में भी इसी फिल्म को प्रथम हिंदी फिल्म मानकर इसकी सिने-सूचना को प्रथम सिने खबर मान लिया गया है किंतु यहां भी वही परेशानी थी कि यह सिने खबर हिंदी के अखबार में छप कर अंग्रेजी समाचार पत्र में छपी थी। बांबे क्रॉनिकल में पहली बार राजा हरिश्चंद्र की यह सूचना एक विज्ञापन के रूप में छपी थी। फिलहाल यहीं से हिंदी सिने पत्रकारिता का जन्म स्वीकार किया जा सकता है। चूंकि सिनेमा पाश्चात्य देश की देन है इसलिए प्रस्तावना में इसे बतौर एक आधुनिक मनोरंजन माध्यम स्वीकार करते हुए इसके वैश्विक परिप्रेक्ष्य में चर्चा की गई है। निष्कर्षतः वैश्विक धरातल पर न केवल सिने-पत्रकारिता बल्कि सिनेमा तक का जायजा लिया गया है। जिसमें आधुनिक जनमाध्यम सिद्धांतों को भी यथोचित शामिल किया गया है। यदि सिनेमा के वैश्विक इतिहास पर शोध कार्य करना होता तो कुछ भ्रान्तियों को छोड़कर, प्रचुर सामग्री उपलब्ध थी किंतु शोध का लक्ष्य हिंदी सिने पत्रकारिता था इसलिए प्रस्तावना और प्रथम अध्याय के अंतर्गत विश्व सिनेमा व विश्व सिने-पत्रकारिता पर निश्चित रूप से बहुत विस्तार में न जाकर ध्यान अवश्य दिया गया

है। फिर भी तथ्यों और सूचनाओं के माध्यम से इस प्रत्यय का निर्माण हो पाया है कि सिनेमा नितांत वैज्ञानिक आविष्कार होते हुए आमदनी प्राप्त करने के लिए एक व्यवसाय के तहत पैदा हुआ है। सिने-पत्रकारिता द्वारा इसे चेताया जाना चाहिए था किंतु कोई व्यापक और असरदार हस्तक्षेप नहीं हो सका।

प्रथम अध्याय में ही सिने-पत्रकारिता के इतिहास में बताया गया कि विश्व स्तर पर सिने-पत्रकारिता का पहला उदाहरण 'न्यूयार्क हेराल्ड' से 14 अप्रैल, 1896 को प्राप्त हुआ, जिसकी भाषा अंग्रेजी रही और भारत में पहला सिने-समाचार सन 1913 में बांबे क्रानिकल से प्राप्त हुआ जिसकी भी भाषा अंग्रेजी थी। किंतु इस सूचना को मान लेने में भी एक अड़चन है, जो न केवल हिंदी सिने-पत्रकारिता के जन्म से संबंधित है बल्कि हिंदी की पहली फिल्म के संशय, जिसका उल्लेख ऊपर किया गया है, से जुड़ी हुई है। 25 मई, 1912 में टाइम्स ऑफ इंडिया में दादा साहेब तोर्ने की फीचर फिल्म *पुंडलिक* के प्रदर्शन की खबर छपी थी। यह खबर भी अंग्रेजी के समाचार पत्र में अंग्रेजी भाषा में ही प्रकाशित हुई थी। इस प्रकार पहले अध्याय में दिए गए उदाहरणों से ज्ञात होता है कि भारत में हिंदी सिने-पत्रकारिता के उदाहरणों के अभाव में हमारी ऐतिहासिक उदासीनता के साथ-साथ भारत का ब्रिटिश उपनिवेश होना भी काफी हद तक जिम्मेदार रहा है।

प्रथम अध्याय में सिने-पत्रकारिता की वैश्विक पैमाइश की गई है। इस अध्याय में लघुरूप में ही सही परंतु महाद्वीपीय आधार पर सिनेमा और सिने-पत्रकारिता को परखा गया है। निश्चित रूप से हिंदी सिने-पत्रकारिता के लिहाज से एक अतिरिक्त कार्य जैसा था। किंतु इसके प्रस्तुत शोध विषय के लिए इसका कुछ लाभ अवश्य रहा। हमारा सिनेमा जिसमें हिंदी सिनेमा भी शामिल है, पाश्चात्य देश की देन है। गाहे बेगाहे आज भी हम पाश्चात्य सिनेमा की नकल करते पाए जाते हैं। यह देखना रोचक था कि हिंदी पत्रकारिता प्रारंभ में मात्र निहारवृत्ति के अतिरिक्त पाश्चात्य सिने-पत्रकारिता से कुछ ज्यादा सीख नहीं पाया। जहां रूस, इंग्लैंड और अमरीका जैसे देशों में शुरू में ही सिनेमा को जनमाध्यम को प्रशिक्षित करने का स्रोत मान लिया गया, वहीं हमारे तमाम व्यावसायिक लाभ और सफलता के बावजूद इसके प्रति एक संकोच भाव बना रहा। जिसका असर यहां के सिने-पत्रकारिता पर भी व्यापक रूप से पड़ा।

द्वितीय अध्याय में भारतीय सिने-पत्रकारिता अर्थात् भाषाई सिने-पत्रकारिता का संक्षिप्त जायजा लिया गया है। सिने पत्रकारिता पर प्रारंभिक सिने सामग्री की कमी यहां भी देखने को मिली। किंतु इस क्रम में यह अवश्य ज्ञात हुआ कि कुछ क्षेत्रीय पत्र और पत्रिकाएं ऐसी भी रहीं जो शुरू भले ही किसी प्रदेश और या क्षेत्रीय भाषा में की गईं

परंतु उनका असर अखिल भारतीय रहा। यह अवश्य है कि यह प्रयास अंग्रेजी की सिने-पत्रिकाओं में अधिक देखने को मिला। इस अध्याय में आजादी के पूर्व और पश्चात की हिंदी सिने-पत्रकारिता का भी जायजा लिया गया है। जिससे पता चलता है कि जिस तरह से सिनेमा के विषयों में बदलाव आते रहे वैसी विविधता हिंदी सिने-पत्रकारिता में कम ही देखने को मिली।

तृतीय अध्याय में सीधे-सीधे हिंदी की सिने-पत्रकारिता पर ध्यान केंद्रित किया गया है। इस अध्याय में भी पाया गया कि सिने-पत्रकारिता के लिए जिम्मेदार संपादकों की जितनी जरूरत रही है, उतने संपादक कभी भी उपलब्ध नहीं हो पाए। फलस्वरूप गंभीर सिने-पत्रकारिता के उदाहरण कम ही मिल पाए। स्व. राजकपूर का समय आते-आते स्थितियां बहुत बदल चुकी थीं लेकिन समाज में सिनेमा के प्रति उपेक्षा का भाव बना रहा। यह भाव राजकपूर को व्यथित करता था और व्यंग्य में ही सही, वे स्वयं को 'हम गाने बजाने वाले लोग' कहा करते थे। इस अध्याय में विभिन्न उदाहरणों द्वारा पाया गया कि सिनेमा की पत्रकारिता में सिनेमा की अपेक्षा सिने कलाकारों के व्यक्तिगत पक्षों को अधिक उजागर किया जाता है। फलस्वरूप गंभीर पत्रकारिता की जगह गॉसिप पत्रकारिता का पक्ष मुखर होने लगता है। हिंदी सिने-पत्रकारिता का बड़ा हिस्सा व्यक्तिगत मिनमेख में ही व्यय हो जाता है।

प्रस्तुत अध्याय में हिंदी पत्रकारिता के तमाम नकारात्मकताओं के बावजूद कुछ अच्छे उदाहरण का भी आकलन किया गया है। जिससे पता चलता है कि हिंदी सिनेमा की पत्रकारिता में भी कभी-कभी गौरवमय क्षण आया है। तीस के दशक में जब 'फिल्मलैंड' पत्रिका कोलकता से निकलती थी। तब इस पत्रिका का कार्यालय भवानीपुर में था। इसमें उस दौर के प्रबुद्ध सिने समीक्षक सुरींद्रनाथ सान्याल के आलेख छपते थे। वे सिनेमा के सामाजिक सरोकारों की चर्चा अपनी सिने समीक्षाओं में करते थे।

तृतीय अध्याय में ही आजादी पूर्व की सिने-पत्रकारिता पर चर्चा करते हुए उस समय की प्रसिद्ध हिंदी पत्रिका रंगभूमि और उसके संपादक लेखराम की चर्चा की गई है। ध्यातव्य है कि जब प्रथम सवाक हिंदी फिल्म *आलमआरा* का निर्माण सन 1931 में किया गया तो पूरे देश में हलचल मच गयी। क्योंकि अब चित्र न केवल गतिशील थे, बल्कि बोलने भी लगे थे। इसी फिल्म से मूक फिल्म समाप्त होने लगा। इस पूरे सिने हलचल को समेटने के लिए सन 1932 से रंगभूमि का प्रकाशन होने लगा। इसे हिंदी सिनेमा की पहली विशुद्ध पत्रिका माना गया। हालांकि विवाद यहां भी रहा। कुछ हिंदी सिनेमा की पहली फिल्म पत्रिका चित्रपट को मानते हैं, जिसका प्रकाशन सन 1931 में हुआ। किंतु व्यापकता और दीर्घजीविता के आधार पर रंगभूमि ही हिंदी सिनेमा की पहली

फिल्म पत्रिका मानी जाती है। चूंकि इसी दौर में फिल्मों का प्रभाव निरंतर बढ़ने लगा था। इसलिए रंगभूमि और चित्रपट के अतिरिक्त कई अन्य हिंदी सिने-पत्रिकाएं दिल्ली से प्रकाशित होने लगीं थीं, जैसे-रसभरी, चित्र-प्रकाश, कौमुदी आदि। इसके अतिरिक्त कलकत्ता (कोलकाता) से अभिनय और लाहौर से रूपम, जैसी हिंदी पत्रिकाएं निकलने लगी थीं।

इसी अध्याय में विभाजन और सिने-पत्रकारिता का भी जायजा लिया गया है। इसमें बताया गया है कि विभाजन की त्रासदी से हिंदी सिने-पत्रकारिता भी बुरी तरह से प्रभावित हुयी। कुछ सिने कलाकारों की आत्मकथा से इस त्रासदी की पुष्टि होती है। फिर भी सिनेमा की ही तरह हिंदी सिने-पत्रकारिता भी किसी तरह अपनी उपस्थिति को बनाए और बचाए रखा। सन 1947 में संपतलाल पुरोहित ने दिल्ली से हिंदी सिने-पत्रिका युगछाया का संपादन किया। इसी समय बृजमोहन ने सिने-पत्रिका चित्र का प्रकाशन शुरू किया। इस पत्रिका में फिल्म और राजनीति, दोनों की चर्चा होती थी।

तृतीय अध्याय के अगले भाग में आजादी मिलने के बाद की हिंदी सिने-पत्रकारिता के विषय में बताया गया कि सत्ता बदलने से भले ही सिनेमा के स्वरूप और प्रस्तुति में थोड़ा बहुत बदलाव आया परंतु हिंदी सिने-पत्रकारिता में कोई ठोस बदलाव नहीं दर्ज किया जा सका। ध्यातव्य है कि हिंदी की मुख्यधारा के समाचार पत्रों में सिनेमा को स्थान दिया जाता था, जिसमें आज (1920) दैनिक हिंदुस्तान (स्थापना -1936), नवजीवन(1947) नवभारत टाइम्स(4 अप्रैल 1947), अमर उजाला(1948), दैनिक जागरण(1947), नवभारत(1938), सन्मार्ग (1948), स्वतंत्र भारत (15 अगस्त, 1947), वीर अर्जुन(1554), और राजस्थान पत्रिका (1956) जैसे समाचार पत्र शामिल किए जाते हैं। इसी तरह कुछ पत्रिकाएं और भी थीं, जिनमें सिनेमा पर सामग्री दी जाती थी। इनमें माया (1929), सरिता(1545), धर्मयुग(1950), साप्ताहिक हिंदुस्तान(1950), सारिका (1960), मुक्ता(1960), ब्लिट्ज(1962) और दिनमान(1965) आदि जैसी साहित्यिक और सामाजिक पत्रिकाएं सम्मिलित हैं।

इसी दौर में कुछ शुद्धरूप से सिने-पत्रिकाएं भी निकल रही थीं। जैसे -फिल्मीस्तान(1958), सुषमा(1959), चित्रछाया(1959), चित्रावली(1959), प्रीत(1959), मधुबाला(1960), रस-नटराज(1963), माधुरी(1963) और फिल्मरेखा (1968) आदि जैसी तमाम पत्रिकाएं

चतुर्थ अध्याय के अंतर्गत इलेक्ट्रॉनिक पत्रकारिता पर बात की गयी है, जिसमें रेडियो, टी.वी. और सोशल पत्रकारिता भी शामिल है। सोशल मीडिया में फेसबुक, ट्यूट और यू-ट्यूब शामिल है। प्रस्तुत अध्याय में रेडियो के

इतिहास को शामिल किया गया है। जिसमें बताया गया है कि 24 दिसंबर सन 1906 की शाम रेडियो के इतिहास में अत्यंत महत्वपूर्ण माना गया क्योंकि इसी शाम कनाडा के वैज्ञानिक रेगिनल्ड फेर्सेडेन ने अपना वायलिन बजाया जो अटलांटिक महासागर में तैरते हुए जहाजों के रेडियो द्वारा तमाम लोगों तक पहुंचा। जैसा कि तीसरे अध्याय में ही पाया गया है कि इलेक्ट्रॉनिक पत्रकारिता का हिंदी सिने-पत्रकारिता के प्रोत्साहन में उल्लेखनीय योगदान रहा। इस अध्याय में इलेक्ट्रॉनिक पत्रकारिता के इतिहास के साथ-साथ हिंदी सिने पत्रकारिता के सहयात्रा का भी जायजा लिया गया है।

आजादी के पश्चात दूरदर्शन से पूरे देश को जोड़ने का कार्य किया। मनोरंजन के लिए दूरदर्शन ने धारावाहिकों के साथ कई सिने कार्यक्रमों व समाचार का सहारा लिया। जिसमें एक ओर *हम लोग*, *बुनियाद*, *परिक्रमा*, *मुंगेरी लाल के हसीन सपने*, *रामायण* और *महाभारत* जैसे धारावाहिकों के साथ *चित्रहार*, *रंगोली*, *शनिवार जुबली*, *संडे रेट्रो* और *फ्रायडे हाउसफुल* जैसे हिंदी सिने कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया।

इस अध्याय में ही इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों द्वारा सिने-पत्रकारिता के स्वरूप की चर्चा की गयी है जिसमें पाया गया है कि समय के साथ रेडियो कार्यक्रमों के स्वरूप में बदलाव आया है। इसलिए रेडियो द्वारा सिने-समाचार व कार्यक्रमों में भी बदलाव आया। इस बदलाव को संदर्भित करने के लिए रेडियो के लोकप्रिय सिने कार्यक्रम 'सुहाना सफर विथ अन्नु कपूर' को बतौर उदाहरण शामिल किया गया। यह कार्यक्रम प्राइवेट रेडियो चैनल 92.7 द्वारा रिलायंस के सौजन्य से प्रस्तुत किया जाता है। अन्नु कपूर द्वारा बीते दौर के गीतों, फिल्मों, कहानी और कलाकारों के विषय में पूरी प्रामाणिकता से बताया जाता है। हालांकि यह सत्य है कि प्रायोजक बदल जाने से प्रस्तुति का अंदाज भी बदल जाता है। इस कार्यक्रम के साथ भी ऐसा ही है। इसमें सिनेमा के प्रतिरोधी स्वर एवं पूंजीवाद का विरोध करने वाली फिल्मों पर लगभग नहीं के बराबर चर्चा होती है। इसलिए जिस कार्यक्रम को सिनेमा के इतिहास को प्रस्तुत करने वाला कार्यक्रम होना चाहिए था, वह मात्र फिल्म संगीत और कलाकारों के विषय में हल्की-फुल्की बातों को बताने वाला कार्यक्रम बन कर रह गया है। अर्थात् इसे और भी ज्यादा सार्थक कार्यक्रम बनाया जा सकता था।

'सुहाना सफर विथ अन्नु कपूर' की तरह गत समय में अपने समय का अनूठा हिंदी सिने संगीत कार्यक्रम बिनाका गीतमाला था। जिसकी शुरुआत रेडियो सिलोन द्वारा 1958 में हुआ था। यह कार्यक्रम सन 1988 तक प्रकाशित होता रहा। इसमें गीतों को लोकप्रियता के आधार पर क्रमवार बजाया जाता था। आगे चलकर इस

कार्यक्रम का नकल करते हुए कई कार्यक्रम बनाए गए, जैसे कोलगेट गीतमाला और विविध भारती का सिबाका गीतमाला।

नब्बे के दशक में उन्मुक्त बाजार का अतिव्यापन और सूचनाक्रांतिके बढ़ते कदम से जिस सिने पत्रकारिता के स्वरूप में आश्चर्यजनक बदलाव देखने को मिला। दरअसल यह दौर न केवल सिनेमा के डिजिटलाइजेशन का है बल्कि इसके वृहत सामाजिकीकरण का भी है। सोशल मीडिया की बढ़ती परिधि ने सिनेमा को लोकतांत्रिक कर दिया। मोबाइल से सिने सूचना क्रांति का भी पथ प्रशस्त हुआ। लार्जर दैन लाइफ वाले सिने किरदार अब बित्ते भर से भी छोटे से मोबाइल के हवाले हो चुके थे। इसी दशक के विषय में बताया जाता है कि सोशल मीडिया, जैसे यू-ट्यूब, फेसबुक और ट्विटर ने सिने कलाकार और आम आदमी के बीच की दूरी को काफी कम कर दिया। अब सिने कलाकार अपनी बातें सीधे-सीधे अपने फैन से करने लगे। आभासी ही सही पर अब फिल्मकार और सिने प्रेमी से फैन कहा गया, एक दूसरे से सीधे-सीधे रूबरू हो चले थे।

अस्सी का सिने दशक मारधाड़ वाली व सामान्य विषयों पर बनी फिल्मों के दौर के रूप में याद किया जाता है। सोशल मीडिया से जन-सिनेमा को काफी प्रोत्साहन मिला। क्योंकि इससे छोटे बजट की फिल्मों को प्रदर्शित करना आसान हो गया। अब फिल्में यू-ट्यूब पर प्रदर्शित होने लगीं। यू-ट्यूब ने फिल्मों के लिए दर्शक और बाजार, दोनों उपलब्ध कराए। निश्चित रूप से इस माध्यम ने सिने-दर्शक और लघु फिल्मकारों को एक अच्छा मौका दिया। उदाहरण के लिए *टाइम* फिल्म का नाम लिया जा सकता है। यह एक ऐसे बच्चे की कहानी है जो प्राइमरी में पढ़ रहा है। वह बच्चा अत्यंत गरीब परिवार से है। आम बच्चों की तरह उसकी भी बाल इच्छा है। सब बातों की तरह वह पढ़ना भी चाहता है। वह पढ़ने में काफी कमजोर है। गणित उसके लिए अत्यंत कठिन विषय है, जिसमें उसकी अध्यापिका सहायता करती है। समय बदलता है और वह कमजोर बच्चा एक प्रतिष्ठित डॉक्टर बनता है। एक दिन वह अध्यापिका उसी डॉक्टर के क्लीनिक में आती है। अध्यापिका बहुत बीमार है और अपना इलाज का खर्च उठाने में असमर्थ है किंतु डॉक्टर उसे पहचान लेता है और अपने खर्च पर इलाज कराता है। अध्यापिका ठीक हो जाती है। डॉक्टर बूढ़ी अध्यापिका को उसके घर छोड़ने की पेशकश करता है। फिल्म यहीं समाप्त हो जाती है। ध्यान देने वाली बात यह है कि यदि यू-ट्यूब नहीं होता तो इस तरह की लघु फिल्म को प्रदर्शित करना संभव नहीं हो पाता। सिनेमा एक उत्पाद की तरह उपभोक्ता (दर्शक) के सामने आता है। इसलिए इसे उत्पाद की उत्पादन प्रक्रिया से गुजरना होता है और साथ ही बाजार की शर्तों पर भी ध्यान देना होता है।

पाँचवें अध्याय (नई आर्थिक नीतियों का सिने पत्रकारिता पर प्रभाव) में वैश्विकता, बाजार और आर्थिक नीतियों पर चर्चा करते हुए सिनेमा और सिने-पत्रकारिता पर इन सभी कारकों के प्रभाव की तलाश की गई है। इस अध्याय में बताया गया है कि सिनेमा स्वयं एक उत्पाद है। इसका निर्माण ही इसलिए किया जाता है कि व्यापक जनता तक पहुंचा जा सके ताकि वे निर्धारित मूल्य चुका कर इसे देख सकें। इसलिए सबसे ज्यादा जोर देखने लायक क्षमता पैदा करने की ही रहती है। क्योंकि यही वह बिंदु है, जहां सिनेमा एक उत्पाद के रूप में और दर्शक उपभोक्ता में परिवर्तित हो जाता है। इसीलिए फिल्मों का विज्ञापन किया जाता है। हिंदी सिने-पत्रकारिता का बड़ा हिस्सा विज्ञापन माध्यम के रूप में सामने आता है। जिसमें समाचार-पत्र, रेडियो, टी.वी. एवं सोशल मीडिया सभी आते हैं। यही कारण है कि सिने-पत्रकारिता को इंफोटेनमेंट (infotainment) कहा जाता है। अर्थात् सिने-समाचार सूचना, मनोरंजन, विज्ञापन के समन्वित रूप को प्रस्तुत करता है, जो एक एक विशेष पैकेज का हिस्सा होते हैं। हिंदी सिने-पत्रकारिता इन विषयों को बहुत ही अलहदे तरीके से विज्ञापित करता है। प्रिंट मीडिया, तस्वीरों और शब्दों के माध्यम से इस कार्य का संपन्न करता है। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के रूप में रेडियो एवं टी.वी. 24x7 घंटे सिने विज्ञापन प्रस्तुत करके मोटी रकम प्राप्त करते हैं। प्राइवेट रेडियो चैनल चैनलों की कमाई का मुख्य आधार सिनेमा के रास्ते से निर्णय होता है। वे सिनेमा के गीत बजाते हैं। बीच-बीच में एंकर सिने उपभोक्ताओं एवं सिने कलाकारों बात करता है। विज्ञापन प्राप्त करता है और नई फिल्मों के टिकट प्राप्त करने का प्रस्ताव करता है साथ ही इसके लिए लाटरी जैसी सुविधा उपलब्ध कराता है।

हिंदी सिने-पत्रकारिता और विज्ञापन के संबंध में बताया गया कि सिने-पत्रकारिता आजकल विज्ञापन एवं क्विज के माध्यम से दर्शकों के समक्ष प्रस्तुत किया जाता है। इस तरह के कार्यक्रमों में के द्वारा सिने उत्पाद, जिसमें फिल्में, फिल्म गीत, कलाकारों के साक्षात्कार, निजी जीवन की बातें, फिल्म की कहानी और फिल्म की बॉक्स ऑफिस रिपोर्ट प्रस्तुत की जाती है। इस तरह के कार्यक्रमों में बिग बॉस, कॉमेडी नाइट्स विथ कपिल, इंटरटेनमेंट के लिए कुछ भी करेगा, इंडियन आइडल एव कई अन्य सिने कार्यक्रम शामिल हैं।

सिने-समाचार की प्रस्तुति का स्वरूप माध्यम बदलने से बदल जाता है। इसलिए सिने-समाचार की प्रस्तुति समाचार-पत्रों, रेडियो, टी.वी. और सोशल मीडिया में एक सी नहीं है। शोध प्रबंध में इस दिशा में भी विचार किया गया और पाया गया कि सिने कार्यक्रम जो सीधे-सीधे सिने-समाचार नहीं होते परंतु इसमें सिने सूचना का तत्व पाया जाता है, को भी हिंदी सिने-पत्रकारिता में सम्मिलित किया गया। फिर भी यह सत्य है कि हिंदी सिने-

पत्रकारिता के उद्भव और विकास जैसे विषय पर शोध करने के लिए प्रचुर मात्रा में संसाधनों की आवश्यकता है। इसे अकादमिक बहस और अनुसंधान के दायरे में लाना भी जरूरी है। निष्कर्षतः यह शोध उस दिशा में एक कदम है।

परिशिष्ट

1. अजय ब्रह्मात्मज-हिंदी फ़िल्म पत्रकार एवं समीक्षक।

पुस्तकें-

i-सिनेमा की सोच, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

ii-सिनेमा समकालीन सिनेमा, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली (संस्करण 2012)

2-विनोद अनुपम- फ़िल्म समीक्षक एवं पत्रकार।

3-विनोद भारद्वाज- धर्मयुग के समय से फिल्म एवं कलाओं पर लेखन।

पुस्तकें-

i-कला का रास्ता, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, (सं-2011)

ii-वृहद आधुनिक कला कोश, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, (सं-2006)

iii-सिनेमा कल आज कल, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, (सं-2006)

4-प्रह्लाद अग्रवाल- हिंदी सिनेमा पर निरंतर लेखन।

पुस्तकें-

i-राजकपूर: आधी हकीकत आधा फसाना, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली (सं-2007)

ii-जुग जुग जिए मुन्नाभाई-छवियों का मायाजाल, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, (सं-2011)

iii-बाजार के बाजीगर, राजकमल प्रकाशन (सं-2007)

iv-ओ रे माझी, रेमाधव प्रकाशन प्रा.लि. गाजियाबाद, (सं. 2007)

5-सी. भाष्कर राव:- फिल्म समीक्षक, सिनेमा पर कई पुस्तकों का लेखन एवं दृश्याता पत्रिका के संपादक।

6-विष्णु खरे-इंदौर से प्रकाशित हिंदी पाक्षिक 'सिनेमा एक्सप्रेस' से किया, जिसके लिए इन्होंने फिल्म अभिनेत्री गीताबाली का साक्षात्कार लिया। सन् 1980 में साप्ताहिक दिनमान में मोहम्मद रफी पर उनकी टिप्पणी प्रकाशित हुई जो किसी भी गंभीर पत्र में छपने वाला पहला गंभीर सिने-आलेख था। इन्होंने दैनिक नवभारत टाइम्स, पायनियर, जनसत्ता, दैनिक भास्कर, अमर उजाला, जागरण, नई दुनिया, आदि समाचार पत्रों में फिल्म समीक्षाएँ लिखीं।

इसके अतिरिक्त कथादेश, उद्भावना, हंस आदि पत्रिकाओं में सिनेमा पर लेखन किया।

पुस्तकें-

i-सिनेमा पढ़ने के तरीके, प्रवीण प्रकाशन, नई दिल्ली

ii-सिनेमा से संवाद, प्रवीण प्रकाशन, नई दिल्ली (सं-2009)

7-विनोद तिवारी:-धर्मयुग के समय से सिनेमा पर लेखन।

पुस्तक- फिल्म पत्रकारिता, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, (सं-2007)

8-श्याम माथुर:- सिनेमा पर निरंतर लेखन।

पुस्तक-सिने पत्रकारिता, राजस्थानी हिंदी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, (सं.2008)

9-सैबल चटर्जी:-फ़िल्म समीक्षक, अक्सर अंग्रेजी में लेखन।

पुस्तक-हॉलीवुड बॉलीवुड, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, (सं. 2006)

10-मधु जैन:-फ़िल्म समीक्षक। अक्सर अंग्रेजी में लिखती हैं। इनकी पुस्तक 'कपूरनामा' अंग्रेजी व हिंदी दोनों में है।

11-दिनेश श्रीनेत्र :- पाश्चात्य सिनेमा के साथ-साथ हिंदी सिनेमा पर लिखने वाले पत्रकार, जो इस समय अमर उजाला में काम करते हैं। इनकी पुस्तक है-

पुस्तक-पश्चिम और सिनेमा, वाणी प्रकाशन दिल्ली, (सं. 2012)।

12-विनोद दास:- कवि के साथ सिने-समीक्षक।

पुस्तक-हिंदी सिनेमा अंतःकरण, मेधा बुक्स, (सं. 2012)।

13-राम प्रकाश द्विवेदी:-इलेक्ट्रानिक जनमाध्यमों और सिनेमा पर निरंतर लेखन।

पुस्तक:-इलेक्ट्रानिक मीडिया और सिनेमा, प्रासंगिक पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, सं.2013

14-नसरीन मुन्नी कबीर-पेरिस से फ़िल्म अध्ययन में एम.ए.।सिनेमा पर निरंतर लेखन करती रहती हैं।

पुस्तक-सिनेमा के बारे में (जावेद अख्तर से बातचीत), राजकमल प्रकाशन, (सं. 2008)

15-जेम्स एस.मूर्ती-सिनेमा और पत्रकारिता के अध्येता।

पुस्तक-दृश्य-श्रव्य सम्प्रेषण और पत्रकारिता, भारतीय भाषापीठ, दिल्ली, (सं 1990)

संदर्भ ग्रंथ सूची

आधार ग्रन्थ

- 1-सिनेमा के चार अध्याय, डॉ. टी. शशिधरन, वाणी प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2014
- 2-सिने पत्रकारिता, श्याम माथुर, राजस्थानी हिंदी ग्रंथ अकादमी जयपुर प्रथम संस्करण 2008
- 3-द सिनेमा ऑफ आइंस्टाईन, बोर्डवेल, डेविड, कैम्ब्रिज काडवर्ड विश्वविद्यालय प्रेस, संस्करण 1997
- 4-रसियन एंड सोवियत सिनेमा, 1896-1955, द बिगनिंग्स टू द डेथ आफ स्टालिन, एड्रेव जेम्स हार्टन, किनोआई
- 5-मोन्ताज: द कार्मेटिव प्रिंसिपल, एनोदर सिनेमा फार एनोदर सोसायटी, गेस्टोन राबर्ज, सिंगल बुक्स कोलकाता, पुनर्संस्करण 2005
- 6-जनसंचार सिद्धांत और अनुप्रयोग विष्णु राजगडिया, राधा प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2008
- 9-रेडियो लेखन, श्री मधुकर गंगाधर, आकाशवाणी, पटना, हिंदी बिहारी अकादमी, प्रथम संस्करण, मार्च 1974
- 10-Bollywood A History, Mihir Bose, Roli Books, Pg 38, Paper Back edition 2008
- 11-Tamil Cinema: The Cultural Politics of India's other Film Industry, ed.by. Selvaraj Velayutham,
- 12-Bhagwan Das Garg (1996), So Many Cinemas: The Motion Picture in India, Eminence Design, digital education.
- 13-हिंदी पत्रकारिता, कृष्ण बिहारी मिश्र, भारतीय ज्ञानपीठ, पहला पेपरबैक सं, 2000
- 14-हिंदी पत्रकारिता : विकास और विविध आयाम, डॉ.(श्रीमती) सुशीला जोशी, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी तृतीय संस्करण, 1994
- 15-फिल्म पत्रकारिता, द्वारा विनोद तिवारी, वाणी प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2007
- 16-फिल्म क्षेत्र-रंगक्षेत्र, द्वारा अमृतलाल नागर, संकलन एवं संपादन डॉ, शरद नागर, वाणी प्रकाशन, संस्करण, 2003
- 17-दक्षिण भारत की हिंदी पत्रकारिता, द्वारा रवींद्र कात्यायन, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण, 2002
- 18-संपूर्ण पत्रकारिता, अर्जुन तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, चतुर्थ संस्करण, 2015

19-दूरदर्शन का भारतीय स्वरूप, (जवाहरलाल नेहरू, फ्रीडम ऑफ इंफार्मेशन, 05 मार्च, 1961) प्रकाशन विभाग, संस्करण वर्ष 1985

20-हिंदी सिनेमा के 150 सितारे, द्वारा विनोद विप्लव, प्रकाशक: ग्रंथ अकादमी, 1659 पुराना दरियागंज, नई दिल्ली

21-Norman, Keim. Our Movie Houses: A History of Films Cinematic innovation in Central New York. Syracuse University Press

22-A History of Narrative film, New York, W W Hortons company by Cook and David A

23-Malthane, Jaques, Mannone (2008), L ocurve de Georgues Melies, Paris: Editions de La Martiniere

24-The Transformation of Cinema 1907-1915, University of California Press, 1990, by Eilseen Broser

25-स्क्रीन ट्रैफिक :मूविज प्लैक्सेस एंड ग्लोबल कल्चर, द्वारा एक्लैंड चार्ल्स आर, ड्यूक वि.वि. प्रेस, संस्करण 2003

26-मोन्ताज:द कार्मेटिव प्रिंसपल, पुनर्संस्करण 2005, एनोदर सिनेमा फार एनोदर सोसायटी, गेस्टोन राबर्ज, सिंगल बुक्स, कोलकाता

27-रेडियो लेखन, श्री मधुकर गंगाधर, आकाशवाणी, पटना, हिंदी बिहारी अकादमी, प्रथम संस्करण, मार्च 1974

28-Early Russian Cinema Online, Advisor, R. Yangirov, Number of titles: 57

29-निजी रेडियो चैनलों का विकास, भारतीय इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, द्वारा डॉ. देवरत सिंह, प्रभात प्रकाशन, 2009

आधार रेडियो कार्यक्रम (विविध भारती)

1-संगीत सरिता (प्रातः 07.00-07.30)

2-आज के मेहमान (प्रत्येक बुधवार, 04.00 बजे)

3-सरगम के सितारे (प्रत्येक शुक्रवार 04.00 बजे)

4-उजाले उनकी यादों के (प्रत्येक रविवार 04.00 बजे)

5-विशेष जयमाला

(प्रत्येक शनिवार, शाम 07.50 बजे)

6-इनसे मिलिए

(प्रत्येक बुधवार शाम 07.45 बजे)

7-सेल्युलाइड के सितारे

(रविवार विशेष रात 10.00 बजे)

आधार दूरदर्शन कार्यक्रम (डी.डी.वन)

1-रंगोली

प्रत्येक रविवार प्रातः 8 बजे

2-कलाकार परिचय

प्रत्येक रविवार शाम 4 बजे

3-फीचर फिल्म

4-चित्रहार

आधार कार्यक्रम राज्यसभा टी.वी.

1-गुफ्तगू

2-उनका शहर उनकी नजर

3-चमकते सितारे

इंटरनेट/ब्लॉग

1-www.tarkash.com

2-www.hindicinema.com

3-www.hindicinemawiki

4-www.panorama.ru/rav/

5-www.dainikjagranwiki

6-www.indiancinema.com

- 7-www.dainikbhashkar.com
- 8-www.jnstta.com
- 9-www.ashiancinemaquartily.com
- 10-www.thalka.com
- 11-www.timesofindia.com
- 12-www.sahityshilpi.com
- 13-www.filmfare.com
- 14-NEPencyclopedia
- 15-www.fmredeo.com
- 16-www.rajyasabhatv.com
- 17-www.gtvclassic.com
- 18-www.youtube.com
- 19-www.facebook.com
- 20-www.biggboss.com
- 21-www.chitrahar.com
- 22-www.rangoli.com
- 23-www.Bollywood.com
- 24-www.academyawardwiki
- 25-www.screen.com

- 26-www.colours.com
- 27-www.9xwiki
- 28-www.bollywoodhngama.com
- 29-www.indiatv.com
- 30-www.ingridvargmainenc
- 31-www.movie make encyclopedia
- 32-www.east India film company Wikipedia
- 33-<https://hi.wikipedia.org/wiki/aaj>
- 34-www.Dainikjagranwiki
- 35-[http://yuwaonkiduniya.blogspot.in/2014/11/blog-post-17.html](http://www.http://yuwaonkiduniya.blogspot.in/2014/11/blog-post-17.html)
- 36-बच्चन श्रीवास्तव के ब्लॉग से साभार।
- 37-अनमोल है आकाशवाणी की सिग्नेचर ट्यून, युनुशखान, रेडियोनाम, 06 जुलाई, 2011 blog
- 38-punjabkesri.wiki/enc
- 39-www.Amarujala.com
- 40-www.sahityshilpi.com
- 41-Radio-simple English Wikipedia.
- 42-www.All India Radio
- 43-www.telivisioninindiawiki
- 44-www.A Tribute to Classic Doordarshan
- 45-Mumbai Doordarshan-Black and White TV Era, Amit Paranjape's Blog
- 46-www.oscar.org
- 47-www.Shortfilmwikipedia
- 48- www.DocumentaryFilmWikipedia

49-www.wordpress.com

50-www.abc.cilo.com

आधार अंक- समाचार पत्र

1-न्यूयार्क हेराल्ड,14 अप्रैल 1996

2-ए क्लोज लुक ऑफ न्यूयार्क इवनिंग न्यूज़,15 नवंबर 1902

3-द साल्ट लेक हेराल्ड , 29 मई 1891, मेरियट लायब्रेरी,उटाह वि.वि.

4-द इवनिंग वर्ल्ड,16 जनवरी 1909,द न्यूयार्क पब्लिक लायब्रेरी,एस्टर,लेनक्स एवं टिल्डेन फाउंडेशन

5-Filmfare is an English language, Tabloid size magazine about Hindi language cinema, popularly known as Bollywood. Established in 1952, The Magazine is published by worldwide media a subsidiary of the Times of India, since 1954 it gives film awards the annual filmfare awards and filmfare awards south.

6-दैनिक जागरण, 29 अगस्त, शनिवार 2015, पता है कौन थे सदी के महानायक अमिताभ बच्चन के गौदफादर

7-नई दुनिया , इंदौर, शुक्रवार 11 सितंबर 2015

8-नवभारत,08 सितंबर 2015, अनुपम खेर के नाटक की धूम

9-नवभारत टाइम्स, मुंबई, 9 अगस्त, 2015, हू-ब-हू, यह मैं ही हूँ, विमल मिश्र से गौर हरि के बातचीत पर आधारित, अगस्त क्रांति दिवस

10-पंजाब केसरी, वेब संस्करण, 07 सितंबर 2015, विल स्मिथ के बेटे ने बेयोंस को समर्पित किया अपना गीत

11-तहलका संस्करण 7, अंक, 15 जनवरी, 2015 द्वारा अटल तिवारी

12-आउटलुक, दिसंबर,1-15, संपादक निलाभ मिश्र

13-इंडिया टुडे, 25 फरवरी, 2015, द्वारा नरेंद्र सैनी, क्रिकेट से नहीं डरता बॉलीवुड

14-पटकथा, वर्ष 5,अंक-2, जून 1992, संपादक श्रीराम तिवारी, सिनेमा और इतिहास, भोपाल फिल्म विकास निगम

15-समयांतर, पृ. 15, अक्टूबर 2015, जवरीमल पारख, भारतीय सिनेमा की दूसरी परंपरा

- 16-कादम्बिनी, मई 2012, वर्ष 52, अंक प्रधान संपादक शशि शेखर, हिंदुस्तान मीडिया, वेंचर्स लि.
- 17-वागर्थ, संपादक एकांत श्रीवास्तव, अप्रैल 2007, हिंदी सिनेमा का कालजयी गीत संगीत राजीव श्रीवास्तव
- 18-कथादेश, अगस्त 2011, संपादक हरिनारायण, सिनेमा में बिंब विधान परदे की भाषा, अरुण कुमार, कथादेश ओर सहयात्रा प्रकाशन प्रा.लि.
- 19-साप्ताहिक हिंदुस्तान, 5 अक्टूबर, 1953, लुई फिशर
- 20-हंस, फरवरी 2013, संजय सहाय, सिनेमा की बात, विशेषांक संपादकीय अक्षर प्रकाशन प्रा.लि.
- 21-लमही, जुलाई-सितंबर, 2010, संपादक ऋत्विक् राय, कुंवर नारायण, आंद्रे तारकोवस्की, दुनिया को बनाए रखने की चिंता
- 22-वार्ता, रविवारीय
- 23-दैनिक हिन्दुस्तान रविवारीय
- 24-दैनिक भाष्कर, रविवार, शुक्रवार अंक
- 25-नवभारत टाइम्स,
- 26-डेक्कन क्रानिकल,
- 27-द हिंदू
- 28-टाइम्स ऑफ़ इंडिया
- 29-पायनियर
- 30-जनसत्ता
- 31-दैनिक जागरण
- 32-आज
- 33-पंजाब केशरी

सहायक ग्रंथ

- 1-इलेक्ट्रॉनिक मीडिया और सिनेमा, राम प्रकाश द्विवेदी, प्रासंगिक पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स संस्करण 2013
- 2-उग्र के सात रंग, संपादक संजय शेखर व्यास, प्रतिभा प्रतिष्ठान, नई दिल्ली, संस्करण 1978
- 3-छोटा परदा बड़ा परदा, कृष्ण कल्पित कलमकार किताब नई दिल्ली, संस्करण 2003
- 4-नया सिनेमा, विनोद भारद्वाज, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, संस्करण-1985
- 5-फिल्म का सौंदर्यशास्त्र और सिनेमा, संपादक कमला प्रसाद, शिल्पायन प्रकाशन दिल्ली संस्करण 2010
- 6-भारतीय फिल्म उद्योग (सिनेमा का उद्भव, विकास और उसके विविध पक्ष) श्रीधर शास्त्री, किशलय मंच प्रयाग, संस्करण 1969
- 7-भारतीय सिने-सिद्धांत, अनुपम ओझा, राधा कृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली संस्करण 2002
- 8-भारतीय चलचित्र का इतिहास, फिरोज रंगूनवाला, राजपाल एंड संस दिल्ली, संस्करण 1975
- 9-सिनेमा और स्टेज, बलराज साहनी, रूपाभ प्रिंटर्स, दिल्ली संस्करण 1974
- 10-सिनेमा और संस्कृति, संपादक प्रो. कुवंरपाल सिंह, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, संस्करण 2003
- 11-सिनेमा के बारे में, नसरीन कबीर मुन्नी, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, संस्करण 2008
- 12-सिनेमा कल आज और कल, विनोद भारद्वाज, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली संस्करण 2006
- 13-सिनेमा की सोच, अजय ब्रह्मात्मज, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, संस्करण 2006
- 14-हालीवुड बालीवुड, अनवर अजमल एवं सैबल चटर्जी, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली संस्करण 2006

सहायक पत्र-पत्रिकाएं

- 1-आजकल, सितंबर 1995, संपादक, प्रताप सिंह बिष्ट, प्रकाशन विभाग, नई दिल्ली
- 2-आउटलुक, जून 1998, संपादक, आलोक मेहता, नई दिल्ली

- 3-इण्डिया टुडे,प्रत्येक वर्ष के सिने विशेषांक,संपादक,प्रभु चावला,नई दिल्ली
- 4-कल्पना,नवंबर 1957, संपादक,डॉ.आर्येन्द्र शर्मा,सुल्तान बाजार,हैदराबाद
- 5-कथादेश,संपादक,हरिनारायण,सहयात्रा प्रकाशन,नई दिल्ली
- 6-कथन,जनवरी-मार्च,2008,संपादक,रमेश उपाध्याय,संज्ञा उपाध्याय,प्रकाशन, शब्द संधान, नई दिल्ली
- 7-पहल,जनवरी-फरवरी-मार्च, 2014,संपादक,ज्ञानरंजन,जबलपुर
- 8-पठकथा,जून,1992,सम्पादक,श्रीराम तिवारी,म.फि.वि.नि.
- 9-परिकथा,जून,2008-जून,2015,संपादक,शंकर
- 10-बया,जुलाई-सितंबर,2012,संपादक,गौरीनाथ,अंतिका प्रकाशन,गाजियाबाद
- 11-मधुमती,अक्टूबर-नवंबर, 2014,संपादक,आशुतोष पेडणेकर,राजस्थान साहित्य एकेडमी
- 12-तहलका,संपादक,तरुण तेजपाल, नई दिल्ली
- 13-धर्मयुग, संपादक, मुंबई
- 14-नटरंग,जुलाई,1970-सितंबर,1971,संपादक,नेमिचंद्र जैन,जंगपुरा एक्सटेंसन,नई दिल्ली
- 15-सारिका,जून,1974,संपादक,कमलेश्वर,
- 16-स्टारडस्ट,मैग्ना द्वारा प्रकाशित
- 17-समयांतर,जून, 2008-जून,2015,संपादक,पंकज बिष्ट,नई दिल्ली
- 18-हंस,सितंबर,1993-जून,2015,संपादक,राजेंद्र यादव,संजय सहाय,अक्षर प्रकाशन,नई दिल्ली

सहायक ग्रन्थ (अंग्रेजी भाषा की पुस्तकें)

1- Barnaw,Ee.

Indian film

Oxford university press new yark

2-Chakrabarty sunita

National Identity In Indian cinema

University of texas press new yark

3-Prasad Madhv

Ideology of Indian Cinema

Oxford university press new yark

4-Arizon Danie

Grammar of the Film

Language Focal press, London List

Cinema Studies Journal List

Category A

Name of journal

author/publisher

1- Asian journal of Communication

Routledge Taylor and

Francis UK ISSN

0129-2986

2- Bioscope: South Asian Screen studies

Sage India Journal

Camera Obscura: Feminism, Culture

ISBN:09749276

3-Feminism,culture and Media Studies

Duke University Press,

U.S.A ,ISSN 0270-5346

4- Critical Enquiry

University of Chicago Press U.S.A.

ISSN:00093-3180

5- Critical Studies in Media Communication

Routledge:Taylor

and Francis,U.K

ISSN 0739-3180

6- Culture Studies

Routledge:Taylor

media continuum:

and Francis,U.K

journal of media culture

ISBN: 0203-98632-6

E-ISSN: 1469-3666

7- Economic and political weekly

Sameeks trust Bombay

India ISSN: 0012-9976

E- ISSN:1460

8- European journal of Communication

Sage publishers

Indiana University

3705/ISSN:0267-3231

9- Film history framework:the

wayne state university

journal of cinema and media

press U.S.A ISSN

0306-7661/ISBN 0892-2160

**10- Historical journal of film,radio
and television**

*Routledge:Taylor
and Francis,U.K press
ISSN:0143-9685/E-ISSN:1465-3451*

11-Inter-Asia cultural studies

*Routledge:Taylor
and Francis,U.K press
ISSN:1464-9373/E-ISSN:1469-8447*

12-International journal of culture studies

*Sage publishers
ISBN:0-8223-1919-5*

13-Journal of Asian studies

*Cambridge university press
U.K print ISSN:0021-9118/E
-ISSN:1752-0401*

14-Journal of film and video

*University of Illinois press USA
ISBN:0742-4671*

15-Journal of material culture

*Sage publishers
ISBN: 1859735304*

16-Journal of popular culture

*Popular culture association
ISSN-0022-3840*

17-Journal of popular film and television

Routledge:Taylor

and Francis,U.K press

print ISSN:0195-6051/E

-ISSN:1930-6858

18-Journal of south Asian popular culture

Routledge:Taylor

and Francis,U.K press

print ISSN:1474-6689/

E-ISSN:1930-6858

19-Journal of television and new media

Sage publishers

E-ISSN:1552-8316/

Print ISSN:1527-4764

20-Journal of visual culture

Routledge:Taylor

and Francis,U.K press

ISBN:978-0415354431

21-Literature/film quarterly

Salisbury university

ISSN:0090-4260

22- Literature and theology

Oxford university press

ISSN:0269-1205

23-Media history

Routledge:Taylor

and Francis, U.K. press
ISSN :0269-1205 Print ISSN
:1368-8804/E-ISSN:1469-9729

24-Media, culture and society

Sage publishers U.K
ISSN:0163-4437

**25- Music, sound and the moving
image projections: the journal
for movies and mind**

Liverpool university press
ISSN 1753-0768 print ISSN:
1934-9688/E-ISSN:1934-9696

26-Public culture

Duke university press U.S.A
ISSN:0899-2363

27-Quarterly review of film and video

Routledge: Taylor
and Francis, U.K press
ISSN:1543-5326 print ISSN:
0036-9543/E-ISSN:1460-2474

28-Social research

New school for social research , U.S.A
ISSN:0037-783X

29-Social semiotics

Routledge: Taylor
and Francis, U.K press
ISSN:1035-0330

30-Social text

Duke university press U.S.A
Routledge:Taylor and Francis,U.K/South
ISSN:0164-2472

31-South Asia: journal of south Asian studies

Asian studies
association of Australia
ISSN:0085-5401

32-South Asian popular culture

Routledge:Taylor
and Francis,U.K press
ISSN:1474-6689

33-Studies in south Asian film and media

Intellect Publishers
ISBN:0-7093-0256-8

34-Television and new media

Sage publishers
University of Minnesota press
E-ISSN:1551-8316/ISSN:1527-4764

35-The Moving Image

University of Texas U.S.A
ISSN:1532-3978

36-The Velvet Light Trip

University of Southern
California press U.S.A

ISSN:0149-1830

37-Visual Anthropology Review

*USA/American Association
of Anthropology(AAA)
ISSN:1058-7187*

**38-Visual Communication its
Visual Communication Quarterly**

*Routledge:Taylor
and Francis,U.K press
print ISSN:1555-1393/E-
ISSN:1555-1407*

39-Widescreen

*John Hopkins
ISSN:1757-3920*

40-Wide Angle

*University press
ISSN:0160-6840*